प्रेम अभियानके सेनानी

विनोबा

'भगत जनरल'

स्वर्गीय यदुनाथ सिंहको

जिनकी चर्चा करते हुए

३ अगस्त '६० को बाबाने कहा :

"मेरा कुल्का कुल काम मेरे भायी ही करते हैं। कल मैंने खबर सुनी कि मेजर जनरल यदुनाथ सिंह 'हार्ट-फेल' होनेसे चले गये। अक्सर मुझे सदमा नहीं पहुँचता, लेकिन कल सदमा पहुँचा। भिण्ड-मुरेनाका सारा काम उनके आधारपर था। वहाँ उन्होंने बहुत बड़ा पराक्रम किया, काफी मेहनत की।...कल हमको लगा कि हमारी ताकत कम हुई है।...वे न होते, तो भिण्ड-मुरेनाका यह काम हरगिज नहीं हो सकता था!"

इस कहानीकी कहानी

"पहले इसने लिखा—'नक्षत्रोंकी छायामें !' अब लिखेगा—'सूरजके प्रकाशमें' या 'चम्बलके बेहड़ोंमें' !"

बात है २५ मई, १९६० की।

पूर्व दिशामें बालरविकी किरणें हमपर अपना प्रकाश फैला रही थीं, खेतमें बैठे हम लोग उठ रहे थे, तभी मुझे नोट लेते देखकर विनोबाने ऐसा कहा !

"बाबा, इन्हें मना कर दीजिये कि नक्षत्रोंकी छाया जैसा नाम न रखें। लोग समझते हैं कि उस किताबमें नक्षत्रोंकी बात होगी। बात है जमीनकी, लोग समझते हैं आसमानकी !"—लल्लूदादाने शिकायत की।

बाबा मुसकरा पड़े। हम लोग भी उठ-उठकर चल दिये।

× × ×

सो यह सूरजके प्रकाशमें तो नहीं है, यह है—'चम्बलके बेहड़ोंमें !'

आप शायद पूछें कि क्या है इसमें ? सो तो आप जब इसे पूरा पढ़ेंगे, तभी समझ सकेंगे, मोटी-मोटी बातें बता दूँ आपको :

- चम्बलके बेहड़ोंमें है विनोबाकी उस ऐतिहासिक पदयात्राका आँखों-देखा वर्णन, जो उन्होंने मई-जून '६० में चम्बलके बेहड़ोंमें की। -
- चम्बलके बेहड़ोंमें है दुनियाको चौंकानेवाला अहिंसाका वह चमत्कार, जिसके आगे हिंसा नतमस्तक होकर आ गिरी बाबाके चरणोंमें अपनी बन्दूकें और कारतूसें लेकर।
- चम्बलके बेहड़ोंमें है बीस सशस्त्र इश्तहारी बागियोंका आत्मसमर्पण ! उन बागियोंका, जिनके पीछे पिछले सालोंका रेकर्ड कहता है कि एक-एकको मौतके घाट उतारनेमें या जिन्दा पकड़नेमें दस दस लाख रुपया खर्च होता है सरकारका !

● चम्बलके बेहड़ोंमें है उस इलाकेमें फैले भयंकर आतंक, रुदन और हाहाकारकी कहानी, जहाँका सेठ कहता है : 'वनिया तो बना ही है चूसनेके लिए !' जहाँ एक बागीकी बेटी कहती है : 'ये लोग मनई नाँय, पोहे आँय !' (मनुष्य नहीं, पशु हैं !)

● चम्बलके बेहड़ोंमें है पग-पगपर बागियोंको बाबाका यह सन्देश : 'मेरे दोस्तो ! आओ मेरे पास, अपने बुरे कामोंका साफ इजहार करो और उसका दण्ड स्वीकारकर कर डालो इसी जन्ममें अपने पापोंका प्रायश्चित्त !'

● चम्बलके बेहड़ोंमें है भयसे पीड़ितोंके लिए सच्चे वीर बननेका सन्देश, वैरसे पीड़ितोंके लिए है निर्वैर बननेका सन्देश ! बन्दूकवालोंके लिए है बन्दूकें लाकर बाबाको सौंप देनेका सन्देश !

● चम्बलके बेहड़ोंमें है रक्षाबन्धनका वह प्रसंग, जहाँ बहनें कहती हैं : 'रखियाँ बँधा लो, भइया !' और जहाँ बागी कहते हैं : 'आज तें हमाई नयी जिन्दगी है रही है !'

● चम्बलके बेहड़ोंमें है पुलिसको बाबाकी सलाह कि तुम पहले मक्खन बनो, बादमें भी मक्खन, बीचमें जरा-सा सख्त ! सेवा करो सबकी यह सोचकर कि 'मैं सेवक सचराचर रूपराशि भगवन्त !'

● चम्बलके बेहड़ोंमें है हरएकके लिए बाबाका सत्य, प्रेम और करुणाका सन्देश। कहते हैं वे : 'मैं तो इंसानकी सेवा इंसानके नाते करने आया हूँ। डाकू भी मेरे प्यारे हैं, पुलिसवाले भी। सरकारी अधिकारी भी मेरी ही जमातके हैं। असली डाकू तो है—धन-संग्रह। वह जो दरवाजेपर खड़ा है, वह तो तुम्हारा प्यारा छठा भाई है। बाँट दो अपनी सारी सम्पत्ति ! मिटा दो वैर-विरोध ! सब मिलकर गाँवका एक परिवार बना लो। फिर कहाँ रहेगा डाकू ? कहाँ रहेगी पुलिस ? कहाँ रहेगी गरीबी ? कहाँ रहेगा दुःख ? कहाँ रहेगा भय ? कहाँ रहेगा वैर ?'

× × ×

आप शायद कहें कि डाकू भी कहीं साधु बन सकते हैं ? पत्थर भी कहीं पसीज सकता है ?

'स्टेट्समैन' (२४ मई '६०) कहता है : 'ट्रासमीटर चाहे जितना शक्तिशाली हो, प्रेम और शान्तिके सन्देश उन लोगोंके पास पहुँचनेमें देर लगती ही है, जो वर्षोंसे अपराधका धन्धा उठाये हुए हैं। सब न तो वाल्मीकि होते हैं, न जीन वैल्जीन !'

मैं मानता हूँ कि देर लग सकती है, पर जीवनमें ऐसे क्षण आते हैं, जब पत्थर भी पसीज उठता है !

देखिये दादा मावलंकरके मानवताके झरनेमें एक गोता लगाकर और देखिये झवेरभाई मेघाणीके माणसाईना दीवाके प्रकाशमें आँख फैलाकर।

नहीं तो, दीनबन्धु एण्ड्रूजके जीवनकी ही एक घटना ले लीजिये :

'आप क्यों पड़े हैं मेरे पीछे ? आप मुझे पक्का ईसाई बनानेपर तुले हैं। लेकिन मैं आपको साफ बता देना चाहता हूँ कि मुझे रत्तीभर भरोसा नहीं आपके भगवान्‌पर, आपके ईसापर !'

'भैया, तुम करो या न करो, भगवान् तो तुमपर विश्वास करते हैं। वे तो तुमसे बराबर स्नेह करते हैं !'—कहते हुए चार्ल्स फ्रीअर एण्ड्रूजने हर बारकी तरह उसे फिर चिपटा लिया गलेसे !

कॉलेज-जीवन समाप्त कर एण्ड्रूज जा पहुँचे दक्षिण-पूर्वी लन्दनके उस हिस्सेमें, जहाँ रहते थे—चोर, जुआरी, शराबी, ठग और धूर्त। चार वर्ष लगाये आपने वहाँ इन दीन भाइयोंकी सेवामें। इन्हीं लोगोंमें था एक ऐसा व्यक्ति, जिसे दुर्व्यसनोंकी लत-सी पड़ गयी थी। वह खूब शराब पीता और उपद्रव मचाता। नतीजा यह होता कि वह पकड़कर जेलमें ठूँस दिया जाता। जब-जब वह जेलसे छूटकर लौटता, एण्ड्रूज बड़े प्रेमसे उससे मिलते और उसके कल्याणके लिए प्रभुसे प्रार्थना करते।

अन्तमें एक दिन वह चिढ़कर बोल ही तो पड़ा : 'आप क्यों पड़े हैं मेरे पीछे !...'

'भगवान् तो तुमपर विश्वास करते हैं, वे तो तुमसे बराबर स्नेह करते हैं !' न जाने कौन-सा जादू था इन शब्दोंमें कि उस व्यक्तिका जीवन एकबारगी ही पलट गया !

लोग हैरान थे उसका परिवर्तन देखकर ।

तब उससे पूछा जाता : 'क्यों भाई, आजकल तुम्हारा व्यवहार इतना ममतामय और तुम्हारी वृत्ति ऐसी शान्तिमय क्यों हो गयी है ?' तो वह उत्तर देता : 'जानते नहीं ? भगवान् मुझसे प्रेम करते हैं, फिर मुझे भी तो उनके विराट् प्रेमके उपयुक्त बनना चाहिए न ?'

कुछ दिनों बाद वह चला गया अफ्रीका और वहाँ अनेक वर्षोंतक पादरीके रूपमें जनताकी सेवा करता रहा !*

× × ×

ठीक ही तो कहा है महादेवी वर्माने :

पुष्पमें है अनन्त मुस्कान,
त्यागका है मारुतमें गान !
सभीमें है स्वर्गीय विकास,
वही कोमल कमनीय प्रकाश !!

हृदयके भीतर बसे भगवान् कब जाग पड़ेंगे, कौन कह सकता है !

चम्बलके बेहड़ोंमें विनोबाने इसी भगवान्को जगानेका तो प्रयत्न किया ।

× × ×

विनोबा न तो किसीको डाकू मानते हैं, न बुरा आदमी । वे तो घट-घटमें प्रभुका दर्शन करते हैं । सबसे प्रेम करते हैं । सबकी सेवा करते हैं । हाँ, जो दुःखी हैं, पीड़ित हैं, शोषित हैं, उनकी सेवामें वे सबसे पहले लगते हैं । फिर वह कोई भी क्यों न हो !

इंसानके नाते इंसानकी सेवा करना उनका लक्ष्य है ।

× × ×

* श्रीकृष्णदत्त भट्ट : सेवाकी पगडण्डी, सं० २००६, पृष्ठ १६९-१७० ।

चम्बलके बेहड़ोंमें विनोबाका नाम विश्वमें जितना चमका, उतना तब भी नहीं चमका था, जब बीस साल पहले बापूने उन्हें पहला सत्याग्रही चुना था या तेलंगानामें भूदानका जन्म हुआ था।

आपने पढ़ी होगी यह कहानी अखबारोंमें, सुनी होगी रेडियोपर। पर यहाँ है वह प्रामाणिक रूपमें।

हाँ, यह अवश्य है कि न चाहते हुए भी वह द्रौपदीके चीरकी तरह बढ़ गयी है। १५-२० से बढ़कर २६ फार्म हो गयी है। पर मेरा सम्बल है गांधीजीका एक वाक्य, जो उन्होंने 'Home and Village Doctor' की भूमिकामें लिखा था : Satish Babu has erred, but in right direction ! (गल्ती तो की है सतीश बाबूने, पर सही दिशामें !) मानता हूँ कि आप मेरी गल्ती भी 'सही दिशा' की मानकर क्षमा करेंगे।

× × ×

अन्तमें एक बात और।

'माई साहब, तो चिरईका खता बनाकर बैठे हैं !' स्वामीनाथ पाण्डेयकी यह उक्ति बड़ी कारगर हुई है इस पुस्तककी लिखाईमें। ८ जूनको पैरमें जो चोट लगी, वह आज साढ़े तीन मास हो जानेपर भी ठीक नहीं हो सकी। काशी लौटकर एक मास तो उसपर रामसुन्दर भाईका नुस्खा आमाहल्दी, चोटमुसब्बर, इमलीकी पत्ती, सेंक, मालिश आदिका प्रयोग चलता रहा। पर दर्द नहीं गया ! तब जमनालाल जैनकी सीख याद पड़ी,—'करिये चाहे जो दवा, स्क्रीनिंग तो करा लीजिये।' शिवप्रसाद गुप्त अस्पतालमें दिखाया, तो डॉक्टर सक्सेनाने कहा : Fracture है पैरमें, हड्डी टूटी है। तो पलस्तर बाँध दिया गया। सरदारजी बोले : 'अब फुदक-फुदककर चलिये।' विक्रमादित्य आकर दे गये एक लाठी, टेकनेके लिए। एक मासये ऊपर पैर बँधा रहा। पलस्तर कटनेके बाद तो लगा, पैर चलना ही नहीं जानता। चलता हूँ, तो पंजेपर जोर देनेसे अभी भी दर्द होता है !

पुस्तककी सामग्री जुटानेमें एक नहीं, अनेक साथियों और मित्रोंका

हाथ लगा है। सबका आभारी हूँ मैं। चि० गौतम बजाजने फोटो भेजे हैं, बाळभाईने नकशा। कवर बनाया है गोपेश्वरने। मेजर जनरल यदुनाथ सिंहका फोटो भेजा है भारत सरकारने। ज्ञानमण्डल यन्त्रालय यदि पूरी तत्परता न दिखाता, तो इतनी जल्दी यह पुस्तक छपकर बाहर आती ही नहीं।

तो, यह है कहानी इस कहानीकी!

स्वर्गीय 'नवीन'की ये पंक्तियाँ याद पड़ रही हैं मुझे :

सन्त विनोबाकी वर वाणी,
यदि सुन सकें द्विपद हम प्राणी,
तो देखेंगे धरा बन गयी उन्नत स्वर्ग समाना है!

विनीत

काशी
विजयादशमी,
२०१७ वि०

चम्बल घाटी-क्षेत्र

१. ये नखलके पेगड़

२. 'थानी हैं गयी !'
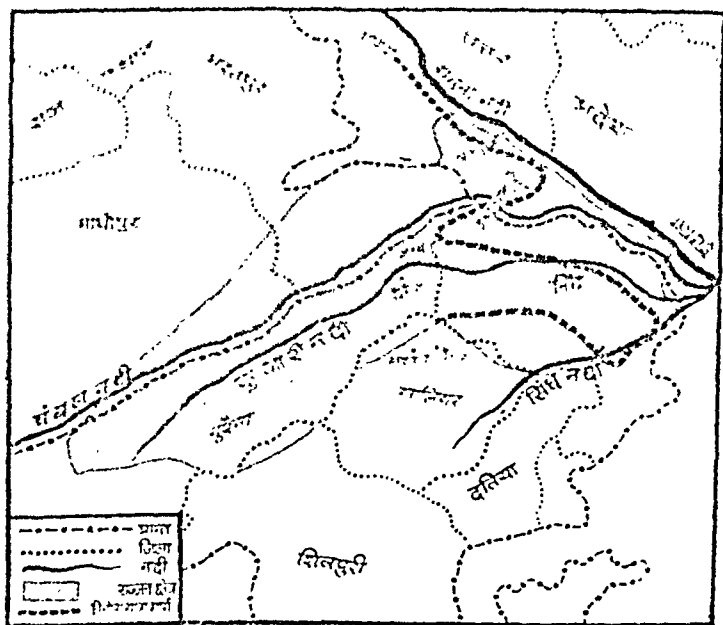
३. मुगलोंके राजमें

४. अंग्रेजी अमलदारीमें

५. स्वराज्यके बाद

६. अहिंसाकी दिशामें

०

ये चम्बलके बेहड़ : १ :

सखि, निरख नदीकी धारा।
ढलमल-ढलमल चंचल अंचल, झलमल-झलमल तारा!
निर्मल जल अन्तःस्तल भरके,
उछल-उछलकर, छल-छल करके,
थल-थल तरके, कलकल धरके,
बिखराता है पारा।
सखि, निरख नदीकी धारा॥
लोल लहरियाँ डोल रही हैं,
भ्रूविलास रस घोल रही हैं,
इंगित ही में बोल रही हैं,
मुखरित कूल किनारा!
सखि, निरख नदीकी धारा॥

सरयूके ही नहीं; गंगा यमुना, बेतवा-चम्बल, नर्मदा-कावेरी—उत्तर भारत और दक्षिण भारतकी एक नहीं, अनेक नदियोंके पावन तटपर बैठकर मैंने 'राष्ट्रकवि' मैथिलीशरण गुप्तके 'साकेत' की विरह-विदग्धा उर्मिलाकी ये कड़ियाँ सुनी हैं और घण्टों बैठा रहा हूँ इनमें विभोर होकर।

× × ×

पर्वतोंकी गोदसे निकलनेवाली ये नदियाँ बन-बेहड़ोंसे होकर जन मानसको परितृप्त करती हुईं अनन्तकी ओर दौड़ी जाती हैं! एक ही लगन, एक ही लक्ष्य, एक ही उद्देश्य!

ऋषि कहता है—

उपह्वरे गिरीणाम्
संगथे च नदीनाम्
धिया विप्रो अजायत।

पर्वतोंकी घाटियोंमें, नदियोंके मंझधार आसपास, वनस्थलीका रमणीक रूप होता है।

पर्वतोंकी कन्दराओंमें, नदियोंके तटपर और वन-बीहड़ोंमें हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियोंने तपस्या की है। भारतकी अरण्य-संस्कृति इतिहासका वह उज्ज्वल पृष्ठ है, जिसे देखकर, जिसे पढ़कर, जिसका अवगाहन कर हमारा रोम-रोम गद्गद हो उठता है।

× × ×

कश्मीरकी हिमाच्छादित पर्वत-माला हो, विन्ध्यकी मनोरम शैलमाला हो, पश्चिमी-पूर्वी घाटोंकी हरी-भरी पर्वत-श्रेणी हो, सागरका कुकूल हो, उड़ीसाकी ऊबड़-खाबड़ वन-भूमि हो, केरलसे कश्मीरतक, कलकत्तासे बम्बईतक देशके विभिन्न अंचलोंमें जब-जब प्रकृतिकी गोदमें, शुभ्र आकाशके नीचे, नक्षत्रोंकी छायामें बैठनेका मुझे अवसर मिला है, तब-तब आत्म-विभोर ही हो उठा हूँ।

प्रकृतिकी गोद मेरे लिए सदासे ही आकर्षणकी वस्तु रही है। फिर वह नदी हो या सागर, पर्वत हो या वन-बेहड़ !

× × ×

और ये चम्बलके बेहड़ ?

इन्दौरसे ५० मील पश्चिममें पश्चिमी घाटोंसे निकलनेवाली चम्बल नदी ३०० मीलतक उत्तरकी ओर बहती है। कोटा पार करनेके बाद वह २०० मील उत्तर-पूर्व दिशामें बहती है और इटावा जिलेमें यमुनामें मिलनेके लिए कोई सौ मील दौड़ी आती है—दक्षिण-पूर्वकी दिशामें। यों वह मध्य-प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश तीनोंपर छायी हुई है। कोई आठ हजार वर्गमीलपर चम्बलने अपना आधिपत्य जमा रखा है।

इस टेढ़ी-मेढ़ी चंचल चम्बलकी धार बड़ी पैनी है, तीखी है; जिसके फलस्वरूप इसके किनारे बड़ा विकट कटाव हो गया है। कटावकी तीव्रताका अनुमान ई० ए० कोथॉप, आइ० एफ० एस० की अध्यक्षतामें नियुक्त

कमीशन (१९६५) की रिपोर्टसे लगाया जा सकता है, जिसमें वह कहता है :

"इटावा जिलेमें इस बातके स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध हैं कि आज जहाँ असंख्य भयकर कटाव हैं, वहाँ आजसे कोई ४०० साल पहले बिलकुल समतल भूमि थी। इस अवधिमें कोई १५ करोड़ क्यूबिक फुट जमीन कटकर बह गयी है। इसका अर्थ यह होता है कि इन चार सौ सालोंमें यहाँ हर सेकण्डमें ११ क्यूबिक फुट जमीन बहती गयी है!"

हर सेकण्डमें ११ क्यूबिक फुट!

× × ×

इस कटावने चम्बलके किनारे ऐसी बुरी भाँति जमीन काटी है कि वहाँपर तरह-तरहकी गुफाएँ बन गयी हैं। ऊँचे-नीचे करारे हैं, टेढ़े-मेढ़े। उसमें खेती करना कठिन ही नहीं, असम्भव-सा ही है।

और इस कटावके आसपास हैं बेहड़। ऊबड़-खाबड़ बेहड़। कहीं-छोटे-छोटे पेड़ हैं, कहीं लम्बे और पतले।

ऐसे हैं चम्बलके ये बेहड़!

किसानोंके लिए अवश्य ही ये दुःखद हैं। उनके पेटपर सीधा वार करते हैं ये।

पर मुझे तो उन्हें देखकर प्रकृतिकी मनोरम छटाका ही आनन्द मिलता है। आँखें घण्टों देखती ही रह जाती हैं। वृन्दावनके कुंजोंकी, वहाँके करीरोंकी हृदयस्पर्शी याद आने लगती है और जयदेव आकर कानमें गुनगुनाने लगते हैं :

कुञ्जकुटीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली!

० ० ०

उसका अपना तो केवल मात्र एक भगवान्‌के सिवा और कुछ भी नहीं रहा। फिर उसकी कोई भी प्रवृत्ति भगवान्‌की सेवासे भिन्न हो ही कैसे सकती है? उसके जीवनका प्रत्येक क्षण भगवान्‌की प्रसन्नताके लिए, उन्हींकी दी हुई योग्यतासे, उन्हींकी सेवामें लगेगा। इसके सिवा दूसरा साधन हो ही क्या सकता है?

"साधकको चाहिए कि करने योग्य हरएक कामको साधन समझे। छोटेसे छोटा जो भी काम प्राप्त हो, उसे पूरी योग्यता लगाकर उत्साहपूर्वक जैसे करना चाहिए, ठीक-ठीक करे। उसमें तुच्छ बुद्धि न करे। जो काम भगवान्‌के नाते उनका काम समझकर किये जाते हैं, वे सभी साधन हैं। अतः उसे समझना चाहिए कि माला फेरना, झाड़ू लगाना, कमरा साफ करना—ये सभी मेरे प्रियतमके काम हैं।

"आजकल तो यह देखा जाता है कि जब किसीको कोई काम करनेको कहा जाता है, तब मनमें क्षोभ पैदा होता है। उससे यदि कहा जाय कि तुम काम नहीं कर सकते तो ध्यान करो, तो कहता है कि ध्यानमें मन नहीं लगता। यदि कहें कि नाम-जप करो, तो उसमें भी मन नहीं लगता। ध्यान और नाम-जप तो होता नहीं, कामको तुम साधन समझते नहीं—बताओ क्या करोगे? उलटा करना तो साधन होता नहीं। इस प्रकार अपनी योग्यताको समझकर साधन न करनेवाला मनुष्य साधन नहीं कर पाता; क्योंकि उसकी साधनमें रुचि और तत्परता नहीं होती।

"चित्त शुद्ध होनेसे निर्विकल्प स्थिति और सन्देहरहित बोध होता है।

"बुरे और अनावश्यक संकल्पोंका त्याग ही चित्त-शुद्धिका पहला उपाय है। जिस कामसे किसीका अहित होता हो, उस विषयके संकल्पोंका नाम—बुरे संकल्प हैं। जिसका वर्तमानसे सम्बन्ध न हो, जिस संकल्पको पूरा करनेकी साधकमें योग्यता या शक्ति न हो; यदि शक्ति या योग्यता हो, तो भी वर्तमान कालमें उसे पूरा करना आवश्यक न हो या सम्भव न हो, ऐसे संकल्पोंका नाम है—अनावश्यक संकल्प। इनकी निवृत्तिके

[illegible] है, [illegible] होती है, [illegible] है।

"आवश्यक और भले संकल्पोंकी पूर्तिमें भी [illegible] न होना, किन्तु ईश्वरकी प्रसन्नताके लिए उनका अनुष्ठान करते हुए उनकी [illegible] और निरासक्ति पूर्ण करते रहना—यह चित्त-शुद्धिका सुगम उपाय है।

"आवश्यक संकल्प उनको कहते हैं, जिनके अनुसार स्वतन्त्र प्रवृत्ति होना स्वाभाविक है और जिनकी पूर्तिका सम्बन्ध वर्तमानसे है, जैसे भोजनादि शरीर सम्बन्धी क्रियाविषयक संकल्प एवं अपनी योग्यताके अनुसार अनायास वर्तमान प्रवृत्तिसे या निवृत्तिसे सम्पन्न होनेवाले संकल्प। भले संकल्प उनको कहते हैं, जिनमें किसीका हित—सम्बन्ध निहित हो।

"आजकल जब किसीके मनके विपरीत काम होता है, तब उनको क्रोध आ जाता है। यदि कोई कहे कि क्रोध नहीं करना चाहिए, तो कहते हैं कि 'क्रोध किसको नहीं आता? क्या मैं महात्मा हो गया? मैं तो गृहस्थ हूँ...' इत्यादि। यदि उनसे पूछा जाय कि 'आप महात्मा क्यों नहीं बन गये? किसने मना किया था? मनुष्य ही तो महात्मा होते हैं?' तो इसका कोई उत्तर नहीं है। ऐसे प्राणियोंका चित्त शुद्ध नहीं हो पाता।

"चित्तकी शुद्धिके लिए क्षमाकी बड़ी भारी आवश्यकता है। अतः साधकको क्षमाशील होना चाहिए। जब कभी उसे मालूम हो कि मेरे कारण किसीको कष्ट हुआ है, मुझसे किसीके प्रतिकूल व्यवहार हो गया है, तो तुरन्त उससे क्षमा माँग ले। यदि किसी दूसरेका व्यवहार अपने प्रतिकूल हो, तो तत्काल ही उसे क्षमा कर दे। अपने मनमें यह भाव ही न रहने दे कि उसने कोई अपराध किया है, ताकि उससे बदला लेनेकी भावना कभी भी उत्पन्न न हो। यह भाव रखे कि सरकारसे या ईश्वरसे भी उसको किसी प्रकारका दण्ड न मिले, बल्कि ईश्वरसे यह प्रार्थना

करना चाहिए कि उसकी बुद्धि शुद्ध कर दीजिये, ताकि वह अब किसीके साथ बुरा व्यवहार न करे। इससे साधकमें वैर-भाव मिट जाता है।

"दुःखी प्राणी हर प्रकारसे दयाका पात्र होता है। अतः क्षमाशील साधक कभी किसीपर क्रोध या द्वेषभाव नहीं करता। उसे तो किसीका अपराध दीखता ही नहीं। वह तो दुःखका हेतु अपनी भूलोंको मानता है।

"जो क्षमाशील साधक अपनी गलतीके लिए दूसरोंसे क्षमा माँगकर और पुनः गलती न करनेका संकल्प करके निर्दोष हो जाता है तथा अपने प्रति जो प्रतिकूल व्यवहार करता है, उसका दोष न मानकर वैरभावसे रहित हो जाता है, उसका चित्त शुद्ध हो जाता है।

"जो काम मनुष्य दूसरोंसे अपने लिए नहीं चाहता, वह उसको दूसरोंके साथ नहीं करना चाहिए। जैसे, कठोर वाक्य हम दूसरोंसे सुनना नहीं चाहते, तो किसीसे कठोर वचन बोलना भी नहीं चाहिए। हम सम्मान चाहते हैं, अपमान नहीं चाहते, तो दूसरोंको सम्मान देना चाहिए; उनका अपमान नहीं करना चाहिए। जो अपना बुरा नहीं चाहता, उसे भी किसीका बुरा नहीं करना चाहिए। साधकको चाहिए कि किसीका बुरा न चाहे और परायी वस्तु लेनेकी इच्छा न करे।

"वित्तसे वस्तु, वस्तुसे व्यक्ति, व्यक्तिसे विवेक और विवेकसे सत्यको अधिक महत्त्व देना चाहिए।"

× × ×

चम्बल घाटीकी जिस तपोभूमिमें साधना करनेवाले एक सिद्ध साधकके मुखसे ऐसे अमृत-कण सतत झरते रहते हैं, वह तपोभूमि आज वर्षोंसे यह कहकर बदनाम है कि "Dacoits and ravines go together ! चम्बलके बीहड़ माने डाकुओंके अड्डे !" चम्बलकी कन्दराएँ सैकड़ों सालोंसे कुख्यात डाकुओंका आश्रय-स्थल बन गयी हैं।

यह ठीक है कि पहले डाकू और लुटेरे चम्बलके बीहड़ोंमें छिपा करते थे, पर आज वैसा कम है। आज सारा क्षेत्र 'डाकू-क्षेत्र' के नामसे

बुरी भाँति बदनाम है। मानो वहाँ डाकू ही डाकू रहते हों, कोई सज्जन हो ही नहीं !

आज तो यह होता है कि आसपासके गाँवोंमें कहीं कोई घटना घटती है, कोई कत्ल होता है, किसीका खून होता है, कोई अपराध होता है, किसीको सताया या जलील किया जाता है, किसीका प्रतिशोध लिया जाता है, तो पानीदार चम्बलके पानीवाले आदमी 'बागी' हो उठते हैं। गाली और गोलीकी भाषा सुनकर जब उनका खून उबल उठता है और उनसे कोई अपराध बन पड़ता है, तो वे घरसे मुँह मोड़कर चम्बल-के बेहड़ोंमें जा छिपते हैं। वहाँ उनके छिपनेकी गुंजाइश भी खूब रहती है।

कोई पूछता है—"फलाँ आदमी कहाँ है ?"

लोग जवाब देते हैं—"फलनवाँ तौ बागी है गओ !" (वह तो 'बागी' हो गया)

○ ○ ○

मुगलोंके राज्‌में : 3 :

ओ रजकणके ढेर

तुम्हारा है विचित्र इतिहास !

यह उक्ति ताजमहलपर ही लागू नहीं होती, चम्बलके बेहड़ोंपर भी लागू होती है। चम्बलके ही मैदानमें मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्तने सिकन्दरके सिपहसालार सिल्यूकसको दाँतों चने चबवाकर भारतसे भाग जानेके लिए विवश किया था। भारतीय इतिहासकी यह घटना अमर है, अविस्मरणीय है।

चम्बल घाटीकी चर्चा—इतिहासमें जगह-जगह मिलती है।

आइये, देखें इतिहास क्या कहता है—

मुगल सम्राट् बाबरने अपने संस्मरणोंमें चम्बल घाटीके जाटों और गूजरोंका लुटेरों और दस्युओंके रूपमें वर्णन किया है। ये लोग जनताको लूटकर चम्बलके बेहड़ोंमें लापता हो जाते थे, फिर उन्हें पकड़ पाना हँसी-खेल नहीं था।

सिकन्दर लोदी, शेरशाह और अकबर—सबके सब चम्बल घाटीका लोहा मानते थे और इस क्षेत्रके दमनके लिए उन्होंने सेनाएँ भेजी थीं। बाद (आगरा) के भदौरियोंने मुगल सम्राट्को इतना त्रस्त कर रखा था कि भदौरियोंके राजाको पराजित होनेपर हाथीसे कुचलकर मार डालनेका फर्मान जारी किया गया था। अकबरके विश्वस्त साथी इतिहासकार अबुल्फजलकी हत्या इसी क्षेत्रमें हुई थी।

फतेहपुर सीकरीमें अकबरने अपनी राजधानी बनायी थी, पर वहाँसे उसे इसीलिए छोड़कर भागना पड़ा कि चम्बल घाटीके डाकू उसके सिरका दर्द बन गये थे। बादमें उसके उत्तराधिकारियोंको इसी कारण आगरेसे भी हटनेके लिए विवश होना पड़ा।

पिण्डारियों, डाकुओं और ठगोंने चम्बल घाटीपर अपना पूरा कब्जा जमा रखा था। वे बिना खतरेके निर्बाध गतिसे वर्षोंपर अपना तस्कर-व्यापार चलाते रहते थे। चम्बलके बीहड़ों, खारों और खड्डोंमें वे भागके जाकर छिप जाते थे। उन्हें पकड़ पाना और परास्त करना इसलिए टेढ़ी खीर था कि उनके बचावके ठिकाने ऐसे थे, जिनमें उन्हें खोज पाना असम्भव-सा था। उनके रास्ते ऐसे चक्करदार थे कि 'मीर साहब' याद आ जाते थे—

उसे खोजते 'मीर' खोये गये
कोई देखे इस जुस्तजूकी तरफ!

"हर डाकूको उसीके गाँवमें फाँसीपर लटका दिया जाय और उसके परिवारवाले 'सरकारके गुलाम' बना लिये जायँ !"

यह है वारेन हेस्टिंग्सका वह फरमान, जो कि डाकुओंके कुकृत्योंसे बुरी भाँति त्रस्त होनेपर उसने जारी किया था। सन् १७७२ में एक कमेटीने उसे रिपोर्ट दी थी कि दस्युओंका यह तस्कर-व्यापार सैकड़ों वर्षोंसे लगातार चलता आ रहा है। वे निधड़क होकर अशक्त जनताको लूटते हैं, लोगोंका कत्ल करते हैं। इन डाकुओंके चलते डाकू-क्षेत्रमें 'न्याय' और 'शान्ति' शब्दोंका कोई अर्थ नहीं रह गया है।

चम्बल घाटीमें पिण्डारियोंका उत्पात जारी था। करीम, चित्तू और वसील मुहम्मद जैसे सरगना पिण्डारियोंके गिरोह जनताको त्रस्त किये रहते थे। सिंधियाकी पुलिसने बड़ी मुश्किलसे वसील मुहम्मदको गिरफ्तार कर अंग्रेज सरकारके हवाले कर पाया था। चित्तूको चम्बलके बेहड़ोंमें किसी चीतेने फाड़ खाया। यों इन लुटेरोंकी हरकतें कुछ कम हुईं अवश्य, पर विशेष नहीं।

१८२९ में लार्ड आकलैण्डने आगराकी गद्दी सँभाली। उन्होंने चम्बल घाटीके डाकुओंको समाप्त करनेका काम कर्नल स्लीमैनको सौंपा। स्लीमैनने १२ सालमें १२०० डाकुओंका सफाया करनेमें, उन्हें मारने या पकड़नेमें सफलता पायी। गजराज और मेहरबान जैसे सरगनोंपर भी स्लीमैनने विजय प्राप्त की।

× × ×

इण्डियन सिविल सर्विसके आर्थर क्रिट्टने १८८९ में 'सीरियस क्राइम इन द इण्डियन प्रोविन्स' में चम्बल घाटीके डाकुओं और डाकुओंके तौर-तरीकोंका विस्तारसे वर्णन किया है। उसमें एक जगह लिखा है कि एक

बदनाम डाकू जर्नल स्लीमैनसे कहता है : "हुजूर, हमारा तो 'बादशाही काम' था। हम लोग दिलेरीसे हमला करते थे और हजारों ही नहीं, लाखों रुपये लूट लेते थे। जैसी शानसे हम लूटते थे, वैसी ही शानसे, वैसी ही आजादीसे हम रुपया खर्च भी करते थे। हम लोग जिन्दगीभर लक्ष्मीकी गोदमें किलोलें करते रहे हैं और मस्तीसे पैसा उड़ाते रहे हैं। आप आज हमें ताँबेके जो चन्द टुकड़े देते हैं, उनसे हमारा काम भला कैसे चले !"

मेहरबान जैसे डाकू राजाओंकी शानसे रहते और उसी शानसे घूमते। एक बार मेहरबानने अपनी बीबी सुजनियाके साथ पूरी शान-शौकतके साथ बंगालके श्रीरामपुरतककी यात्रा की थी।

कभी ये लोग वैष्णव-वैरागीका वेष बनाकर चलते थे, कभी सजी-सजायी बारातका। कभी बनजारेका रूप धरते थे, तो कभी फेरी लगाकर बेचनेवाले सौदागरका। कभी तोता-मैना लेकर उनके बेचनेका स्वांग करते थे, तो कभी अहीरका स्वांग बनाये फिरते थे।

यों इनके अनेक रूप थे, जिनकी आड़ लेकर ये अपना कार्य सिद्ध करते रहते थे और जनताको लूटा करते थे।

× × ×

'फूट डालो और राज करो'—अंग्रेजोंकी यह प्रसिद्ध नीति भारतमें खूब फली-फूली थी। इटावाके कलक्टर ह्यूम साहब, जिन्होंने बादमें हमारी राष्ट्रीय कांग्रेसको जन्म दिया था, सोचने लगे कि डाकू-समस्याके समाधानके लिए इस सफल नुसखेका प्रयोग क्यों न किया जाय ?

उन्होंने गहराईसे इस समस्यापर विचार किया। उन्होंने पता लगाया कि किन जातियोंके लोग डाकू बनते हैं, क्यों बनते हैं, और किन जातियोंके लोग वीर होते हैं, किन जातियोंके लोग डरपोक।

सारी बातें सोच-समझकर उन्होंने यह नुसखा निकाला—

"राजपूतोंको, लड़नेवाली कौमोंको रोजीके वैध साधन दो, जिससे वे मजेकी जिन्दगी बिता सकें; उन्हें उनपर होनेवाले अत्याचारके साधनोंसे—दीवानी अदालतों और देहाती सूदखोरोंसे—मुक्त कर दो। फिर वे उस

सरकारके लिए प्राण न्यौछावर करनेको प्रस्तुत रहेंगे, जिसके शासनमें उन्हें अच्छी तरह जीवन बितानेका मौका मिल रहा है।

"ऐसे उपाय करो, जिनसे गूजर, अहीर तथा चोरी करनेवाली जातियोंके लोग आसानीसे धनी बन सकें।

"बनियों, कायस्थों, ब्राह्मणों तथा ऐसी ही अन्य जातियोंके लोगोंपर टैक्स लगाओ, जो कलमकी बदौलत धनी बनते हैं, अपनी पुश्तैनी जायदादसे अपनेसे बड़ोंको वंचित करके उन्हें निकाल बाहर करते हैं। जो पहले सिरेके डरपोक हैं और जो न तो अपनी सम्पत्तिकी रक्षाके लिए तलवार उठानेकी क्षमता रखते हैं और न सरकारकी सहायताके लिए, जो उनकी उन्नतिमें इतनी सहायक रहती है।"

इस साहबकी यह नीति चालू होनेपर भी उसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। चम्बल घाटी अशान्तिका क्षेत्र बनी ही रही।

पैसा लूटनेके लक्ष्यसे कम लोग बागी बनते रहे, आपसी राग-द्वेष, दलबन्दी, मानापमान, अत्याचार, अनाचार और पुलिसके उत्पीड़नको लेकर अधिकतर लोग बागी बनते रहे।

हाँ, ग्वालियरके माधव महाराज सिंधियाने अपने शासन-कालमें अवश्य ही डाकुओंको अहिंसात्मक रीतिसे जीतनेका एक उत्तम प्रयोग किया था और तत्काल उसका असर भी अच्छा हुआ था। पर आगे वह परम्परा निभायी नहीं जा सकी!

अंग्रेजी पुलिस गाली और गोलीकी भाषाके द्वारा डाकुओंकी समस्या हल करनेमें लगी रही।

पर हिंसासे कहीं हिंसा दबती है ? उसके मिटानेका एकमात्र साधन है—अहिंसा और प्रेम !

न हि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं।
अवेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो॥

—बुद्ध

सन् १८५७ में पहली बार भारतने आजादीके लिए सिर उठाया, सशस्त्र क्रान्तिका रास्ता अपनाया, पर ब्रिटिश संगीनोंने उसे कुचल दिया। हिंसाने हिंसाको दबा दिया। उस दौरानमें चम्बलके बेहड़ोंने आजादीके दीवाने ताँतिया टोपेको १८ महीनेतक शरण दी थी। बादमें सशस्त्र क्रान्तिके पुजारी पण्डित गेंदालाल दीक्षितने इन बेहड़ोंमें अंग्रेजी राज्यको उखाड़ फेंकनेके लिए निजवा, पंचमसिंह और डूँगर बटोही जैसे बागियोंको भी तैयार कर लिया था, पर इन सब दीवानोंकी तड़फड़ाहट तत्काल कोई असर न ला सकी।

असर लायी गांधीकी अहिंसा।

१९४७ में हिन्दुस्तान आजाद हो गया।

अंग्रेज अपनी अमलदारी भारतीयोंको सौंपकर इंग्लैण्डके लिए रवाना हो गये।

हमने अहिंसाके शस्त्रसे आजादी पायी तो जरूर, पर आज बारह सालके बाद भी हम अहिंसापर अपना विश्वास जमा नहीं पाये हैं। पुलिस और फौज, बन्दूक और तोप आज भी हमारी शान्ति-रक्षाका साधन बनी हुई है!

× × ×

चम्बलके बेहड़ोंमें आज भी हमारे सैकड़ों भाई छिपे फिरते हैं। लोग उन्हें 'डाकू' कहते हैं, वे अपनेको 'बागी' कहते हैं।

पुलिस उनकी समाप्तिके लिए प्रयत्नशील है जी-जानसे। पर अंग्रेजी सरकारकी विरासतके तौरपर गाली और गोली ही उसकी जेबमें है।

नतीजा सामने है—पुराने बागी धीरे-धीरे कम होते चलते हैं, नये बागी उगते आते हैं।

× × ×

मानसिंह, सुल्ताना, पुतली, कल्ला, लाखन आदिके गिरोहोंने जब उत्तर प्रदेश, मध्यभारत और राजस्थानकी सरकारोंकी नाकमें दम कर दी, तो फरवरी १९५३ में श्री शान्तिप्रसाद डी० आई० जी० की अध्यक्षतामें तीनों सरकारोंने मिलकर एक संयुक्त मोरचा कायम किया। जुलाई '५५ में श्री इसलाम अहमद डी० आई० जी० ने यह कमान सँभाली। ढाई सालतक यह अभियान चला। ३१ जनवरी, १९५६ में यह संयुक्त मोरचा ढीला किया गया।

सरकारी विज्ञप्तिका कहना है कि इस मोरचे द्वारा १९५४ के अन्ततक ६ बदनाम गिरोह समाप्त कर दिये गये। सुल्तानाका गिरोह १९५३ के आरम्भमें समाप्त हुआ और अगस्त १९५५ में मानसिंह और उसके बेटे सूबेदार सिंहका सफाया कर दिया गया। मानसिंहका गिरोह १०० हत्याओं और १००० डकैतियोंके लिए जिम्मेदार माना गया था। संयुक्त मोरचेमें ८३ बार पुलिस और डाकुओंकी भिड़न्त हुई, जिसमें ७४ डाकू मारे गये और १०५ गिरफ्तार किये गये। पुलिसके ६१ जवान खेत रहे।

× × ×

अभी उस दिन ग्वालियरमें मध्यप्रदेशके डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल पुलिस एच० एस० कोहिलीने बताया कि हमने जो डाकू-अभियान चला रखा है, उसके द्वारा १६ मेंसे १३ गिरोह समाप्त कर दिये गये हैं।

स्पष्ट है कि इस समस्याको सुलझानेमें पुलिस अपनी पूरी ताकतसे लगी है, पर वह भी इस बातको महसूस करती है कि इस समस्याका उन्मूलन हिंसासे हो नहीं सकता। वैरसे वैर मिट नहीं सकता। श्री कोहिलीने आजसे तीन साल पहले ही सरकारको सुझाव दिया था कि डाकुओंका आपरेशन तो हो चुका है, मरहमपट्टी बाकी है और वह हो सकती है किसी सन्तके वचनों और प्रयत्नोंके द्वारा ही। आत्मबलसे ही वैर-विरोधकी भावना मिट सकती है। इस कामको पूरा करनेके लिए आचार्य विनोबा भावेको बुलाया जाय!

● ● ●

"यह अपराधी है या देवता ? अपकारका बदला यह उपकारसे देता है ! घृणा करनेवालेको क्षमा करता है ! प्रतिशोधके बदले दया और प्रेम बरसाता है ! अपने शत्रुको बर्बाद करनेके बजाय अपने-आपको बर्बाद कर डालना अधिक पसन्द करता है ! जो उसपर हमला करता है, उसके प्राणोंकी रक्षा करता है ! इतना दयालु, इतना उदार, इतना परोपकारी !

"मैं जिन्दगीभर इसके खिलाफ रहा । इसका जीवन मैंने अभिशाप बना दिया, पर अपने हाथमें मुझे पाकर भी इसने मुझे गोली नहीं मारी, मेरे बन्धन काटकर मुझे मुक्त कर दिया । मैंने कहा भी कि 'तेरा यह काम मुझे परेशानीमें डालता है, तू मुझे गोली ही मार दे !' पर उसने मुझे गोली नहीं मारी ।

"यह मुझे हो क्या गया है ? मेरे जैसा फौलाद आदमी आज पिघल क्यों रहा है ? मैं पुलिसका अधिकारी—फौलाद-सा संगीन ! दया मैंने कभी जानी नहीं, उदारताको कभी पास नहीं फटकने दिया, आज मेरे हृदयमें यह तूफान क्यों उठ रहा है ? मेरा हृदय परिवर्तन क्यों हो रहा है ?

"क्या करूँ मैं अब ? जीन वैल्जीनको छोड़ दूँ ? अपराधीको छोड़ दूँ ? यह गलत है । जीन वैल्जीनको मुक्त विचरण करने दूँ ? यह भी गलत है । उसने मुझे छोड़ दिया, मैं भी उसे छोड़ दूँ ? इसमें कमसे कम मेरी, ईश्वरकी, संगीन पुलिस अधिकारीकी प्रतिष्ठा नहीं । [illegible] कैसी मुझसे भेंट !

"जिन्दगीभर मैं न्यायके लिए लड़ता रहा । न्याय ही मेरा [illegible] रहा । उसीको मैं अपना कर्तव्य मानता रहा । पर आज मुझे लगता है कि न्यायसे ऊँची भी कोई चीज है और वह है—दया, [illegible] क्षमा !...

"लोग कहते हैं कि परमात्मा भी [illegible] पसीजता है । आज [illegible]

महसूस हो रहा है। अब मैं कर्तव्यके नाते जीन वेल्जीनको पकड़कर फिर कालेपानीमें भेज दूँ या फिर...।"

जेवर्टके हृदयमें विचारोंका यह ऊहापोह मचा, जिसमें न्यायके नामपर जीन वेल्जीनको पुनः पकड़कर कालेपानी भेजना उसके लिए दुष्कर प्रतीत हुआ, पर ऐसा करना तो पुलिसके अधिकारीका कर्तव्यच्युत होना है। और कर्तव्यच्युत होकर जीना कैसा !

जेवर्ट सीन नदीकी तूफानी लहरोंमें कूद पड़ा और उसके गर्भमें समा गया।

×   ×   ×

यह है एक ईमानदार पुलिस-अधिकारीके हृदय-मन्थनकी झाँकी, जिसका कि चित्रण विक्टर ह्यूगोने अपनी अमर रचना 'ला मिजरेबल्स' में किया है। एक अभागा अपराधी जीन वेल्जीन एक बिशपके सत्संगसे साधु बन जाता है और आजीवन अहिंसाके प्रयोग करता है। पर अपराधका जो धब्बा उसके माथेपर लगा है, उसके चलते पुलिस उसे सम्मानपूर्ण जीवन नहीं बिताने देती। अन्तमें वह दिन भी आता है, जब कि पुलिसका अधिकारी भी उसकी अहिंसाका सिक्का मानकर उसके रास्तेसे हट जाता है।

×   ×   ×

वस्तुतः अहिंसा ही वह जादू है, जिसके चलते हिंसा परास्त होती है। हिंसासे हिंसा मिट नहीं सकती, उसके परिशोधनका एक ही मार्ग है, और वह है—

'जो तोकूँ काँटा बुवै ताहि बोउ तू फूल।'*

केवल यही एक ऐसा रास्ता है, जिससे वैर और विरोध, राग और द्वेष, हिंसा और क्रोधपर विजय प्राप्त की जा सकती है। हिंसा फेल ही होनेवाली है, अहिंसा कभी फेल होती ही नहीं। हाँ, यह बात दूसरी है कि

---

* देखिये, परिशिष्ट १।

मुलझाया जा सकता है। इसके लिए शान्ति-अभियान चलना चाहिए। उसीसे कुछ हो तो हो, वर्ना यह मर्ज लाइलाज है।

× × ×

उसके बाद लँगड़े भाईने कश्मीरकी दौड़ लगायी। भिण्ड जिला कांग्रेसके भूतपूर्व अध्यक्ष श्री हरिसेवक मिश्र—जिन्हें बाबा प्रेमसे 'लँगड़ा भाई' कहकर पुकारते हैं—६ जुलाई १९५९ को गांधी स्मारक निधिके श्री प्रेमनारायण शर्माके साथ कश्मीरके लिए रवाना हुए। पठानकोटमें पता लगा कि कश्मीरमें तो इन दिनों बाढ़का प्रकोप है। ४ दिन प्रतीक्षा करके ये लोग हवाई जहाजसे श्रीनगर पहुँचे। फिर गांधी आश्रमके रामसुमेरभाईके साथ गुलमर्ग पहुँचकर उन्होंने बाबासे भेंट की।

हरिसेवकभाई तीन दिन वहाँ ठहरे और ८-९ घण्टे बाबासे बातें करते रहे। उन्होंने भिण्ड और मुरैनाकी, चम्बल घाटीकी दयनीय स्थिति बाबाको समझायी और इस बातका जोरदार आग्रह किया कि बाबा, आप इस क्षेत्रमें पधारिये। आपके आगमनसे यह समस्या निश्चय ही सुलझ सकेगी।

बाबाने उन्हें कोई आश्वासन नहीं दिया, केवल इतना ही कहा : "विचार करूँगा। उधरका कार्यक्रम बना, तो आऊँगा।"

× × ×

उसके बाद आया तहसीलदार सिंहका पत्र। मानसिंहके पुत्र तहसीलदार सिंहने नैनी जेलसे विनोबाको लिखा कि मुझे फाँसीकी सजा हुई है। फाँसीपर लटकनेके पहले मेरी यही इच्छा है कि आपके दर्शन करूँ। यदि ऐसा सम्भव न हो, तो आप अपने किसी प्रतिनिधिको ही मेरे पास भेज दें। मुझे आपसे कुछ विशेष बातें करनी हैं।

बाबाने मेजर जनरल यदुनाथ सिंहको तहसीलदार सिंहसे मिलनेके लिए भेजा।

× × ×

और इसके बादसे चम्बलके बेहड़ोंमें बाबाका शान्ति-मिशन दौड़ने लगा। जनरल साहब और उनके कुछ अन्य साथी इस दौड़धूपमें लग गये कि मानसिंह और रूपाके गिरोहके बागी बाबाके समक्ष आत्म-समर्पण कर दें। बन सके तो और भी गिरोहोंके।

बाबाने भी मंजूर कर लिया कि वे चम्बल घाटीका दौरा करेंगे, सबको प्रेमका सन्देश देंगे और इन गुमराह भाइयोंको समझायेंगे कि "तुमने अभीतक जो गलत काम किये हैं, उन्हें छोड़ दो और सच्चे दिलसे पश्चात्ताप करो। भगवान् तुम्हारा भला करेगा!" ○ ○ ○

डायरीके पन्नोंसे

अब लौं नसानी अब ना नसैहों।
रामकृपा भवनिसा सिरानी
जागे पुनि ना डसैहों ॥
पायो रामनाम चिन्तामनि
उर कर तें न खसैहों ॥

वह बेचारा सुखुआ !

काशी

२६ अप्रैल '६०

"क्या बताऊँ भाईजी, आप लोगोंसे पहले मुलाकात हो गयी होती, तो मैं क्यों गलत रास्तेपर चला जाता !......"

कालेपानीकी सजा पाया हुआ सुखुआ नामका एक लम्बा-तड़ंगा *ज्वान पैरमें डण्डा-बेड़ी डाले मेरे बगलमें बैठा आपबीती सुना रहा था।*

बात है आजसे २८-३० साल पहलेकी।

सन् '३०-'३२ की गांधीकी आँधीने जब मुझे कॉलेजसे छुड़ाकर जेलके सीखचोंमें बन्द कर दिया, तो सबसे पहली बार मेरा उन लोगोंसे रात-दिनका सम्पर्क आया, जिन्हें लोग अपराधी, चोर, डाकू, बदमाश कहा करते हैं।

"अब तो वापस लौटनेका सवाल है नहीं। लग गया गलत रास्ते-पर, अब तो यह जिन्दगी है और जेल है। अपने कुकर्मोंका फल भोग रहा हूँ, भोगूँगा और भोगते-भोगते शायद किसी दिन जेलकी चहार-दीवारीके भीतर ही यह देह जल-गलकर ढेर हो जायगी।......"

कितने ही डाकों, कतलों आदिके जुर्मोंमें सुखुआको पचासों सालकी कड़ी कैदकी सजा मिली थी। एकाध बार वह जेलसे भाग भी चुका था। धोखेसे सोते समय किसी मुखबिरने उसे गिरफ्तार करा दिया था। अब जीवनमें उसे कोई रस नहीं था। राजनीतिक कैदियोंको जब उसने जेलमें आते देखा, देशभक्तिकी बात कुछ-कुछ उसकी समझमें आने लगी, तो वह हाथ मल-मलकर अफसोस करने लगा : "काश, आप लोगोंसे पहले मुला-कात हो जाती, तो मैं क्यों गलत रास्तेपर चला जाता ! मेरा यह लम्बा-तड़ंगा शरीर देशकी गुलामीकी बेड़ियाँ तोड़नेके काम आता !"

× × ×

अब लौं नसानी अब ना नसैहौं ।

रामकृपा भवनिसा सिरानी

जागे पुनि ना डसैहौं ॥

पायो रामनाम चिन्तामनि

उर कर तें न खसैहौं ॥

आज चुन्नीभाई कह रहे थे कि विनोबा शीघ्र ही चम्बलके बेहड़ोंमें जानेवाले हैं और वहाँके बदनाम डाकू भाइयोंकी समस्या सुलझानेवाले हैं। मईके पहले पखवारेमें बाबाके प्रवचनोंकी रिपोर्टिंगकी समस्या सिद्धराजजीके सामने है। मेरी इच्छा है कि आप जैसा व्यक्ति इस मौकेपर वहाँ रहे। ५ मईके लगभग बाबा आगरा पहुँचेंगे और उसके बाद चम्बलके क्षेत्रमें प्रवेश करेंगे। आप पखवारेकी कैद लेकर न आयें और रिपोर्टिंगके बजाय बाबाके अभियानपर दृष्टि रखें, तो बस है।

मैंने कहा : "ठीक है।"

चुन्नीभाई बोले : "तो मैं चर्चा करूँ सिद्धराजजीसे ?"

मैंने कहा : "कर सकते हैं।"

०००

सन् '४१-'४२ की नजरबन्दीमें भी जिन डाकुओंसे मेरा सम्पर्क आया, उनकी बातोंसे भी यही लगा कि ये भाई गुमराह हो गये, गलत रास्तेपर चले गये और जब उधर चले गये, तो वापस लौटनेका सवाल ही कहाँ उठता है ? एक बार जिसकी पीठपर डाकू, चोर, बदमाशका ठप्पा लगा, सो लगा ! फिर न तो समाज ही उसे अच्छी दृष्टिसे देख सकता है, न पुलिस ही। काली सूचीमें उसका नाम दर्ज हुआ, सो हुआ। वह चाहे न चाहे, अपराध करे न करे, उसके चरित्रपर कलंकका जो टीका लगा, वह छूट कहाँ पाता है ?

× × ×

पर क्या हमारे सोचनेका यह दृष्टिकोण सही है ? स्वस्थ है ? चोरको जिन्दगीभर 'चोर' कहकर दुतकारना ठीक है ?

डाकूको जिन्दगीभर 'डाकू' कहकर घृणाकी दृष्टिसे देखते रहना उचित है ?

नहीं, बिल्कुल नहीं।

यह मानवताको ऊपर उठानेका नहीं, नीचे गिरानेका रास्ता है। यह चोरको शातिर चोर, डाकूको पक्का डाकू और अपराधीको भयंकर अपराधी बनानेका सीधा और सस्ता रास्ता है !

× × ×

इधर जब गुजरातके महाराज—रविशंकर व्यासको पढ़ने-परखनेका मौका हाथ लगा, तो मेरा यह विश्वास पक्का हो गया कि यदि उचित रीतिसे इन लोगोंको हाथमें लिया जाय, इनके मानसमें जलती दिव्य ज्योतिको उकसाया जाय, तो ये गुमराह भाई भी मानवताके प्रकाश-स्तम्भ बन सकते हैं और जरूर बन सकते हैं। रविशंकर महाराजने इस क्षेत्रमें अपना जीवन होम कर असंख्य भाई-बहनोंको समाजका काँटा बननेसे बचाया है और उनके तमसाच्छन्न जीवनमें सत्य, ईमानदारी और श्रम-निष्ठाका दिव्य प्रकाश फैलानेमें सफलता प्राप्त की है।

× × ×

बाबा सबका : सब बाबाके !

हाथरस
१ मई '६०

कल शामको 'अपर इण्डिया' पकड़नेको जब वाराणसी स्टेशनपर पहुँचा, तो टिकटकी खिड़कीपर इतना लम्बा 'क्यू' लगा था कि गांधी स्मारक निधिके कमलाभाई अगर मेरा भी टिकट न खरीद लाते, तो शायद मुझे वह गाड़ी ही छोड़नी पड़ जाती। ट्रेनमें भीड़ थी। किसी तरह सीटपर ही बैठे-बैठे रात काटी। कमलाभाईको होल्डाल फैलाकर अपनी रीढ़ सीधी करनेका मौका जरूर मिल गया।

सुबह वे तो टूंडलामें दूसरी गाड़ी पकड़कर आगरा चल दिये, मैं आगे बढ़ा। हाथरस जंक्शनपर उतरकर बाहर आया, तो पता चला कि यहाँसे शहर छह मील दूर है। मुझे हाथरस किला जाना चाहिए। वहाँके लिए ट्रेन छूटनेमें अभी देर थी। इसलिए सोचा कि इक्के-ताँगेसे ही क्यों न चला चलूँ। शहर पहुँचकर खादी भण्डारसे पता लगाऊँगा कि बाबाका पड़ाव कहाँ है। पर उसके लिए परेशान नहीं होना पड़ा। शहर पहुँचनेसे पहले ही राजपुराके कस्तूरबा सेवा-केन्द्रकी सर्वोदय-साहित्यकी मोटर और विनोबा पदयात्री-दलके स्वागतका बड़ा-सा साइन-बोर्ड दिखाई पड़ा। वहींपर मैं उतर गया।

उत्तर प्रदेशके और बाहरके भी अनेक मित्रों और साथियोंके दर्शन हुए। नहाते समय जयदेवभाई मिले। बाबाको प्रणाम करने गया, तो बालभाई मुसकराकर बोले : "रिपोर्टिंग ?"

थोड़ी देरमें गोविन्दन भी आ गया। मैंने पूछा : "तुम भाई, कैसे ?"

बोला : "वल्लभस्वामीका तार मिला कि मईके पहले पखवारेकी बाबाकी रिपोर्टिंगके लिए पहुँचो !"

पदयात्रामें जानेका निश्चय

काशी
२८ अप्रैल '६०

आज सिद्धराजभाईने बुलाया था।

बोले : "बँगलोरसे वल्लभस्वामीने लिखा है कि 'अप्रैलके अन्तिम पखवारेमें बाबाकी रिपोर्टिंग तो फातमी साहब कर रहे हैं, मईके अन्तिम पखवारेमें लवणम्‌ने आनेको कहा है। बीचके लिए किसीको भेजना है।' आप इधर बीमारीसे उठे हैं, जा सकेंगे क्या ?"

मैंने कहा : "जा सकूँगा। चुन्नीभाईसे परसों बात भी हुई थी।"

मार्चभर मैं बिस्तरपर था। खाँसी और बुखारने बुरी भाँति पस्त कर दिया था। थोड़ासा भी चलनेमें थकावट महसूस होती थी, पर बाबाके साथ पदयात्राका आकर्षण मुझे खींच रहा था और दूसरा आकर्षण था इस बातका कि पता नहीं, चम्बलके बेहड़ोंमें बाबाकी अहिंसा क्या जादू बिखेरे !

मैंने 'हाँ' भर दी।

सिद्धराजभाई बोले : "तो कर दूँ वल्लभस्वामीको तार ?"

मैंने कहा : "जरूर।"

"तो आप कब रवाना होंगे ?"

मैं बोला : "३० अप्रैलको।"

ooo

बाबा सबका : सब बाबाके !

हाथरस
१ मई '६०

कल शामको 'अपर इण्डिया' पकड़नेको जब वाराणसी स्टेशनपर पहुँचा, तो टिकटकी खिड़कीपर इतना लम्बा 'क्यू' लगा था कि गांधी स्मारक निधिके कमलाभाई अगर मेरा भी टिकट न खरीद लाते, तो शायद मुझे यह गाड़ी ही छोड़नी पड़ जाती। ट्रेनमें भीड़ थी। किसी तरह सीटपर ही बैठे-बैठे रात काटी। कमलाभाईको होल्डाल फैलाकर अपनी टाँगें सीधी करनेका मौका जरूर मिल गया।

सुबह वे तो टूंडलामें दूसरी गाड़ी पकड़कर आगरा चल दिये, मैं आगे बढ़ा। हाथरस जंक्शनपर उतरकर बाहर आया, तो पता चला कि यहाँसे शहर छह मील दूर है। मुझे हाथरस सिटी जाना चाहिए। वहाँके लिए ट्रेन छूटनेमें अभी देर थी। इसलिए सोचा कि इक्के-ताँगेसे ही क्यों न चला चलूँ। शहर पहुँचकर खादी भण्डारसे पता लगाऊँगा कि बाबाका पड़ाव कहाँ है। पर उसके लिए परेशान नहीं होना पड़ा। शहर पहुँचनेसे पहले ही राजपुराके कस्तूरबा सेवा-केन्द्रकी सर्वोदय-साहित्यकी मोटर और विनोबा पदयात्री-दलके स्वागतका बड़ा-सा साइन-बोर्ड दिखाई पड़ा। वहींपर मैं उतर गया।

उत्तर प्रदेशके और बाहरके भी अनेक मित्रों और साथियोंके दर्शन हुए। नहाते समय जयदेवभाई मिले। बाबाको प्रणाम करने गया, तो बालभाई मुसकराकर बोले : "रिपोर्टिंग ?"

थोड़ी देरमें गोविन्दन भी आ गया। मैंने पूछा : "तुम भाई, कैसे ?"

बोला : "वल्लभस्वामीका तार मिला कि मईके पहले पखवारेकी बाबाकी रिपोर्टिंगके लिए पहुँचो !"

मैंने कहा : "यह खूब ! मैं भी तो इसीलिए आया ! अच्छा है— इन बुजुर्गोंको भी मिल बैठने दीजिए !"

× × ×

दोपहरके भोजनकी व्यवस्था दूरपर थी। जाने-आनेके लिए था कारका प्रबन्ध। कुछ भाइयोंको पहुँचाकर कार लौटी, तो काफी भाई खड़े थे, बहनें भी। मैं खड़ा-खड़ा फातमी साहबसे बातें कर रहा था, तो करणभाई, कपिलभाई दोनों बोले : "तुम लोग भी आ जाओ न ?" थोड़ी जगहमें सिकुड़-सिकुड़ाकर हम लोग बैठे, तो करणभाईने बाहर देखकर कहा कि "अरे, गीताबहन तो रही ही जाती है। आ जा न ?" दुबली-पतली छोटी-सी लड़की। किसी तरह बड़ी सकुचाती-सी बैठी। लौटते समय हमें मुक्त विचरण करते हुए आनेमें कारकी कशमकशसे कहीं अधिक अच्छी लगी —चिलचिलाती धूप !

× × ×

३ बजे बाबा रोजकी भाँति उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ताओंके बीच बोले। आज उन्होंने तत्त्वज्ञान छोड़कर व्यवहारकी चर्चा की और बुजुर्गोंको समझाया कि हमारे आन्दोलनमें बहुतसे नौजवान आये हैं, जिन्हें कि अपने यहाँ बनाये रखनेकी जिम्मेदारी हमारी है। नयी उम्रके इन तमाम लड़कोंका अहिंसाकी ओर झुकाव है और उसकी सूक्ष्मतामें वे गहरे उतरते हैं। माना, उनमें कुछ लोग जैसा चाहिए, वैसा जबानपर काबू नहीं रख पाते, कुछ लोग चाय पीते हैं, कुछ लोग सादगीसे नहीं रह पाते, तेल, साबुन-टायलेटपर भी कुछ खर्च करते हैं। वे अभीतक यह महसूस नहीं कर पाये कि यह सारा पैसा गरीबोंके पाससे आता है। इसलिए हमें बहुत कंजूसीसे एक-एक कौड़ी खर्चनी चाहिए। इन सब बातोंके बारेमें उन्हें तालीम देनी है। पर बुजुर्ग लोग अब उन्हें ज्यादा न कसें। नये जमानेको देखें। वे नये लड़कोंकी आदतोंको बर्दाश्त करते हुए उन्हें तालीम दें। पर यह ध्यान रहे कि हमें यह तालीम देनी है अत्यन्त आदरके साथ।

कैसा अच्छा उपदेश ! प्रेम, क्षमा, उदारता और सहनशीलता द्वारा देशके नये खूनको जीत लेनेका अचूक नुस्खा !

× × ×

भाईजी—राधाकृष्ण बजाज—भी आज यहाँ पहुँच गये। तीसरे पहर जब हम लोग बाबासे बात कर रहे थे, तो श्रीमद् राजचन्द्रजीके आश्रम-वाले कुछ नागरिक आ पहुँचे। हाथरसमें उनका एक आश्रम है। इन लोगोंने श्रीमद् राजचन्द्रजीका कुछ साहित्य बाबाको भेंट किया। चित्रोंमें उनका जीवन-वृत्त भी था। जनककी भाँति भोगमें त्यागका अनुपम आदर्श प्रस्थापित करनेवाले इस महापुरुषका बापूपर अत्यधिक प्रभाव पड़ा था। बाबा भी उससे कम प्रभावित नहीं थे। एक पुस्तक देखते हुए बोले : "सन् '१६ मे मैंने पढ़ा था इसे !"

× × ×

"दे दो अब भूमि-अधिकार !"

दुखायलभाईके इस गीतसे आज ५॥ बजे सायंकालीन प्रार्थना सभा आरम्भ हुई। आजके प्रवचनमें बाबाने इस बातपर जोर दिया कि हमें भौतिक शक्ति भी बढ़ानी चाहिए, नैतिक शक्ति भी। नैतिक उन्नतिके बिना भौतिक उन्नतिका कोई मूल्य नहीं। गुण-संवर्द्धन न हो और दौलत बढ़े, तो लोग गलत दिशामें जाते हैं, विषमता बढ़ती है, पैसेका गलत उप-योग होता है और देश निर्वीर्य बनता है। हमें सरकारी शक्तिकी भी जरूरत है, लोकशक्तिकी भी। दोनों हाथोंसे ताली बजनी चाहिए। ऊपरका हाथ जनताका हो, नीचेका सरकारका।

बाबाने कहा कि लोग हमसे पूछते हैं कि बाबा, भूदानमें आपको जो ४५ लाख एकड़ जमीन मिली है, उसे आप कब तक बाँट पायेंगे ? बाबा पूछता है कि बाबा तो जमीन बाँटेगा, आप सिर्फ तमाशा देखेंगे ? आप स्तुति-निन्दा करेंगे ? यह गलत है। आप सभी लोग तो बाबाके सेवक हैं। बाबा सबका है, सब बाबाके। कांग्रेसवाले हों या कम्युनिस्ट, हिन्दू हों या मुसलमान, जैन हों या ईसाई—सबके सब बाबाके सेवक हैं।

स्त्रियाँ प्रखर बनें !

चन्द्रवारा
२ मई '६०

ब्राह्ममुहूर्तमें श्री रमा रमण गोविन्द हरि' का नाम लेकर बाबा रोज चल पड़ते हैं। प्रातःकालीन प्रार्थना इन दिनों गाँवसे बाहर निकलकर खुले मैदानमें चलते-चलते होती है और उसके कुछ देर बाद चलता है जंगम विद्यापीठका पहला कार्यक्रम—मुलाकातें !

आइये, विनोबासे मुलाकात करें।

आजके मुलाकाती नम्बर एक हैं—ईरानी बाबा।

दोनों बाबा बातें कर रहे हैं। ईरानी बाबा कहते हैं कि "मेरे गुरुकी उम्र है ४५० साल। पामीरपर रहते हैं वे, कभी-कभी मुझे उनके दर्शन होते रहते हैं।"

विनोबाने बातोंके दौरानमें पूछ दिया : "यह तो बताइये कि आपका खर्च कैसे चलता है ?"

ईरानी बाबाने बातको यह कहकर उड़ा दिया कि "धन-दौलतको मैं बिल्कुल 'इम्मैटीरियल' (नगण्य) मानता हूँ।"

पर थोड़ी ही देरमें ईरानी बाबा कह उठे : "आज इस बातकी जरूरत है कि देशवासियोंको आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकारकी उन्नतिके बारेमें उपदेश दिया जाय।"

विनोबाने कहा : "तो मुझे आप दोनोंका उपदेश दीजिये। दस दिनका सूर्योदयसे पहलेका यही समय मैं देता हूँ आपको। बोलिये, देंगे ?"

ईरानी बाबा हिचकिचाये। बोले : "फिर कभी आ जाऊँगा। आज तो इतनी दूर खड़ाऊँ पहने पहने चलनेसे मेरे पैरमें छाले पड़ गये !"

चर्चामें मेहर बाबाका भी जिक्र आया। ईरानी बाबा बोले : "मेरी उनसे भेट हुई है। मेरे नाममें भी 'मेहर' आता है।"

विनोबाने कहा : "अब यह बाबा आ रहा है कुछ पकड़में !"

पारसियोंकी जपकी मालामें कितने गुरिया होते हैं, यह चर्चा चलनेपर ईरानी बाबाने कहा : "१०१ गुरिया होते हैं और १०१ ही नाम लिये जाते हैं।"

"कौन-कौन ?"

और तब वे अहुर्मज्दाके १०१ नाम गिना गये।

× × ×

छात्रोंकी एक छोटी-सी टुकड़ी अपने संगठनके सम्बन्धमें विनोबासे पूछने लगी। बाबाने कहा : अपनी मेहनतकी कमाईसे सब चार-चार आने जोड़कर चार-पाँच सौ छात्रोंका एक मण्डल बना लो। उसकी व्यवस्थाके लिए एक छोटा-सा अन्तर्वर्ती मण्डल बनाकर सर्वोदयके काममें जुट जाओ।

× × ×

एक विद्यार्थीने अहिंसाकी चर्चा करते हुए पूछा : 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति'—ऐसा क्यों कहा जाता है ?

बाबाने उसे समझाया कि डॉक्टर रोगीके अंगोंकी चीरफाड़ करता है, पर उसका लक्ष्य यही रहता है कि रोगीका कष्ट दूर हो। देखनेमें उसका कार्य हिंसाका-सा लगता है, पर वह हिंसा नहीं, अहिंसा है। इस प्रकारकी हिंसा यदि 'वैदिकी हिंसा' हो, तब तो उसे अहिंसा माना जा सकता है; पर वैदिकी हिंसाके नामपर अपने स्वार्थके लिए हिंसा करना और उसे हिंसा न मानना गलत है।

× × ×

योगशास्त्रके एक विद्यार्थीने अपने आसनोंके अभ्यास आदिका अनुभव बताते हुए बाबासे पूछा : मुझे आदेश दीजिये कि मैं क्या करूँ ?

बाबा बोले : तुम जो कर रहे हो, सो ठीक है। योगका अभ्यास करते रहो। गाँवोंमें उसका प्रचार भी करते रहो।

× × ×

पड़ावपर पहुँचते ही देखा कि ग्रामवधूटियाँ सिरपर जलसे भरे कलश रखे हुए बाबाके स्वागतमें बड़े उल्लाससे गा रही हैं :

घर आये हरिजन राम, धुरीने आनन्दा भये !

× × ×

बाबा जबतक हाथ-मुँह धोने गये, तबतक दुर्गाप्रसादजीकी गँजड़ी गमक उठी :

मेहनतकश मेहनत ही देखेगी,
मेहनतकी बाजार लगेगी !...
इन्सानकी बस्ती बोल रही है;
जनता आँखें खोल रही है !...

बाबाको आते देखा, तो दुर्गाप्रसादजीने जनतासे नारा लगवाया : "बोलो, यज्ञ भगवान्की जय !"

"यज्ञ भगवान्की जय !"

बाबाने यहींसे सूत्र पकड़कर चन्देलावाकी जनतासे पूछा : "तुमने 'यज्ञ भगवान्की जय'का मतलब भी समझा है या यों ही नारा लगा दिया ! जैसा बोलते हो वैसा करो, तब तो कोई बात है ! इस यज्ञमें आगमें घी नहीं जलाया जाता है। इसमें स्वार्थ होमना पड़ता है। पड़ोसीको, दुःखीको अपनेमेंसे हिस्सा देना पड़ता है। गाँवमें अगर दो सौ आदमी जमीनके मालिक हैं, तो हमें दो सौ दान-पत्र मिलने चाहिए। बूँद-बूँद दोगे, तो ५ मिनटमें कुल जमीन तय हो जायगी। सबको मिलकर यह काम करना है और इस गाँवमें ग्राम स्वराज्यका नमूना खड़ा करना है। इसमें जो कुछ करना है, तुम्हें ही करना है। हाँ, जो कुछ करो, उसका बोझा किसीको नहीं महसूस होना चाहिए।"

दुखानन्दभाईकी खँजड़ी फिर गमक उठी :

मेरा-तेरा मेल एक हो !

× × ×

इस गाँवमें ग्रामदानकी सम्भावना है। इसीलिए चलनेमें कुछ ज्यादा चक्कर पड़नेपर भी बाबा खासकर यहाँ लाये गये हैं। गाँववालोंसे कहा गया कि उनके आग्रहसे बाबा तो यहाँ आ गये। अब उन्हें मिल-जुलकर आपसमें तय करके ग्रामदान कर डालना चाहिए।

आपसमें मन्त्रणाके लिए लोग इधर-उधर बिखर गये।

× × ×

प्रादेशिक कार्यकर्ताओंकी बैठकमें बाबाने आज स्त्री-शक्तिका आह्वान किया। उन्होंने कहा कि स्त्रियोंमें त्याग, प्रेम और संयमकी शक्ति पुरुषोंसे कहीं अधिक है। इन शक्तियोंके होते हुए भी हमारी समाज-रचना क्यों नहीं बदल पाती ? उनसे यह काम लिया ही नहीं गया। विज्ञानके इस युगमें जब उसने मनुष्यके हाथमें विलक्षण शक्तियाँ दे दी हैं, तब उसका उपयोग केवल पुरुषके हाथमें रहे, यह मैं खतरनाक मानता हूँ।

उत्तर प्रदेशकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा कि यह दुनियाका पाँचवाँ राष्ट्र है। अमेरिका, रूस, चीन और जापानके बाद इसीका नम्बर है। पर यहाँ हमारी कितनी कार्यकर्त्रियाँ हैं ? कुल हिन्दुस्तानमें १०-१५ स्त्रियाँ ही काम कर रही हैं। ७ करोडकी आबादीवाले उत्तर प्रदेशमें कितनी स्त्रियाँ भूदानका काम कर रही हैं ? सरला, विमला, निर्मला ! यह हमारे लिए गौरवकी बात है कि निर्मला देशपाण्डे आज सर्व-सेवा-संघ की सेक्रेटरी है। मेरे लिए उसे छोड़ना कठिन था। उसे देकर मैंने हद दर्जेका त्याग किया है। वह मेरे पास रहती है, तो मुझे चिन्ता नहीं रहती। मैं क्या बोलता हूँ, वह मुझसे ज्यादा याद रखती है। पर जब उसके लिए मेरे पास माँग आयी, तो मैंने उसे दे दिया। कार्यकर्ताओंके साथ उसका अच्छी सम्बन्ध बन गया है। यह मुझे अच्छा लगता है।

सार्वजनिक क्षेत्रमें स्त्रियोंकी कमीका कारण बताते हुए बाबाने कहा कि ब्रह्मविद्यापर पुरुषोंने अपना एकाधिकार जमा रखा है। समाजने उन्हें इससे वंचित कर रखा था। यह गलत मूल्य बदलकर नये मूल्योंकी स्थापना करनी होगी। स्त्रियोंको अपना यह अधिकार स्वयं लेना होगा। अपनी कोमलताके गुणके विकासके साथ-साथ उन्हें प्रखर बुद्धिका भी विकास करना होगा। तभी वे समाज-रचना बदलनेमें सफल हो सकेंगी।

× × ×

अपराह्नमें चन्दवाराके ग्रामवासी बाबाके पास इकट्ठे हुए। देरतक चर्चा चलती रही। हमारे मेजबान, जिनकी हवेलीमें पड़ाव था—आगरामें निवास करते हैं। बाबाने उनसे कहा कि आपको आगरा छोड़कर यहीं आकर रहना होगा। वे बोले : 'जी!'

पता चला कि गाँवमें ७१ खातोंमें १००० बीघा जमीन है। इनमें बहुतसे खाते स्त्रियोंके नामसे हैं। बाहर गाँवके १६ मालिक हैं, जिनके पास १००० बीघा जमीन है।

बाबाने सुझाया कि चन्दवारावाले पहले अपनी जमीनका दान दें, फिर बाहर गाँववाले १६ आदमियोंसे इसके लिए कहा जाय। पहले नीचे-वालोंसे माँगा जाय, फिर ऊपरवालोंसे। हाँ, दबावसे काम न हो। जो काम हो, वह प्रेमसे हो।

प्रेमका बीज बोकर बाबाने गाँववालोंको सोचनेको छोड़ दिया।

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना सभामें बाबाने सत्य, प्रेम और करुणाकी व्याख्या करते हुए इस बातपर जोर दिया कि 'सत्याग्रही' को 'सत्यग्राही' भी बनना चाहिए। अपने पास तो सत्य हो ही, सामनेवालेके पास भी जो सत्य हो, उसे भी ग्रहण करना चाहिए। वे बोले कि सत्याग्रह किसीके

'खिलाफ' नहीं, किसीके 'साथ' होना चाहिए। जिसके साथ सत्याग्रह हो, उसके लिए सोलह आने प्रेम हो। करुणाका अर्थ है—ढूंढ़ना। हममें जो ज्यादा दुःखी हो, उसे खोजकर हम उसके प्रति प्रेम प्रकट करें। पानी नीचेकी ओर दौड़ता है। हम भी अपनेमें दुःखीको खोजकर उसका दुःख मिटायें। सत्य, प्रेम, करुणा—इन तीन गुणोंको यदि हम प्राप्त कर लें, तो बड़ा काम बनेगा।

सचमुच सत्य, प्रेम और करुणाकी त्रिपुटी हमारे जीवनमें आ जाय, फिर तो कहना ही क्या!

○ ○ ○

मथुरासे किसे प्रेरणा नहीं मिलती ?

माहाबाद (मथुरा)
३ मई '६०

आज अपराह्नमें नवाब साहबकी कोठीके विशाल हालमें उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ताओंके बीच बोलते समय बाबा गद्गद हो उठे। मथुरा और मथुराके प्यारे गोपाल कृष्णकी यादसे उनका हृदय भर आया। टप-टप आँसू टपकने लगे। बोले :

हिन्दुस्तानमें ऐसा कौन-सा हिन्दू है, जिसे मथुराके नामसे प्रेरणा नहीं मिली ? पाँच हजार सालसे भारत गोपाल कृष्ण' 'गोपाल कृष्णकी रट ही लगाये है। इसकी इतनी महिमा है कि इसे लेकर दक्षिणवालोंने एक स्वतन्त्र स्थान बनाया—मदुराई। दक्षिण भारत और मदुरामें भगवान् कृष्णके इतने भक्त निकले कि उसीसे रामानुजकी परम्परा फूट पड़ी। दक्षिणवाले उत्तरकी मथुराको 'बड़ी मदुराई' कहते हैं। भक्तिकी धारा उधरसे इधर आयी। यह सारी प्रेरणा मथुराके नामसे मिलती है। हमें आश्चर्य होगा कि अगर उस मथुरासे हमारे कार्यकर्ताओंको प्रेरणा न मिले! पिछली बार जब हम मथुरा आये थे, तो उत्तर प्रदेशवालोंने ५ लाख एकड़ जमीन भूदानमें प्राप्त करनेका संकल्प किया था। उसमेंसे काफी पूरा हुआ है। जिस कार्यकर्ताने थोड़ीसी भी जमीन प्राप्त की है, उसे पूरी सफलता मिली है, ऐसा मैं मानता हूँ।

आज प्रातः भ्रमणमें बाबा उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ताओंसे—करणभाई, कपिलभाई, जलेश्वरभाई आदिसे बातें करते रहे थे। उसकी चर्चा करते हुए वे बोले : आज करणभाई कहते थे कि "हमारे यहाँ जो २५-५० कार्यकर्ता हैं, उनका यदि परिवार बन सके, तो बड़ा काम बने।" मैं कहता हूँ कि इन कार्यकर्ताओंका एक आध्यात्मिक परिवार बननेमें कठिनाई कौन-सी है ? कौन-सी ताकत कम पड़ती है ? जहाँ काशी है, जहाँ प्रयाग

सायंकालीन प्रार्थनामें कुछ गेरुआ वस्त्रधारी साधुओंको देखकर बाबाको बाबा राघवदासजी याद आयी और उन्होंने साधुओंसे जोरदार अपील की कि वे भूदानका काम उठा लें। कहा : इसमें उन्हें बड़ा मजा आयेगा। मुँहमें नाम, हाथमें काम, दिलमें राम। वाणी, हाथ, चित्त—तीनोंमें राम। संन्यासियोंके शिरोमणि शंकराचार्यने माँग की : 'भूतदया विलास'। अद्वैत विचारमें प्राणिमात्रमें कोई फर्क नहीं माना जाता। यह बात जीवनमें कैसे आयेगी ? भूतदयाके विस्तारसे ही। भूदानका काम भूतदयाके विस्तारका ही तो काम है। साधु-समाज इसे उठा ले, तो वह एकदम उन्नत हो जायगा। इससे रामानुज, शंकर, तुलसीकी इज्जत बढ़ेगी।

दक्षिण-यात्राकी चर्चा करते हुए बाबा बोले : "मैसूरमें रामानुजके मठमें मैं गया था। गद्दीपर विराजमान वृद्ध महापुरुषने बड़े प्यारसे हमारा स्वागत किया और कहा कि 'हम जवान होते, तो जरूर आपके काममें लगते।' उन्होंने भूदानको आशीर्वाद दिया। जामवन्तने हनुमान्से कहा : मैं जवान होता, तो समुद्र पार कर जाता, पर तू क्यों चुप बैठा है !—'का चुप साधि रहेउ बलवाना' !"

पर हमारे तो असंख्य हनुमान् चुप ही साधे बैठे हैं !   ० ० ०

दूसरोंके लिए जीना सीखो !

घन्दौली (आगरा)
४ मई '६०

"दिल्लीवाले शंकरलाल शर्मा चलें !"

प्रातःकालीन पद-यात्रामें बालभाईकी आवाज सुनकर शर्माजी लपके और बाबाकी बगलमें हो लिये।

"अपना हाल-चाल सुनाइये।"—बाबाने कहा।

"अलेम्बिक कम्पनीमें था अभीतक। पिछले मार्चमें वहाँसे रिटायर किया। ३५) से १०००) तक गया। दिल्लीमें रहता हूँ। अपना मकान है। बेटी थी, उसकी शादी कर दी। कोई जिम्मेदारी नहीं। ब्राह्मनका बेटा हूँ। अध्यात्ममें रुचि है। आपका आशीर्वाद चाहता हूँ। मुझे चाहे जो काम दे दीजिये।"

"उम्र ?"

"चौवन साल।"

" 'गीता-प्रवचन' पढ़ी है ?"

"थोड़ी पढ़ी है। हिन्दी मुझे कम आती है। रावलपिण्डीमें पैदा हुआ। बचपनसे उर्दू पढ़ी है।"

"कोई बात नहीं। धीरे-धीरे उसे पढ़ डालो। हमारी और पुस्तकें भी पढ़ो। फिर मिलो।"

× × ×

"प्रोफेसर असरानी !"

असरानी साहबकी मुख्य समस्या थी राजनीतिमें रहते हुए सर्वोदयका काम करनेकी।

बाबा बोले : "यह 'भी' से काम नहीं बनेगा। पॉलिटिक्स 'भी' और सर्वोदय 'भी'। दोनोंका मेल नहीं बैठता। छोड़िये पॉलिटिक्स और पूरे-पूरे आ जाइये सर्वोदयमें।"

आत्मज्ञान और विज्ञानपर भी कुछ देरतक विज्ञानी प्रोफेसर चर्चा करते रहे; तालीमपर भी।

× × ×

और तब पुकार हुई दीवान शत्रुघ्न सिंहकी। भारतके सबसे पहले ग्रामदानी गाँव मंगरौठके प्रेरणापुंज दीवान साहबकी।

दीवान साहब कल ही आ गये थे और उन्होंने मुझे एक लम्बा पत्र दिखाया, जो उन्होंने बाबाके पास भिजवा दिया था। उसमें उन्होंने मंगरौठमें बैठनेका अपना निश्चय प्रकट करते हुए गाँवकी समस्याएँ उपस्थित की थीं। मैंने कल ही उनसे कह दिया था कि आप मंगरौठमें बैठ जायँ और राजनीतिसे हाथ जोड़ लें, तो मंगरौठकी कायापलट होते देर न लगेगी। आपकी लड़ाई-झगड़े और फितूर भी वहाँ बैठनेपर धीरे-धीरे शान्त हो जायँगे।

बाबाने भी दीवान साहबसे यही कहा।

बोले : "अब तो आप ६० के हो गये। अब सब झमेला छोड़कर मंगरौठमें बैठ जाइये जमकर। याद रखिये—क्षमा वीरस्य भूषणम्। पुरुषार्थ और पराक्रमकी शोभा है—क्षमा। सबसे प्रेम करिये। दूसरेसे वहाँ-तक बात करिये, जहाँतक उससे मेल बैठता है। विरोधकी बात उठाइये ही नहीं। ऐसा व्यवहार करेंगे, तो सालभरमें सब ठीक हो जायगा। एककी ताकत १० है, दूसरेकी ८। दोनों आपसमें भिड़ जाते हैं। नतीजा यह होता है कि देशको १० – ८ = २ का लाभ मिलता है। दोनों मिलकर रहें, तो १० + ८ = १८ का लाभ देशको मिलेगा।"

"जो आज्ञा!"

× × ×

स्वामी सियारामके भक्त प्रोफेसर कृष्णकुमार, कानपुरके रिटायर्ड

Smile a while
And while you smile
Another smiles...
And the smile goes on miles and miles
Because *you* smile.

मुसकराना, हँसना सचमुच छुतही बीमारी है। एकको लगी कि मीलों फैलती जाती है वह !

× × ×

मिस माथेर इंग्लैण्डसे अपने पिताके साथ विश्वके विभिन्न अंचलोंकी यात्रा करनेके लिए जीपपर निकली है। दो-तीन दिनसे हमारे साथ चल रही है। शर्माजी इन लोगोंको जब-तब सर्वोदयकी विचारधारा समझाते हैं। आज माथेर साहबको पेचिश हो गयी है। परेशान हैं बाप-बेटी दोनों। गोविन्दनकी तबीयत भी खराब हो गयी है। डॉक्टर ललित उसे आगरा लिवा ले गये हैं। कई दिनसे बड़ा खराब पानी पीनेको मिल रहा है हम लोगोंको। बेचारे विदेशियोंके लिए तो और भी मुसीबत ! ○○○

बेहड़ोंमें बागियोंका गिरोह

श्री यदुनाथ सिंह बागियोंको समझाते हुए

चम्बलके बेहड़ोंमें बागी

राम आले डाकू कौन है ?

आगरा
५ मई '६०

कल रात मार्गनसे हमारी बहस चल पड़ी—बाइबिलके बारेमें।

नया मुल्ला है मार्गन। २७ सालका यह अंग्रेज नौजवान पादरी बननेकी तैयारीमें भारतका चक्कर लगा रहा है। विनोबाके पास आया है उसी सिलसिलेमें।

मैंने कहा : बाइबिलका सर्वोत्तम अंश है—'सर्मन ऑन दि माउण्ट' (पहाड़ीपरका उपदेश) ।* पर 'नया मुल्ला प्याज ज्यादा खाता है'। ब्रिस्टल युनिवर्सिटीका यह ग्रेजुएट मुझसे घण्टों उलझा रहा। उसका कहना था कि 'ऐसा नहीं। 'सर्मन ऑन दि माउण्ट' बाइबिलका एक 'अच्छा' अंशमात्र है, सर्वोत्तम अंश नहीं।' उसकी दृष्टिसे सर्वोत्तम अंश है—कुछ नगण्य सी दकियानूसी बातें, जिनपर उसकी 'चर्च' में बहुत महत्त्व दिया जाता है।

हमारे 'घण्टीजी' (घण्टी बजानेवाले भाई) ने रातको ही कह दिया था कि गाँवमें कोई इस कोनेपर ठहरा है, कोई उस कोनेपर; इसलिए सुबह मैं हर जगह घण्टी बजाने नहीं पहुँच पाऊँगा। आप लोग समयसे उठकर यात्रामें शामिल हो जायँ।

नतीजा साफ था। देरसे सोये, देरसे उठे। सो भी तब, जब कपिलदेव जगाने आये। बोले : "उठिये-उठिये, चार बज गये। बाबा अब निकलने ही वाले हैं।"

हम लोग निपट-निपटाकर जब बिस्तर लेकर सामानके पड़ावपर

* देखिये, परिशिष्ट २।

पहुँचे, तो पता चला कि बाबा कोई २५ मिनट पहले निकल चुके हैं। बिस्तर वहीं छोड़ हम लोग सरपट आगे बढ़े। पर यह थोड़ा-सा अन्तर पार करनेमें हमें कई मील लग गये। मार्गन कभी-कभी मौजमें आकर नाचता-कूदता मेहरोत्राके साथ कदम-कदम मिलाकर लड़ाईके गीत गाता। ब्रिटिश सेनाका सैनिक रह चुका है वह बरसों। अपने पुराने गीत वह पूरी लयके साथ गाता :

"माई फादर नोज मिस्टर चर्चिल
मिस्टर चर्चिल नोज माई फादर
आई नो माई फादर
माई फादर नोज मिस्टर चर्चिल…"

× × ×

रास्तेमें एक जगह देखा, विनोबाके स्वागतके लिए सड़कके किनारे चौकी आदि बिछी थी, लस्सी-पानीका भी प्रबन्ध था। हम पहुँचे, तो हमें भी लस्सी मिली। तभी एक वृद्ध-से सज्जन बिगड़ते दीख पड़े। कह रहे थे चिल्ला-चिल्लाकर :

'मेंडन-मेंडन मारे फिरेंगे ऐसेई !'

बहुत नाराज थे वे विनोबापर : "हम सारी रात यहाँ स्वागतकी तैयारीमें लगे रहे। इन्हें इतनी फुर्सत नहीं कि एक मिनट यहाँ रुक जायँ ! बड़ा घमण्ड हो गया है इन्हें। ऐसे ही मेड़ों-मेड़ों मारे फिरते रहेंगे जिन्दगीभर !…" हम लोगोंने बहुत कोशिश की उन्हें समझानेकी कि बाबा इस तरह बीचमें रुकते नहीं, पर वे भला क्यों मानने लगे ?

× × ×

आगरा ज्यों-ज्यों निकट आने लगा, त्यों-त्यों दर्शनार्थी भीड़ अधिकाधिक उमड़ने लगी। बाबा नाश्तेके लिए एक जगह रुके, तो हम लोग आगे निकल गये। मार्गनको आगे जाकर बाबाके फोटो भी लेने थे। जमुना पार कर शहरमें प्रवेश करनेपर एक जगह भीड़में मिस माथेर हमें

निक गयी, खादीके रंग बिरंगे परिधानमें। उसे हसी निराकर हम लोग आगे बढ़े, तो विनोबाके साथ हजारोंकी भीड़का यह रेला आया कि कोई किधर गया, कोई किधर।

× × ×

बेलनगंज, भैरोनाला, जीवनमण्डी, विजयनगर कोलोनी होते हुए हम लोग विश्वविद्यालयके छात्रावासमें पहुँचे, जहाँ हमारे तीन दिनके निवासका प्रबन्ध है।

हाथ-पैर धोकर बाबा मचपर आये और एकत्र भीड़को सम्बोधित करते हुए बोले : इससे पहले मैं दो बार आगरा आ चुका हूँ। ८॥ सालसे हमारी पदयात्रा चल रही है। इसकी हमें कोई थकान नहीं महसूस हो रही है। लगता है कि अभी हमारी बाल्यावस्था ही चल रही है। भगवान‌की प्रेरणा लेकर हम सर्दी, गर्मी, बरसातमें घूम रहे हैं। भगवान् ही हमें घुमा रहा है। भारतमें ६० सालमें ही परलोक जानेका पासपोर्ट मिल जाता है। हमारी उम्र अब ६५ सालकी है। अब हम जो जी रहे हैं, सो भगवान्‌का स्वतन्त्र इनाम है। हमारी उम्र खतम हो गयी है और काम भी खतम हो गया है। अब तो हम खेल रहे हैं।

येलवालमें हुए नेता-सम्मेलनकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा कि उसमें पण्डित नेहरूसे लेकर नम्बूदरीपादतक सभी 'नकार' इकट्ठे हो गये थे। सबने मिलकर 'हँकार' किया और भूदान-कामको बढ़ावा देनेका निश्चय किया। उन्होंने यह मान लिया कि भूदान और ग्रामदानसे देशकी भौतिक उन्नति भी होती है और नैतिक भी। इससे बढ़कर और क्या चाहिए ? भूदानकी यह तदबीर सभी नेताओंको अपील कर गयी, लेकिन उन्होंने यह नहीं कहा कि कानूनसे जमीन नहीं लेंगे।

मेरठमें प्लानिंग कमीशनके लोग बाबासे मिले थे, उसकी चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि सब प्रांतोंमें 'सीलिंग' करनेके बाद ज्यादासे ज्यादा दस लाख एकड़ भूमि मिलेगी। बाबा तो उसके बिना ही ८॥ लाख एकड़ जमीन भूमिहीनोंमें बँटवा चुका है। यों उसे ४५ लाख एकड़ जमीन मिल

मेरठमें जब उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ता एकत्र हुए, तो करणभाईने बाबासे प्रार्थना की कि उत्तर प्रदेशके अनेक प्रमुख कार्यकर्ता आज यहाँ उपस्थित हैं। आप हमें आदेश दीजिये कि हम लोग किस प्रकार कार्य करें।

बाबाने कहा कि आज देशमें अखिल भारतीय सेवकत्व विकसित करनेकी आवश्यकता है। कारगर अखिल भारतीय सेवकत्व उन्हींका हो सकता है, जो कोई संदेश लेकर जायँ। पुराने जमानेमें दयानन्द, रामकृष्ण, लोकमान्य घूमे। जिसके पास जितना गहरा पैगाम था, उसका उतना ही गहरा असर पड़ा।

बाबाने बताया कि उत्तर प्रदेशके लोग सारे भारतमें जानेकी विशेष स्थितिमें हैं। उनकी भाषा हिन्दी है, जो हिन्दुस्तानकी आम बोलचालकी भाषा है। आप सर्वोदयका पैगाम लेकर सब जगह जा सकते हैं। यह पैगाम ऐसा है, जो जाति, भाषा, मजहब और राजनीतिका भेद नहीं करता और आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टिसे भी मानवके दिलोंके टुकड़े

नहीं करता। वह एक बाजूसे अध्यात्मको पकड़ता है, दूसरी बाजूसे व्यवहारको। वह ऐसा पैगाम है, जो सारे विश्वको एक करनेवाला है।

सर्वोदयकी व्याख्या करते हुए बाबा बोले कि हमें यह बात न भूलनी चाहिए कि रुचि-भेदसे, प्रकृति-भेदसे कुछ लोग इधर-उधर चले गये हैं, पर वे सब हैं हमारे ही और हम उनके हैं। जो सर्वोदयवाला है, वह तो हमारा है ही, पर जो हमसे मतभेद रखता है, वह भी हमारा ही है। कुछ लोग क्षेत्र चुनकर वहाँ जमकर बैठें। कुछ लोग व्यापक प्रचारके लिए सारे देशमें फैल जायँ। जो जहाँ है और जैसा है, वहाँ उसका वैसा लाभ उठाना चाहिए।

× × ×

अपराह्नकी मुलाकातोंमें जान मायेर और उसकी बेटी मिस मेरीकी मुलाकातमें अहिंसाकी अच्छी चर्चा हुई।

उनका पहला प्रश्न था चीन और उसके आक्रमणके सम्बन्धमें। बाबाने कहा कि चीन हमारा पड़ोसी राष्ट्र है। उसके साथ मैत्रीपूर्ण वार्तासे ही सारी बातें तय करना हमारा कर्तव्य है। संयुक्त राष्ट्रसंघमें उसे स्थान न देना अन्याय है।

मिस मेरी इंग्लैण्डमें मजदूरिनका जीवन बिता चुकी है। उसने कहा कि कोई दुर्व्यवहार करता, तो मैं शान्त रहती। उसका अच्छा असर पड़नेके बजाय अकसर ऐसा ही अनुभव करनेको मिलता रहा कि लोगोंका दुर्व्यवहार और बढ़ता ही जाता है। शान्त रहनेसे लोग मानते हैं कि यह दब्बू है और इसे चाहे जितना सतानेमें कोई डर नहीं है। तो व्यक्तिगत जीवनमें अहिंसाका प्रयोग कैसे किया जाय ?

बाबाने उसे समझाया कि उसके लिए अहिंसामें पूरी श्रद्धा रखनी पड़ेगी और अन्यायको शान्तिपूर्वक सहन करनेका साहस रखना होगा। हमें अत्याचारका बदला अत्याचारसे नहीं, पत्थरका बदला पत्थरसे नहीं देना है। ऐसा लग सकता है कि हमारी हार हो रही है, पर हताश और दुःखी होनेकी जरूरत नहीं। हम दृढ़तासे डटे रहेंगे, तो हमारी विजय

होती है। हाँ, हममें इतनी तैयारी रहनी चाहिए कि यदि प्राणोंका भी न्योछावर करना पड़े, तो हम अहिंसाके पालनके लिए प्रसन्नतापूर्वक प्राणोंका विसर्जन कर दें। ईसाने सूलीपर लटक करके भी तो यह मर्यादा प्राप्त की है!

बहनोंका अन्तिम सवाल था कि स्त्री-पुरुषमें आप क्या भेद करते हैं और अपने जीवनको सम्पूर्ण बनानेके लिए तथा जिसमें अपने जीवनका लक्ष्य पूरा करनेके लिए स्त्रियाँ क्या करें?

बाबाने कहा कि आध्यात्मिक दृष्टिसे, आन्तरिक दृष्टिसे स्त्री और पुरुषमें कोई भेद नहीं। बाह्य दृष्टिसे थोड़ा अन्तर है। मातापर पारिवारिक जिम्मेदारी भी रहती है, सामाजिक जिम्मेदारी भी। स्त्रियोंको आगे आकर अहिंसाके क्षेत्रमें काम करना चाहिए। उन्हें सेनामें भरती नहीं होना चाहिए। उन्हें मातृत्वकी भावनाका विकास करना चाहिए। वे युद्धमें सहायिका न बनें, बल्कि उसे रोकनेका काम करें और प्रेमका विस्तार करें। तभी उनके जीवनका लक्ष्य पूरा होगा। इसीमें उनके मातृत्वका गौरव है। हमारे यहाँ जननीको 'स्वर्गादपि गरीयसी' कहा गया है। उस गौरवकी उन्हें रक्षा करनी चाहिए।

× × ×

भारत सेवक-समाजके ५ जिलोंके कार्यकर्ता बाबासे मिले, तो बाबाने उन्हें सुझाया कि वे सब रचनात्मक संस्थाओंका सहयोग लेकर मिला-जुला कार्यक्रम बनायें। एक बहनने सवाल किया कि दहेजकी समस्या कैसे सुलझे? तो बाबाने कहा : मैं तो उसे कोई समस्या नहीं मानता। हर घरमें लड़के भी होते हैं, लड़कियाँ भी। इस हाथ दे, उस हाथ ले। कहते हैं, काशीमें दो पण्डितोंने आपसमें तय किया कि मैं तुझे एक लाख रुपयेका संकल्प करता हूँ, तू मुझे कर दे। उसने उसे एक लाखका संकल्प कर दिया, उसने उसे! न इसे देना था, न उसे! झगड़ा खतम!

एक नौजवानने हृदय-परिवर्तनकी बात उठायी। बाबाने कहा कि औसत समाज कभी दुष्ट नहीं होता। हृदय-परिवर्तन कोई आश्चर्यकी बात

नहीं। जवान लोगोंको चाहिए कि वे हमारे गाँव देहातोंमें घूमकर देखें स्वाद लूटें। शहरोंमें बड़ी आरामसे होती है। यहाँ तो बड़ी सादगी है। अच्छा आराम हुआ, बस !

× × ×

आगराके सर्वोदय मित्रमण्डलवालोंने कहा कि हम 'भूदान-यज्ञ' की ७५० प्रतियाँ मँगाते हैं। हम उसके २०-२५ हजार ग्राहक बनाना चाहते हैं।

बाबाने कहा : ५ लाखकी आबादीमें एक लाख परिवार हैं यहाँ। ८५ हजार तो ग्राहक बनाओ। पहले छोटा लक्ष्य लो—१० हजारका। फिर आगे बढ़ो। घर घरमें सम्पर्क बढ़ाओ। जनशक्ति कायम करो। व्यापारियोंसे सम्पत्ति-दान लो। आरम्भमें त्याग, फिर भोग, फिर त्याग—यह सूत्र याद रखो। इसमें घण्टे-दो घण्टे देनेवाले सेवक तैयार करो।

× × ×

व्यापारियोंसे बाबाने कहा कि आप सियासतसे अलग रहें। सियासी पार्टियोंसे आप दब जाते हैं, तो अपने धर्मसे चूकते हैं। आप निश्चय कर लीजिये कि हम सियासी पार्टियोंका दबाव नहीं मानेंगे। सम्पत्ति-दान दीजिये और मिल-जुलकर सर्वोदयके प्रचारकी योजना बनाइये।

एक व्यापारीने कहा कि बाबा, दिल्ली १२५ मील है, वहाँ माल भेजनेका ।) मन रेल-भाड़ा पड़ता है और जोधपुर २७० मील है, उसका १०), ऐसी नीतियोंके कारण ही भ्रष्टाचार और विषमता फैलती है। यह मिटनी चाहिए।

बाबा : जो चीज अब 'नार्मल' (सामान्य) बन गयी है, उसमें दोष क्या ? पैसेकी कीमत स्थिर न रहनेसे सब लोग पैसा जुटानेके फेरमें पड़े हैं। पैसा टहरा स्थंगा। व्यापारके मूलमें यही अस्थिर कल्पना है। व्यापारियोंको यह मर्यादा बाँध लेनी चाहिए कि वे सामूहिक तौरपर जान-बूझकर पाप न करेंगे। दवामें मिलावट करना बीमारोंकी जिन्दगीके साथ खेल करना है। खाद्य पदार्थोंमें मिलावट करना, घीमें मिलावट करना, गल्लेका

यह संन्यासका सच्चा अर्थ है। यह ठीक है कि जिसमें फँसाव है, वैसा काम न करे। जहाँ वैसा खतरा है, उन कामोंमें न फँसे। पर कहीं मैला पड़ा है, वहाँ झाड़ू लगानी ही चाहिए। कोई गिर गया है, उसे उठाना ही चाहिए। हाथ हैं, तो उनसे सेवाका काम करना ही चाहिए। संन्यास इसमें आड़े नहीं आता। हाँ, फँसाववाला काम न करे। एक जैन मुझसे कह रहे थे कि बीमारकी सेवा करना पाप है! उससे कर्मक्षयमें बाधा आती है। कर्मक्षयमें बाधाकी बात अपने लिए माननी चाहिए। जो भोग मेरे शरीरपर आ पड़ा है, उसे मैं भोग लूँगा। पर दूसरेकी सेवा तो करनी ही चाहिए। यह भी क्या धर्म और यह भी क्या संन्यास कि हम अपने पासकी चीज दूसरेको दे ही नहीं सकते!

× × ×

विभिन्न पार्टियोंका एक डेपुटेशन बाबासे मिला। उनमें कोई प्रजा-सोशलिस्ट पार्टीका था, कोई सोशलिस्ट पार्टीका; कोई जनसंघका था, कोई और।

इन लोगोंने पुलिसपर यह आरोप लगाया कि बाह क्षेत्रमें पुलिसके जुल्मोंके कारण ही लोग डाकू बननेको विवश हुए हैं। जनता पुलिससे भी

पीड़ित है, डाकुओंसे भी। जो लोग पुलिसके जुल्मोंका विरोध करते हैं, उन्हें तरह-तरहसे फँसानेकी कोशिश की जाती है। सार्वजनिक कार्यकर्ताओंपर झूठे मुकदमे चलाये जाते हैं। इससे भी पुलिसका आतंक छाया रहता है।

बाबाने कहा कि "आपको अगर पुलिसके व्यवहारसे शिकायत है, तो आप मुख्य मन्त्रीसे कहिये, कमलापति त्रिपाठीसे कहिये। उनसे मिलिये और अपनी शिकायतें उनके सामने रखिये।"

"पर वे लोग तो हमारी बातें सुनते ही नहीं!"

बाबा : "सुनेंगे क्यों नहीं ? हाँ, आपकी शिकायतोंके पीछे कोई Political Capital बनानेका, कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं होना चाहिए। ऐसा नहीं होगा, तो वे लोग जरूर ही आपकी बात सुनेंगे।"

"एक सज्जनको दिनमें लाकर गोली मार दी गयी और कह दिया गया कि डाकू लोगोंने मार डाला। इन्दिरा गांधीसे कहा गया, पर कुछ हुआ नहीं। आप सरकारसे कहिये न!"

बाबा : "इन सब बातोंका हल मेरे हाथमें नहीं। मैं आपके घर आकर आपकी रसोई नहीं पकायेगा। ऐसे कामके लिए जनशक्ति चाहिए। ५ लाखकी सेवाके लिए आपके पास ५० कार्यकर्ता भी हैं क्या ? इस बारेमें हम सरकारसे तो नहीं; सरकारोंकी सरकार—जनतासे कहेंगे। हम अभी बाहके हिस्सोंमें आ रहे हैं। भिण्ड-मुरैनाकी तरफ जा रहे हैं। लोग इसे 'डाकुओंका क्षेत्र' कहते हैं। बेचारे सज्जनोंकी कोई कीमत ही नहीं।"

"आप बाहके भीतरी हिस्सोंमें जरूर पधारिये और वहाँकी हालत अपनी आँखों देख लीजिये। इससे पीड़ित जनताको राहत मिलेगी।"

बाबा : "मैं अपने रास्ते ही जाऊँगा।"

× × ×

सार्वजनिक सभाका समय हो रहा था। सुबह बाबाको लम्बा रास्ता तय करना पड़ा और दिनभर भी अत्यधिक व्यस्त रहना पड़ा। तब उनसे कहा गया कि "बाबा, सभाका समय हो रहा है। पालीवाल पार्क चलना है।"

विभिन्न पार्टियोंका एक डेपुटेशन बाबासे मिला। उनमें कोई प्रजा-सोशलिस्ट पार्टीका था, कोई सोशलिस्ट पार्टीका; कोई जनसंघका था, कोई और।

इन लोगोंने पुलिसपर यह आरोप लगाया कि बाह क्षेत्रमें पुलिसके जुल्मोंके कारण ही लोग डाकू बननेको विवश हुए हैं। जनता पुलिससे भी

पीड़ित है, डाकुओंसे भी। जो लोग पुलिसके जुल्मोंका विरोध करते हैं, उन्हें तरह-तरहसे फँसानेकी कोशिश की जाती है। सार्वजनिक कार्यकर्ताओंपर डण्डे बरसाये जाते हैं। शहरमें भी पुलिसका आतंक छाया रहता है।

बाबाने कहा कि "आपको अगर पुलिसके व्यवहारसे शिकायत है, तो आप मुख्य मन्त्रीसे कहिये, कमलापति त्रिपाठीसे कहिये। उनसे मिलिये और अपनी शिकायतें उनके सामने रखिये।"

"पर वे लोग तो हमारी बातें सुनते ही नहीं !"

बाबा : "सुनेंगे क्यों नहीं ? हाँ, आपकी शिकायतोंके पीछे कोई Political Capital बनानेका, कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं होना चाहिए। ऐसा नहीं होगा, तो वे लोग जरूर ही आपकी बात सुनेंगे।"

"एक शख्सको दिल्लीसे लाकर गोली मार दी गयी और कह दिया गया कि डाकू लोगोंने मार डाला। इन्दिरा गांधीसे कहा गया, पर कुछ हुआ नहीं। आप सरकारसे कहिये न !"

बाबा : "इन सब बातोंका हल मेरे हाथमें नहीं। सूर्य आपके घर आकर आपकी रसोई नहीं पकायेगा। ऐसे कामके लिए जनशक्ति चाहिए। ५ लाखकी सेवाके लिए आपके पास ५० कार्यकर्ता भी हैं क्या ? इस बारेमें हम सरकारसे तो नहीं; सरकारोंकी सरकार—जनतासे कहेंगे। हम अभी बाढ़के हिस्सेमें जा रहे हैं। भिण्ड-मुरैनाकी तरफ जा रहे हैं। लोग इसे 'डाकुओंका क्षेत्र' कहते हैं। बेचारे सज्जनोंकी कोई कीमत ही नहीं !"

"आप बाढ़के भीतरी हिस्सोंमें जरूर पधारिये और वहाँकी हालत अपनी आँखों देख लीजिये। इससे पीड़ित जनताको राहत मिलेगी।"

बाबा : "मैं अपने रास्ते ही जाऊँगा।"

× × ×

सार्वजनिक सभाका समय हो रहा था। सुबह बाबाको लम्बा रास्ता तय करना पड़ा और दिनभर भी अत्यधिक व्यस्त रहना पड़ा। तब उनसे कहा गया कि "बाबा, सभाका समय हो रहा है। पालीवाल पार्क चलना है।"

"अब इतनी दूर मुझे और चलाओगे ? यह तो मुझपर अन्याय है। जाने दो, कैंसिल करो आजकी सभा !"

गम्भीर स्वरमें बाबाको ऐसा कहते देख करणभाई आदि सभी कार्यकर्ता सन्न रह गये। तब लल्लू दादाने अपना ब्रह्मास्त्र फेंका : "बाबा, मैं अभी देख आया। तार उठाकर बीचसे रास्ता निकाल लिया है। उससे सिर्फ ३ फर्लांग ही चलना पड़ेगा। अब हम लोगोंके लिए इतना कष्ट तो आपको स्वीकार करना ही पड़ेगा !"

दादाका आग्रह भला बाबा न मानें !

× × ×

और शामकी सार्वजनिक सभा !

सबसे पहले नगरप्रमुख शम्भूनाथ चतुर्वेदीने महापालिकाकी ओरसे बाबाका अभिनन्दन किया। मंचपर ढेबरभाईके साथ कितने ही संसद्-सदस्य और कमिश्नर, कलक्टर तथा अन्य अधिकारी बैठे थे।

पालीवाल पार्कमें ३० हजारसे अधिककी भीडमें ऊँचे मंचपरसे बाबाने घोषणा की कि आजकी दुनियामें सियासत और मजहबोंके दिन लद गये। अब तो विज्ञान और आत्मज्ञानके समन्वयके दिन आये हैं। आज विज्ञान पुकार-पुकारकर कह रहा है कि अगर तुमने मेरे-तेरेका भेद नहीं मिटाया, तो तुम खुद मिट जाओगे।

बाबाने आगरासे यह माँग की कि वह हमारे मुनिजी—बाबूलाल मित्तल जैसे ब्रह्मविद्याके आधारपर निष्काम सेवा करनेवाले पचास सेवक दे। बोले : आगराके लिए मेरा आकर्षण ताजमहलके लिए नहीं है, बल्कि इसलिए है कि यहाँसे मुझे मित्तलजी जैसा कार्यकर्ता मिला है।

चम्बल क्षेत्रकी अपनी यात्राकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा :

> अब हम भिण्ड-मुरैनाकी तरफ जा रहे हैं। आज सबेरे किसीने हमसे कहा कि "आप डाकू-क्षेत्रमें जा रहे हैं !" हमने कहा कि जी ना, हम सज्जनोंके क्षेत्रमें जा रहे हैं, डाकुओंके क्षेत्रमें नहीं। भिण्ड-मुरैना देशके अन्य क्षेत्रोंकी भाँति सज्जनोंका

क्षेत्र है। डाकू कौन है और कौन नहीं है, इसका फैसला करनेवाला तो परमेश्वर है। कुछ लोग दुनियामें डाकू कहे जाते हैं। यह जरूरी नहीं कि केवल वे ही डाकू हों। परमेश्वरकी निगाहमें दूसरे अधिक गुनहगार साबित हो सकते हैं। हम कोई मसला हल करने नहीं जा रहे हैं। हम तो सज्जनोंकी सेवाके लिए ईश्वरके सेवकके नाते घूम रहे हैं। एक दिन ऐसा आयेगा कि हमारा ही मसला हल हो जायगा !

× × ×

पालीवाल पार्कमें सभा समाप्त होनेके पहले ही बत्तियाँ जल गयी थीं। लौटते समय पण्डित रामसूरत मिश्र मिल गये। कुछ देर उनके साथ टहलना रहा। वे आगरा जेलके अपने प्रवासकी पुरानी स्मृतियाँ सुनाते रहे।

लौटकर भोजनादिके उपरान्त रात्रिकालीन प्रार्थना की। गोविन्दनकी तबीयत अभी ढीली है। वहाँ शानीजीकी शानकी बातोंका हम लोग रस लेते रहे और ठहाके लगाते रहे। फिर कमरेमें फातमी साहब तथा अन्य साथियोंसे देरतक गप-शप चलती रही। पता नहीं, कब नींदने अपनी चादर फैला दी !

○ ○ ○

काशीको सर्वोदय-क्षेत्र बनाइये !

आगरा

६ मई '६०

भावुकोंकी कल्पना-लहरीका अनुपम प्रतीक है ताजमहल। कवि और कलाकार न्योछावर हैं प्रेमकी इस उज्ज्वल और पवित्र समाधिपर! संगमरमरकी यह अनोखी रचना विश्वके सप्त आश्चर्योंमें अपना स्थान बना बैठी है, तो इसमें आश्चर्य ही क्या? विश्वके कोने-कोनेसे लोग इसके दर्शनके लिए भारत आते हैं। आजसे पचीस साल पहले जब कोई सालभरतक मुझे आगरामें निवास करनेका अवसर मिला था, तो प्रायः रोज ही रातको शाहजहाँ पार्ककी सैरको निकल जाता और ताजके किसी मीनारपर बैठकर शान्त रजनीका सौन्दर्य निहारा करता था! कहाँ गये वे सोनेके-से दिन और कहाँ गयीं वे चाँदीकी-सी रातें!

× × ×

कल बाबाने कहा कि दो बार मैं आगरा आया, पर ताजमहल नहीं देखा। बचपनमें चलता-फिरता बाइसकोप देखा था। बाइसकोपवाला एक-एक पैसेमें तस्वीरें घुमा-घुमाकर गाता-गाता दिखाता जाता था—"आगरेका ताज देखो! झाँसीकी रानी देखो! ग्वालियरका किला देखो!" अबकी दफा तीन दिनका मुकाम है यहाँपर। तो ताजमहल भी देख लूँगा। कौन जाने, फिर कभी इधर आनेको मिला, न मिला!

× × ×

हाँ, तो बड़े तड़के ही हम लोग निकल पड़े ताजकी सैरको। बाबाके साथ अन्तेवासी तो थे ही, नगरके भी बहुतसे लोग आ गये थे। महापालिकाकी कृपासे सड़कोंपर बहुत अँधेरे ही छिड़काव हो गया था, पर

व हम ताजके द्वारपर पहुँचे, तो दरवाजेपर प्रतीक्षामें ही बीस मिनट निकल गये। तब कहीं ताजका फाटक खुला।

ऊषाकी मनोरम वेला, यमुनाका पावन तट और श्वेत संगमरमरकी प्रेमी युगलकी ये अनोखी समाधियाँ ! सब लोग भावविभोर थे। बाबाने दोनोंकी समाधियोंपर शान्ति पाठ किया। मीनार खुले न थे, इसलिए बाबा उनपर चढ़ नहीं सके। ताजकी दीवालों और दर्वाजोंपर लिखी कुरानशरीफकी आयतें पढ़ने-पढ़ानेकी भी बाबाने कोशिश की, पर अधिक सफलता नहीं मिल सकी।

हमने और फातमी साहबने भी आयतें उघाटनेकी कोशिश की, पर गाड़ी विशेष आगे नहीं बढ़ सकी।

× × ×

वहाँसे बाबा निकले, तो थोड़ी ही दूरपर शाहजहाँ पार्कमें था आध्यात्मिक मित्र-मण्डलका उद्घाटन। अच्छी भीड़ थी। घासकी कालीनपर हम लोग बैठ गये और बाबाके मुखसे अध्यात्मकी मनोरम चर्चा सुनने लगे।

बाबाने कहा कि अध्यात्मकी सच्ची कसौटी है—सम्पूर्ण सृष्टिपर विश्वास करना। जो व्यक्ति सृष्टिपर विश्वास करेगा, उसके मनकी गाँठें स्वतः खुल जायँगी और तभी उसके हृदयमें भगवान्‌का प्रवेश होगा।

बाबाने बताया कि आज विश्वमें तरह-तरहके विचार चल रहे हैं, पर वे सबके सब तोड़नेवाले विचार हैं। एक-दूसरेके बीच खाई खड़ी करनेवाले विचार हैं। जातिवादी, पंथवादी, राष्ट्रवादी, साम्यवादी, सबके सब दुनियाके टुकड़े करनेवाले हैं। यहाँतक कि अध्यात्मवादी भी उससे मुक्त नहीं। वे कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं। उनका सिद्धान्त और है, व्यवहार और है। वे भी जीवनके दो टुकड़े करते हैं। सर्वोदय ही एक ऐसा विचार है, जिसमें स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ—देहधारण, समाज-सेवा और मुक्ति—इन तीनोंका समन्वय है।

अध्यात्म विद्याकी व्याख्या करते हुए बाबाने कहा कि "हम तो अध्यात्मका अर्थ अद्वैत मानते हैं। जो हममें है, वही सबमें है। सबपर

प्रेम और सहकार, विश्वास भावना ही अध्यात्मकी कसौटी है। हमें अपनेपर जितना विश्वास है, उतना ही विश्वास सबपर होना चाहिए। विश्वास बहुत बड़ी शक्ति है। उसके बिना सारा काम बिगड़ रहा है। आज देश, राष्ट्र, समाज, कुटुम्ब—सबमें परस्पर अविश्वास हो रहा है। ब्रह्मविद्याकी कसौटी है—सारी सृष्टिपर विश्वास। तभी हमारा दिल खुलेगा और उसके भीतर कोई गाँठ नहीं रह जायगी। आज तो हमारे हृदयमें गाँठ ही गाँठ हैं और उनके रहते भगवान्को रहनेको जगह नहीं रह पाती। कैसा तमाशा है। भगवान्का मकान और भगवान्को ही स्थान नहीं!

मम हृदय भवन प्रभु तोरा!
तहँ आय बसे बहु चोरा।
अति कठिन करहिं बरजोरा।
मानत नहिं मोर निहोरा॥

इस मकानको खाली करो। इन ग्रन्थियोंको खोलो। एक-दूसरेपर विश्वास करो। किसीके लिए मनमें कोई शंका न रखो। मैं चाहता हूँ कि ऐसे ही निर्मल, निष्कलंक, निष्पंक, निष्कम्प और निष्काम हृदयवाले सेवकोंकी एक जमात बने। आगरासे कल मैंने ऐसे ही पचास सेवकोंकी माँग की है।"

विश्वासकी यह भावना जन-जनमें जाग्रत हो जाय, तो कहाँ रहेगा द्वेष, कहाँ रहेगा मत्सर, कहाँ रहेगा वैर और कहाँ रहेगा विरोध! सुख, शान्ति और आनन्दकी पावन त्रिवेणी ही लहराने लगेगी सर्वत्र।

× × ×

वहाँसे निकलकर बाबा तेजीसे आगे बढ़ गये और रास्तेमें बेलनगंजके चौराहेपर सर्वोदय-साहित्य मण्डलका उद्घाटन करके निवासपर चले गये। हम लोग कुछ पीछे पड़ गये थे, फिर भी दूकानपर पहुँचनेपर खण्डेलवाल साहबने बड़े प्रेमसे हमें सुगन्धित शर्बत पिलाया ही!

× × ×

मध्याह्नमें उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ताओंकी बैठक हुई। आजकी बैठकमें केन्द्रीय मंत्री श्री० एन० दातार, दिल्ली विश्वविद्यालयके उपकुलपति डॉक्टर वी० के० आर० वी० राव, मलकानी साहब, विचित्रभाई आदि भी उपस्थित थे। बाबाके प्रवचनके पहले कपिलभाईने गांधी आश्रमके सम्पत्तिदानका विवरण देते हुए बताया कि हमारे पास १८३७०·१२ जमा था, जिसमें १५ हजार रु० दिया जा चुका है। बाकी भी सर्वोदय-मण्डल जब माँगेगा, तब दे देंगे। आश्रमके कार्यकर्ता कोई १००० रु० मासिक सम्पत्ति-दानमें देंगे।

बाबा बोले : अभी मलकानीजीसे बात हो रही थी। उन्होंने कहा कि अगर आप कहीं स्थिर बैठेंगे, तो कामके लिहाजसे अच्छा रहेगा और हमारे जैसे मनुष्योंसे बात करनेका मौका भी मिलेगा। मैंने कहा कि मैं तीस साल बैठा था, तो कोई मुझे उठा नहीं सकता था। अब जब कि मैं घूम रहा हूँ, तो कुछ लोग मुझे बैठानेकी कोशिश करते हैं। यों मैंने अपने लिए कोई कैद नहीं मानी है। लेकिन 'जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। एही भाँति चलेउ हनुमाना।' हनुमानकी तरह जब मैं निकल पड़ा हूँ, तो फिलहाल कोई लक्षण नहीं दीखता मेरे बैठनेका।

बाबाने कहा : फिर भी मैं इतना जरूर चाहता हूँ कि हर प्रदेशमें एकाध क्षेत्र सर्वोदयका क्षेत्र बनानेकी कोशिश होनी चाहिए। वहाँपर शोषण-मुक्ति और शासन-मुक्तिकी कोशिश हो, सरकारके मुख्य-मुख्य कर्तव्य वहाँ-पर न रहें। झगड़े, शराब, नशा न रहे। पुलिस, अदालत आदिकी जरूरत न रहे। चुनावमें संघर्ष न होता हो। मैं कहना चाहता हूँ कि जबतक किसी एक 'पाइंट'पर, एक बिन्दुपर फौजकी भाँति कश्मीरकी 'सीज फायर लाइन'की भाँति, सामूहिक शक्ति किसी एक जगह लानेकी शक्ति, रचना-शक्ति, योजना-शक्ति अहिंसा नहीं दिखायेगी, तबतक वह पनपेगी नहीं। अहिंसा आज्ञा नहीं, सलाह देती है; लेकिन वह सलाह इतनी जोर-दार होती है कि जितना हुक्म भी नहीं होता। मैं चाहता हूँ कि उत्तर

प्रदेशमें ऐसा एक क्षेत्र लिया जाय कि जिसमें अच्छेसे अच्छे लोग अपनी ताकत लगायें।

ऐसा क्षेत्र कौन हो, इसपर बोलते हुए बाबाने कहा कि मुझे उत्तर प्रदेशका क्षेत्र चुनना हो, तो मैं काशी शहर और बनारस जिलेका क्षेत्र चुनूँगा। हिन्दुस्तानकी सबसे अधिक आध्यात्मिक शक्ति जितनी काशीके साथ जुड़ी हुई है, उतनी दूसरे किसी क्षेत्रके साथ जुड़ी हुई नहीं है। बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश तीनोंका नियन्त्रण करनेवाला यह क्षेत्र है। चौदह करोड़ लोगोंके साथ उसका सीधा सम्बन्ध है। इसलिए इस क्षेत्रको चुनना चाहिए और उसमें अपनी कुल ताकत लगानी चाहिए। काशीमें जो कार्यकर्ता जायँगे, उन्हें दो-चार सालकी बात सोचकर नहीं जाना चाहिए, बल्कि यही सोचकर जाना चाहिए कि 'यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम'। वहाँ जानेपर लौटना नहीं है।

काशी-प्रवासकी अपनी स्मृतियाँ सुनाते हुए बाबाने कहा कि काशीमें हमें 'स्वच्छ काशी' का और 'शराबबन्दी' का आन्दोलन उठाना चाहिए, जो कि बुनियादी काम है। सारे वैधानिक काम करनेपर भी यदि काशीमें शराबबन्दी न हो, तो हमें सत्याग्रह भी करना चाहिए। सम्पूर्णानन्दजी जैसे धार्मिक पुरुषके होते हुए भी काशीमें शराबबन्दी न हो, तो जरूर सत्याग्रह करना चाहिए। इन दो कामोंके अलावा काशीमें घर-घर सर्वोदय-पात्र रखवाना चाहिए। वहाँके संन्यासियोंके साथ सम्पर्क रखना चाहिए। अच्छे संन्यासियोंकी ताकत इकट्ठी करोगे, तो 'साधना-केन्द्र' सुफलित होगा और उसकी ताकत बनेगी।

× × ×

तीसरे पहरसे शामतक चम्बल घाटी क्षेत्रके दौरे और वहाँकी बागी-समस्याके सम्बन्धमें सम्पूर्णानन्दजी, वी० एन० दातार, श्रीमन्नारायण, डॉक्टर वी० के० आर० वी० राव, मेजर जनरल यदुनाथसिंह जैसे विशिष्ट लोगोंसे बाबाकी महत्त्वपूर्ण वार्ता होती रही।

डॉक्टर ललितने अपनी गाड़ीसे मुझे, फातमी साहब और

चन्दूभाई नाइकको गांधी आश्रमपर लाकर छोड़ दिया। काफी रातको बाजार करके हम लोग लौटे और फिर खा-पीकर गपशप करते-करते सो गये।

× × ×

हाँ, तीसरे पहर बाबासे एक बड़ी मजेदार मुलाकातकी बात तो रह ही गयी !

आगराके आर्चबिशप—बड़े पादरी—आये दूसरे पादरीके साथ। बाबासे पूछने लगे : "हम आपके भूदानकी क्या सेवा करें ?"

बाबा : 'अपने पड़ोसीको अपनी ही तरह प्यार करो।' इस उपदेशके अनुसार एर्नाकुलममें तो आर्चबिशपने भूदानमें हमारा हाथ बँटाया है, आप भी हाथ बँटाइये।

आर्चबिशप : हमारे पास तो जमीन है नहीं बाबा। हम भूदानमें क्या दें ? आप बताइये कि किस अन्य उपायसे हम आपका सहयोग करें ? ईसाई-सम्प्रदाय आपके आन्दोलनमें दिलचस्पी रखता है। मेरा कर्तव्य है कि मैं उसमें भरपूर सहयोग करूँ। आदेश दीजिये।

बाबा : ईसाई लोग मुझसे आदेश-उपदेश चाहते हैं। मैं तो इतना ही कहूँगा कि Practise more, Preach less. कहो कम, करो ज्यादा। ईसाकी यह बात याद रखो—"सुईके छेदसे ऊँटका प्रवेश हो सकता है, पर धनवान् व्यक्तिका स्वर्गमें प्रवेश नहीं हो सकता।"

आर्चबिशप—Short and Sweet (संक्षेप और मधुर)।

और तभी बाबाकी नजर आर्चबिशपके हाथकी सोनेकी बड़ी अँगूठीपर पड़ी। उन्होंने उसे हाथसे पकड़ लिया।

बहुत सकपकाये बेचारे आर्चबिशप ! उन्हें लगा कि ली अब विनोबाने उनकी अँगूठी !

बाबाने कहा : यह अँगूठी तो बड़ी खर्चीली है !

आर्चबिशप सफाई-सी देते हुए बोले : यह धार्मिक प्रतीक है बाबा।

बाबाने मुस्कराकर कहा : धार्मिक प्रतीक होता है लकड़ीका क्रूस। इस सोनेको लेकर स्वर्गमें कैसे प्रवेश हो सकेगा ?

इतना कहकर बाबाने आर्चबिशपका हाथ छोड़ दिया।

'जान बची लाखों पाये !'

वे तुरत 'नमस्ते' कहकर बाहर निकले और मोटरमें बैठकर उड़नछू हो गये !

● ○ ●

भगवान् तो तन नहीं, मन देखते हैं !

आगरा
७ मई '६०

आज सवेरेसे ही सभाओं, सम्मेलनोंकी धूम मची है। सबसे पहले प्रादेशिक गांधी-स्मारक-निधिके कार्यकर्ता बाबाके पास एकत्र हुए। करणभाईने बताया कि हमारे २९ ग्राम-सेवा केन्द्र हैं, ६ तत्त्व-प्रचार-केन्द्र हैं, ६ ग्राम-निर्माण-केन्द्र हैं, ७ नयी तालीम-केन्द्र हैं। कुल १४८ सेवक हैं सारे प्रदेशमें। उपस्थित कार्यकर्ताओंका उन्होंने बाबासे परिचय कराया।

बाबा बोले कि रामचन्द्रनजीने सेवाग्राममें कहा था कि शान्ति-सेनाकी जिम्मेवारी गांधी-निधिके कार्यकर्ताओंको उठानी चाहिए। मैं मानता हूँ कि गांधी-निधिके ये सारे कार्यकर्ता शान्ति-सैनिक ही हैं। जो पूरा समय न दे सकें, वे शान्ति-सहायक बनें। आप जहाँ काम करें, वहाँ आपको ८-८, १०-१० शान्ति-सैनिक बनाने चाहिए। उनके लिए लोकाधार भी ढूँढना चाहिए। आप सबका इस काममें पूरा सहयोग रहना चाहिए।

पालीवाल पार्ककी सभाकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा कि यह पहला मौका है, जब मैंने आम सभामें ५० निष्काम सेवकोंकी माँग की। मैं मानता हूँ कि यह माँग प्रेरणाकारक है और इसके पूरे होनेमें सफलता मिलेगी। अहिंसाका विचार वृत्ति-संशोधनसे ही बढ़ सकता है। इसलिए हम कर्म तो करें, पर वृत्ति-विकासपर हमारा विशेष जोर रहना चाहिए। ऐसा प्रयत्न किया जाय, जिससे आपकी यह जमात ब्रह्मविद्यामूलक निष्काम सेवा करनेवाली जमात बने।

× × ×

लोक-सेवकों और शान्ति-सैनिकोंके बीच बोलते हुए बाबाने आज कहा कि शान्ति-सेनाके मामलेमें अभीतक हमारे यहाँ बड़ी अव्यवस्था चलती रही

है। अब यह काम निर्मलाबहनको सौंपा है। उनका काम होगा कि वे सब शान्ति-सैनिकोंका [illegible] रखें और उनमें [illegible] स्थापित करें। करनेके लिए जरूरत पड़नेपर वह किसी भी शान्ति-सैनिकको बुला सकती है। उसे बुलाया जायगा, उसे आना होगा। जितने भी शान्ति-सैनिक हैं वे हुक्म मिलते ही जहाँ उनको कहा जायगा, वहाँ चले जायँगे। वे बिलकुल हुक्मबरदार होंगे। आपको समझना चाहिए कि शान्ति-सेनाका नागाजनीका दफ्तर मेरी जगहपर है। वहाँसे कोई कमाण्ड (आदेश) आयी, तो मुझसे आयी, ऐसा मानना होगा। शान्ति-सैनिकको मैं 'पीर बबर्ची भिश्ती खर'—मानता हूँ। इसलिए उसकी जहाँ भी जरूरत पड़ेगी, वहाँ उसको जाना होगा। हरएक शान्ति-सैनिकका जीवन-वृत्तान्त कार्यालयके पास होना चाहिए। फिर वहाँपर सबका Who's who (परिचय) तैयार किया जायगा। यह सारा बहुत बड़ा काम है। इसलिए निर्मलाने संकल्प किया है कि वह ज्यादासे ज्यादा समय काशीमें देगी। शान्ति-सैनिकोंके लिए हमने एक परिपूर्ण योजना बनायी है।

बाबाने यह इच्छा प्रकट की कि उत्तर प्रदेशके शान्ति-सैनिकोंकी ज्यादा तादाद काशीमें चली जाय। बोले : आपसे कहा जायगा कि फलानी जगह जाकर भंगी-काम कीजिये, तो आप यह नहीं कह सकते कि आपने तो हमें शान्ति-सैनिक बनाया है, हम भंगी-काम क्यों करें और कब तक करें? आप मुद्दत भी नहीं बताते हैं, तो क्या हम जिन्दगीभर भंगी-काम करें? तो इसका उत्तर है, जी हाँ। आपको समझना चाहिए कि अब मैं हुक्मवाली बातका उपयोग करनेवाला हूँ। आपको इसकी तैयारी रखनी चाहिए।

× × ×

बुनकरोंकी एक बैठक बाबाके पास हुई। बाबाने उनसे कहा कि 'दैवोपि दुर्बलघातकः।' देवता बलवान्‌की ही सहायता करते हैं। व्यापारी ढंगमें बड़े ही पनपते हैं, छोटे नहीं। आपको गाँव-गाँव फैलना चाहिए। आपकी ताकत विकेन्द्रित होनेसे ही बढ़ेगी।

'खण्डेलवाल बन्धु'की एक प्रति उसके सम्पादकने भेट की, तो बाबा

बोले : "कबतक चलेगा आपका यह 'खण्डेलवाल बन्धु' ! 'विश्वबन्धु' बनिये, विश्वबन्धु !"

× × ×

बाबाके हालमें अम्बर चरखेका प्रदर्शन किया गया, तो वे स्वयं उसके पास जा बैठे और कातकर देखने लगे। इसके बाद 'विष्णु सहस्रनाम' के पाठका समय हो गया।

× × ×

मध्याह्नमें उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ताओंके बीच बोलते हुए बाबाने कहा कि आप लोगोंके बीच आज हमारी यह आखिरी चर्चा है। मैं आज आपसे एक विशेष बात कहना चाहता हूँ और वह यह कि शान्ति-सैनिककी यही पहचान है और इस बातकी वह प्रतिज्ञा करता है कि हमें जहाँ भी बुलाया जायगा, वहाँपर अपना सब कुछ छोड़कर, घर, सार्वजनिक काम आदि सब छोड़कर, जानेके लिए हम तैयार हैं। इस एक बातमें दूसरे लोक-सेवकोंमें और उसमें फर्क है। बाकी बातें समान हैं। इस तरह शान्ति-सैनिकका कार्य दुहरा रहेगा। हमेशाके लिए वह सेवा-सैनिक होगा और साथ-साथ शान्ति-सैनिक भी। लोग समझते हैं कि इसके मानी यह है कि कहीं दंगा-फसाद, झगड़ा हुआ, तो उसे बुलाया जायगा। यह गलत खयाल है। आग लगनेके बाद पानीका इन्तजाम करना ठीक ही है, लेकिन आग लगनेके पहले ही इन्तजाम करना होता है। इसलिए सेवाके एक क्षेत्रसे किसी दूसरे क्षेत्रमें सेवाके लिए जानेका आदेश उसे मिलेगा, तो उसे जाना पड़ेगा। हम ऐसा भेद नहीं कर सकते हैं कि सेवा-कार्य कहाँ खतम होता है और शान्ति-कार्य कहाँ शुरू होता है। जो शान्ति-कार्य है, वही सेवा-कार्य है और जो सेवा-कार्य है, वही शान्ति कार्य है। शान्ति-सेना आज्ञा माननेवाली सेना होगी। किसी भी क्षेत्रको शासन-मुक्त क्षेत्र बनानेके कामके लिए किसी भी शान्ति-सैनिकको बुलाया जा सकता है और उसकी जानेकी जिम्मेवारी है। वह यह नहीं पूछ सकता है कि कितने दिनके लिए जाना होगा ?

अहिंसाकी पद्धति बताते हुए बाबाने कहा कि अहिंसामें सारे काम स्वेच्छासे किये जाते हैं। स्वेच्छासे आज्ञा-पालन कठिन हो जाता है, लेकिन स्वेच्छा भी हो और आज्ञा-पालन भी हो, ऐसा कठिन काम सफलताके साथ हमें करना है, तभी कभी-न-कभी हिंसाकी जगह अहिंसा आयेगी। नहीं तो सार्वजनिक रक्षणका काम हिंसा ही करेगी और समाजमें रुचि पैदा करनेवाले छोटे-मोटे काम अहिंसा करेगी। परन्तु इतनेसे अहिंसाका काम नहीं बनेगा, जो हम चाहते हैं। उसके लिए तो सुव्यवस्थित रूपसे किसी एक स्थानमें, एक काममें सैकड़ों लोगोंको हम इकट्ठा कर सकते हैं, यह दिखाना चाहिए। इस कामके लिए सर्वोदय-पात्र जरूरी है, ऐसा मैं बार-बार कहता हूँ; लेकिन लोगोंमें अभीतक इसके लिए झिझक है। कार्यकर्ता कहते हैं कि उसमें काफी समय देना पड़ेगा। उतना सातत्य बनेगा या नहीं बनेगा? मैं कहता हूँ कि जैसे सरकारको टैक्स (कर) लेनेका अधिकार मिला है, जिसके बलपर सरकार संरक्षण देती है, वैसे हमें 'वालंटरी टैक्स' (स्वेच्छा कर) चाहिए। सर्वोदय-पात्र, हमारे कामके लिए वालण्टरी टैक्स है। हिंदुस्तानमें सात करोड़ परिवार हैं। उसमें एक करोड़ परिवारसे आप इस प्रकारका वालंटरी टैक्स हासिल करेंगे, तो बहुत बड़ा काम होगा। फिर आप हिन्दुस्तानमें एक ऐसी शक्ति पैदा करेंगे, जैसी शक्ति दुनियामें कहीं नहीं पैदा हुई थी। एक करोड़ लोग एक मुट्ठी अनाजका अनुदान देनेके बाद ही खायेंगे, ऐसा बनेगा, तो आपके काममें ऐसी ताकत आयेगी, जो आजतक कहीं भी कभी भी नहीं आयी थी। राज्य आपके कहेमें आयेगा।

सर्वोदय-पात्रसे क्रान्ति हो सकती है, यह समझाते हुए बाबाने कहा कि आज भाई खेर (असेंबलीके स्पीकर) हमसे कह रहे थे कि हम समाजवादकी जगह 'सर्वोदय'का नाम ही क्यों न लें? समाजवादके तरह-तरहके अर्थ होते हैं, इसलिए 'सर्वोदय' शब्द ही बेहतर है। मैंने उनसे कहा कि आपसे मुत्तफिक, सहमत हूँ। यदि सर्वोदयके पीछे ताकत खड़ी करेंगे, तो जिस किसी पार्टीकी सरकार हो, उसे सर्वोदयके निर्देशके पीछे ही

चलना पड़ेगा। आज भी सर्वोदयकी कुछ ताकत इसलिए है कि आपने छह लाख लोगोंका दान याने सम्मति हासिल की है, लेकिन आप हर रोज एक मुट्ठीवाली बात करके दिखायेंगे, तो वही काम होगा, जो धर्मोंने नित्य-स्मरणसे किया। अक्सर इनाम और लालच, ये दो प्रेरणाएँ दिखाकर अच्छा काम कराया जाता है। धर्म-पन्थोंने कुछ गलत काम किये, परन्तु उनके साथ-साथ यह एक अच्छा काम किया कि बिना दण्डके समाजमें हितकारी कार्य रोज कराया। उस प्रकार हम समाजसे बिना दण्ड और लालचके हितकारी कार्य हर रोज करायेंगे, तो बहुत बड़ी क्रान्ति कर सकेंगे। इस एक वस्तुसे क्रान्ति हो जायगी।

भौतिक और नैतिक उन्नति पर जोर देते हुए बाबा बोले : सर्वोदय-की यही पहचान है कि उसमें एक ही कदममें भौतिक और नैतिक उन्नति होती है। सरकारने सेना बढ़ायी और देशका रक्षण किया, लेकिन हिम्मत नहीं बढ़ी, तो यह देश टिक नहीं सकता। लोगोंने दयाभावसे प्रेरित होकर दवाखाना बनाया, तो भौतिक कामके साथ-साथ आध्यात्मिक काम हुआ। आपने चाय ज्यादा पी और सरकारको ज्यादा टैक्स मिला। उस पैसेसे सरकारने दवाखाना खोला। तो उस दवाखानेसे दया-वृत्तिका विकास नहीं हुआ। बाह्य वस्तु बनी, अन्तरकी नहीं बनी। जिस बाह्य कार्यके साथ-साथ अन्तरके गुणोंका विकास होता है, वह सर्वोदयका कार्य है। दानसे जमीनका मसला हल होगा, कानूनसे नहीं, तो सर्वोदय होगा। दवाखानेके साथ-साथ दया रहेगी, तो सर्वोदय होगा। अगर लोगोंमें हिम्मत बढ़ती है और उसके साथ-साथ फौज रखनेकी जरूरत पड़े, तो रखी जाती है, न रखनेकी जरूरत हो, तो नहीं रखी जाती है; तो वह सर्वोदय है।

तालीमकी बात चलाते हुए बाबाने कहा कि एक भाईने हमसे कहा था कि हम चाहते हैं कि स्कूलोंके जरिये गांधी विचारका प्रचार किया जाय, तो वह प्रचार होगा। मैंने कहा कि वैसे सरकार गांधी विचारका प्रचार करे, यह अच्छी चीज है; लेकिन मुझे इसी बातका दुःख होगा कि सरकारके

दबावसे अच्छा काम किया जा रहा है। गांधी-विचार किसी भी प्रकारको जबरदस्तीसे नहीं लादा जा सकता है। उसका स्वीकार ऐच्छिक तौरपर ही हो सकता है। समझना चाहिए कि सरकारके हाथमें तालीम हो, तो जैसे गांधीजीकी किताबको चलाकर वह दुनियाको सुधार सकती है, वैसे ही दूसरी किताब चलाकर दुनियाको बिगाड़ भी सकती है। किसी एक व्यक्तिके हाथमें दुनियाको बनाने और बिगाड़नेकी ताकत हो, यही खतरनाक बात है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि तालीम सरकारके हाथमें नहीं, ज्ञानियोंके हाथमें होनी चाहिए। हमारे देशमें कभी भी तालीमपर राजसत्ताका हुक्म नहीं चलता था। तालीम सरकारके हाथमें रहे, तो लोक-शक्ति शून्य होगी। जहाँ लोक-शक्ति शून्य होगी वहाँ अन्तःशक्ति खतम होगी।

बाबा बोले कि सर्वोदयपर बड़ी जिम्मेवारी है। आपको दिखाना होगा कि आपका ऐच्छिक प्रभाव पड़ रहा है, दबाव नहीं। सर्वोदय-पात्रके आधारपर आप यह काम कर सकेंगे। इसीलिए मैं कहता हूँ कि देशके एक करोड़ घरोंमें सर्वोदय-पात्रकी स्थापना कीजिये। उसके साथ-साथ सारे शान्ति-सैनिक अपनेको हुक्मबरदार समझें। स्वेच्छासे अपनेको अंकुशमें, नियमनमें रखनेकी शक्ति जब सर्वोदय दिखायेगा, तब सर्वोदयको राज्य हाथमें लेनेकी जरूरत नहीं रहेगी, राज्य खुद उसके कहेमें आ जायगा।

× × ×

बाबा मंचपरसे उठकर गये, तो मास्टर सुन्दरलालने पण्डित गोविन्द-वल्लभ पन्तसे अनुरोध किया कि वे उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ताओंको कुछ उपदेश देनेकी कृपा करें।

पन्तजी बोले कि मैं तो उपदेश देने नहीं, विनोबाजीका उपदेश सुनने यहाँ आया हूँ। आप सब लोग उनके उपदेशसे लाभ उठा रहे हैं, इसलिए मैं आपको बधाई देता हूँ। आप तो सर्वोदयवाले हैं, सर्वोदयकी मूल बातें जानते और उनके अनुसार चलते हैं। मैं तो सिर्फ बातें कहनेवाला हूँ। मैं आपको क्या कहूँ!

केन्द्रीय गृहमन्त्रीने कहा कि यह बड़े खेदकी बात है कि स्वतन्त्रता

आनेके बाद हमारे देशमें स्वावलम्बनकी और आत्मविश्वासकी भावनामें कुछ कमी आ गयी है। समाजको ऊपर उठानेवाले लोग इस नैसर्गिक सत्यको भूल जाते हैं। सब लोग अपने कर्तव्यका पालन करें, दूसरेके सुखमें अपना सुख मानें, अपने लिए दूसरेको कष्ट न दें, स्वावलम्बनकी ओर बढ़ें और नैतिक तथा आध्यात्मिक आधारको न भूलें। यही तो सर्वोदय है। इसके साथ एक बातकी और जरूरत है। और वह है अनुशासन। बाहरी अनुशासन बनाये रखना सरकारका काम है। पर बाहरी अनुशासन ही सब कुछ नहीं होता। असली अनुशासन आत्मिक होता है। हम किसी दूसरे आदमीको कष्ट न दें, अपने लाभके लिए दूसरेको न डरायें, खुद भी न डरें, ऐसा भीतरी अनुशासन सबमें आ जाय, तो फिर बाहरी अनुशासनकी जरूरत ही न रहे।

भूदानकी सफलतापर प्रसन्नता प्रकट करते हुए पन्तजीने कहा कि भूदानमें विनोबाजी और कार्यकर्ताओंके प्रयत्नसे लाखों एकड़ भूमि मिली है। भूदानका सबसे बड़ा महत्त्व इस बातमें है कि उसने जनतामें यह पवित्र भावना उत्पन्न की है कि जिसके पास जो कुछ है, उसे वह दूसरोंके साथ मिल-बाँटकर खाये। विद्वान् अपनी बुद्धि बाँटे, जमीनवाला अपनी जमीन बाँटे और पैसेवाला अपना पैसा बाँटे।

× × ×

सायंकालीन प्रवचनमें उपस्थिति कुछ कम थी। नगरवाले शायद् समझते थे कि आज कार्यकर्ताओं आदिकी ही बैठकें होंगी, सभा न होगी। बाबाको यह थोड़ी उपस्थिति अच्छी लगी। बोले : आजकी सभा बहुत अच्छी है, क्योंकि सुननेवाले कम हैं। ९ सालतक बड़ी-बड़ी सभाएँ बहुत हो चुकीं। छोटी सभामें बात दिलकी गहराईतक पहुँचती है। सभा तो वही अच्छी, जहाँ आँख, कान और मन—तीनों लगे हों। सभी श्रोता एकाग्र होकर सुनें। उपनिषद्का अर्थ है—निकट बैठकर बात करना। सन्तकी बात जब हम सुनें, तो विवेकका ध्यान रखना चाहिए। सारासार विचार कर जितना अंश ठीक जँचे, उतना ग्रहण करना चाहिए। मेरी

बात किसीको न जँचे और वह न माने, तो मुझे आनन्द होता है। दुःख तो मुझे तब होता है, जब कोई बिना जँचे मान लेता है। बुजुर्गोंका प्रभाव भले पड़े, दबाव नहीं पड़ना चाहिए। दिलको खींचनेवाला प्रभाव अच्छा होता है।

भूदान-यात्राकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा कि एक भाईसे भूदानकी बात होने लगी, तो उन्होंने तरह-तरहकी शंकाएँ प्रकट कीं। हमारी बातोंसे उन्हें समाधान तो नहीं हुआ, पर वे बोले : "आप आये हैं, इसलिए आपको खाली हाथ नहीं जाने देंगे। आपका विचार हमें पटा नहीं है, फिर भी हम आपको २५ एकड़ जमीन देंगे।" मैंने उनसे कहा : "मुझे जमीन बटोरनी नहीं है। बटोरकर मुझे करना क्या है ? आपको जँचे तो दीजिये, नहीं तो कोई जरूरत नहीं। मुझमें आसक्तिका लेशमात्र भी नहीं है। न तो मुझे इस दुनियाकी आसक्ति है, न शरीरकी। परमेश्वर जबतक रखेगा, तबतक रहूँगा। जब बुलायेगा, तो हँसते-हँसते चला जाऊँगा।"

इधर कुछ दिनोंसे कुछ नामधारी 'गोभक्त' हमारी यात्राके आगे-आगे दीवालोंपर बड़े-बड़े पोस्टर चिपकाकर विनोबापर कीचड़ उछाल रहे हैं। आजकी सभामें आनेके पहले किसीने बाबाको वह पोस्टर दिखाया और कहा कि इसका जवाब देना चाहिए। बाबा तो स्तुति-निन्दाकी पर्वाह करते नहीं। बोले : टीकाओंका अवसर लोगोंको है। मेरी नाक मुझे तो दीखती नहीं। दूसरे लोग ही उसे देख सकते हैं। टीकाकारोंको जो दिखा होगा, उन्होंने लिखा होगा। ठीक होगा, तो उनका टीका करना वाजिब है। भ्रम है, तो गलत है। उसपर सोचना बेकार समय बर्बाद करना होगा। मैं तो जो कहता हूँ, उसपर अमल करनेकी कोशिश करता हूँ। इतना ही देखना मेरा कर्तव्य है। मुझे जो ठीक जँचता है, कहता हूँ। फिर मुझे किसी बातकी चिन्ता नहीं। टीकाकारोंको मेरा जो दर्शन होता है, उसका मैं क्या जवाब दूँ ? एक भाईने लिखा कि यह गायका दुश्मन है। सोचनेकी बात है कि गायके

दही और शहदपर मेरा जीवन है। गायकी दुश्मनी करूँगा, तो जीऊँगा कैसे ? अब कोई कहे कि गायका दूध पीना गो-प्रेम है क्या ? तो क्या शेरका प्रेम प्रेम माना जायगा, जो गायको पूराका पूरा पचा लेता है ? मैं क्या सिद्ध करने जाऊँ ? मैं कहता फिरूँ कि मैं गो सेवा संघका अध्यक्ष रहा हूँ ? देवरभाईसे मैंने प्रार्थना की कि मैं गो-सेवक हूँ, पर ऐसा मुझे भास नहीं होता कि मैं उसके लिए कुछ करता हूँ। टीकाकार मुझे 'गो-हत्यारा' कहता है। इसका सार मैं इतना ही निकालता हूँ कि गायपर उस भाईका बड़ा प्रेम है।

शोषणकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा : कह नहीं सकता कि डाकू कौन है ? डाकू भी शोषण करता है, हम भी तरह-तरहसे शोषण करते हैं। भगवान् हमें भी 'डाकू'की उपाधि दे सकता है। हमारा समाज इतना गिरा है, इतना दुःखी है और मैं ४ पौंड दूधका दही लेता हूँ। हिन्दुस्तानमें हर आदमी पीछे ७॥ तोले दूधका औसत है। उसीमेंसे घी बनेगा, मिठाई बनेगी। इस दूधमें गाय भैंस-बकरी—सबका कुछ दूध शामिल है। मैं ४ पौंड गायका दूध लेता हूँ यानी मैं २१ मनुष्योंका दूध ले लेता हूँ। मेरे कारण २० मनुष्योंको दूध नहीं मिल पाता। अब बताइये कि मैं लुटेरा हूँ कि नहीं ? हमारी करनीपर भगवान् सोचें, तो हम शायद थोड़े-थोड़े गुनहगार साबित हों, पर वह हमारे मनकी भावना देखें, तो मैं पूरे दावेसे कह सकता हूँ कि मैं किसीका रत्तीभर भी शोषण नहीं करना चाहता।

एक बहनकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा कि एक हरिजनकी पत्नी बीमार थी। मरनेका मौका आया, तो डॉक्टरने कह दिया कि अब यह मरेगी। मैंने उससे कहा : "तुम्हें भगवान् बुला रहे हैं, ऐसा दीखता है। हम सभी जानेवाले हैं। कोई आज जायगा, कोई कल।" वह बोली : "ये सब लोग मुझे डरा रहे थे। अच्छा हुआ, आपने सही बात बता दी।"

मुलाकात हो। हमारे विचारोंमें आपको जो कुछ लेने लायक जँचे, वह उतना ही लें, बाकी छोड़ दें!

× × ×

कल दोपहर उत्तर प्रदेशके कार्यकर्ताओंके बीच बाबाका जो प्रवचन हुआ था, उसे 'टेप-रिकार्ड'से आज शामको मिला रहा था कि तभी पण्डित उदयशंकर शास्त्री आ गये। बाबू सियारामशरण गुप्तने उनसे जाकर कहा था कि मैं उन्हें खोज रहा था। देरतक उनसे गप-शप चलती रही। फातमी साहब और अच्युतभाई देशपाण्डे आ गये, तो कुरानशरीफ और अरबी पाण्डुलिपियों आदिकी चर्चा छिड़ गयी। उन्हें छोड़ने गया, तो वे बोले कि "मैं सुबह आऊँगा, तब घरपर ले चलूँगा।"

आज जब अन्तेवासियोंकी सूचीपर बाबाकी तेज कैंची चल रही थी, तो बाबाने मेरा नाम भी काट दिया। कहा : "क्या जरूरत है आगे रिपोर्टिंग आदिकी?"

रातको मैंने करणभाईसे कहा : "मैं तो कल काशी जा रहा हूँ करणभाई!"

"क्यों?"

"बाबाने मेरा नाम सूचीसे काट दिया है।"

"ऐसा कैसे? अगले पड़ावपर तो चलो। हम और वल्लभस्वामी कल बाबासे जूझेंगे तुम्हारे लिए। यह भी कोई बात है कि बाबा चम्बल घाटीमें घूमें और हमारा कोई आदमी उनके साथ न रहे?" ० ० ०

बाबा माने बापकी इस्टेट

यमरौली कटारा
८ मई '६०

सुबह बाबा जब यात्रापर निकलनेको हुए, तो एक सेठजीने बड़ा हंगामा मचा दिया। माथेपर चन्दनका टीका लगाये बगलमें बहियोंका लाल बस्ता दाबे वे बड़े प्रेम-विभोर होकर कुछ गीत गा रहे थे और बाबाके चरणोंपर बार-बार लोट रहे थे। देखा, तो ये वे ही सेठजी थे, जिनकी दूकानसे अभी उस दिन कसेरट बाजारमें हम लोगोंने चन्दूभाईके लिए एक 'पोर्टमैण्टो' खरीदा था।

रेलवेपर लोग तरह तरहकी फब्तियाँ कस रहे थे। कोई कुछ कह रहा था, कोई कुछ। इस बातपर ज्यादातर लोग सहमत थे कि उनका कोई 'स्क्रू' ढीला है! साथी बोले : आगराके लिए यह कोई नयी बात है! अभी साहब कल ही तो सुना रहे थे कि कुछ दिन पहले जवाहरलालजी आगरा तशरीफ लाये, तो उन्होंने सोचा कि पागलखानेका भी मुआइना कर लिया जाय। वहाँ गये, तो सुपरिण्टेण्डेण्टने अपना सबसे आला नमूना उनके सामने पेश किया। पण्डितजीने उससे पूछा—"मुझे पहचानते हो?" बोला : "मैं तो आपको जानता नहीं।" पण्डितजीने कहा : "मेरा नाम है—जवाहरलाल नेहरू।" पागल मुसकराया और फिर गम्भीर होकर बोला : "कोई बात नहीं! कोई बात नहीं! यहाँ आपकी दवा ठीक ढंगसे हो जायगी। मैं जब यहाँ आया था, तो मैं भी कहा करता था कि मैं महात्मा गाँधी हूँ।"

× × ×

आज हम फिर यमुनाके किनारे-किनारे ताजमहलकी ओर बढ़े। उसकी बगलसे जानेवाली सड़कपर हमें जाना था। आगराके अनेक

नागरिक हमें राजके पारतक पहुँचा गये। उसके बाद हमारी टोली छोटी हो गयी। आगराके पहले दो-एक पड़ावोंपर जो भीड़ थी, वह अब घट गयी। अन्तेवासियोंकी संख्या भी बाबाने बहुत कम कर दी थी। बीहड़ोंमें, ऊबड़-खाबड़ रास्तेमें, खतरनाक क्षेत्रमें जाना है, इसलिए जितने कम साथी रहें, उतना ही अच्छा। हाँ, एक नयी जमात हमारे साथ-साथ अवश्य चलने लगी और वह थी पत्रकारोंकी। उन्हें तो 'सेन्सेशन' चाहिए, सनसनीदार मसाला चाहिए, फिर उसके लिए तोपके मुँहड़ेपर भी जाना पड़े, तो हर्ज क्या!

× × ×

वीरोंकी यह बाट है भाई, कायरका नहिं काम रे,
कायरका नहिं काम रे।...

कपिलदेवकी खँजड़ीपर अभी यह गीत चल ही रहा था कि बाबा मंचपर आ गये। बोले : उत्तर प्रदेशकी हमारी यह यात्रा अब समाप्तिपर है। हम सिर्फ पाँच दिन यहाँ और रहेंगे। उत्तर प्रदेशके मुख्य हिस्सेमे हम हो आये। मेरठसे आगरातक। अब हम मध्यप्रदेशमें जायँगे। उत्तरप्रदेशका हमें अच्छा अनुभव आया। हमें मालूम हुआ कि जगह-जगह अच्छे लोग पड़े हैं, खड़े नहीं। सत्त्वगुणवाले पड़े लोगोंको खड़े करनेकी जरूरत है। ऐसा वे ही कर सकते हैं, जिनमें सत्त्वगुण प्रधान है। यहाँके लोग हैं तो अच्छे, पर दबे पड़े हैं। सोचते हैं, झगड़ेमें कौन पड़े? दूसरोंकी झंझटसे अलग रहना ठीक मानते हैं। उनके हाथसे जो बुराइयाँ होती हैं, उन्हें वे परिस्थितिजन्य मानते हैं। मरनेके मौकेपर शायद उनकी सात्त्विकता उभर आये। पर ऐसा हरि-कृपासे ही होगा। यों सात्त्विक भावना दब जाती है, तो आगे सारी प्रवृत्ति तमोगुणी होती है। इसीलिए मैंने निष्काम सेवकोंकी माँग की है।

गाँववालोंको सम्बोधित करते हुए बाबा बोले : हम कोई उद्देश्य लेकर यहाँ नहीं आये। हम तो परमेश्वरकी तरफ दौड़े जा रहे हैं। हमारे अन्तरकी स्थिति 'मुतमईन' है—समाधान पायी हुई। नदी चलती है,

रास्तेमें काम होता चलता है। आप हमारा जो उपयोग करना चाहें, कर लें। गाँववाले बैठकर सोचें कि हमारे गाँवकी तरक्की कैसे होगी? हम कौन-सा काम करें? सर्वोदय-पात्र, भूदान, अध्ययन-मण्डल, मित्रमण्डल किसका संगठन करें? गाँव तो यह छोटा है, पर छोटे गाँववालोंके दिल तो बड़े होते हैं। कुछ मजबूत काम बनाइये।

× × ×

दोपहरमें खा-पीकर हम लोगोंने कुछ देर आराम किया। थोड़ी देर कुरानशरीफ लेकर बैठा। अच्युतभाई उसी सिलसिलेमें बाबाके पास आये हैं। पर 'बिस्मिल्लाहिर्—रहमानिर्—रहीम' से गाड़ी आगे बढ़ ही नहीं पा रही है। कानपुरके एम० ए० के एक छात्रने विनोबा और भूदानपर 'थीसिस' लिखी है। बाबाने आगरामें उसके प्रबन्धपर हस्ताक्षर कर दिये थे। उसे थोड़ी देरतक उलटता रहा। आगरा विश्वविद्यालय ऐसे विषयोंपर प्रबन्ध स्वीकार कर लेता है, यह प्रसन्नताकी बात है; वरना 'आधुनिक अर्थशास्त्री' तो भूदान और ग्रामदानकी खिल्ली उड़ानेमें ही अपनी विद्वत्ता मानते हैं!

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना-प्रवचनमें बाबाने अपनी पदयात्राकी चर्चा करते हुए कहा कि नौ सालसे हमारी यात्रा चल रही है पैदल पैदल। इसकी वजहसे मैंने बहुतसे काम बन्द कर रखे हैं। लोगोंसे मिलने जाना मैंने बन्द कर रखा है। इसका नतीजा यह होता है कि बड़ोंको खुद ही मिलनेके लिए मेरे पास आना पड़ता है। यह मुझे अच्छा तो नहीं लगता, पर लाचारी है। कल पन्तजी हमसे मिलने आये। सवाल है कि मैंने ऐसी लाचारी रखी क्यों? यह इसलिए कि मैं गाँव-गाँव पहुँचकर गाँववालोंसे मिलना चाहता हूँ। गाँवमें पहुँचनेसे उन्हें लगता है कि यह शख्स हमसे मिलने आया है। वे दिल खोलकर हमसे बात करते हैं। रास्तेमें चलते-चलते बातें होती हैं। रेलसे चलता, तो टिकट खरीदना पड़ता और हर किसीको बाबाका उपयोग न होता। पर बाबा तो बहती गंगा बन गया

जैसा चला लो। बाबा नहीं कहेगा कि मेरे समयका ठीक उपयोग नहीं हुआ। आप जैसा चाहें, वैसा मेरा उपयोग कर सकते हैं। मैं तो इसीलिए आया हूँ कि किसीका दुःख कम कर सकूँ, तो करूँ। उसके सिवा मेरा और कोई मकसद नहीं।

लोग पूछते हैं कि आप डाकुओंके प्रदेशमें जा रहे हैं। मैं कहता हूँ कि ना जी, मैं तो सज्जनोंके प्रदेशमें जा रहा हूँ। मुझे जेलमें उन लोगोंके साथ रहनेका मौका मिला है, जो चोर-डाकू-खूनी माने जाते हैं, बड़े भारी गुनहगार माने जाते हैं। उनमें मैंने कितना प्यार पाया है! उनके बड़े मीठे अनुभव हैं।

हमारा सबसे बड़ा कवि वाल्मीकि कौन था? डाकू ही न?

> बाल्मीक नारद घट जोनी।
> निज-निज मुखन कही निज होनी॥

महापापीको महापुण्यात्मा बनते देर नहीं लगती। डाकूको साधु बनते देर नहीं लगती। सच्चे दिलसे जो प्रायश्चित्त करता है, भगवान् उसके बिल्कुल नजदीक होते हैं।

> बाहर भीतर एकइ जानो।

मैं आपका हूँ, मुझपर आपका पूरा हक है। मेरा चाहे जो उपयोग करिये।

×   ×   ×

प्रार्थना सभाके बाद हम लोग सड़कपर दूरतक टहलने निकल गये। एक जगह कुएँपर पानी भी पिया। सुबह उठके दातून मिलना कठिन होता है, यह सोचकर सड़कपर लगे नीमके पेड़ोंसे कुछ दातूनें भी तोड़ते चले।

रातको एक पीपर मैदानमें डेरा, दो ओवरसर इन्टिरकी छोटी पट्टियाँ

गिल गयीं। उनके साथ खेलता रहा। एकसे नाम पूछा, तो कहा : शोभना ललित। दूसरीसे पूछा : तेरा नाम क्या ? तो बोली : ए एन यू आर ए डी एच ए—एल ए एल आई टी (अनुराधा ललित)! उसकी कहानियाँ सुनता रहा, सुनाता रहा। थोड़ी देरमें एक बच्ची मेरी ही गोदमें सो गयी।

तभी करणभाई आकर बोले : "तुम अब अमर हो गये! बाबासे हम लोगोंने बात कर ली है।"

× × ×

सोनेकी तैयारीमें ही था कि पता नहीं कहाँसे मेरा नाम सुनकर गाँवके दो-तीन छात्र मुझे खोजते-खोजते मेरे पास आ गये। बोले : "हम बरसोंसे 'कल्याण'में और दूसरी जगह आपके लेख पढ़ते आ रहे हैं। हमारा अहो-भाग्य कि आप इस गाँवमें पधारे। कुछ सन्देश दे जाइये हमें, अपना आटोग्राफ भी।"

बड़ी देरतक डटे रहे मेरे ये 'अन्धभक्त'! मैंने लाख समझाया कि 'क्या पिद्दी और क्या पिद्दीका शोरबा! पर सन्देश और हस्ताक्षर लिये बिना उन्होंने मेरी जान नहीं ही बख्शी!

घबरु न कर काहू सन कोई !

टोंकी
९ मई '६०

"आपकी उम्र कितनी है ?"

करणभाई : ५१ साल ।

"आपकी वाजपेयीजी ?"

महादेव : ४९ साल ।

"आपकी मास्टर साहब ?"

सुन्दरलालजी : ५५ साल ।

"आपकी रामबाबा ?"

रामबाबा : ५९ साल ।

और फिर केशोंकी सफेदीपर बोलते हुए बाबा बोले : बाल सफेद रहें, चिन्ता नहीं । चिन्ता रहे, क्षोभ न रहे । चिन्ता न रहे, चिन्तन रहे !

कैसा अनमोल सूत्र !

× × ×

वल्लभस्वामीसे बात करते हुए आज बाबाने अपनी इस कल्पनापर जोर दिया कि लोग मुझसे मिलने आयें, तो पैदल चलकर ही आयें । रेल या किसी सवारीका उपयोग न करें । साथ ही हम डाकपर निर्भर न रहें । हम अपनी निजी डाक-व्यवस्था चालू करें ।

सर्व-सेवा-संघकी ओरसे इजराइल जानेवाले दलके सम्बन्धमें, उसकी व्यवस्थाके सम्बन्धमें, उसके उपयोगके सम्बन्धमें भी बाबाने वल्लभस्वामीसे बात की ।

मानीय कांग्रेसके श्री चतुर्भुज शर्मासे बाबाने कहा कि कांग्रेस

[illegible] विलय होना चाहिए और जैसा कि बापू चाहते थे, कांग्रेसको 'लोकसेवक-संघ' में परिवर्तित कर देना चाहिए।

वे कभी कार्यकर्ताओंसे समझाना चाहते हैं कि एक मासतक बाबाके साथ यात्रामें रहनेको मिले। बाबा बोले : "ऐसा विचार ठीक नहीं। अभी ऐसा मौका भी नहीं है। हाँ, बीचमें कभी-कभी आप एकाध दिन हमारे साथ चलनेके लिए आ सकते हैं।"

× × ×

आजके प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने गाँववालोंको समझाया कि वे लोग मिल-जुलकर सोचें कि वे क्या करें, जिससे उनकी और उनके गाँवकी तरक्की हो। बोले : आज गाँवोंकी बात इसीलिए नहीं बन रही है कि लोग मिलकर सारे गाँवकी बात नहीं सोचते। पहले जमानेमें लोग कथा-कीर्तन-भजन करते थे, फिर गाँवके सुख-दुःखकी बात सोचते थे। गाँवकी भलाईकी बातपर विचार करते थे। लेकिन आज तो हमने सारी ताकत सरकारके हाथ सौंप दी है। स्कूल बनाये तो सरकार, सड़क बनाये तो सरकार, कुँआ बनाये तो सरकार। खेतीमें सुधार करना हो, तो सरकार करे, अच्छा बीज दे, तो सरकार दे। मतलब, हमारा हर काम सरकार करे। तब आप क्या करेंगे ? आप करेंगे सरकारकी स्तुति और निन्दा। यही हमारा धन्धा !

साहूकार कैसे लूटता है, ब्याजपर ब्याज कैसे लेता है, ब्याह-शादीमें फिजूलखर्ची गाँववालोंको कैसे बर्बाद करती है—यह समझाते हुए बाबाने कहा कि गाँववालोंको आपसमें मिलकर रहना चाहिए और अपनी मुसीबतोंको आप सुलझाना चाहिए। कर्जा, साहूकार, वकील—जो भी मसले हों, सबपर मिलकर विचार करना चाहिए।

बाबा बोले : सुना है, इधर कुछ डाके भी चलते हैं। लोग हैरान हो जाते हैं। पुलिस जनताको डाकुओंसे बचाने आती है। उसके दोनों हाथ भारी पड़ते हैं। गाँवके जो भी मसले हों, सबको मिलकर तय करने चाहिए। आपको यह निश्चय करना

चाहिए कि हम गाँवके लिए जियेंगे, गाँवके लिए मरेंगे। आज हम आपके गाँवमें हैं। हमसे जो भी बात करना चाहे, दिल खोलकर बात कर सकता है।

× × ×

कल करणभाई इस गाँवमें जब पड़ावकी व्यवस्थाके लिए आये थे, तो पता चला कि गाँवमें दो पक्ष हैं और परस्पर कुछ विरोध चलता है। उन्होंने दोनों पक्षोंको इस बातके लिए राजी किया कि दोनों मिलकर बाबाके स्वागतका प्रबन्ध करें। फलतः एक जगह बाबाके ठहरनेका प्रबन्ध हुआ, दूसरी जगह हम लोगोंका। खाने-पीनेका प्रबन्ध एक ही जगह था।

अपराह्णमें श्रीकृष्णदत्त पालीवाल और शिवनारायण टण्डन बाबासे मिले। टण्डनजीने इस बातका आश्वासन दिया कि बाबाने ५० निष्काम सेवकोंकी जो माँग आगरासे की है, उसके लिए पैसेकी समुचित व्यवस्था वे कर देंगे। बाबाको इस आश्वासनसे प्रसन्नता हुई।

पालीवालजीसे बाबाने कहा : आप सर्वोदयमें आइये न ! आप तो इसमें पहलेसे ही रुचि रखते हैं।

करणभाईने कहा : बाबा, ये २४ सीढ़ियाँ पार कर चुके हैं। एक ही पार करनेको बाकी है।

बाबा : फिर क्या देर है !

पालीवालजीने अपनी कुछ लाचारी बतायी। कहा : स्वतन्त्र पार्टी-वालोंको मैंने कुछ अभिवचन दे रखे हैं। उसे अधरमें छोड़ देना ठीक नहीं। दलबन्दी है तो बुरी चीज, पर शासनारूढ़ दलको नियन्त्रणमें रखनेके लिए तगड़ी विरोधी पार्टीकी जरूरत है ही। Two Evils (दो बुराइयों) मेंसे एकको चुनना ही पड़ता है।

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना-प्रवचनमें सर्वोदयकी व्याख्या करते हुए बाबाने प्रेम और निर्वैरकी मन्दाकिनी ही मानो प्रवाहित कर दी। सत्याग्रहका वर्णन करते करते उन्होंने तुलसीकी एक चौपाईका इतना सुंदर

होकर गीतोंसे किया-कराया कि लोग गद्गद हो उठे। कान्ताबहन तो सिसक-सिसककर रो ही पड़ीं। काफी देरतक वह रोती रही। बड़ी मुश्किलसे उसके आँसू थम पाये।

वह चौपाई थी :

बयरु न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप बिषमता खोई॥

बाबाने कहा : यह सामने गाड़ी आप देख रहे हैं। यह पुस्तकोंसे भरी हुई है। ये किताबें सर्वोदयकी किताबें कहलाती हैं। सर्वोदय माने क्या? सर्वका उदय—सर्वका भला।

मान लो, दो पक्षोंमें लड़ाई हुई। जो जीता, वह सुखी और जो हारा, वह दुःखी होता है। हिरन और शेरमें लड़ाई हुई। हिरन भागा, इसलिए बच गया। शेर दुःखी और हिरन सुखी। मान लीजिये कि शेरने हिरनको पकड़ लिया, तो हिरन दुःखी और शेर सुखी। एकके दुःखमें दूसरेका सुख, यह कानून चलता है जंगलमें। यदि गाँवमें भी वही चले, भाई-भाईके बीच एक दूसरेको लूटे, तो लूटनेवाला सुखी और लूटा गया आदमी दुःखी होगा। तो यह जंगल जैसी बात हुई। जानवर जैसी बात हुई। यह इन्सानकी बात नहीं। सर्वोदयमें ऐसा नहीं होता। सर्वोदयमें एक सुखी, दूसरा सुखी, तीसरा सुखी, सब सुखी। सर्वोदयमें किसीपर जुल्म, दबाव नहीं होता।

पाँच पाण्डव थे। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव। थे तो ये पाँच ही, लेकिन सब साथ थे। इनके खिलाफ कौरव थे। वे सौ थे, फिर भी पाण्डवोंका कुछ नुकसान नहीं कर सके, क्योंकि धर्मराज युधिष्ठिरकी बातें सब भाई मानते थे। तो भगवान्‌ने भी उनकी मदद की। इसलिए कौरव हार गये, पाण्डव जीत गये। इस प्रकार गाँवमें सब मिल-जुलकर रहें, तो सर्वोदय होगा।

एक भाई आया। कहने लगा कि हमको पुलिस सता रही

है। दूसरेने डाकुओंकी शिकायत की, तीसरेने चकबन्दीकी शिकायत की। ये तीनों सही भी हो सकती हैं और गलत भी हो सकती हैं। मैं आपके हाथमें एक कुंजी देना चाहता हूँ।

> ताला कुंजी हमें गुरु दीन्ही।
> जब चाहों तब खोलों किवरवा॥

कबीर कह रहे हैं कि गुरुने हमारे हाथमें चाभी दे दी है। जब चाहें, तब हम तालेको खोल सकते हैं।

ऐसी एक कुंजी मेरे पास है, वह सर्वोदयकी कुंजी है। अगर वह कुंजी है, तो सबका भला होगा, कोई परेशान नहीं करेगा। चाहे तो सरकारकी ओरसे तकलीफ हो, चाहे तो चकबन्दीकी ओरसे, चाहे तो पुलिसकी ओरसे, चाहे तो वकीलकी ओरसे, चाहे तो साहूकारकी ओरसे, चाहे तो डाकुओंकी ओरसे, चाहे तो गाँव और पंचायतकी ओरसे तकलीफ होती हो—अगर कुंजी हाथमें है, तो सब ताले खुल जाते हैं। कैसे काम करती है यह कुंजी ! यह उँगलियोंकी तरह काम करती है। उँगलियाँ मिल-जुलकर काम करती हैं। पाँच हैं बेचारी, पाण्डवकी तरह। मिल-जुलकर काम करती हैं, तो लाखों काम हो जाते हैं। चक्की पीसना, पानी खींचना, रसोई पकाना, फल काटना, खाना खाना और कपड़े धोना—सारे काम इन पाँचसे होते हैं। लिखनेवालोंकी तीन उँगलियाँ काम करती हैं। लेकिन बाकी दो उँगलियाँ काट दी जायँ, तो फिर कैसे लिखना होगा। "मिल-जुलकर काम करो, यह है सर्वोदयकी कुंजी।"

उँगलियोंमें एक विशेषता होती है और वह है हरएकमें अपना-अपना गुण। एक जो काम करती है, वह दूसरी नहीं कर सकती। धमकाया एक उँगलीसे जाता है, दूसरी उँगलीमें अँगूठी पहनते हैं। सबमें अलग-अलग गुण हैं।

रामका बल मिलेगा, अगर आप नित्य कथा सुनेंगे। नहीं तो जो आया सो 'काटेगा, लूटेगा, पीटेगा।' रामजी साथ होंगे, तो कोई आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा। राम, लक्ष्मण, भरत और चरत चारों कैसे रहते थे ? मिल-जुलकर रहते थे। इस वास्ते सब मिल-जुलकर रहें, इससे दुःख दाह, दारिद दूषण मिट जायँगे। 'गाँव गाँव अस होइ अनंदा।'

"बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।"

वाल्मीकि कौन थे ? वे डाकू थे। 'मरा-मरा' कहते थे। 'राम-राम' भी नहीं कह पाते थे, तो भी उन्हें ब्रह्म मिल गया।

उलटा नाम जपत जग जाना।
बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना॥

रामजीकी कथा चलेगी, तो जो पापी हैं, वो पुण्यवान् बनेंगे, जो पुण्यवान् हैं, सो भगत बनेंगे, जो भगत हैं, वे ज्ञानी बनेंगे, जो ज्ञानी हैं, वे मुक्त हो जायँगे। अब कौन कहाँ है बताओ ! समझो कि सब पापी हैं, तो भी सब पुण्यवान् बनेंगे और एक-एक सीढ़ी ऊपर बढ़ते चले जायँगे। राम-प्रताप ऐसा है कि पाप नहीं टिक सकता, बैर नहीं टिक सकता। तुलसी-दासजीने साफ कह दिया है :

राम-प्रताप बिषमता खोई।
बयरु न कर काहू सन कोई॥

रामजीका प्रताप जहाँ प्रकट हुआ, वहाँ कोई किसीसे वैर नहीं कर सकता। राम-प्रताप बिषमता खोई। बयरु न कर काहू सन कोई॥ यह ऊँचा, यह नीचा, यह ब्राह्मण, यह हरिजन, यह मालिक, यह मजदूर, ऐसी विषमता नहीं टिकती। तो मेरे भाइयो, [illegible] सबसे बड़ी पुस्तक रामायण घर-घरमें होनी चाहिए। सबको रामायण पढ़कर सुनाओ और आपसमें [illegible]

× × ×

कान्ताबहनसे मैंने पूछा : "आखिर इतना क्यों रो रही है ?" बहुत देरतक तो वह सिसकती रही, बोल ही न पायी। बादमें वह रोकर बोली : "इतना लोभ, इतना मोह भरा है इस शरीरमें। भगवान्‌का दर्शन हो तो कैसे ?......"

भगवद्दर्शनके लिए पागल भोली भावुक लड़की ! ० ० ०

वीर वह—जो न तो डरे, न डराये !

फतेहाबाद
१० मई '६०

सोचै सोचि न होवई जे सोची लखवार।

कल शामको फुर्सत देखकर मैंने बाबासे 'जपुजी'की वार्ता छेड़ दी। [भा]ईजी—राधाकृष्ण बजाज—चाहते थे कि मैं इस प्रवासमें बाबाके साथ [बै]ठकर 'जपुजी'का काम पूरा कर डालूँ, पर अभी तो बाबाको फुर्सत ही [क]हाँ है ! सादाबादमें भाईजीने जब यह प्रसग छेड़ा था, तो बाबाने कहा [थ]ा कि "मैंने हर काम पूरा कर डालनेका कोई ठेका ले रखा है क्या ?"

"चाळ, लाना तो वह जपुजीवाली फाइल।" और बाबा गुनगुनाने [ल]गे :

सोचै सोचि न होवई जे सोची लखवार।
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिवतार॥
भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार।
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि॥
किव सचिआरा होइऐ किव कूड़ै तुटै पालि।
हुकमि रजाई चलणा 'नानक' लिखिआ नालि॥

मैंने कहा कि 'सोचै सोचि न होवई जे सोची लखवार'—इस कड़ीका अर्थ एक टीकाकारने ऐसा किया है कि शरीरकी बाहरी पवित्रतासे आन्तरिक पवित्रता नहीं आती, फिर कोई लाख बार क्यों न बाहरी पवित्रता करे। 'सोच'का अर्थ उसने 'शौच' किया है। मुझे भी ऐसा अर्थ जँचता है। परन्तु आपने 'सोच'का अर्थ 'सोचना', चिन्तन करना लिया है और कहा है कि चिन्तन करनेसे सत्य समझमें नहीं आता, भले ही लाखों बार उसका चिन्तन किया जाय।

बालूभाई 'गुरुजी'की फाइल ले आये। उसे उलट-पुलटकर बाबा बोले : "मैंने कई टीकाएँ देखी हैं। उन्हें अच्छी तरह तौला है और फिर अपना फैसला दिया है।"

× × ×

आज प्रातः भ्रमणमें एक भाईने बाबासे पूछ दी आत्मसाक्षात्कारकी बात। बाबाने पूछा : "नाहक समय लेगा या कुछ करेगा भी?"

फिर उन्होंने बताया कि आत्मसाक्षात्कारका सरल उपाय है—सब प्राणियोंमें भगवद्भाव और करुणामूलक साम्यकी साधना। साम्यके दो स्वरूप हैं। एक है—करुणामूलक साम्य और दूसरा है—मत्सरमूलक साम्य। करुणामूलक साम्य ऊपरसे नीचेकी ओर, दुखियों और गरीबोंकी ओर दौड़ता है। जैसे पानी। मत्सरमूलक साम्य नीचेसे ऊपरकी ओर देखता है। लखपती करोड़पतीका मत्सर करता है। मत्सरमूलक साम्य मनुष्यको नीचे गिराता है, करुणामूलक साम्य ऊपर उठाता है।

× × ×

एक भाईने ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्याकी बात छेड़ दी और सत्यकी शोधका मार्ग पूछा। बाबाने बताया कि दृश्य भी तो सत्य है। लड्डूमें आटा, चीनी, घी, आकार कौनसी वस्तु मिथ्या है? स्वप्नमें देखते हैं कि कोई छातीपर बैठा है और मार रहा है। इस कष्टसे आँसू निकल रहे हैं। इन आँसुओंको मिथ्या कहोगे? सत्यके विभिन्न स्तर होते हैं। हमें चाहिए कि हम एक-एक स्तर पार करके ऊपरतक पहुँचनेकी कोशिश करें।

× × ×

चि० गौतम बजाजने मोरोपन्तपर कुछ काम किया है, उससे बाबा उस सम्बन्धमें बात करते रहे। फिर उन्होंने पुकारा : 'मियाँ'!

अच्युतभाई पहुँचे, तो कुरानशरीफपर बाबा उनसे बात करने लगे। पैगम्बरोंकी चर्चा करते हुए उन्होंने एकाध आयत कही और बताया कि सत्यका प्रकाश पानेके लिए मुसीबत उठानेकी तैयारी होनी चाहिए।

× ×

चम्बल घाटीमें आतंकका राज है। सब लोग उससे पीड़ित हैं। कोई डाकुओंसे डरता है, कोई पुलिससे। कोई डाकुओंके मुखबिरोंसे डरता है, कोई पुलिसके मुखबिरोंसे। सबकी जान सांसतमें रहती है। पता नहीं कब कौन आकर हमला कर दे! कब कौन आकर लूट ले जाय! तमाशा यह है कि बन्दूक रखते हुए भी लोग कांपते रहते हैं!

हरिदेव और मेहरबानने [illegible] गाया—

वीरोंकी यह वाट रे भाई, कायरका नहिं काम रे!

बाबाने प्रवेश प्रवचनमें कहा : अभी आपने एक भजन सुना—'वीरोंकी यह वाट रे भाई, कायरका नहिं काम रे।' इसका मतलब समझे ? यह बताता है कि वीरोंका एक मार्ग होता है, एक रास्ता होता है, उसपर कायर नहीं चल सकते। अब तो जमाना बदल गया है। कायर इसके आगे दुनियामें रहने लायक ही नहीं। सबको वीर बनना चाहिए। सबको इस बातका व्रत लेना चाहिए कि हम वीर बनेंगे, हम किसीसे डरेंगे नहीं।

वीर कौन है? वीर वह है, जो न तो किसीसे डरता है और न किसीको डराता है। शेर 'जंगलका राजा' कहलाता है। वह राजा कैसे हुआ? इसलिए कि वह जंगलके जानवरोंको खा जाता है! जो प्रजाको खा जाय, वह राजा? राजा सो राजा? नहीं, यह बात गलत है। राजा तो वह है, जो सबकी सेवा करता है। शेर उन जानवरोंपर तो हमला करता है, जो उससे कमजोर हैं, पर गोलीसे वह खुद डरता है! मेरे एक मित्र बताते थे कि एक बार जंगलमें रातके समय उनके सामने शेर आ गया। उन्होंने अपनी टार्चकी रोशनी उसकी आँखोंपर फेंकी। उसकी आँखें चकाचौंध हो गयीं। उसे लगा [illegible] बला है। वह डरकर भाग गया!

कोई आदमी कब मरता है ? जब उसके प्रारब्धका क्षय होता है। मान लीजिये, किसीने बाबाको कत्ल कर दिया, ६५ सालके बाबाके दो टुकड़े कर दिये, पर क्या इससे बाबा मर जायगा ? बाबाका जिस क्षण प्रारब्ध क्षय होगा, उसी क्षण वह मरेगा। उससे पहले उसके दो टुकड़े कर दो, तब भी वह न मरेगा। मरनेका डर छोड़ते ही आदमी वीर बनता है।

लोगोंको लूट खसोटका डर रहता है। क्यों ? इसीसे कि वे ताला-कुंजी लगाकर धन-सम्पत्ति रखते हैं। इसे गरीबोंको बाँट दो। सारा डर छूट जायगा।

अरे, कितने दिन रहना है हमें ? कोई लाखों साल जीना है क्या ? इसलिए उदार बनकर दो। दो हाथोंसे दोगे, हजार हाथोंसे मिलेगा। देनेवालेको कोई डर नहीं।

दो दिन रहा उदार।
चलो गंगाके पार॥

× × ×

बाबा ठहराये गये जूनियर हाईस्कूलमें, हम लोग पासकी धर्मशालामें। नहाने गये हम लोग कुएँपर। रहँटवाला चला गया था, उसे खोज-खाजकर बुलाया। धर्मशालामें ही भोजन हुआ। श्रीमती शकुन्तला ललित बादवाली पाँतमें बैठीं, तो मुझे देखकर बोलीं : "बेबी आपकी बड़ी याद करती है !"

× × ×

स्कूलके पिछवाड़ेके मैदानमें सायंकालीन सभा हुई। फतेहाबादके नागरिकोंकी ओरसे बाबाको २०१) की थैली भेंट की गयी, तो बाबा बताने लगे दानकी महत्ता, देनेकी महत्ता। बोले : हम यह पैसा सर्वोदय-मण्डलको दे देते हैं। हम तो खाली हाथ आये हैं और खाली हाथ ही जायँगे। हम तो चाहते हैं प्रेम और करुणाका विस्तार हो। कोई हमें

कोई आदमी कब मरता है ? जब उसके प्रारब्धका क्षय होता है। मान लीजिये, किसीने बाबाको कत्ल कर दिया, ६५ सालके बाबाके दो टुकड़े कर दिये, पर क्या इससे बाबा मर जायगा ? बाबाका जिस क्षण प्रारब्ध क्षय होगा, उसी क्षण वह मरेगा। उससे पहले उसके दो टुकड़े कर दो, तब भी वह न मरेगा। मरनेका डर छोड़ते ही आदमी वीर बनता है।

लोगोंको लूट-खसोटका डर रहता है। क्यों ? इसीसे कि वे ताला-कुंजी लगाकर धन-सम्पत्ति रखते हैं। इसे गरीबोंको बाँट दो। सारा डर छूट जायगा।

अरे, कितने दिन रहना है हमें ? कोई लाखों साल जीना है क्या ? इसलिए उदार बनकर दो। दो हाथोंसे दोगे, हजार हाथोंसे मिलेगा। देनेवालेको कोई डर नहीं।

दो दिन रहा उदार।
चलो गंगाके पार॥

× × ×

बाबा ठहराये गये जूनियर हाईस्कूलमें, हम लोग पासकी धर्मशालामें। नहाने गये हम लोग कुएँपर। रहँटवाला चला गया था, उसे खोज-खाजकर बुलाया। धर्मशालामें ही भोजन हुआ। श्रीमती शकुन्तला ललित यादवाली पाँतमें बैठीं, तो मुझे देखकर बोलीं : "देवी आपकी बड़ी याद करती है !"

× × ×

स्कूलके पिछवाड़ेके मैदानमें सायंकालीन सभा हुई। फतेहाबादके नागरिकोंकी ओरसे बाबाको २०१) की थैली भेट की गयी, तो बाबा बताने लगे दानकी महत्ता, देनेकी महत्ता। बोले : हम यह पैसा सर्वोदय-मण्डलको दे देते हैं। हम तो खाली हाथ आये हैं और खाली हाथ ही जायँगे। हम तो चाहते हैं प्रेम और करुणाका विस्तार हो। कोई हमें

"बाबा आया ! बाबा आया !!"—फतेहाबादमें चारों ओर शोर मच गया। लोग दौड़े जूनियर हाईस्कूलकी ओर। सारा बरामदा, आसपासका लॉन आदमियोंसे खचाखच भर गया।

रात्रिकालीन प्रार्थनाके लिए बरामदेके सामनेवाले लॉनमें दरी बिछायी गयी। बाबा आकर बैठे, तो जनरल यदुनाथ सिंह एक सज्जनको बाबाके पास लाकर बोले : "बाबा, ये हैं इसलाम अहमद, डी० आई० जी० पुलिस।"

बाबा कुछ देर उनसे बातें करते रहे। इसके बाद वे प्रणाम करके चले गये।

रामऔतार दूसरे कोनेपर बैठा था। उसे देखनेके लिए भीड़ उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी। प्रार्थनाके बाद भीड़से अनुरोध किया गया कि वह अब अपने घर जाय। बाबा अब सोयेंगे।

× × ×

स्कूलसे निकलकर धर्मशाला पहुँचा, तो देखा कि शर्माजी अपनी कार द्वारा आगरासे वहाँ आ पहुँचे हैं। तीसरी मंजिलकी खुली छतपर हम लोगोंने अपने बिस्तर जमाये। आजके आत्मसमर्पणकी चर्चा करते-करते हम, शर्माजी, वैद्य शम्भुनाथ और अच्युतभाई कब निद्रादेवीकी गोदमें चले गये, इसका पता ही नहीं चला ! ● ● ●

डर छोड़ो, डाकूको प्यार करो !

अछौटा

११ मई '६०

फतेहाबादतक तो ऐसा नहीं लगा था कि हम किसी विशिष्ट प्रदेशमें घूम रहे हैं, पर आज सबेरेसे ही ऐसा लग रहा है, मानो हम आ गये अब चम्बलके बेहड़ोंमें ।

सड़कके आसपास कृत्रिम पेड़ोंकी संख्या घट रही है, प्रकृतिकी ऊबड़-खाबड़ काया, ऊँची-नीची जमीन, कहीं पतले-लम्बे झुरमुट, कहीं घनी छाया देखकर आँखोंको लगता है कि अब हम सामान्य क्षेत्रको छोड़कर आगे बढ़ रहे हैं ।

और यह आ गयी उतंगन नदी । चम्बलकी यह सहेली है तो छोटी, पर है बड़ी खोटी ! बरसातमें बड़ा उग्ररूप धारण करती है यह । उस समय इसे पार करना कठिन होता है । और यह तो है ही कि जहाँ कुछ कठिनाई है, जहाँ किसी साहसकी अपेक्षा है, वहीं 'साहसी' लोग अपना डेरा जमाते हैं ।

आजसे एक दशक पहलेतक इधरका क्षेत्र सर्वसाधारणके लिए 'वर्जित' सा था । न अच्छे रास्ते, न अच्छी सड़कें । सन् १९५२ में पहली बार इस उपेक्षित क्षेत्रकी ओर हमारी प्रादेशिक सरकारकी कृपादृष्टि गयी । इधर सड़कें खुलीं और ब्लाक डेवलपमेण्टका कुछ काम शुरू हुआ । तभी इस उतंगन नदीपर भी स्थायी अंकुश लगाने और भीतरी क्षेत्रमें हर समय पहुँचनेके लिए मजबूत और पक्का पुल बनानेमें हाथ लगा । मार्च '५५ में बाबू सम्पूर्णानन्दने इस पुलका उद्घाटन किया ।

हमने देखा कि नदी तो बहुत छोटी-सी है, पुल बहुत बड़ा है । साफ

है कि अभी यह उसका वामन रूप है। थोड़े ही दिनों बाद वह तीन डगमें आसपासकी सारी धरती अपनी गोदमें समेट लेनेवाली है।

'उतंगन' नाम सुनकर बाबा बोले : "उतगन इसका नाम नहीं लगता। नाम इसका रहा होगा 'उत्तम गंगा'। बिगड़ते-बिगड़ते उतंगन हो गया।"

पुल काफी ऊँचाईपर है। लम्बी पेशबन्दी करनी पड़ी है। सड़कको धीरे-धीरे उठाकर इतनी ऊँचाईतक लाना पड़ा है। सूर्योदयकी सुहावनी वेलामें अभी हमने पुल पार किया ही था कि उसके किनारेसे ही नीचे उतरना पड़ा। नदी किनारे वृक्षोंके झुरमुटके पास ही तो आज हमारा डेरा है।

आजका डेरा सचमुच डेरा है। आगराके एक डेरेवालेसे ये तम्बू किरायेपर लाये गये हैं।

×　　×　　×

आज जंगम विद्यापीठमें एक मुख्तार साहबने बाबासे कहा : 'बाबा, मैं कुछ निष्काम सेवा करना चाहता हूँ।'

'आपकी उम्र ?'

'५६ साल।'

बाबा : मैं ५६ का था, तभी मैंने भूदान शुरू किया। आप ५६ के हैं, अच्छी बात है। निवृत्त होकर काम करिये। 'गीता प्रवचन'का निष्काम कामवाला अध्याय पढ़ डालिये। कुछ शिक्षण, कुछ सफाईका काम सीख लीजिये। सेवापुरीमें दो महीने सफाईके कामकी ट्रेनिंग ले आइये। उसके बाद सेवामें जुट जाइये।

×　　×　　×

प्रार्थना प्रवचनमें निष्काम सेवकोंकी अपनी माँगपर जोर देते हुए बाबाने इन भाईकी चर्चा की। कहा : एक भाई हैं ५६ सालके। मैंने उनसे पूछा : 'आपको घर-बारसे एकदम मुक्ति मिल गयी है ?' बोले : 'हाँ।' कोई आदमी इस उम्रमें घरबारसे मुक्त होकर निष्काम सेवाके लिए

बाबा : तब तुम रहते कैसे हो ?

'रहता हूँ, पुलिसके सहारे ।'

बाबा : गाँवके दो सौके दो सौ आदमी तुम्हारे खिलाफ हैं ! यह तो अचम्भेकी बात है । कोई भी तुम्हारा साथ नहीं देता ?

'नहीं, बाबा !'

बाबा : 'तुम्हारे पास जमीन कितनी है ?'

'जमीन तो काफी है । दूसरोंसे ज्यादा है ।'

बाबा : 'गाँवमें किसीपर आफत-मुसीबत आती है, तो तुम मदद करने जाते हो ?'

'नहीं बाबा । कैसे जाऊँ ? हिम्मत ही नहीं पड़ती !'

बाबा : 'पुलिस तुम्हें कबतक बचायेगी ?'

'अब तो उसीका सहारा है बाबा !'

बाबा : गलत बात । डर छोड़ो, सबको प्यार करो । तब काम बनेगा ।

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना-सभामें बाबाने कहा : यहाँके जो मसले हैं, वे लोग हमें रोज आ-आकर सुनाते हैं । आज भी कुछ भाई आये, कुछ बहनें आयीं । सबने अपनी-अपनी कहानी सुनायी । हम सुनते रहे ।

सोचनेकी बात है कि भगवान् हम सबके पिता-माता हैं । वे सबसे दयालु पिता हैं । वे भला कभी हमारे लिए दुखदायी जिन्दगीका इन्तजाम करेंगे ? भगवान् तो चाहते हैं कि हम सब सुखी रहें, प्रेमसे रहें । उन्होंने हवा बनायी, पानी बनाया । हवा-पानी के बिना हम जिन्दा नहीं रह सकते । भगवान्ने ऐसी योजना बनायी कि हवा-पानी हमें सबसे आसानीसे मिल सके ।

गाय दूध देती है, गोबर भी देती है । हम गोबर खाना शुरू कर दें और दूधसे आँगन लीपने लगें, तो यह हमारी ही गलती है न ? भगवान्का इसमें क्या कसूर ? उसने तो हमारे लिए सुखकी ही योजना बनायी, हम

खुद दुःखका कारण बनाते हैं। हवा, पानीपर जैसे किसीकी मिल्कियत नहीं, वैसे ही जमीनपर भी किसीकी मिल्कियत न रहे। सब लोग मिलकर गाँवका परिवार बना लें, सबकी जमीन मिलाकर एक कर लें, मिल्कियत मिटा दें, मिल-जुलकर खायें, तो कोई दुःख न रहे। मंगरौठमें सबने जमीनकी मिल्कियत गाँवकी मिल्कियत बना दी। उनकी फसल कई गुनी बढ़ गयी। इस तरह हम मिल-जुलकर काम करेंगे, तो भगवान्‌की कुदरतका काम होगा।

आज इस छोटेसे प्रदेशमें १५ हजार पुलिस पड़ी है। कहते हैं डाकुओंके गिरोह हैं यहाँ। ये डाकू क्या भगवान्‌ने पैदा किये हैं ? डाकूके दो नाकें होती हैं क्या ? चार हाथ, चार पैर होते हैं क्या ? हमारी तरह ही एक नाकवाले, दो हाथवाले, दो पैरवाले आदमीको 'डाकू' कहना ठीक है क्या ? हम कंजूस बनते हैं, तो सामने चोर खड़ा होता है। हम कंजूसी छोड़ें, तो चोर भी चोरी छोड़े।

कोई आदमी डाकू पैदा नहीं होता। हम दूसरोंको लूटते हैं, चूसते हैं, कंजूस बनते हैं, दूसरोंकी परवाह नहीं करते, निठुर होकर जीवन बिताते हैं। उसीका यह नतीजा है। ग्वालियर जेलमें कई चोर-डाकू कहे जानेवाले कैदियोंने सुपरिण्टेण्डेण्टसे माँग की कि विनोबा राजनीतिक कैदियोंको जैसे गीता और धर्मकी बात समझाते हैं, वैसे ही हमें समझायें। सुपरिण्टेण्डेण्टने हमसे कहा। हमने उन्हें एक घण्टेकी छुट्टी दिलायी और उन्हें उपदेश देने गये। उन्होंने हमें माला पहनायी, दण्डवत की। हम उन्हें धर्मकी बात सुनाते रहे। भगवान्‌का वर्णन सुनकर उनमेंसे कुछकी आँखोंसे आँसू आने लगे। उनमें कुछ फाँसीके भी कैदी थे। हम उन्हें राम, कृष्ण, गीताकी बात सुनाते। बड़े आदर और प्रेमसे वे सुनते। हमने देखा कि उनमें बड़े अच्छे लोग हैं।

हम डाकूपर प्यार करें, रहम करें, हिम्मत करें और सारा गाँव एक बना लें, तो सारे मसले अपने-आप हल हो जायँ। जो लोग डाकू होते हैं, वे बड़े सख्त होते हैं, वे निर्भय होते हैं, बहादुर होते हैं। उनकी पटरी बदल जाय, उन्हें भक्तिकी दिशा लग जाय, तो वे साधु बन जायँगे। पुलिससे यह मसला हल नहीं हो सकता।

तेलंगानामें यही हाल था। हमने उन्हें प्रेमकी बात समझायी। भूदानकी बात समझायी। २ महीनेमें १२ हजार एकड़ जमीन दानमें मिली। वह हमने गरीबोंको बाँट दी। प्रेम और हिम्मतसे वहाँका मसला हल हो गया। उसी तरह यहाँ भी हो सकता है।

पुलिस कायमके लिए रहेगी, तो डाकू भी कायमके लिए रहेंगे। द्वेष और नफरत विरासतमें चली आयेगी। पुश्त-दर-पुश्त दुश्मनी चलती रहेगी। इसलिए भाईचारा बढ़ाओ। एक-दूसरेसे प्रेम करो। डरो मत। डरनेवालोंको कोई बचा नहीं सकता। डरनेवालेको डरानेवाला मिल ही जाता है। शेर आँख मिलाता है। वह जब किसीकी आँखमें डर देखता है, तो तुरत उसपर हमला कर देता है। इसलिए आप लोग डर छोड़िये, आपसमें एक-दूसरेसे प्रेम करिये और गाँवको एक बनाइये।

× × ×

शामको गाँवमें भोजनकी व्यवस्था थी एक मकानकी छतपर। सबने वहीं जाकर भोजन किया। लौटने लगे, तो शर्माजीकी नजर सामने हलवाईकी दूकानपर पड़ी। ब्राह्मणं मधुरं प्रियम्। उन्होंने वहाँसे गुझिया खरीदकर हमें भी खिलायीं, खुद भी खायीं।

बालू अब ठण्डी हो गयी थी। अच्युतभाई और हम दो-तीन जने कुछ देर नदीके किनारे बालूके फर्शपर कुछ देर लेटे-लेटे गप करते रहे। फिर आकर अपने बिस्तरोंपर लेट रहे।

× × ×

धाँय ! धाँय !!

रातमें दूर कहीं गोलीकी आवाज सुन पड़ी । जनरल साहब और हममेंसे कुछ भाई इधर-उधर बीहड़ोंमें कुछ देर भटकते रहे, पर कुछ ठीक पता न चल सका कि बात क्या है ! लोगोंको शक हुआ कि कहीं ऐसा तो नहीं कि कोई गुमराह भाई बाबासे मिलने आ रहा हो और किसीने उसका पीछा किया हो !

पर्देकी बात पर्देमें ही रह गयी !

○ ● ●

डाकू तुम्हारा छठा भाई

पिनहट (आगरा)
१२ मई '६०

निगह अपनी हकीकत-आशना मालूम होती है !
नजर जिस शय पै पड़ती है खुदा मालूम होती है !!

मानवको जब सत्यकी अनुभूति हो जाती है, तो उसे सर्वत्र उस परम प्रभुकी झाँकी दीखने लगती है। कण-कणमें उस अनुपम माधुरीके दर्शन होने लगते हैं। सत्यदर्शी ऋषिने सत्यके दर्शन करनेके उपरान्त ही कहा था : 'सम्पूर्णं जगदेव नन्दनवनं' और 'सर्वेऽपि कल्पद्रुमाः !' सारा जगत् नन्दनवन है, सारे वृक्ष कल्पवृक्ष ! 'दृष्टे परब्रह्मणि' की महिमा ही ऐसी है।

उसे सब कुछ सुहावना ही दीखता है : लाली मेरे लालकी जित देखों तित लाल ! सारी ऋतुएँ, सारे महीने, सारे दिन सुहावने ही लगते हैं।

ब्राह्ममुहूर्तमें जंगम विद्यापीठमें गाते-गाते बाबा महादेवी ताईको पढ़ा रहे हैं। सामवेदके ऋषिकी वाणी :

वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः॥

ग्रीष्म रमणीय है, वसन्त रमणीय है, शिशिर रमणीय है !···

× × ×

गौतम पूछता है : बाबा, मन्त्रमें शक्ति होती है ?

बाबा : क्यों नहीं होती ? 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'; Quit India (भारत छोड़ो) और 'झालाच पाहिजे'—मन्त्रोंकी सार्थकता इसका प्रमाण है।

× × ×

कपिलदेवकी खँजड़ी बोल रही है :

शान्तिके सिपाही चले !
क्रान्तिके सिपाही चले !
लेके खैरख्वाही चले !
रोकने तबाही चले !
शान्तिके सिपाही चले !
चले चले चले चले !
शान्तिके सिपाही ....!

पिनहटमें विद्यालयके पश्चिमवाले दालानमें कुर्सीपर बैठकर बाबाका प्रवेश-प्रवचन हुआ। बाबाने कहा कि यह उत्तरप्रदेशकी हमारी इस बारकी यात्राका अन्तिम पड़ाव है। उत्तर प्रदेशवालोंने ५ लाख एकड़का शुभ संकल्प किया था। ऐसा शुभ संकल्प जहाँ होता है, वहाँ नारायणकी शक्ति प्रकट होती है। सब लोग मिलकर प्रेम बढ़ानेका शुभ संकल्प करें।

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये रवौ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥

डाकू-समस्यापर बोलते हुए बाबा बोले :

लोग कहते हैं कि बाबा डाकू-क्षेत्रमें जा रहा है। बाबा पूछता है कि क्या यह डाकुओंके बापका क्षेत्र है? इधर डाकू, उधर पुलिस। दोनों बेकारोंकी जमातें। एक-दूसरेके लिए तैनात हैं। वैसी ही बेकारोंकी तीसरी जमात है मुलजिमोंकी। मालदार अपना माल पकड़े रखता है। अपनी रक्षाके लिए वह पुलिसको बुलाता है। पुलिस उसके रक्षणके लिए है, तुम्हारे भक्षणके लिए। वह किसीको मारती है, किसीको पीटती है, किसीको ठोकती है। कहती है कि हम तो कानूनके बचावके लिए ऐसा करते हैं! कितने शर्मकी बात है कि तुम अपने-आप अपना रक्षण नहीं कर सकते! पुलिसकी मददसे जीनेके बजाय

तो मर जाना लाख दर्जे अच्छा है। इससे इन्सानियत नहीं पनप सकेगी।

मैं नहीं मानता कि डाकुओंकी कोई समस्या है। हमने मिलकियत बना रखी है। उसीकी यह सारी खुराफात है। मिलकियत ढीली करिये। भगवान्‌की जमीन, भगवान्‌की सम्पत्ति सबको बाँट दीजिये। मिलकर प्रेमसे रहिये, तो यह समस्या अपने-आप हल हो जायगी।

मिलका आटा खाकर, सिनेमा देखकर, रातमें १-१ बजेतक जागकर, बीड़ी-सिगरेट पीकर हमारे नौजवान वीर्यहीन बन रहे हैं। अशक्त बन रहे हैं। आरामतलब बन रहे हैं। शहरोंमें १८-२० सालकी लड़कियाँ सुरक्षित नहीं। ऐसी बुरी हालत है। भला ऐसा रहते हुए कभी हम अहिंसासे अपनी और अपने देशकी रक्षा कर सकेंगे ? यह सारी हालत बदलिये। शरीरसे मजबूत बनिये, हाथकी चक्कीका ताजा आटा खाइये, व्यायाम करिये, जल्दी सोइये, जल्दी उठिये, अच्छी आदतें डालिये और सख्त जीवनका अभ्यास करिये।

असली डाकू तो धन-संग्रह है। वह जो बाहर खड़ा है, वह तो हमारा प्यारा भाई है। पाण्डव पाँच नहीं, छह थे। छठे भाईको वे भूल गये, इसीसे वे सब फेल हो गये। इसीसे महाभारत हुआ। डाकू तुम्हारा छठा भाई है। उसके लिए अपना दर्वाजा खोल दो। प्रेमसे उसे अपने साथ लो। उसे अपनाओ। गाँवके सब लोग मिल-जुलकर गाँवकी समस्याओंको हल करो।

× × ×

बाबाके निवासके लिए स्कूलमें व्यवस्था हुई। वहीं एक-दो कोठरियोंमें बहनोंके लिए प्रबन्ध किया गया। हम सबके लिए थोड़ी दूरपर नये बने क्वार्टरोंमें इन्तजाम किया गया। हमारे बगलके क्वार्टरमें जनरल साहब और उनका दल ठहरा।

आज दोपहरमें इतना निकट होनेके कारण मैंने पहली बार देखा कि

जनरल साहब मण्डपके भीतर बैठकर ध्यानावस्थित हैं और सामने है श्रीकृष्ण भगवान्का एक मनोहर चित्र। यहीं पूजा करके ही वे रोज भोजन करते हैं, फिर कितना ही वक्त क्यों न हो जाय। तभी यह समझमें आया कि क्यों कश्मीरके लोग इन्हें 'भगत जनरल' कहते रहे हैं। लड़ाईके दौरानमें कश्मीरके मोरचेपर यह नया ब्रिगेडियर 'पूजा'का समय होते ही अपने तम्बूमें अन्तर्धान हो जाता था, फिर तम्बूपर गोले ही क्यों न बरसते रहें!

× × ×

अच्युतभाईके जूते थे तो अहिंसक, फिर भी न जाने कैसे वे किसीकी आँखमें गड़ गये। जूतेके बिना बेचारे कई दिनसे मुसीबतमें थे। कोशिश की कि आगरासे नये जूते मँगवा लें, पर जूते चाहिए मरी गायकेचमड़ेके। गांधी आश्रममें भी वे न मिल सके। पिछले पड़ावोंपर भी नहीं। गोया, पिनहटमें शायद मिल सकें।

हमारे स्वर्गीय साथी जगन्नाथ गुप्तका चिरंजीव रमेश यहाँ आते ही मिल गया। इधर ननिहाल है उसका। उसके साथ कई चमार भाइयोंके घरोंपर हम लोगोंने चक्कर लगाये, पर गाँवोंमें भी ग्रामोद्योग आज कहाँ है? जिसे पूछो, वही कहता कि आगरासे चमड़ा मँगाया है। मरे ढोरका नहीं होगा, मारे ढोरका हो सकता है। खोजते-खोजते एक जगह मरी गायका चमड़ा मिल गया और एक भाई तैयार भी हो गया शामतक जूता बनाकर देनेके लिए। शामको उसने जूता बनाकर दे दिया। पर उसके पहले बाळभाईने बाबाकी पुरानी चप्पल अच्युतभाईको दे दीं। वे बोले : "पहले दे देते, तो जूतेकी चकल्लसमें क्यों फँसता!"

× × ×

तीसरे पहर बाबाके निवासके बाहर मैंने एक गोरे नौजवानको चक्कर काटते देखा। पूछा, तो उसने कहा कि मैं हूँ वाटसन सिम्स, दिल्लीमें अमेरिकाके असोसियेटेड प्रेस ब्यूरोका प्रधान। चाहता हूँ, आचार्य विनोबा भावेसे मुलाकात करना।

'आपने अपने प्रश्न लिख रखे हैं क्या ?'—मैंने पूछा ।

'हाँ'— कहकर उसने एक छोटासा कागज दिया मुझे ।

बाबासे कहकर उसकी मुलाकात करा दी ।

'कबसे हैं आप भारतमें ?' बाबाने पूछा ।

'दो सालसे ।'

'हिन्दी सीखी है कुछ ?'

'मामूली-सी ।'

'जरा जोरसे बोलियेगा । मैं ऊँचा सुनता हूँ'—कहकर बाबाने सिम्ससे मुसकराते हुए कहा : 'आपके प्रश्न बहुत अच्छे हैं ।'

सिम्सका पहला सवाल था भूदान और उसकी सफलताके सम्बन्धमें ।

बाबाने कहा : भूदानमें मुझे आशातीत सफलता प्राप्त हुई है । इसमें सबसे प्रमुख बात है हृदय-परिवर्तनकी । बाहरी बातोंको मैं उतना महत्त्व नहीं देता । आन्तरिक भावनापर ही मेरा जोर रहता है । मैंने पाया है कि लोगोंके हृदय बदल रहे हैं, पुराने गलत मूल्य बदल रहे हैं । इस दिशामें जितना अधिक काम हुआ है, उसकी मैंने कभी अपेक्षा भी नहीं की थी । सरकार अपने भूमि-सुधार और 'सीलिंग'से अधिकसे अधिक १० लाख एकड़ प्राप्तिकी आशा रखती है । उससे कहीं अधिक जमीन मुझे पहले ही मिल चुकी है ।

सिम्सका दूसरा और तीसरा सवाल था—आप कबतक भूदानमें लगे रहेंगे और आपकी यह पदयात्रा कबतक चलती रहेगी ?

बाबा बोले : अनिश्चित कालतक चलती रहेगी मेरी यात्रा । उसे बन्द करनेका मेरा कोई इरादा नहीं है । भगवान् जबतक चाहेगा, तबतक वह चलेगी । मैं तो उसके हाथकी कठपुतली हूँ । जबतक वह नचायेगा, नाचूँगा ।

Your's not to Question why,
Your's but to do and die !

शिष्यका अन्तिम प्रश्न था—विश्व-शान्तिके विषयमें। पूछा उसने कि विश्व-शान्तिके सम्बन्धमें आप क्या सोचते हैं?

बाबाने कहा : मैं तो बहुत आशावादी हूँ विश्व-शान्तिके सम्बन्धमें। हमारे सामने दो ही रास्ते हैं—या तो हम विश्व-शान्ति स्थापित करें अथवा अपने हाथों अपना सर्वनाश कर लें। विश्व-शान्तिमें सबसे बाधक यदि कोई बात है, तो वह यही कि हम एक-दूसरेपर विश्वास नहीं करते। डंका तो सभी पीटते हैं विश्व-शान्तिका, पर भीतरसे लोगोंका परस्पर विश्वास नहीं है। न आइसनहावरका क्रुश्चेवपर पूरा विश्वास है, न क्रुश्चेवका आइसनहावरपर। यह अविश्वास हटे, तो विश्व-शान्तिमें क्या देर है!

शिष्य प्रणाम करके चलने लगा, तो बाबाने पूछा : आपकी उम्र?

'२८ साल।'

'Very young!' (बहुत कम उम्र है अभी!) कहकर बाबाने मुसकरा दिया!

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना-सभामें बाबाने कहा कि आज एक अमेरिकन भाई मुझसे पूछ रहा था : 'बाबा, आप कबतक चलते रहेंगे?' मैंने उससे कहा कि जबतक भगवान् चलायेंगे, चलता रहूँगा। भगवान्की प्रेरणासे ही यह यात्रा चल रही है। इसीलिए इस बुढ़ापेमें भी बाबाको उसकी कोई थकान महसूस नहीं होती।

इसके बाद बाबाने अपना प्रेम-सन्देश बिखेरते हुए कहा :

लोग कहते हैं कि यहाँके लोग पुलिस, डाकू, मुसाफिर आदिसे बुरी तरह तंग आ गये हैं। फिर भी मैं देखता हूँ कि यहाँ हजारोंकी तादादमें लोग इकट्ठे हैं, जिन्दा हैं। याद रखना चाहिए कि भगवान् जबतक चाहेंगे, तबतक हम जिन्दा रहेंगे। हमें कोई नहीं मार सकता। हमें डर है ही नहीं। हमारे चारों ओर, आगे-पीछे, इधर-उधर, ऊपर-नीचे हमारी रक्षाके लिए भगवान् मौजूद हैं; बशर्ते कि हम भगवान्की भक्ति करें और

सही राहपर चलें। भगवान्‌ने जैसे प्रह्लादकी रक्षा की, वैसे ही वह हमारी भी रक्षा करेगा। भक्तोंका अनुभव है कि भक्तका कभी विनाश नहीं होता। गीतामें भगवान्‌ने कहा है :

न मे भक्तः प्रणश्यति।

और सूरदासका पद है :

सुन अरजुन परतिज्ञा मोरी,
हम भक्तनके, भक्त हमारे !

जो आदमी सत्यको नहीं छोड़ता, जो आदमी प्रेमका रास्ता पकड़ लेता है, उसका कभी नाश होता ही नहीं। उसको डरनेका कुछ है ही नहीं। इसलिए डरको अपने मनसे बिलकुल निकाल दो।

सरकारने आपकी रक्षाके लिए आपपर दया करके थोड़ी देरको पुलिस आपके पास भेज दी है। पुलिस आपको तकलीफ न भी देना चाहे, तो भी उसके रहनेसे आपको तकलीफ होती है। सोचना चाहिए कि हमारा रक्षक तो भगवान् है। वह रक्षा करेगा तो रक्षा होगी। वह रक्षा नहीं करेगा, तो हमें कौन बचा सकता है ? पुलिस बेचारी क्या करेगी ? पुलिसके रहनेसे लोगोंका डर घटता नहीं, बढ़ता ही है। यह डर कब कम होगा ? तभी, जब हम भगवान्‌पर श्रद्धा करेंगे और एक-दूसरेसे प्रेम करेंगे।

आज तो चारों ओर बेकारोंकी जमात है। पुलिस, डाकू और बड़े-बड़े मालिक। पुलिसके रहनेसे खर्च बढ़ता है। उसे कुछ काम रहता नहीं। बड़े-बड़े मालिक भी बेकार हैं और डाकू तो हैं ही। कुछ पैदा न करनेवाले इन बेकारोंकी जमातसे जनता पिसती है। यह समस्या कैसे सुलझेगी ? इसका उपाय यही है कि लोग प्यारसे आपसमें मिल जायँ। सब लोग पैसा नहीं, प्यार बटोरें। बड़े-बड़े मालिक अपनी जमीन उनको

बाँट दें, जिनके पास जमीन नहीं है। पैसेवाले अपना पैसा उन्हें बाँट दें, जिनके पास पैसा नहीं है।

तेलंगानामें भी ऐसा ही डर फैला था। हमारी प्रेमकी बात सुनकर वहाँके जमीनवालोंने २ महीनेमें १२ हजार एकड़ जमीन गरीबोंको बाँट दी। भूमिवानों और भूमिहीनोंमें प्रेम बढ़ा। आप भी ऐसा ही कर सकते हैं।

सरकार हमपर विश्वास करती है, इसीसे उसने बाबाको यहाँ कुछ सहूलियतें दे रखी हैं। कोई भी आदमी निधड़क बाबाके पास आ सकता है और बाबाके हाथोंमें अपनेको सौंप सकता है। पुलिस उसे सतायेगी नहीं। ऐसा सरकारने इसीलिए कर रखा है कि वह भी मानती है कि यहाँकी समस्या दण्डसे नहीं, प्रेमसे ही सुलझ सकती है। बाबाका प्रेम सन्देश सुनकर लोगोंका हृदय-परिवर्तन हो सकता है और वे अपने गलत कामोंके लिए पश्चात्ताप कर सकते हैं। प्रेमकी शक्तिपर हमारा विश्वास है। आप भी हमारे इस सन्देशको जगह-जगह फैलाइये। अभी एक भाईने थोड़ी-सी जमीन दी, लोगोंने ३००) की थैली दी। इसी तरह सब लोग प्रेम बाँटिये, त्याग करिये, मिल जुलकर रहिये, तो यहाँकी समस्या सुलझी-ही-सुलझी है।

× × ×

शामको स्कूलके बाहरके लानमें बाबा बैठे थे, तो शरणभाईने श्री कौशलकिशोरसे मिलाते हुए कहा : 'बाबा, ये हैं यहाँके कलेक्टर के० किशोर।'

कुछ देर बाद डॉक्टर ललितने अपने हाथके कते सूतका एक थान बाबाको भेंट किया। 'गीता-प्रवचन' पर हस्ताक्षर करानेके लिए लोग आते रहे। रामऔतारने भी 'गीता-प्रवचन' लिया। बाबा जब उसपर हस्ताक्षर करने लगे, तो उनसे कहा गया : 'बाबा, यह अपने 'औतार' की पुस्तक है।'

'हाँ ?' कहकर बाबाने प्रेमसे औंतारका नाम भी उसपर लिख दिया !

× × ×

आज भोजनमें 'स्पेशल' की भरमार थी। दोपहरमें भी, शामको भी। आखिरी पड़ाव है न आज उत्तर प्रदेशका ! शामको खुले मैदानमें हम लोग भोजन कर रहे थे, तभी एक भाईने घोषणा की कि कान्ताबहनकी कलम कहीं गिर गयी है। कोई भाई 'पेन-दान' करें, तो बड़ी कृपा हो।

एक भाईने प्रेमपूर्वक उन्हें अपनी कलम भेंट कर दी।

× × ×

आज तो यहाँ मेला-सा लगा है। बाबा कल मध्य प्रदेशमें प्रवेश कर रहे हैं। उन्हें विदा करनेके लिए उत्तर प्रदेशके तमाम कार्यकर्ता आकर जुट गये हैं।

कलेक्टर साहबकी सहपाठिनी श्रीमती शकुन्तला ललित अपने पति डॉक्टर ललितके साथ इतने दिनोंसे रात-दिन जी-तोड़ मेहनत कर रही हैं। स्वागतकी व्यवस्थामें ही नहीं, बागियोंके और उनके सगे-सम्बन्धियोंके बीच भी खूब दौड़ रही हैं। रात्रिकालीन प्रार्थनाके पहले मुझसे बोलीं : 'मेरी समझमें नहीं आता कि कलसे मैं करूँगी क्या ?'

बारातकी विदाईके बादकी निष्क्रियताका मुझे अनुभव है। इसलिए सोते समय भी मेरे कानोंमें उनका यह वाक्य गूँजता रहा :

'कलसे मैं करूँगी क्या ?'

○ ○ ○

डाकुओंकी पटरी बदल दो, बस !

रछेड़ (मुरैना)
मध्यप्रदेश
१३ मई '६०

मिनहटसे चम्बलके उसेदघाट तकका यह रास्ता !

ब्राह्ममुहूर्तमें रेगिस्तानी जहाजोंपर अपना सामान लादकर जैसे ही हम आगे बढ़े, वैसे ही पता चला कि आज ऊँट देवताओंकी कृपापर हमें क्यों आश्रित होना पड़ा है। अजी, यहाँ मोटर, जीप आदि सवारियोंकी दाल गलनेकी गुंजाइश ही कहाँ है ! इन ऊबड़-खाबड़, ऊँचे-नीचे, टेढ़े-मेढ़े चम्बलके खारोंमें मोटर या बैलगाड़ीकी तो बात ही क्या, दो आदमी भी एक लाइनमें डबल मार्च नहीं कर सकते। कहीं सैकड़ों फुट ऊपर, कहीं सैकड़ों फुट नीचे जाना पड़ता है, तो कहीं दायें घूमना पड़ता है, कहीं बायें। जीवनकी पगडंडी भी तो शायद इतनी टेढ़ी-मेढ़ी, ऊँची-नीची न होगी ! और फिर साथमें है यह दादा धर्माधिकारीके शब्दोंमें—'शिवजीकी बारात !' और आज तो उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान—सबका संगम हो रहा है। विदाई और स्वागतके लिए स्त्री और पुरुष, बालक और वृद्ध, छोटे और बड़े सभी लोग आतुर हैं। चम्बलकी लहरोंसे ये भावनाओंकी लहरें किसी भी कदर कम तेज नहीं हैं !

× × ×

घाटपर यह क्या झगड़ा हो रहा है !

पता लगा कि भद्रा और प्रेमकी रस्साकशी चल रही है, घाटके चौधरी और केवटके बीच। दो नावें तैयार हैं धाराको पार ले जानेके लिए। चौधरीकी नाव है पुरानी, केवटकी नाव एकदम नयी। पहमें

फर्शपर स्वागतार्थियोंकी भारी भीड़ है। इसमें मिनिस्टर भी हैं, मास्टर भी; दीक्षित भी हैं, तिवारी भी; पुलिस अधिकारी भी हैं, साधारण कर्मचारी भी; कार्यकर्ता भी हैं, पत्रकार भी; कांग्रेसवाले भी हैं, कम्युनिस्ट भी; प्रजा-सोशलिस्ट भी हैं, सोशलिस्ट भी।

× × ×

बाबा बालूपर बैठ गये। आसपास वृत्ताकारमें सभी लोग बैठ गये। पीछे कुछ लोग खड़े हो गये। दादाभाईने सूतकी गुण्डीसे बाबाका स्वागत करते हुए कहा : 'आपका हमारे प्रदेशमें पदार्पण हो रहा है, यह हमारे लिए बड़ी प्रसन्नताकी बात है। हमारी शक्ति अत्यन्त सीमित है, फिर भी आप जिस उद्देश्यको लेकर विचरण कर रहे हैं, उसकी पूर्तिका यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे। भगवान् हमें बल दे! उत्तर प्रदेश तो सारे भारतका नेता है। वहाँके भाई हमसे बड़ी ऊँची अपेक्षाएँ रखते होंगे। हमसे जो बनेगा, हम भरसक कोशिश करेंगे।'

बाबा भावनाओंमें डूब-से गये। बोले : यमुना पार करके मैंने अभी चम्बल भी पार कर ली। शायद कभी ब्रह्मपुत्र भी पार कर लूँ। ये नदियाँ माताएँ हैं। भारतकी एकता और प्रेमकी प्रतीक हैं। उत्तरसे दक्षिणतक, पूर्वसे पश्चिमतक गंगा, यमुना, महानदी, सोनभद्र, चम्बल आदि प्रेम और करुणाका प्रवाह फैला रही हैं। अखण्ड गतिसे बह रही हैं। उनसे हमें अखण्ड यात्राकी प्रेरणा मिलती है। सन् १९५२ में चुनावके दिनोंमें भी उत्तर प्रदेशमें हमारी यात्रा सतत चलती रही और शान्त भावसे लोग हमारी बात सुनते रहे।

इस सातत्यकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा कि गंगाकी भाँति ही आत्माका अखण्ड प्रवाह चलता रहता है। इससे यह शिक्षा मिलती है कि भक्तिमें भी ऐसी ही अखण्डता, ऐसा ही सातत्य रहना चाहिए। जिसकी भक्तिमें सातत्य नहीं, वह भक्तिमें खरा नहीं उतरता। जीवनमें अखण्ड आमरण सेवा चलती रहे, तभी जीवनकी सार्थकता है। सातत्य ही भक्तिकी कसौटी है। सेवा करते-करते ही जब यात्रामें बाबाका शरीर गिरे,

तब उसके जीवनकी सार्थकता है। बिस्तरपर अगर बाबा मरे, तो समझना कि उसकी भक्ति असल नहीं, नकल थी। बाबाकी प्रार्थना है कि आप सबके सहयोगसे बाबाको सतत ही भक्तिकी प्रेरणा बनी रहे। सेवा करते-करते ही उसका शरीर गिरे। आप लोग भी बाबाके लिए ऐसी प्रार्थना करिये !

× × ×

'आगेसे रिपोर्टिंग बन्द ! तुम्हारे बाद यह वंश-परम्परा नहीं चलेगी !' बाबाने मुझसे कई दिन पहले कह दिया था, गोविन्दन् भाई वापस चले गये थे, लवणम्‌को भी न आनेके लिए लिख दिया गया था—परन्तु चम्बलकी रेतपर उतरते ही देखता हूँ कि लवणम् तो हाजिर है !

पूछा : तुम्हें तो मना न किया गया था ?

बोला : मुझे क्या पता ! मैं तो पत्नीके साथ पहले ही निकल पड़ा था !

× × ×

सड़क अच्छी थी। बाबा उप-गृहमन्त्री नरसिंहराव दीक्षितसे अकेलेमें बात करते हुए हम लोगोंसे बहुत आगे-आगे चल रहे थे। उनके बाद वे मन्त्री शंकरलाल तिवारी और प्रादेशिक कांग्रेस अध्यक्ष मूलचन्द देवालदारसे भी कुछ देर अलग-अलग बातें करते रहे। पड़ाव नजदीक आने लगा, तो भीड़ बढ़ने लगी। हम लोग पीछे थे। तिरछे रास्तेसे बढ़कर हम लोग सबसे आगे निकल गये। चम्बलके विकट खारोंमें बसे इस रछेड़ गाँवके बाहर स्वागतके लिए अच्छी भीड़ एकत्र थी। कुछ महिलाएँ भी थीं, जिनमें लवणम्‌की नव-विवाहिता पत्नी भी थी। लवणम्‌ने परिचय कराया। लल्लूदादा बोले : 'बहू, यहाँ रास्तेमें मैं तेरा क्या स्वागत करूँ ?'

× × ×

गाँवमें पहुँचनेपर बाबा हाथ-पैर धोने गये, तबतक मैदानमें आयोजित सभामें दीवानमाईका यह गीत शुरू हो गया :

गरीबोंकी हकतलफी करना सरासर,
शरारत नहीं है तो फिर और क्या है ?
मुहब्बतके पैगामको ठुकरा देना,
कयामत नहीं है तो फिर और क्या है ?
किसीकी अमानतको खुद खाते रहना,
खयानत नहीं है तो फिर और क्या है ?

बाबाने आते ही कहा कि आज काफी देर हो चुकी है। सब लोग धूपमें बैठे हैं। यह तकरीरका मौका नहीं। इसलिए मैं दो-चार मङ्गल शब्द ही कहूँगा।

भिण्ड-मुरैना जिले अपनी वीरताके लिए प्रसिद्ध हैं। इस बातकी चर्चा करते हुए बाबा बोले :

इन दोनों जिलोंसे बहुत ज्यादा लोग फौजमें भरती होते हैं और देशके लिए अपनी जान खतरेमें डालते हैं। इसके अलावा ये जिले इस बातके लिए भी मशहूर हैं कि यहाँ डाकू वगैरह होते हैं। हमारे दिलमें डाकूके लिए बड़ा प्यार है। हम मानते हैं कि वे बहादुर हैं, सिर्फ उनकी गाड़ी गलत पटरीपर चली गयी है। वैसे वे दिलके सीधे और सरल होते हैं। डाकुओंका परिवर्तन अच्छे साधुओंमें, सिपाहियोंमें और काश्तकारोंमें हो सकता है। वे अच्छे सेवक भी बन सकते हैं। यों वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारोंका काम कर सकते हैं। उनका हृदय-परिवर्तन बहुत आसान है। सिर्फ उनकी पटरी बदलनेकी ही जरूरत है। ऐसे लोगोंको प्यारसे जीतना बहुत सरल है। शहरोंके 'डाई हार्ड' लोगोंको, अन्ततक झगड़नेवाले लोगोंको जीतना बहुत देरका काम है। कल एक सियासी नेता बात कर रहे थे। वे हमारी तमाम बातें मंजूर तो करते, पर उनमें 'लेकिन' लगा देते ! ऐसे लोगोंको बदलना कठिन होता है।

हम 'डाकू' कहलानेवाले भाइयोंके हृदय-परिवर्तनके लिए इधर नहीं आये। इन्दौरके रास्तेमें इधर १० दिन हम देनेवाले हैं। परमेश्वर चाहेगा, तो वह यहाँकी हवामें कुछ फर्क लायेगा। यह सब उसकी मर्जीकी बात है। हम तो सज्जनोंसे मुलाकातके लिए आये हैं। उनमें कुछ डाकू भी हो सकते हैं। डाकू तो दिल्लीमें भी हैं, जो सफाईके साथ डाका डालते हैं। हम तो यहाँ प्रेम, निर्भयता और मिल-जुलकर काम करनेका सन्देश देने आये हैं।

×   ×   ×

चनेकी घुँघनीका नाश्ता करके उत्तर प्रदेशके अनेक भाई यहाँसे विदा हो गये। कुछ लोग दोपहरमें भोजनके बाद चले गये। जलेश्वरभाईका झोला एक अन्य भाईके पास था। ऐन मौकेपर वह नहीं मिला, इसलिए उन्हें जीप छोड़ देनी पड़ी।

दोपहरमें सामनेवाले बड़े कुएँपर हम लोगोंने स्नान किया। मेरा लोटा वहीं छूट गया। मैं अच्युतभाईके लिए छोड आया और उन्होंने उसका ख्याल नहीं किया। जब उसकी खोज की, तो एक ग्रामीण भाईने उसे देते हुए कहा कि यह तो यहाँ बहुत देरसे पड़ा था।

पुलिस, हथियारबन्द पुलिस यहाँ हमारे चारों ओर जमी है। पुलिसके उच्च अधिकारी भी हैं। एकाध अधिकारी बाबासे मिलकर यहाँसे चले भी गये हैं। पर पुलिसकी इस पेशबन्दीसे यहाँके वातावरणमें कुछ अजीब-सी भावनाएँ और आशंकाएँ फैली हुई हैं। उत्तर प्रदेशसे यहाँका वातावरण कुछ बदला-सा लगता है।

×   ×   ×

सायंकालीन प्रवचनमें बाबाने कहा :

मैं सारे भारतमें सज्जनोंकी संगतिके लिए घूम रहा हूँ। इसीलिए मैं यहाँ भी आया हूँ। मैं सज्जनोंकी मण्डली बनाना चाहता हूँ। आगरामें मैंने ब्रह्मविद्याके आधारपर निष्काम सेवा करनेवाले ५० सेवकोंकी माँग

सकती है। इसीसे मैं कहता हूँ कि उसका 'न' निकालकर खाली 'किया' रखो।

मैं करुणाके विचारसे ही घूम रहा हूँ। अपने लिए मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं तो प्रेमकी बात समझाता फिरता हूँ। प्रेमसे धन-धरती बाँटेंगे, तो सब लोग बचेंगे। यह मसला न कानूनसे हल होगा, न सरकारसे। कत्लका रास्ता तो इन्सान और इन्सानियत दोनोंको मिटा देगा। बचता है करुणाका रास्ता। उसीसे कल्याण है। प्रेमसे सब मिल-बाँटकर खाओ और खिलाओ। तभी काम बनेगा।

× × ×

थोड़ी देरमें दीक्षित साहब बाबाको ग्रामरक्षा समितियोंके अधिकारियों और प्रतिनिधियोंके सम्मेलनमें लिवा ले गये। बन्दूकोंकी सलामी दागकर अहिंसाके इस पुजारीका स्वागत किया गया।

विशेषाधिकारी देशबन्धु अधिकारीने एक अभिनन्दन-पत्र भेंट किया। उसमें बताया गया कि दीक्षित साहबने भय और आतंककी विकट स्थिति दूर करनेके लिए 'मनुष्यके चरित्र-निर्माणका ध्यान रखते हुए अपने पैरोंपर खड़े होकर ग्रामकी कुरीतियाँ व बुराइयाँ व दुश्चरित्रताएँ, आपसके झगड़े आपसमें दूर करके अपने और अपने ग्रामकी रक्षा कर सकें इसलिए' सन् १९५६ में ग्राम-रक्षा समितियोंकी स्थापना की। तबसे अबतक इस क्षेत्रमें १२४४ रक्षा-समितियाँ बनी हैं, जिनके सदस्योंकी संख्या है—३०९१६। इनकी बदौलत सन् १९५६ में जहाँ ४३८ डकैतियाँ और कत्ल हुए थे, वहाँ १९५७ में उनकी संख्या रह गयी ३६३; १९५८ में १५९ और १९५९ में और भी कम। पुलिसके उच्चाधिकारियोंके सहयोगसे ४०० से अधिक फरार हाजिर कराये जा चुके हैं, कई डाकू चलानेवाले दल समाप्त हुए और नये फरारोंमें ८० फीसदी कमी हुई है।

अभिनन्दन-पत्रमें यह भी कहा गया कि 'जनतामें अपनी हिम्मत और वीरताकी शक्तिका दुरुपयोग करके असत्य मार्गमें जाकर फरार होनेकी प्रथामें हृदय-परिवर्तनकी नीतिसे बड़ा भारी परिवर्तन हुआ है। इस प्रकारके

परिवर्तन-कालमें प्रवरसन्त साधु महात्मा (विनोवा) ने यहाँकी जनताके हृदयमें परिवर्तन लानेके लिए जो कष्ट उठाया है, वह जनतामें श्रद्धा, भक्ति व प्रेमकी सद्भावनाएँ उत्पन्न करके भविष्य जीवनको उज्ज्वल बनाकर सुख-शान्तिके मार्गमें लानेके लिए अवश्य ही लाभप्रद सिद्ध होगा।'

ग्रामरक्षा समितियोंके लक्ष्य और कार्यकी चर्चा करते हुए दीक्षित साहब बोले :

'डाकूग्रस्त इलाकेकी समस्या पुलिसके द्वारा ही हल की जाय, यह बात मंगलकारी राज्यके लिए ठीक नहीं। रक्षा-समितियोंकी स्थापना इसीलिए की गयी है कि लोग दूसरेके सहारे न रहें, आत्मबलपर भरोसा करें, अपनी रक्षाके लिए आत्मनिर्भर बनें। गाँव-गाँवमें ये समितियाँ हैं। जहाँकी समितियाँ तगड़ी हैं, वहाँपर डाका डालनेकी डाकुओंकी हिम्मत नहीं पड़ती। डाकुओंका आत्म-समर्पण कोई नयी चीज नहीं, महीने-दो महीनेमें २-४ आदमी हाजिर ही होते रहते हैं। हम उनके साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। भविष्यमें भी ऐसे हाजिर होनेवाले लोगोंके साथ हम अच्छा व्यवहार करेंगे। यहाँ जो अफसर बैठे हैं, वे इस काममें सहायक होनेके लिए हैं। कोई आदमी आना चाहे, तो हम उसके साथ अच्छा वर्ताव करेंगे, यह हम आपको आश्वासन देते हैं। आप अफसरोंको कुछ वचनामृत प्रदान करें।'

बाबा इस समय बोलनेके 'मूड' में नहीं थे। बोले : थोड़ी देर पहले मैं बोल चुका हूँ, शामको फिर बोलूँगा। ग्रामके लोग रक्षाकी जिम्मेदारी उठा रहे हैं, इसपर विचार करनेके बाद शामको मैं कुछ कहूँगा। अभी मुझे इतना ही कहना है कि हमें डाकुओंको भी अपना भाई मानना चाहिए। इन्सान-इन्सानमें कोई फर्क नहीं करना चाहिए। सुमति कुमति सबके उर रहहीं—ऐसा मानकर सबके दिल एक करनेकी कोशिश करनी चाहिए।

× × ×

"भदेय पूज्य बाबा, मध्यप्रदेशके भिण्ड-मुरेना व ग्वालियर क्षेत्रमें निष्काम सेवा हेतु आपके आह्वानपर शान्ति-सैनिक बनकर निरन्तर आजीवन काम करनेके लिए आपके चरणोंमें मेरा सर्वस्व समर्पण।

—राजकुमार सिंह, पदमपुर, मुरार।"

बाबा सायंकालीन प्रार्थनाके लिए मंचपर आये, तभी राजकुमार-भाईने अपना यह छोटा-सा पत्र बाबाको अर्पित किया। बाबाने इस पत्रके माध्यमसे विचार-प्रचारकी प्रक्रिया समझाते हुए कहा :

यह पत्र हमने इसलिए पढ़कर सुनाया कि यहाँकी समस्या जिस रूपमें आपकी निगाहोंमें है, वैसी ही मेरी निगाहोंमें नहीं है। कश्मीरमें बाढ़ आयी थी। वहाँके लोग कहते थे : 'पिछले साठ-सत्तर सालोंमें ऐसी बाढ़ नहीं आयी।' यह मसला भगवान्‌ने पैदा किया था। पर कुछ मसले मनुष्य पैदा करते हैं। वे मसले ऐसे नहीं होते कि जिनके लिए हम निराश हों। इनका हल जरा विचार करनेसे मिल जाता है। इसलिए विचार बदलनेका कार्य मुख्य है। यह तभी हो सकता है, जब कुछ अच्छे लोग तैयार हो जायँ। जैसे हम दही बनानेके लिए, पहले थोड़ा दही जामनके रूपमें बना लेते हैं, वैसे ही सारा समाज दूध जैसा है, और परमेश्वरके भक्त जामनके समान हैं। वे भक्त जब त्यागसे, प्रेमसे समाजमें प्रवेश करते हैं, तो समाज बदलता है। कार्ल मार्क्सने कहा था : 'मध्यमवर्गके असन्तुष्ट होनेसे समाजमें क्रान्ति फैलती है।' हमारे यहाँ प्रक्रियाका स्वरूप इस तरह है—पहले सद्‌विचार सज्जनोंको मान्य होता है। उनके पाससे वह दूसरोंके पास पहुँचता है। शुरुआतमें विचारोंका स्पर्श एक व्यक्तिको होता है। फिर पाँच-पचीसको और बादमें हजारों-लाखोंको। विचार-प्रचारकी यही प्रक्रिया है। हम ऐसे निष्काम सेवकोंकी तलाशमें हैं, जो समाजमें जाकर विचार फैलायें। अगर एक स्थानपर एक भाई भी निष्काम सेवा करनेवाला मिला, तो हमारा वहाँ जाना सफल हो गया।

ग्राम-रक्षकोंको शस्त्र बाँटनेसे डाकुओंकी समस्याका समाधान नहीं हो सकता, यह समझाते हुए बाबा बोले :

•

यहाँ ग्रामरक्षा-दल बने हैं। उन्हें शस्त्र भी दिये गये हैं। यदि ये ग्रामरक्षामें समर्थ होते हैं, तो पुलिसका काम आसान बनता है। इसलिए यह प्रयास प्रशंसनीय है। मगर प्रश्न यह है कि हाथमें शस्त्र लेकर हम प्रयत्न करेंगे, तो सफलता मिलेगी? यह तो पहले भी हुआ है कि कुछ लोग रक्षक बने और स्त्रियाँ रक्ष्य। जब पुरुष रक्षा करनेमें असमर्थ हुए, तो स्त्रियोंने अपने-आपको जला दिया। स्त्रियाँ रक्ष्य हैं, इस बातको स्त्रियाँ भी मानती रहीं। मगर आज स्त्रियोंको सुरक्षित नहीं, स्वरक्षित बनना है। उसी प्रकार गाँवके लोग भी पुलिस द्वारा नहीं, अपने ही जवानों द्वारा अपनी रक्षाकी व्यवस्था करें। पर यहाँ एक विचारणीय बात यह है कि देशको बाहरी हमलेसे बचानेके लिए हम सेना बनाते हैं। मगर सेनाके हमलेसे बचनेके लिए हम क्या करेंगे? रक्षकोंसे हमारी रक्षा कैसे होगी?

पहले भारतवर्षमें क्षत्रियवर्गको रक्षक बनाया गया था। वे उन्मत्त हो गये। प्रजा-पीड़क बन गये। परशुराम ब्राह्मण थे। उन्होंने क्षत्रिय-रहित पृथ्वी करनेका व्रत ले लिया। उन्होंने इक्कीस बार पृथ्वीको क्षत्रिय-रहित किया। आपने कभी सुना है कि किसीको इक्कीस बार फाँसी दी गयी? परशुराम मारते ही रहे और क्षत्रिय पैदा होते ही रहे। बात असलमें यह थी कि फरसा पकड़कर परशुराम स्वयं क्षत्रिय बन गये थे!

यहाँ भी कहा जाता है कि डाकू नष्ट कर दिये गये। फिर ये दूसरे कहाँसे आ गये? डाकू तो नष्ट हुए, मगर डाकूवृत्ति नष्ट नहीं हुई। अहिरावणके शरीरसे जितनी रक्तकी बूँदें गिरती थीं, उतने ही अहिरावण खड़े हो जाते थे। इसलिए शस्त्र द्वारा डाकुओंको नष्ट करना कोई ठीक तरीका नहीं है। ग्राम-रक्षक गाँवकी रक्षा करेंगे, तो बाकी लोग स्त्रियोंकी हैसियतमें आ गये समझो।

लेनिनने कहा था: "एकबार शस्त्र लेकर कुछ लोगोंको खत्म कर

देंगे, फिर वे शस्त्र प्रजाके हाथमें दे देंगे।" सन् १९१७ में रूसी क्रान्ति हुई। किन्तु आज ४२ वर्ष बाद भी रूसमें शस्त्र कुछ 'खास' लोगोंके हाथमें ही हैं। कहा तो यह जाता है कि हमने शस्त्र प्रजाके लिए ही उठाये हैं, मगर ये शस्त्र 'क्लास' (वर्ग) के हाथमें ही रहते हैं, 'मास' (जनता) के हाथमें नहीं!

ग्राम-रक्षक दल यहाँकी समस्याका कायमी उपाय नहीं है। यह तो सिर दुखनेपर बैंयल लगा लेना हुआ। कायमी उपाय यह है कि हम हिम्मत रखें, डरें नहीं। अपने पास परिग्रह न रखें, माल न रखें। उसे सबमें बाँट दें। आपसमें लड़ना बन्द कर दें और मिलजुलकर प्रेमसे रहें। जबतक हम लड़ना जानते हैं, तबतक न पुलिस हमारी रक्षा करेगी, न ग्रामरक्षा-दल।

× × ×

आज शामको डाक्टर काटजू बाबासे मिलनेके लिए पधारे। जनरल साहबने उनके आनेके पहले ही अंग्रेजी 'आर्डर' दे दिया—'सब लोग बाहर चले जायँ। यहाँ भीतर कोई नहीं रहेगा।' एक फोटोग्राफर बहुत गिड़गिड़ाया, तो उससे कहा कि 'जैसे ही बातें शुरू हों, तुम फुरसे फोटो लेकर तुरत बाहर चले जाना!'

× × ×

भोजन करके हम लोग खुले मैदानमें ऊँचेपर जाकर लेटे। देरतक आपसमें इस बातपर चर्चा चलती रही कि देखें, काटजू साहबकी बातोंके बाद मध्यप्रदेशकी पुलिसका कैसा रुख रहता है! चम्बलके बाबाके आसपास पुलिसको देखकर लोगोंमें एक अजीब-सी भावना है। ऐसी अफवाहें भी सुननेको मिल रही हैं कि बहुतसे बागी आत्म समर्पणके लिए या बाबासे चर्चा करनेके लिए उनके पास आना चाहते हैं, पर पुलिसके कारण नहीं आ पाते। हाँ, बाबाका तो साफ कहना है कि जो व्यक्ति आत्म-समर्पणके *लिए प्रस्तुत है, उसके लिए डरनेका प्रश्न ही कहाँ उठता है! पुलिसके रहने न रहनेसे उसमें क्या फर्क पड़ता है!*

पर लोकमानस इतना निर्भय अभी बन कहाँ पाया है! ● ● ●

पुलिसका काम योग जैसा कठिन

अम्बाह
१५ मई '६०

मति कीरति गति भूति भलाई।
जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई॥
सो जानब सतसंग प्रभाऊ।
लोकहुँ बेद न आन उपाऊ॥

पासमें ही एक अच्छे साधु हो गये हैं। जनरल यदुनाथसिंह उनके बड़े भक्त रहे हैं। बाबा यहाँ आनेको थे, तभी जनरल साहबने बाबासे पूछा : 'बाबा, चलेंगे उनकी समाधिपर ?'

बाबा तो जन्मसे ही ठहरे साधु-सन्तोंके भक्त। बोले : 'हाँ, कितनी दूर है ?'

'यही कोई तीन मील। जाते-आते छह मील।'

'अम्बाहमें दो दिन ठहरना ही है। दूसरे दिनका प्रातः भ्रमणका प्रोग्राम वहींका रख सकते हैं।'

प्रोग्रामके अनुसार आज सबेरे हम लोग निकल पड़े ब्राह्ममुहूर्तमें।

जंगम विद्यापीठ चालू हो गया।

एक भाईने पूछा : बाबा, मैं सोने-चाँदीका काम करता हूँ। मेरी चित्तशुद्धि कैसे हो ?

बाबा : आखा भगत बनो भाई, आखा भगत ! सोने-चाँदीका व्यापार भी शुद्ध होकर किया जा सकता है। व्यापारमें शुद्ध बनो, तो चित्त भी शुद्ध हो जायगा। क्या-क्या अशुद्धि चलती है तुम्हारे व्यापारमें ?

'खोटे मालको खरा बताते हैं। अच्छा माल मिला देते हैं। कुछ काट-कपट भी कर लेते हैं।'

बाबा : ये सब तरीके गलत हैं। इनमें चोरी है, उसे छोड़ दो। ईमानदारीसे अपना काम करो। यह ठीक है कि आमदनी घट जायगी; पेट भरेगा, पेटी नहीं। पर चित्तशुद्धि यही है।

× × ×

एक वृद्ध सज्जन बाबासे बोले : बाबा, मैं रामायणका भक्त हूँ। 'सीय-राममय सब जग जानी।' चौपाई मैं रटता रहता हूँ, पर अभीतक भक्ति नहीं आयी—'मैं जानी हरिपद रति नाहीं।' संसार मैंने छोड़ रखा है, फिर भी चित्त शुद्ध नहीं हो पाया। आप मुझे बताइये कि आत्मविद्या क्या है?

बाबा : आत्मविद्या तो यही है कि मेरे भीतर जो आत्मा है, वही सबके भीतर है। 'सीयराममय सब जग जानी' वाली आपकी बात ठीक है। आप निष्काम सेवामें जुट जाइये। आपकी चित्तशुद्धि हो जायगी।

× × ×

इन्दौरके भावनाप्रवण साधनाशील प्रोफेसर विस्लोरेने अपने जीवनके कुछ आध्यात्मिक अनुभव सुनाये। बाबाने उनकी सराहना करते हुए उनके बालबच्चोंका हालचाल पूछा। सब सुनकर बाबा बोले : आपकी पत्नीकी बीमारीने मेरी चिन्ता बढ़ा दी!

× × ×

दिल्लीका एक नौजवान आया है अपनी कालेज-पत्रिकामें बाबापर एक 'फीचर आर्टिकिल' लिखनेके सिलसिलेमें। बाबाने कहा : हमारे इस भट्टसे पूछो। इसके पास जानकारीका खजाना है।

फिर इस प्रवृत्तिकी भर्त्सना-सी करते हुए बाबा बोले : लोग आते हैं एकाध दिन यहाँ रहकर लेख लिखने। स्वाद बदलनेके लिए जैसे लोगोंको

...नी चाहिए, उसी तरह लोग कुछ चटपटा मसाला खोजनेके लिए चले आते हैं विनोबाकी यात्रामें !

× × ×

हमलोग काफी निकल गये थे तभी जनरल साहबने बाबासे कहा : बाबा, तीन मील तो हो गये। अभी पता लगा है कि समाधि अभी भी डेढ़ मील दूर है। तब ?

बाबा : तब 'राइट एबाउट टर्न !'

सबलोग पड़ावकी तरफ लौट पड़े।

× × ×

प्रभाकरजी बापू और विनोबाके उन सेवकोंमें हैं, जो बाहरसे ही नहीं, भीतरसे भी उनके अनुगामी हैं। आज आन्ध्रके कार्यकी जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि सेवाग्राम सम्मेलनमें शासनमुक्त समाज-रचनाका प्रयोग करनेकी चर्चा चली थी। हमने कुछ सीमित क्षेत्रमें पुलिस और कचहरियाँ समाप्त करनेकी कल्पनाको अमलमें लाना शुरू किया है। पोचमपल्लीके आसपास १२-१३ मील क्षेत्रके ४० गाँवोंकी पंचायतोंने तय किया है कि वे गाँवके झगड़े गाँवमें ही निपटायेंगी। बड़वेल तहसीलकी ६५ ग्रामपंचायतें भी इसके लिए तैयार हैं। यहाँ १६० ग्रामदान हुए हैं। तेनाली, बेजवाड़ा और गुन्तूरमें २० हजार सर्वोदयपात्र चल रहे हैं, जिनसे तीन-चार हजार रुपयेकी मासिक आय है और हमारे ६० कार्यकर्ता जनाधारित हैं। इनमें ४० तो बहनें ही हैं। ये लोग ४ घण्टे सर्वोदयपात्रका और ४ घण्टे लोकसेवाका काम करते हैं। लोकसेवाके काम ये हैं : रिक्शावालोंके लिए रात्रि पाठशाला, बहनोंको अम्बरचरखा और हिन्दी सिखाना, बालवाड़ियाँ चलाना और नगरपालिकाके सफाईके काममें मदद करना।

बाबा बोले : खुशीकी बात है कि आपके यहाँ इस तरह संगठित रूपमें काम हो रहा है। आप अपने ६० मेंसे १० कार्यकर्ता मेरे बुलानेपर कहीं भी भेज सकते हैं। दूसरे प्रदेशोंमें ऐसा संगठन नहीं है, इससे मुझे दुःख

जाना पड़ता है। कश्मीर-प्रवासके समय मैं सोचता था कि देशकी सीमा-तक जाऊँ, तिब्बत तक जाऊँ। पण्डितजी और चाऊ एन लाई मुझे वहाँ जाने दे सकते थे, पर मैंने सोचा कि मैं वहाँ जाऊँ, तो किसके बूतेपर जाऊँ! शान्तिसेनाकी, अहिंसाकी ऐसी कोई ताकत अभी हम खड़ी ही कहाँ कर पाये हैं! अभी कल ही सौ डाक्टर कादजूसे बात हुई। मैंने उनसे कहा कि पुलिसके इन्तजामकी मुझे कोई जरूरत नहीं है। आपको जहाँ जरूरी लगे, वहाँ आप उसका इन्तजाम करिये, पर मेरे आसपाससे पुलिस हटा लीजिये। गनीमत हुई कि उन्होंने यह नहीं पूछ दिया कि आपको कुछ हो जायगा, तो उसके लिए कौन जिम्मेदार होगा? ऐसा पूछते तो मैं उन्हें कौन-सी ताकत दिखा देता! हम जबतक सामूहिक शक्ति खड़ी नहीं करेंगे, तबतक अहिंसा व्यापक नहीं हो सकेगी। सर्वोदयपात्र और सम्पत्तिदानपर आधार रखनेवाले शान्तिसैनिकोंपर ही, आमलोगोंकी स्वेच्छा-सम्मतिपर ही अहिंसाकी शक्ति खड़ी हो सकती है।

× × ×

दोपहरके बाद सम्मेलनोंका ताँता-सा लग गया। पहले बेसिक ट्रेनिंगके शिक्षार्थियोंका; फिर सुरेनाकी पंचायतोंके पंचों और कार्यकर्ताओंका; उसके बाद पुलिसवालोंका।

कड़ी गर्मी थी। पसीना टप-टप चू रहा था, तभी बाबाके पास आ बैठे बेसिक ट्रेनिंगवाले प्रशिक्षार्थी। शिक्षिकाएँ आगे बैठीं, शिक्षक पीछे।

बाबाने कहा : सरकारका विचार है कि बुनियादी तालीम चले। उसके लिए आप लोग ट्रेनिंग ले रहे हैं। आपको बुनियादी तालीम क्या समझाऊँ! मेरी एक पुस्तक है 'शिक्षण-विचार।' आपमेंसे कितने लोगोंने पढ़ा है उसे? जरा हाथ तो उठाइये।

एक भी हाथ नहीं उठा!

बाबा मेरी ओर देखकर बोले : देखा, यह हाल है!

फिर शिक्षार्थियोंसे उन्होंने कहा : ऐसी घटना हिन्दुस्तानमें ही घट सकती है। आश्चर्योंका समुद्र है हिन्दुस्तान। ज्या सोचिये कि आप कितने

अन्धकारमें हैं ! और कोई उस पुस्तकको न देखे, यह बात तो समझमें आ सकती है, पर शिक्षक, विद्यार्थी उसे न देखें, यह विचित्र है। लेखक प्रसिद्ध, विषय प्रसिद्ध, पुस्तक प्रसिद्ध। पंजाबीसे मलयालम तक हिन्दुस्तानकी तमाम भाषाओंमें उसका अनुवाद हो चुका है, फिर भी आपने उसे देखा तक नहीं ! २५ सालतक जिस शख्सने नयी तालीमपर सोचा, उसकी किताब आप तक न पहुँच पाये, यह सर्वोदय-विचारके प्रचारकोंके सोचनेकी बात है।

तबतक एक शिक्षार्थी बोला : हमारी लाइब्रेरीमें 'शिक्षण विचार' की एक प्रति है।

बाबा : लाइब्रेरीमें उसके रहनेसे काम नहीं चलेगा, वह पुस्तक तो आपके पाठ्यक्रममें रहनी चाहिए।

फिर बाबाने बुनियादी तालीम क्या है, यह समझाते हुए कहा : आज जो तालीम दी जा रही है, वह अगर चलती रही, तो भी खतरा है, न चली तो भी खतरा है। अगर न चले तो लोग अशिक्षित रहेंगे, चलेगी तो शिक्षित बेकार होंगे। इसलिए नयी तालीम चलनी चाहिए। यह तालीम ज्ञान और कर्मका जोड़ बैठाती है। ज्ञानके लिए जो प्रक्रिया होगी, उसीसे लोगोंकी आजीविका चलेगी। आजीविकासे जो काम होगा, उसीसे ज्ञानकी प्राप्ति होगी। कर्म और ज्ञानका समन्वय ही नयी तालीम है। भारतके उद्धारका एकमात्र यही उपाय है। देशमें आज तरह-तरहके भेद और झगड़े चल रहे हैं। उन्हें दूर करनेकी जिम्मेदारी आपपर है। आपको बुनियादी क्रान्तिकी प्रक्रियाका ज्ञान होना चाहिए। उसके लिए आपको सर्वोदय साहित्यका अध्ययन करना चाहिए।

× × ×

पंचों और पंचायतोंके कार्यकर्ताओंके सम्मेलनमें बाबाने इस बातपर जोर दिया कि उन्हें निर्भयता और प्रेमके रास्तेसे ग्राम-स्वराज्यकी स्थापना करनी चाहिए। बाबाने कहा : गीतामें दैवी और आसुरी सम्पदाके बीच झगड़ेकी बात कही गयी है। सुमति कुमति सबके उर रहहीं।

हमारे भीतर जो दुर्गुण रहते हैं, उन्हींसे समस्याएँ पैदा होती हैं। इसलिए समाजमें सद्गुणोंका विकास करना चाहिए।

सबसे पहला सद्गुण है—निर्भयता। जिस समाजमें निर्भयता नहीं, उसका विकास नहीं हो सकता। कहते हैं कि इस जिलेमें डाकू-समस्या है। दिल्ली, बम्बई, लखनऊ, भोपालमें भी तो डाकू-समस्या है। यहाँ के डाकू तो मूरख हैं। डाकेके पुराने तरीके ही जानते हैं। शहरवाले डाकू तो नये तरीकोंसे डाके डालते हैं। डाकुओंको मिटानेके लिए पुलिस आती है, फिर भी डाकू खतम नहीं होते। सजा देनेसे समाज ठीक रास्तेपर नहीं आता। पुलिस और बन्दूकोंसे यह मसला हल होनेवाला नहीं, और न ग्राम रक्षा-दलसे। यह तो प्रेमसे ही हल होगा। धन और धरती प्रेमसे बाँटनेसे सुलझेगा। पंचायतोंको चाहिए कि कुल जमीन गाँवकी बनाकर प्रेमसे सबको बाँट दें, मालिक मजदूरका भेद मिटा दें और ग्राममें ग्राम-स्वराज्य कायम करें। डाकू भी तो अपने ही आदमी हैं। उनके घरवालोंका क्या कसूर है? सबसे प्रेम करें। दुखियोंका दुख मिटायें। वैर-विरोध मिटायें। इसका एक ही तरीका है—प्रेम।

× × ×

पुलिसवालोंका सम्मेलन बाबाके निवासपर नहीं था। वह थोड़ी दूरपर था। पुलिसके डिप्टी इंसपेक्टर जनरल कोहिली साहब बाबाको वहाँ ले गये।

बाबाका स्वागत करते हुए कोहिली साहबने कहा कि आजसे तीन साल पहले भिण्ड, मुरेना, दतिया, ग्वालियर आदिमें डाकुओंका बड़ा आतंक पैदा था। स्त्रियाँ बेइज्जत की जाती थीं, बच्चोंको मारा जाता था, लूटपाट, हत्या, डाकेजनी पूरे जोरपर थी, तो मुख्यमन्त्रीने ग्वालियरमें एक बैठक बुलाकर देरतक विचार किया। तय हुआ कि पूरी ताकत लगाकर डाकुओंको खतम किया जाय। उसका नतीजा यह हुआ कि हम १६ मेंसे १३ गिरोह खतम करनेमें सफल हुए। अब लाखन, पाना, बहादुरके गिरोह बाकी हैं। समाजके सुन्दर शरीरपर उठे हुए इस फोड़ेका आपरेशन तो हमने कर डाला, पर इससे समस्या हल नहीं होती। समाजका यह हाल

कैसे मिटे, इसपर सुझाव माँगे गये, तो मैंने तीन साल पहले ही यह सुझाव दिया था कि इसके लिए आचार्य विनोबा भावेके दलको बुलाया जाय। आत्मबलसे वैर-विरोधकी भावना मिट सकती है। किसी महात्माके अच्छे वचनोंसे ही इस फोड़ेकी मरहम-पट्टी हो सकती है। तीन सालके बाद अब मेरा ख्वाब पूरा हुआ। विनोबाजी यहाँ पधारे हैं और इस प्रदेशमें विचर रहे हैं। इसमें सबका कल्याण होगा। आप तो १०-१५ दिन यहाँका दौरा करके चले जायँगे, पर आपकी संस्था इस कामको जारी रखे। हमारा आपका निशाना एक है। आप हमें उपदेश दीजिये, जिससे हमें प्रेरणा मिले और हम ठीक रास्तेपर चल सकें।

बाबा बोले :

करीब तीन माह हुए हम पंजाबमें थे। वहाँ फिल्लौरमें अनेक प्रान्तोंके पुलिस कर्मचारियोंको प्रशिक्षणके लिए इकट्ठा किया गया था। उनके सामने मुझे बोलनेका मौका मिला था। उसके पहले भी पुलिसके सामने बोलनेके मौके मिले हैं। आज एक खास प्रसंग है। यहाँ डाकुओंकी समस्या है। इसलिए पुलिस काफी तादादमें तैनात है। बरसोंसे यह व्यवस्था चल रही है। मुझे प्रसन्नता है कि यहाँ बोलनेका मुझे मौका मिला है।

अभी यहाँके अधिकारी (डी० आई० जी० पुलिस) ने एक बात कही जो मुझे मालूम नहीं थी। आजसे तीन साल पहले उन्होंने बाबाको यहाँ बुलानेका सुझाव सरकारको किया था। यह बड़ी बात है। भारतका क्षत्रिय धर्मके लिए मर मिटना अपना काम समझता था। इसलिए धर्म जाननेवालोंकी सदा मदद लेता था। यहाँ क्षत्रियवर्ग ब्रह्मविद्याका सदा उपासक रहा है। उपनिषद्में महाज्ञानी क्षत्रियोंने ब्राह्मणोंको उपदेश दिया है। गीतामें उपदेश देनेवाला भगवान् भी क्षत्रिय है और सुननेवाला अर्जुन भी क्षत्रिय है। भगवान्‌ने कहा कि प्राचीन कालमें यह ब्रह्म-विद्या क्षत्रियोंको मालूम थी। "एवं परम्परा प्राप्तम्, इमम् राजर्षयो विदुः।" क्षत्रियोंने सत्पुरुषोंकी मदद सदा अपने काममें ली है। अधिकारी महोदयके भाषणसे आज इसकी स्मृति जाग उठी।

पुलिसका काम कठिन है। पुलिसवालोंको अपना दिल रखना है नरम, और हाथसे सख्त काम करना है। पुलिससे संतोंका काम आसान है। सन्तका दिल नरम रहता है, तो हाथ भी नरम ही रहते हैं। पुलिसको इसके साथ मर्यादाका खयाल भी रखना होता है। फौजका काम इतना बड़ा नहीं है। उससे कोई नहीं पूछेगा कि विरोधीपर इतना सख्त हमला क्यों किया? उसका जीतनाभर काफी है। मगर जहाँ पाँच सेर ताकत लगानेकी जरूरत है, वहाँ पुलिस साढ़े पाँच सेर ताकतका उपयोग नहीं कर सकती। इसके लिए उसे सफाई देनी होगी। योग-साधनाके समान यह कठिन काम है। अन्तरमें नरम, ऊपर सख्ती और बुद्धिमें मर्यादाका ध्यान। माँ-बाप अपने बच्चोंको ताड़ना देते समय ऐसा ही करते हैं। दण्ड, ताड़ना ज्यादा न हो, अन्दरसे बहुत प्यार हो। नागरिकोंकी खिदमतमें अपनी जानको जोखिममें डालनेके लिए सदा तैयार रहना, लोक-पीड़कोंके साथ सख्तीसे बरतना और उसमें भी ज्यादती न होने देना—यह तो योगी-सा काम है।

किसी रिपोर्टरने अखबारोंमें छपवा दिया कि "बाबा कहता है कि यहाँसे कुल पुलिस हटा दी जाय।" बाबा भी कुछ अक्ल रखता है। वह ऐसी गलत बात कैसे कहेगा? हाँ, लोग अपनी रक्षा खुद करें और माँग करें कि पुलिसकी रक्षाकी हमें जरूरत नहीं, हम कबतक पुलिसकी रक्षा लेते रहेंगे? हम रक्ष्य ही नहीं बने रहें, अपने रक्षक स्वयं बनें—यह दूसरी बात है।

गाँव गाँवमें रक्षकदल बननेपर भी गाँवके लोग आपसमें प्यार करना नहीं सीखेंगे, तो रक्षकदलसे गाँव मजबूत नहीं बनेगा। नये डाकू पैदा न हों, इसके लिए यह दल क्या करेगा? आपके अधिकारी महोदयने कहा कि सत्पुरुषोंकी मददके बिना यह काम नहीं होगा। मगर सत्पुरुष तो समाजमें ही पैदा होने चाहिए। आगरामें मैंने माँग की थी कि हमें निष्काम

सेवा करनेवाले सज्जन पुरुष चाहिए। जो सज्जन अब तक ध्यान-धारणामें समय बिताते रहे, उनको भी अब सामाजिक मसले हल करनेकी जिम्मेवारी लेनी होगी।

पुलिससे मैं तो चाहूँगा कि उसका दिमाग समत्वयुक्त हो। उसमें क्षोभ कभी न रहे। पुलिसवाले हिसाबसे काम करें, दिमाग हमेशा समतोल रखें। हमेशा बन्दूक चलाना ही उनका काम नहीं है, औरोंकी रक्षाके लिए मर मिटना भी उनका काम है। इसलिए पुलिसको साधुपुरुषका और वीरपुरुषका, दोनोंका काम करना होता है। सिर्फ ३२ इंच छातीकी चौड़ाई देख लेनेसे काम नहीं चलेगा। चौड़ाईके साथ उतनी गहराई भी चाहिए। किस मौकेपर क्या करना, इसकी समझ भी चाहिए।

मेरा जो मिशन है, उसमें आप मेरी मदद किस प्रकार करेंगे? एक तो जहाँ-जहाँ मैं जाऊँ, मेरे साथ घूमें नहीं। जो भी मेरे पास आयें, निर्भीक होकर खुले तौरपर आ सकें। जब उन्हें आपके हाथमें सौंपा जाय, तो आप उनसे सख्ती न बरतें। कोई वधके लायक है, तो न्यायाधीश उसे फाँसी देगा ही। फिर दयाकी दरख्वास्तपर राष्ट्रपति भले ही उसे माफ कर दे। जिसे पश्चात्ताप होगा, वह दण्डसे नहीं बचना चाहेगा। किसीको माफ करनेवाला तो भगवान् है। भगवान् पापका दण्ड तौल-तौलकर देता है, पर पुण्यका फल बेतौल देता है। वह दण्ड हिसाबसे देता है, मगर इनाम देनेमें बेहिसाब है। वह सजा देता है सुधारके लिए। इनाममें उदार और सजामें कंजूस। इसी रीतिका प्रयोग पुलिसको करना है। कल आपके डिप्टी मिनिस्टर साहबने बड़ी मौजूँ और वाजिब बात कही कि जो हमें आत्मसमर्पण करेगा, उसके प्रति सख्ती नहीं बरती जायगी।

आपका और मेरा काम एक-सा है। आपको ऐसा बनना है: पहले मक्खन, पीछे भी मक्खन, बीच में कठोर। बहुत ठण्डा होनेपर मक्खन कुछ सख्त बनेगा। पर आखिर पत्थर तो बन नहीं सकता। पुलिसकी शक्ति अग्निकी नहीं, बरफकी शक्ति हो।

आपको गीता, रामायण, गुरु ग्रन्थसाहिबका अध्ययन करना चाहिए। हमें सोचना है—"मैं सेवक सचराचर रूप राशि भगवंत।" आप सब रामजीके सैनिक हैं। रामजीके सैनिक क्या शराब पीते हैं? वे तो फल खाते हैं। आपको सात्विक आहार करना चाहिए। सत्यनिष्ठा और मर्यादाका पालन करना चाहिए। आपका काम कठिन है। कदम-कदमपर आपकी परीक्षा होगी। प्रभु करे, आप देशके सच्चे सेवक साबित हों!

× × ×

रोज बाबा प्रवचनके बाद प्रार्थना करते हैं, आज उन्होंने प्रार्थनाके बाद प्रवचन किया। पहले उन्होंने प्रार्थनामें बैठनेका तरीका समझाया। कहा कि नमाजमें व्यवस्थितता होती है, हमारे यहाँ अव्यवस्थितता। हमारा समाज अनेक पन्थों और भेदोंमें बँटा है। 'डिसीप्लिन' (अनुशासन) की बात आती है सिर्फ फौजी तालीममें, पर वह धार्मिक तालीममें भी आ सकती है। प्रार्थनामें वह आनी चाहिए। हम शान्त होकर पलथी मारकर बैठें। प्रार्थनाका स्थान स्वच्छ हो, साफ हो, छिड़का हुआ हो, लिपा-पुता हो। गीतामें कहा है: शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः।

मुसल्मानोंके पास नमाज पढ़नेको आसन होता है—जानमाज। जहाँ नमाज पढ़नी होती है, बिछा लेते हैं। हमें भी आसन रखना चाहिए और अनुशासित होकर प्रार्थना करनी चाहिए।

प्रार्थनाके उपरान्त बाबाने कहा कि इधर मैंने एक नया काम शुरू किया है। मुझे चाहिए निष्काम सेवक। 'गीता-प्रवचन' लेनेपर मैं इसी-लिए जोर देता हूँ कि मुझे निष्काम सेवकोंकी जमात खड़ी करनी है। अम्बाहमें पाँच छह हजारकी बस्ती है। यहाँसे मुझे पाँच-छह निष्काम सेवक तो दीजिये ही, जो काम-वासनासे मुक्त होकर निःस्वार्थ भावसे जनताकी सेवामें अपना जीवन अर्पित करें।

बाबाकी यह अपील क्या खाली जायगी?

● ● ●

मुझे डाकू भी प्यारे हैं, पुलिसवाले भी !

पोरसा

१६ मई '६०

'मनका निग्रह कैसे हो ?'

अनादिकालीन प्रश्न है यह। पतञ्जलिके योगसूत्रमें इसीको योग बताया है : 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'। चित्तकी वृत्तियोंका निरोध ही तो 'योग' है। गीतामें भी अर्जुनका सीधा-सादा सवाल यही है :

> चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवत् दृढम् ।
> तस्याऽहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ॥

अरे कृष्ण, बड़ा चंचल है, बड़ा मथनेवाला है, बड़ा बलशाली है यह मन। इसे वशमें करना वायुको वशमें करनेके बराबर कठिन है।

हवाको मुट्ठीमें बाँधना हँसी खेल नहीं है।

कृष्ण बोले : हाँ अर्जुन, बात तो तेरी ठीक है। मन बड़ा चंचल है, दुर्निग्रहम् है, बड़ी कठिनतासे वशमें आता है!

बड़ी मुश्किलसे काबूमें लिया जाता है!

पर आ सकता है जरूर। कैसे? अभ्याससे और वैराग्यसे।

आज आत्मकुटीमें हमारे एक नौजवान साथीने बाबासे छेड़ दिया यही प्रश्न।

बाबा बोले : 'मनोनिग्रहको काबूमें करनेकी बात है तो ठीक, लेकिन अभ्याससे उसे काबूमें किया जा सकता है।

रामको पकड़ लो। 'मनी' माने पैसा, रुपया, माया। मायाको छोड़ो, रामको पकड़ो!

'रामको कैसे पकड़ें बाबा?'

बाबा: रामको हर जगह देखो। पर्वत दिखा तो सोच लिया: 'स्थावराणां हिमालयः'। भगवान् कहते हैं कि 'स्थावरोंमें मैं हिमालय हूँ।' नदी दिखी तो सोच लिया: 'स्रोतसामस्मि जाह्नवी!' भगवान् कहते हैं कि 'नदियोंमें मैं गंगा हूँ।' मतलब—होते-होते यह स्थिति आ जाय कि जहँ जहँ जाऊँ सोई परिकरमा, जो कछु करूँ सो पूजा। सर्वत्र राम दीखना चाहिए। सारा काम रामकी पूजा बन जाना चाहिए।

'साधो सहज समाधि भली।'''

उसके बाद प्रश्नकर्ता भाईसे बाबाने पूछ दिया: शादी हो गयी है तुम्हारी?

'नहीं बाबा।'

'मनकी चंचलता रोकनेको या तो पत्नी हो या गुरु!'

'शादी करनेका मेरा इरादा ही नहीं है बाबा। सेवामें सारा जीवन लगानेका निश्चय है।'

बाबा: अच्छी बात है। माँ है क्या?

'हाँ बाबा, माँ है।'

'तो माँकी थोड़ी सेवा किया करो। उसके खाने-पीनेका ठीकसे इन्तजाम करो। रातको सोने लगे, तो उसके पैर दाब दिया करो। तुम्हारा काम बन जायगा!

× × ×

मेरी पुकार पड़ी। बाबाके बगलमें पहुँचा तो कहने लगे: काशीके कामकी जानकारी दो।

मैंने सर्व-सेवा-संघ, साधना-केन्द्र, प्रकाशन आदिकी आवश्यक जानकारी दी।

एक भाईकी व्यस्तताकी बात सुनकर बाबा बोले : आज उन्हें कम फुर्सत मिल पाती है, एक दिन बिल्कुल फुर्सत मिल जायगी !

उसके बाद बाबाने 'आपुलें मरण मी पाहिलें निज डोळें !' (अपनी आँखों देखा अपना मरना) गीत गाते-गाते तुका, ज्ञानदेव और नानकके पदोंकी झड़ी-सी लगा दी !

× × ×

पड़ावके पास पहुँचते-पहुँचते हम लोग कुछ पीछे पड़ गये । प्यास लग रही थी । शर्माजीने एक दूकानपर खड़े होकर हमलोगोंको जलपान कराया, लस्सी पिलायी । एक स्थानीय भाई बोले : भिण्डके पेड़े बहुत मशहूर हैं । बहुत अच्छे होते हैं ।

शर्माजीने मजाकमें कहा : कहनेको ही अच्छे होते हैं । खिलाओ तब न जानें !

'अच्छी बात है । मैं अभी मँगवाता हूँ ।'

तीसरे पहर उसने दरअसल हमें भिण्डके केसरिया पेड़े खिलाये ही ।

× × ×

हमलोग जबतक पहुँचे-पहुँचे तबतक बाबा अपना प्रवेश-प्रवचन समाप्त कर रहे थे । केवल अन्तिम वाक्य हमें सुनने को मिले : कोई भी आदमी हमसे आकर मिल सकता है । हमें अधिकारियों की तरफसे इस बातका आश्वासन दिया गया है कि किसी भाईके साथ कोई ज्यादती न होगी । हमने लोगोंसे मिलनेके लिए वक्त रखा है—शामको ४ से ५ के बीचका ।

× × ×

स्कूलमें हमलोग ठहरे । नहानेके लिए पानीकी कुछ दिक्कत थी । कुएँपर कई स्वयंसेवक भाई हमारे काममें मदद पहुँचा रहे थे । कपड़े धोनेमें कुछ परेशानी थी, फिर भी कुसुम बीबाला काफी कपड़े लिये बैठी पछीट रही थीं । हम सब भी जुट गये । पहले धोबीघाट चला, फिर स्नानघाट ।

× × ×

अपराह्नमें कई भाई-बहनें बाबासे मिलीं। उन्होंने अपनी दुःख-गाथाएँ बाबाको सुनायीं।

तभी एक मजेदार घटना घटी।

कलश और पात्र लेकर एक भाई बाबाके कमरेमें आ डटे। बोले : 'महाराज, मुझे आपका चरण तीर्थ चाहिए।'

बाबा तो हैरान !

चरण छूनेवालोंसे तो रोज ही उनका साबिका पड़ता है। लाख मना करनेपर भी कहाँ मानते हैं लोग ! पर इस अन्धविह्वलको क्या कहा जाय, जो बार-बार इन्कार करनेपर भी कहता है : 'नहीं महाराज, मैं तो चरण-तीर्थ लिये बिना हटूँगा नहीं यहाँसे।'

और तब शंकराचार्य आ विराजे बाबाके स्मृतिपटपर। उनका मोह-मुद्गर याद पड़ा :

भगवद्गीता किंचिदधीता
गंगाजललवकणिका पीता।
सकृदपि यस्य मुरारिसमर्चा
तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम्॥

यदि श्रीमद्भगवद्गीताका थोड़ा भी हो ज्ञान।
गंगाजल-कण लेशमात्र भी किया जिन्होंने पान॥
एक बार जिनसे अर्चित हों सुररिपु कमलाकान्त।
उन जीवोंकी चर्चा करता नहीं कदापि कृतान्त॥

'देखो भाई, हमारा 'गीता-प्रवचन' लेकर उसका अध्ययन करो और चम्बल नर्मदाका जल पी लो। अवश्य सन्तोंकी चरण रज पड़ती है इन नदियोंमें। सबसे उत्तम चरण-तीर्थ है गंगाजल। गया न सही नर्मदा, नर्मदा न सही चम्बल।'

इतना समझानेपर वे भाई माने और यों बाबाके शब्दोंमें 'बड़ी बला टली।'

× × ×

या भाइयोंको डाकुओंने मार डाला। आज उन बहनोंकी कहानी सुनी, जिनके पति या भाइयोंको पुलिसने मार डाला। कुछ ऐसी बेवाओंके किस्से भी सामने आये, जिनकी जमीन रिश्तेदारोंने छीन ली। जमीनकी समस्या हर जगह है। यहाँ भी है।

भिण्ड-मुरेनाके लोग बहादुर हैं। महादजी सिंधियाकी फौजमें ज्यादासे ज्यादा सैनिक यहाँके थे। सिंधिया अंग्रेजोंसे हारा तो उसकी सेना कम हो गयी थी। फिर यहाँके लोगोंने *अपना पुराना धन्धा चालू किया है। बन्दूक बनाना और* उसका उपयोग करना। आज भी यहाँ बहादुर लोग हैं। वे सीधे-सादे और दिलके सरल हैं। इनसे मुझे प्यार है। बत्तीस इञ्च चौड़ी छातीवाले पुलिसके लोग भी तंग-हृदयके नहीं हो सकते। ये लोग गरीब भी होते हैं। अधिकतर तुलसीदासजीकी रामायणको नियमित रूपसे पढ़नेवाले होते हैं। कुल मिलाकर दोनों (पुलिस और डाकू) सरल हृदय हैं। पर तकलीफ दोनों देते हैं। असलमें यहाँके दुःख इन्सानों द्वारा ही पैदा किये गये हैं। इनको तो हम मिल-जुलकर ही खतम कर सकते हैं।

यदि किसी बेवाकी जमीन उसके रिश्तेदारने दबा ली है, तो गाँवके लोग उसे जमीन दे दें। दिल जब बड़ा होता है, तो मसले बड़ी आसानीसे हल हो जाते हैं। ये हवाई बातें नहीं हैं। तेलंगानाके लोगोंने बारह हजार एकड़ जमीन दो माहमें दे दी। वे भी तो मनुष्य ही हैं। कोई देवता नहीं हैं। सरकार जो चीज नहीं कर सकती, उसे दान कर सकता है। ऐसा न बोलो कि कलियुगमें दानकी प्रक्रिया नहीं चलेगी। कश्मीरकी मिसाल लीजिये। सरकारने वहाँ जमीनकी 'सीलिंग' कर दी। बिना मुआवजा दिये जमीन छीन ली। बादमें मैं गया कश्मीर। लोगोंसे कहा : 'भूमिहीनोंको जमीन दो।' लोगोंने उदारतासे अपनी बची-खुची जमीनसे ही दान दिया।

लोग पूछते हैं : 'ईश्वर है कि नहीं ?' मैं पूछता हूँ कि 'करुणा है कि नहीं ?' ईश्वर याने क्या ? सत्य, प्रेम, करुणा। आज जो विधवा बाई

तीसरे पहर चि० गौतम अपनी पेटी सँभलाने लगा, तभी मुझे लगा कि यह 'मिशन'पर जा रहा है कहीं! शायद दो-एक दिन बाद लौटेगा।

गर्मी तेज है इन दिनों। शामको हलकी-सी फुहारें आकर थोड़ी-सी तरावट दे गयीं।

सामनेके खुले मैदानमें सायंकालीन सभा हुई। तेलंगानाकी नौ साल पहलेकी स्थितिसे चम्बल घाटीकी वर्तमान स्थितिकी तुलना करते हुए बाबाने कहा :

नौ साल पहले ठीक इन्हीं दिनों हम तेलंगानामें घूमते थे। वहाँ भी वही समस्याएँ थीं, जो यहाँ हैं। वहाँ जनताकी सुरक्षापर सरकारको सालाना पाँच करोड़ रुपया खर्च करना पड़ रहा था। जो दुःखकी कहानियाँ हमने वहाँ सुनीं, सो यहाँ सुन रहे हैं। उससे पहले महात्मा गांधीके जानेके बाद शरणार्थियोंको बसानेका काम हम कर रहे थे। लाखों लोग पाकिस्तानसे हिन्दुस्तान आये थे। लाखों लोग हिन्दुस्तानसे पाकिस्तान गये थे। हजारोंको मार डाला गया। हजारों लड़कियाँ भगायी गयीं। गाँवके गाँव जला दिये गये। पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, बम्बई, मद्रास, जहाँ जाते, वहाँ वे ही कहानियाँ सुनते। दुःखकी कहानियाँ सुनते-सुनते हमारा दिल कठोर बनने लगा। इसके पहले गांधीजीकी आज्ञासे हम ग्रामोंमें बैठकर देहातियोंकी सेवा करते थे। तब भी किसानोंकी दुःखभरी कहानियाँ सुना करते थे। पाकिस्तान बननेके बादकी दुःख-गाथाएँ, तेलंगानाके दुःख और यहाँ डाकुओंकी समस्याएँ—इन सारे दुःखोंको सुनते-सुनते हमारा दिल निठुर बन गया। यह सब सुन-सुनकर अब हमारी आँखोंमें आँसू नहीं आते। भगवान्‌का ध्यान करते हैं या महापुरुषोंकी याद करते हैं, तो आँसू आते हैं; मगर इन दुःखोंको सुनकर नहीं। बात यह है कि यहाँ आँसू बहानेसे काम नहीं चल सकता। किसीको रोते देखकर खुद भी रोने लगना तो वैसा ही हुआ, जैसे किसीको डूबते देखकर खुद डूब जाना। हम दुःखियोंके आँसू पोंछ सकें, तब तो कोई बात है।

चार-पाँच दिन पहले हमने उन बहनोंकी कहानियाँ सुनीं, जिनके पति

या भाइयोंको डाकुओंने मार डाला। आज उन बहनोंकी कहानी सुनी, जिनके पति या भाइयोंको पुलिसने मार डाला। कुछ ऐसी बेवाओंके किस्से भी सामने आये, जिनकी जमीन रिश्तेदारोंने छीन ली। जमीनकी समस्या हर जगह है। यहाँ भी है।

भिण्ड-मुरेनाके लोग बहादुर हैं। महादजी सिंधियाकी फौजमें ज्यादासे ज्यादा सैनिक यहींके थे। सिंधिया अंग्रेजोंसे हारा तो उसकी सेना कम हो गयी थी। फिर यहाँके लोगोंने अपना पुराना धन्धा चालू किया है। बन्दूक बनाना और उसका उपयोग करना। आज भी यहाँ बहादुर लोग हैं। वे सीधे-सादे और दिलके सरल हैं। इनसे मुझे प्यार है। बत्तीस इंच चौड़ी छातीवाले पुलिसके लोग भी तंग-हृदयके नहीं हो सकते। ये लोग गरीब भी होते हैं। अधिकतर तुलसीदासजीकी रामायणको नियमित रूपसे पढ़नेवाले होते हैं। कुल मिलाकर दोनों (पुलिस और डाकू) सरल हृदय हैं। पर तकलीफ दोनों देते हैं। असलमें यहाँके दुःख इन्सानों द्वारा ही पैदा किये गये हैं। इनको तो हम मिल-जुलकर ही खतम कर सकते हैं।

यदि किसी बेवाकी जमीन उसके रिश्तेदारने दबा ली है, तो गाँवके लोग उसे जमीन दे दें। दिल जब बड़ा होता है, तो मसले बड़ी आसानीसे हल हो जाते हैं। ये हवाई बातें नहीं हैं। तेलंगानाके लोगोंने बारह हजार एकड़ जमीन दो मासमें दे दी। वे भी तो मनुष्य ही हैं। कोई देवता नहीं हैं। सरकार जो चीज नहीं कर सकती, उसे दान कर सकता है। ऐसा न बोलो कि कलियुगमें दानकी प्रक्रिया नहीं चलेगी। कश्मीरकी मिसाल लीजिये। सरकारने वहाँ जमीनकी 'सीलिंग' कर दी। बिना मुआवजा दिये जमीन छीन ली। बादमें मैं गया कश्मीर। लोगोंसे कहा : 'भूमिहीनोंको जमीन दो।' लोगोंने उदारतासे अपनी बची-खुची जमीनसे ही दान दिया।

लोग पूछते हैं : 'ईश्वर है कि नहीं ?' मैं पूछता हूँ कि 'करुणा है कि नहीं ?' ईश्वर याने क्या ? सत्य, प्रेम, करुणा। आज जो विधवा बाई

तीसरे पहर चि० गौतम अपनी पेटी सँभलाने लगा, तभी मुझे लगा कि यह 'मिशन'पर जा रहा है कहीं ! शायद दो-एक दिन बाद लौटेगा ।

गर्मी तेज है इन दिनों । शामको हलकी-सी फुहारें आकर थोड़ी-सी तरावट दे गयीं ।

सामनेके खुले मैदानमें सायंकालीन सभा हुई । तेलंगानाकी नौ साल पहलेकी स्थितिसे चम्बल घाटीकी वर्तमान स्थितिकी तुलना करते हुए बाबाने कहा :

नौ साल पहले ठीक इन्हीं दिनों हम तेलंगानामें घूमते थे । वहाँ भी वही समस्याएँ थीं, जो यहाँ हैं। वहाँ जनताकी सुरक्षापर सरकारको सालाना पाँच करोड़ रुपया खर्च करना पड़ रहा था । जो दुःखकी कहानियाँ हमने वहाँ सुनीं, सो यहाँ सुन रहे हैं । उससे पहले महात्मा गांधीके जानेके बाद शरणार्थियोंको बसानेका काम हम कर रहे थे । लाखों लोग पाकिस्तानसे हिन्दुस्तान आये थे । लाखों लोग हिन्दुस्तानसे पाकिस्तान गये थे । हजारोंको मार डाला गया । हजारों लड़कियाँ भगायी गयीं । गाँवके गाँव जला दिये गये । पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, बम्बई, मद्रास, जहाँ जाते, वहाँ वे ही कहानियाँ सुनते । दुःखकी कहानियाँ सुनते-सुनते हमारा दिल कठोर बनने लगा । इसके पहले गांधीजीकी आज्ञासे हम ग्रामोंमें बैठकर देहातियोंकी सेवा करते थे । तब भी किसानोंकी दुःखभरी कहानियाँ सुना करते थे । पाकिस्तान बननेके बादकी दुःख-गाथाएँ, तेलंगानाके दुःख और यहाँ डाकुओंकी समस्याएँ—इन सारे दुःखोंको सुनते-सुनते हमारा दिल निठुर बन गया । यह सब सुन-सुनकर अब हमारी आँखोंमें आँसू नहीं आते । भगवान्‌का ध्यान करते हैं या महापुरुषोंकी याद करते हैं, तो आँसू आते हैं; मगर इन दुःखोंको सुनकर नहीं । बात यह है कि यहाँ आँसू बहानेसे काम नहीं चल सकता । किसीको रोते देखकर खुद भी रोने लगना तो वैसा ही हुआ, जैसे किसीको डूबते देखकर खुद डूब जाना । हम दुःखियोंके आँसू पोंछ सकें, तब तो कोई बात है ।

चार-पाँच दिन पहले हमने उन बहनोंकी कहानियाँ सुनीं, जिनके पति

मेरे पास आयी थी, उसका मामला कोर्टमें चल रहा है। पर कोर्टमें तो कागजी न्याय मिलेगा। इससे मसला हल नहीं होगा। इसलिए आपको उदार बनकर उसे २५ एकड़ जमीन दे देनी चाहिए।

पैदा होते वक्त सब एक-से होते हैं। जन्मसे डाकू पैदा नहीं होते। डाकू तो बनाये जाते हैं। मुझे तो डाकू भी प्यारे हैं, पुलिसवाले भी प्यारे हैं। जमीनवाले भी और बेजमीन लोग भी। मैं तो आपके बीचमें श्रद्धासे घूम रहा हूँ। पुलिससे मैंने कहा कि 'तुम लोग मेरे साथ-साथ घूमते रहोगे, तो कैसे काम चलेगा?' वे बोले: 'हम तो आपकी वाणी सुनना चाहते हैं। आप कहें, तो हम नहीं घूमेंगे।' मैं कल उनके बीच भाषण करने भी गया था। मैंने कहा: 'पुलिसका दिल मक्खन जैसा बनना चाहिए। मक्खन चाहे जितना सख्त बने, वह लोहा नहीं बन सकता। दुर्जनोंसे वास्ता पड़े, तो थोड़ा सख्त बन सकता है, ठंडके मक्खनकी तरह।' मेरी बात मानकर पुलिसवाले चले गये। आज लोग बेधड़क मेरे पास आये और उन्होंने अपने कष्टोंकी चर्चा की।

ऐसा शख्स अभीतक नहीं जनमा, जिसने जिन्दगीभर कभी कोई गलत काम न किया हो। डाकुओंने गलत काम किये। पुलिसने भी किये होंगे। और लोगोंने भी किये होंगे। इसलिए क्षमा करना धर्म हो जाता है। जब बच्चा गलती करता है, तो माता उसे थप्पड़ लगाती है। किन्तु वह थप्पड़ प्यारसे खाली नहीं होता।

किसीने इसी समय कहा: 'पिताका थप्पड़ जोरसे पड़ता है।' तो बाबा बोले: 'पिता दिखाता है कि जोरसे मार रहा है। पर बच्चेके पास हाथ पहुँचते-पहुँचते गति धीमी हो जाती है।

इसलिए संसारमें दंडसे अधिक प्यारका, दयाका, करुणाका स्थान है।

मेरा मुख्य काम भूदानका है। आप भूमिदान कीजिये, तो लोगोंके दिल नरम होंगे और डाकुओंका मसला भी आसानीसे हल हो जायगा।' ० ० ०

निपूती बनी बैठी है, कोई युवती चूड़ियाँ फोड़े बैठी है! कोई बच्चा पिताके लिए रो रहा है, कोई बहन भाईके लिए आँसू बहा रही है!

पशुता और दानवताका नंगा नाच होता रहा है इस गाँवमें! आतंक तो यहाँकी ईंट-ईंटपर छाया हुआ है।

× × ×

स्कूलकी छोटी-सी इमारतमें बाबा ठहरे हैं, इधर-उधर तम्बुओंमें हम लोग। बगलमें ही एक मकानमें पुलिसका एक दस्ता कायमी तौरपर पड़ा है। डाकू-अभियानकी स्पेशल पुलिसका चौथा बटालियन जोन है यह। उसका बड़ा साहब है—क्विन्स।

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने कहा: यहाँपर आपके जैसे छोटे गाँवमें पुलिसका दस्ता पड़ा है। इसका खर्चा कौन देगा? आप कहेंगे कि सरकार देगी; पर सरकार तो आपसे ही लेकर न देगी! हम क्या गाय-भैंस या भेड़ें हैं, जो हमारे लिए गडरियेकी जरूरत हो! हम आपसमें मिल-जुलकर नहीं रह सकते क्या?

> कहते हैं कि यहाँ डाकू-समस्या है। डाकू कोई हमसे अलग हैं? हम उन्हें समझा नहीं सकते? उनके मनमे डाकेकी बात क्यों आती है? कुछ असंतोष होगा। उसे हम मिटा नहीं सकते क्या? उन्हें समझाकर हम गलत रास्तेसे सही रास्तेपर नहीं ला सकते क्या? प्रेमसे हम बात करें, उन्हें समझायें, तो डाकू-समस्या जरूर मिट सकती है।

डाकू बेहड़ोंमें मारे-मारे फिरते हैं। ऐसी जिन्दगीमें भला किसीको मजा आयेगा? एक बार कोई गलत रास्तेपर चला जाता है, तो उसे कायमके लिए उसीपर चलना पड़ता है। छिपता है, हमला भी करता है, खानेको नहीं रहता, तो डाका भी डाल लेता है। यह सारी बात समझनेकी है और प्रेमसे सुलझानेकी है।

आप हिम्मत रखिये, डाकुओंको प्रेमसे समझाइये कि भाई, तुम

गलत रास्तेपर चले गये। उसके लिए पश्चात्ताप करो। अबतक गन्दे रहे, अब नहा डालो।

> समाज यह तय कर ले कि हम इन गुमराह भाइयोंको ज्यादा सतायेंगे नहीं, सरकार भी सोचे कि जो लोग अपना गुनाह कबूल करते हैं, उनके साथ सख्तीसे न बरते। पुलिस उनके साथ बुरा व्यवहार न करे। इस तरह प्रेम और सद्भावसे यह समस्या जरूर सुलझ सकती है।

× × ×

गाँवमें तीन भाई प्रभावशाली हैं। तीनों बुजुर्ग, वयोवृद्ध। हम लोग दोपहरमें तीनोंसे अलग-अलग बातें करते रहे। तीनों तीनोंसे डरते हैं। किसीका किसीपर विश्वास नहीं। रग-रगमें पारस्परिक मत्सर और द्वेष भरा पड़ा है। आजका नहीं, बरसोंका। तीनों एक-दूसरेपर लांछन लगाते हैं। तीनोंने एक-एक पार्टी पकड़ रखी है। एक कहता है कि ग्वालियर महाराजके जमानेमें मैं अवैध व्यापार करता था जरूर, यहाँसे नाजायज माल इटावा पहुँचाया करता था, पर वह जो मेरा दुश्मन है, वह तो आज भी चोरी करता है, जानवरोंको छिपाकर बेचता है और उससे हजारों रुपये पैदा करता है! दूसरा कहता है, हम तो मिलनेको तैयार हैं, पर वह तो हमसे दुश्मनी मानता है। उसका कोई भी नुकसान होता है, तो वह यही मानता है कि हमने ही करा दिया। हम मर जायँ और तब उसका कोई नुकसान हो, तब भी वह यही कहेगा कि जिन्दा था, तब तो सताता ही रहा, मरकर भी सता रहा है!

एक भाई पुलिसके वादेमें ही अपना जीवन बिताता है। कचहरी ही उसकी कचहरी है। सैकड़ों बीघे जमीन परती पड़ी है उसकी। कोई जोतने-की हिम्मत नहीं करता, क्योंकि बागियोंका डर है। जो जोतेगा, उसे बागी गोलीसे उड़ा देगा! दुश्मनीका कैसा भीषण चित्र!

× × ×

बबूलकी विरल छायामें बैठे हम लोग अभी बात ही कर रहे थे कि शोर मचा—'बागी आया ! बागी आया !!' भीड़ दौड़ी चारों ओरसे।

हमने देखा कि एक नौजवान साफा बाँधे बन्दूक लिये, कारतूस डाले बाबाकी ओर बढ़ रहा है। भीड़ चारों ओरसे घेरे है उसे।

तभी यह भी देखा कि बन्दूकधारी दो नौजवान जीपसे आये और बाबासे एकान्तमें थोड़ी देर बात करके फिर जीपसे रवाना हो गये। लोगोंने कहा : 'ये भी बागी हैं !'

× × ×

बागियोंकी दर्शनार्थी भीड़ बढ़ने लगी और जोरसे बढ़ने लगी। पता चला कि तीन बागी भाई आये हैं बाबाके पास आत्मसमर्पणके लिए।

फोटोग्राफरोंके कैमरे 'क्लिक' कर उठे। तीनों बड़ी हँसी-खुशीसे फोटो खिंचा रहे थे।

× × ×

सायंकालीन प्रार्थनाके लिए बाबा जब मंचपर पहुँचे, तो पातीराम, श्रीकिशन और मोहरमन : तीन बागी भाइयोंने शस्त्र-समर्पण करते हुए बाबाके चरण स्पर्श किये और कहा : 'अबतक हमने जो गलत काम किये हैं, उनका हमें दुःख है। आइन्दा हम कोई गलत काम न करेंगे !'

प्रार्थना-प्रवचनमें बाबाने कहा :

बड़ी दुःखदायी कहानी है इस गाँवकी। यहाँ बीस-पचीस लोग मारे गये। कुछ बागियोंने मारे, कुछ पुलिसने। जिन्होंने इस तरह मनुष्योंकी हत्या की, उन्हें उस समय कैसा लगा होगा, हम नहीं कह सकते। जो मरे, वे तो एक तरहसे छूट गये। उनमें कुछ दोषी होंगे, कुछ निर्दोष। भगवान्‌की निगाहमें वे कैसे हैं, वही जानें। मगर मारनेवाले हर हालतमें यहाँ दोषी ही माने जायेंगे। भगवान्‌का दरबार ही एक ऐसा स्थान है, जहाँ अन्दर और बाहर दोनोंकी पहचान होती है। तुलसीदास कहते हैं : "ज्ञानहू गिराके स्वामी बाहरयामी अन्तर्यामी"। 'अन्तर्यामी' शब्द तो सबने सुना है। मगर तुलसीके शब्दोंमें वह 'बाहर-यामी' भी है। उससे कोई

कुछ छिपा नहीं सकता। लेकिन जो मर गये, उनके घरवालोंकी हालत क्या होती होगी! वे माताएँ जिनके बच्चे गये, वे बहनें जिनके पति गये, वे बच्चे जिनके पिता गये, उनकी क्या दशा होगी! एक दिन जाना तो सबको है। कोई आगे जाता है, कोई पीछे। पर जब लोग इस तरह मारे जाते हैं, तो मनुष्यका दिल उसे बर्दाश्त नहीं कर पाता। १२-१५ बरसोंसे हम दुखभरी कहानियाँ सुनते और देखते आ रहे हैं। पहले हिन्दुस्तानके बँटवारेके समय, फिर तेलंगानामें और अब यहाँ सुन रहे हैं।

इस गाँवकी बदकिस्मतीसे यहाँ तीन-तीन पार्टियाँ और उनके एक-एक नेता हैं। तीनों बुजुर्ग हैं। कहा जाता है कि उनमेंसे एक कांग्रेसी है, एक सोशलिस्ट है और एक सरकारके साथ है। जो कुछ यहाँ हुआ, वह सब इन्हींका पैदा किया हुआ है। हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि ये पार्टियाँ कभी ऐसा नहीं कह सकतीं कि तुम गलत काम करो। हम कांग्रेस पार्टीको जानते हैं, सोशलिस्ट-पार्टीको भी जानते हैं। उनके नेता हमारे मित्र हैं। वे कभी गलत आदेश नहीं दे सकते। जिनको आपसमें लड़ना होता है, वे इसी तरह अलग-अलग पार्टियोंकी आड़ ले लेते हैं।

तेलंगानामें दो भाई थे। दोनों एक-दूसरेके कट्टर दुश्मन। भाईसे बड़ा दोस्त भी कोई नहीं और भाईसे बड़ा दुश्मन भी कोई नहीं। रामायणमें दोनों उदाहरण हैं। राम, लक्ष्मण जैसे बेहद प्यार करनेवाले भाई भी हैं और बालि, सुग्रीव जैसे बेहद लड़नेवाले भाई भी हैं। तो तेलंगानाके एक गाँवमें रहनेवाले ये दो भाई एक-दूसरेके कट्टर दुश्मन थे। दोनोंके पास बड़ी-बड़ी जमीनें थीं। एक कांग्रेसमें शामिल हो गया, दूसरा कम्युनिस्ट बन गया। इससे उनको और जोर आ गया। फिर आधा गाँव एक भाईकी तरफ हो गया और आधा दूसरे भाईकी तरफ। मैंने दोनोंको बुलाकर प्यारसे समझाया। भगवान्‌ने हमारी वाणीमें ताकत दी। उन्होंने हमारी बात मान ली। आम सभामें दोनों भाई गले मिले और उनका झगड़ा खतम हो गया।

इसी तरहका किस्सा यहाँ भी है। यहाँके

रुपये देखते-देखते आ गये। टूटे-फूटे मिट्टीके मकानोंमें इतना रुपया! कान्ता और हरविलासबहन सर्वोदय-साहित्य बेचने निकलीं, तो भी काफी अच्छी बिक्री हुई। आशासे कहीं अधिक अच्छी!

× × ×

कई भाइयोंपर निगरानी है पुलिसकी। उन्हें हाजिरी देनी पड़ती है। एक भाई चाहता था कि बाबाको कुछ आपबीती सुनाये। हमने दिनमें कई बार उससे मिलकर कहा: 'तुम निधड़क होकर बाबासे मिलो।' पर उसकी हिम्मत नहीं पड़ी, सो नहीं ही पड़ी। शामको हमने उससे फिर पूछा: 'क्यों भाई, तुम आये नहीं मिलने?'

बहुत सकपकाता-सा बोला: कैसे आता? कल 'साहब' (पुलिस अधिकारी) पूछेगा कि 'क्यों, तुम बाबासे मिलने गया था', तो क्या जवाब दूँगा!

हायरे, आतंक! ❁ ❁ ❁

बागीरी काहेको की ?

कनेरा (भिण्ड)
१८ मई '६०

संकल्प : सेवा : समर्पण : समाधि !

प्रातःकाल संकल्प करो कि दिनभर सेवा करूँगा, सत्कार्य करूँगा।

दिनभर सेवा करो।

सायंकालके समय दिनभरकी सेवा प्रभुको समर्पण कर दो : 'लो नाथ, भला-बुरा सब तुम्हारा !'

रात्रिको आँखें मूँदते ही समाधिमें चले जाओ।

मुरेना जिलेकी सीमा पार करके हमने जैसे ही भिण्ड जिलेकी सीमामें प्रवेश किया और उदोतगढ़ ग्राममें पहुँचे, वैसे ही बाबा परशुराम, हरेकृष्ण जाधव भुता, बाबूराम शुक्ल, रघुवीर सिंह कुशवाहा, हरसेवक मिश्र, नरेश्वरदयाल शर्मा, काशी गुप्त, लक्ष्मीनारायण गुप्त और भिण्ड जिलेके अनेक व्यक्तियोंने बाबाका स्वागत किया, तभी स्वागतार्थी भीड़को बाबाने जीवनका यह अनुपम सूत्र भेंट कर दिया।

सार्थक हो उठे हमारा जीवन, जिस दिनसे हम इसे अपना लें !

× × ×

आज रास्तेमें बाबा एक डाकूके दामादसे बातें करते आये। उसने पुलिसके उत्पीड़नसे त्रस्त होकर दो बच्चोंवाली अपनी युवती पत्नी छोड़ रखी है। पत्नी जबसे छोड़ी, तबसे डाकू लोग उसे तंग करने लगे। बेचारेके लिए 'इधर कुआँ है, उधर खाई !' बाबाने उसे बहुत धिक्कारा। प्रवेश-प्रवचनमें भी बाबाने उसकी चर्चा की।

बोले :

ऊपरसे देखते हैं, तो मनुष्यके जीवनमें खाना, पीना, बीमारी, बुढ़ापा,

मृत्यु—यही सब दीख पड़ता है। पशुओंमें भी
फिर भी, दुःखीसे दुःखी मनुष्य भी सुखी जानव
खाना, पीना और मामूली इन्द्रिय-सुख ही यदि स
मनुष्य ऐसा पसन्द करता। पर मनुष्यमें जानवरों
और वह है मानवता, इन्सानियत। हमदर्द दिल
अमूल्य देन है। उसे दूसरोंका दुःख अपना ही
कभी-कभी इसीलिए वह दूसरोंको सुख देनेको बहु
तैयार हो जाता है। खुद प्यासा होते हुए भी दूस
उसे आनन्द महसूस होता है।

एकादशीको मनुष्य व्रत रखता है। खाना र
नहीं खाता। व्रतका यह आनन्द गधों और घो
खानेका आनन्द उन्हें मालूम है, छोड़नेका आनन्द
इन्द्रियोंपर काबू पानेके लिए खानेका सुख
हासिल नहीं।

जिसके जीवनमें इन्सानियतका आनन्द जितना
उतना ही बड़ा महात्मा माना जाता है। उसका
जिसमें हमें इन्सानियतका माद्दा ज्यादा दीखता है, ह
है, उसे हम 'महात्मा' कहकर पूजते हैं। वैसा बननेक
हैं। आसपासकी सृष्टिकी सेवा और स्रष्टाके दर्शनके
त्यागकी हविस मनु चीज है। जिसमें
होगी, उतना ही ज्या न होगा।

आज ई वे शादीशुद
हैं। उन उन्हें तंग
है तो क्यों
आयें

करेंगे ! उनके पास तो पकड़नेका यही साधन है। मनुष्यको पकड़ना चाहते हैं, इसलिए उसका कान पकड़ते हैं। खुद उसे पीटनेसे जितनी तकलीफ नहीं होती, उससे ज्यादा तकलीफ उसकी पत्नी या उसके बच्चोंको पीटनेसे होती है। यह धक्का देनेवाला उपचार—Shock Treatment—पुलिस काममें लाती है।

इस भाईने पुलिसकी तकलीफसे बचनेको अपनी पत्नीसे कहा : "तू यहाँसे जा।" जिस पत्नीको लड़के-बच्चे हो गये, उसे उसने अपने यहाँसे भेज दिया ! वह बेचारी चली गयी। स्पष्ट है कि उसका यह कार्य अधर्मका है। वह कहता है : "अब मुझे डाकू तंग करते हैं।" मैंने उससे कहा कि "मुझे खुशी है कि डाकू तुम्हें तंग करते हैं।" वह बेचारा दो चक्कियोंमें पिसा जा रहा है। मैंने उससे कहा : "आखिर क्या करोगे ? जाकर चम्बलमें कूद पड़ो। तैरना आता है, तो पत्थर बाँधकर कूदो। नहीं तो गंगाजीमें कूदो।" वह मेरा इशारा समझ गया।

तकलीफसे बचनेको मनुष्य अब अपना धर्म छोड़ता है, तो वह अपनी मानवता छोड़ता है। गृहस्थ-आश्रमका धर्म है, इन्द्रिय-निग्रह, अतिथि-सेवा और ऐसी ही बहुत-सी बातें। तकलीफके कारण पत्नीको छोड़ दिया, यह तो पशुत्व हो गया। पत्नी क्या केवल भोग-विलासके लिए ही होती है ? यहाँ तो गृहस्थाश्रम ही मिट गया। मनुष्यता ही जाती रही। मानव-जीवनमें मानवता, हमदर्दी, संयम, भक्ति होनी ही चाहिए। नहीं तो पशु और मानवमें फर्क ही क्या रहा ?

> कई बड़े सत्पुरुषोंके ऐसे ही किस्से हैं। डाकुओंमें भी कई महापुरुष हो गये हैं। नामदेवके बारेमें कहा जाता है कि वह लोगोंको लूटता था, डाका डालता था। एक रोज वह किसी धर्मशालामें बैठा था। वहाँ एक आदमी रो रो करके दूसरेको सुना रहा था कि वह बड़े दुःखमें है। उसने कहा कि 'वह नामा डाकू है न ! उसने मुझे खूब सताया है, मेरी पत्नीको खूब तकलीफ दी है !' नामदेव बैठकर सुन रहा था। उसकी मानवता

छूट गयी। उसने सोचा कि मैं ही इसके दुःखका कारण हूँ। उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ। शेरको कभी ऐसा सदमा नहीं होता, उसमें इन्सानियतका माद्दा होता ही नहीं। बूढ़ा होनेपर, अशक्त होनेपर भले ही वह सोचता हो—'हे भगवन्! मैंने जिन्दगी-भर दुश्मन ही बनाये!' ज्ञानदेवने लिखा है कि शेर अपनी भूखसे पीड़ित होकर कभी-कभी खुद ही अपना हाथ चबाने लगता है। मनुष्यमें यह बात नहीं है।

मानवताका स्पर्श होनेपर दुर्जन एक क्षणमें सज्जन बन सकता है। मैं पूरे विश्वाससे मानता हूँ कि यहाँ लोगोंको मानवताका स्पर्श होगा, ऊपरसे ढकना हट जायगा और भीतरका प्रकाश बाहर आ जायगा। यह सज्जनोंका क्षेत्र, सन्तोंका क्षेत्र जाहिर होगा। अनेक सत्पुरुषोंका उदय यहाँ हो रहा है। हम हमदर्दी और श्रद्धासे काम करें। यह क्षेत्र निश्चय ही साधु-क्षेत्र घोषित हो सकता है। इनको सीधी राह बतानेकी जरूरत है।

मंचपर अपने पास बैठे परशुराम बाबाकी ओर देखते हुए बाबा बोले: इन स्वामीजी महाराजका यही धन्धा होना चाहिए। बताइये न महाराज इन्हें सीधी राह!

× × ×

दोपहरमें बाबा गाँवकी परिक्रमाको निकले। कई घरोंमें हम लोग गये। जगह-जगह डाकुओंके अत्याचारोंकी कहानी सुननेको मिली। लोगोंने बताया कि हमसे इतने-इतने हजार रुपये माँगे गये, हम नहीं दे पाये, तो हमारे भाई-भतीजे गोलियोंसे भून दिये गये! एक कच्चे मकानकी दीवालोंमें कई जगह हमें गोलियोंके निशान देखनेको मिले।

× × ×

तम्बूमें हम बैठे ही थे कि चारों ओर शोर मचा: "पण्डित आये, पण्डिताइन आयीं।" कोई कह रहा था 'लच्छी पण्डित आये', कोई कह

श्री यदुनाथ सिंह रास्तेमें एक बागीके साथ बात करते हुए

मानसिंह-रूपा गिरोह : समर्पणके पहले

छू गयी। उसने सोचा कि मैं ही इसके दुःखका कारण हूँ। उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ। शेरको कभी ऐसा सदमा नहीं होता, उसमें इन्सानियतका माद्दा होता ही नहीं। बूढ़ा होनेपर, अशक्त होनेपर भले ही वह सोचता हो—'हे भगवन्! मैंने जिन्दगी-भर दुश्मन ही बनाये!' ज्ञानदेवने लिखा है कि शेर अपनी भूखसे पीड़ित होकर कभी-कभी खुद ही अपना हाथ चबाने लगता है। मनुष्यमें यह बात नहीं है।

मानवताका स्पर्श होनेपर दुर्जन एक क्षणमें सज्जन बन सकता है। मैं पूरे विश्वाससे मानता हूँ कि यहाँ लोगोंको मानवताका स्पर्श होगा, ऊपरसे ढकना हट जायगा और भीतरका प्रकाश बाहर आ जायगा। यह सज्जनोंका क्षेत्र, सन्तोंका क्षेत्र जाहिर होगा। अनेक सत्पुरुषोंका उदय यहाँ हो रहा है। हम हमदर्दी और श्रद्धासे काम करें। यह क्षेत्र निश्चय ही साधु-क्षेत्र घोषित हो सकता है। इनको सीधी राह बतानेकी जरूरत है।

मंचपर अपने पास बैठे परशुराम बाबाकी ओर देखते हुए बाबा बोले : इन स्वामीजी महाराजका यही धन्धा होना चाहिए। बताइये न महाराज इन्हें सीधी राह!

× × ×

दोपहरमें बाबा गाँवकी परिक्रमाको निकले। कई घरोंमें हम लोग गये। जगह-जगह डाकुओंके अत्याचारोंकी कहानी सुननेको मिली। लोगोंने बताया कि हमसे इतने-इतने हजार रुपये माँगे गये, हम नहीं दे पाये, तो हमारे भाई-भतीजे गोलियोंसे भून दिये गये! एक कच्चे मकानकी दीवालोंमें कई जगह हमें गोलियोंके निशान देखनेको मिले।

× × ×

तम्बूमें हम बैठे ही थे कि चारों ओर शोर मचा : "पण्डित आये, पण्डिताइन आयीं।" कोई कह रहा था 'लच्छी पण्डित आये', कोई कह

श्री यदुनाथ सिंह रास्तेमें एक बागीके साथ बात करते हुए

मानसिंह-रूपा गिरोह समर्पणके पहले

अहिंसाके चरणोंमें हिंसाका आत्मसमर्पण

रहा था 'लच्छी महराज आये !' कोई कह रहा था 'बड़ा खतरनाक और चालाक बागी है यह !' मिनटोंमें हजारोंकी भीड़ बाबाके निवासके आस-पास जुट गयी।

जाकर देखा, तो दर्वाजेपर रामऔतार पूरी मुस्तैदीसे खड़ा भीड़को 'कण्ट्रोल' कर रहा है। वह तो अब 'बाबाका स्वयंसेवक न बन गया है। खादीकी सफेद टोपी, कुरता और पाजामा पहनकर मूँछोंपर ताव देता हुआ वह बड़ी शानके साथ बाबाकी पानीवाली थैली कन्धेपर लटकाकर रोज चलता है।

'क्या है रामऔतार ?'

बोला : पासके खडीत गाँवके लच्छी पण्डित आये हैं बाबाके पास। पाँच हजारका इनाम है इनपर। इनके साथ इनके गिरोहका परभू भी आया है।

भीतर पहुँचा। देखा, बाबाकी मेजके सामने कुर्ता धोती टोपी पहने एक प्रौढ़ व्यक्ति बड़े नम्र भावसे बैठा बात कर रहा है। उसके परिवारकी स्त्रियाँ भी हैं। वह बता रहा है : यह मेरी माँ है, यह मेरी पत्नी है, यह मेरी बच्ची !

छोटीसी नन्ही बच्ची—गोरी गोरी, भोली-भोली, प्यारी-प्यारी !

अच्युतभाई कुरान शरीफ लिये बगलमें बैठे थे। मैं भी उधर ही जम गया और लगा बड़ी उत्सुकतासे लच्छीकी बातें सुनने।

'कैसे आ गये तुम यहाँ ?' बाबाने पूछा।

लच्छी बोला : बाबा, मैं बम्बईमें था। अखबारोंमें रोज पढ़ता था कि विनोबा बाबा आये हैं हमारे चम्बलके बेहड़ोंमें और वे गाँव-गाँव बागियोंको समझाते फिर रहे हैं कि तुमने अबतक बहुत गलत काम किये, वह ठीक नहीं। वह गलत रास्ता छोड़ दो। अपनी गलती कबूल करो, तो तुम्हारा अगला जनम तो सुधर जायगा, यह जनम तो बिगड़ा सो बिगड़ा।

बाबा : 'फिर क्या हुआ ?'

लच्छी : फिर मुझे भीतरसे ऐसी प्रेरणा हुई कि मैं चलूँ और बाबाके चरणोंमें गिरकर अपने कामोंके लिए पश्चात्ताप करूँ। इसीसे मैं चला आया।

'रेलसे आये तुम?'

'हाँ बाबा, रेलसे ही आया। पहले मैंने सोचा कि आपको तार कर दूँ, पर बादमें मेरा इरादा बदल गया। सोचा, शायद मेरा तार पुलिसके हाथ लग जाय और मैं आपके पास पहुँचनेके पहले ही पकड़ लिया जाऊँ। इसीसे मैंने तार नहीं किया। बीचमें मुझे एकाध दिन बुखार भी हो गया।'

'बम्बईमें तुम पकड़े नहीं गये?'

'बम्बईमें लाखोंकी भीड़में किसीको पकड़ पाना कोई मामूली बात है बाबा? एक दफा मेरे नामसे कोई दूसरा आदमी पकड़ा गया था, पर यहाँ लानेपर पता चला कि यह तो लच्छी है नहीं, कोई दूसरा है। तब उसे छोड़ दिया गया।'

'बम्बईमें तुम्हारा खर्च कैसे चलता था?'

लच्छी मानो आसमानसे गिरा! बोला : फिर बागगीरी काहेको की थी बाबा?

'बागगीरी' बाबा नहीं समझ पाये, तो मैंने बताया : बाबा, बागगीरीका मतलब है डकैती। ये लोग अपने-आपको 'बागी' कहते हैं और अपने पेशेको—'बागगीरी!'

'कभी आया, चार-छह हजार रुपया ले गया, फिर चला गया बम्बई!'

× × ×

आज नगराके तीनों मुखियोंको हमने यहाँ बुलाया था। बाबाके पास तीनोंको ले गया। बाबाने तीनोंको मिल जानेके लिए समझाया और कहा कि अपनी-अपनी जमीनका छठा हिस्सा मुझे दे दो। देनेके नामपर तीनों बगलें झाँकने लगे। किसी तरह एक भाई बहुत थोड़ी जमीन देनेको

तैयार हो गया। मैंने दानपत्रपर उसके हस्ताक्षर ले लिये, इस आशामें कि शायद आगे चलकर इस ठतूडुभमें नयी कोपलें फूटें।

× × ×

सायकालीन प्रार्थनाके समय बाबाका हृदय भरा हुआ था। बहुत थोड़ा बोले वे। कहने लगे : आज मेरा दिल परमेश्वरके पास पहुँच गया है। इसके सिवा मुझे कुछ सूझता नहीं। हाँ, एक बात मुझे कहनी है। आज कुछ चमार भाई मेरे पास आये थे। उनके पास जीविकाका कोई साधन नहीं है। उनके सात परिवार हैं। उन्हें २१ एकड़ जमीन चाहिए। आप लोग उदार बनकर उन्हें इतनी जमीन दे दीजिये। पोचमपल्लीमें कुछ हरिजन भाई मेरे पास जमीन माँगने आये थे। उन्हें ८० एकड़ जमीन चाहिए थी। मैंने माँगी, तो १०० एकड़ मिल गयी। तभीसे भूदानका यह आन्दोलन शुरू हुआ। याद रखिये, मकान, जमीन, धन कुछ साथ न जायगा। जायगा सिर्फ प्यार। यही एक चीज है कमाने की।

> बाबा तो प्रेमकी तलाशमें घूम रहा है। यहाँ जो कुछ चल रहा है, उसके पीछे ईश्वरकी इच्छा ही काम कर रही है। आज जो भाई आये, वे परमेश्वरके भेजे हुए ही आये हैं। हमारा कोई साथी भी उनके पास नहीं पहुँचा था। ईश्वरने प्रेरणा दी और वे यहाँ चले आये! ढाई हजार सालसे हम अंगुली-मालकी कहानी सुनते आ रहे हैं। आजका युग कलयुग माना जाता है, पर कलयुगमें भी ऐसी कहानियाँ बन रही हैं, यह ईश्वरकी ही कृपा है!

× × ×

अंगुलीमालका नाम सुनकर मैं जा डूबा भगवान् बुद्धके आलोकमें।

श्रावस्तीका पिण्डचार समाप्त कर भगवान् बुद्ध वनकी ओर बढ़े जा रहे हैं। ग्वाले आते हैं, किसान आते हैं। कहते हैं : 'भन्ते, मत जाइये इस वनमें। अंगुलीमाल डाकू रहता है यहाँ। प्राणियोंका वध करनेवाला,

यात्रियोंको मारकर उनकी उँगलियोंकी माला पहननेवाला—अंगुलीमाल डाकू ! बड़ा हिंसक है वह । मत जाइये भन्ते इस वनमें ।'

भिक्षुसंघ भी मना कर रहा है ।

पर तथागत भला माननेवाले हैं ?

अंगुलीमालको भी आश्चर्य हो रहा है कि यह कैसा श्रमण है, जो मुझसे तनिक भी डरे बिना निर्भय बढ़ता चला आ रहा है ! सारा कोशल राज्य, श्रावस्तीका राजा प्रसेनजित और उसकी सारी प्रजा मेरे नामसे थर-थर काँपती है, समूहके समूह लोग मेरा सामना करनेसे कतराते हैं, पर इस आदमीको मेरा कोई डर ही नहीं !

पूरे जोरसे दौड़ता है वह भगवान् बुद्धको मार डालनेके लिए, पर यह क्या ? उसके पैर जकड़े क्यों जा रहे हैं ? उसका क्रोध, उसका द्वेष समाप्त क्यों हो रहा है ?

'खड़े रहो, स्थिर रहो श्रमण !'

'खड़ा तो हूँ ही अंगुलीमाल ! प्राणियोंके प्रति दण्डका मैंने त्याग कर दिया है, इसलिए स्थित ही हूँ । अस्थित तो तुम हो ।'

'ठीक कहते हैं श्रमण । मैं अन्धा हो गया था । बड़े-बड़े पाप किये हैं मैंने । अब आपकी शरणमें हूँ—बुद्धं शरणं गच्छामि ।'

आ गिरा वह तथागतके चरणोंपर ।

'आ भिक्षु, तेरा स्वागत है !'

भगवान् बुद्धने उसे प्रव्रजित कर लिया ।

हिंसा अहिंसाके आगे नतमस्तक हो गयी !

× × ×

शामको देखा, तो न कहीं लच्छीका पता है, न उसके साथ आये परभूका ! पता लगाया, तो मालूम हुआ कि वह पासके ही गाँवमें गया है यह कहकर कि 'थोड़ी देरमें लौट आऊँगा ।'

आत्म-समर्पण करनेवाले बागी भाई स्वेच्छासे ही बाबाके चरणोंमें उपस्थित हो रहे हैं, इसलिए उनकी जिम्मेदारी उन्हींपर है, हमपर नहीं ।

फिर भी कहीं कोई अघटन घटना न घट जाय, इसलिए एहतियातन थोड़ी-सी चिन्ता हुई। बाबा तो प्रार्थनाके बाद ब्रह्मसमाधिमें जा चुके थे, शर्माजी और अच्युतभाई अँधेरी रातमें गाँवके एक व्यक्तिको लेकर खोजमें निकले। मैं भी चलने लगा, तो उन्होंने रोक दिया। मालूम हुआ कि पासके ही एक गाँवमें लच्छीके एक सम्बन्धीके घरपर भागवतकी कथा हो रही है। वहाँ जाकर खोजा, तो लच्छी मिला। कहा उसने : 'कथा पूरी होनेके लिए ही मैं रुक गया था। आप लोगोंने बेकार कष्ट किया अँधेरी रातमें यहाँ आनेका।'

प्रसाद लेकर काफी रातको ये लोग लौटे और खुले मैदानमें हमारे बगलमें आकर पड़ रहे। ● ● ●

आज तें हमाई नयी जिन्दगी है रही है !

कदोरा

१९ मई '६०

'This is Mansingh-Roopa Gang. They have surrendered their hearts, not only their arms.' (यह है मानसिंह-रूपाका गिरोह। उन्होंने अपने हृदय समर्पित कर दिये हैं, केवल हथियार ही नहीं !)

रातके पौने चार बजे पत्रकारोंको दिया गया जनरल यदुनाथ सिंहका यह उत्तर हमारे चारों ओर गूँज उठा।

लुक्काके नेतृत्वमें रूपाके ११ साथियोंका यह गिरोह रातके गहन अन्धकारमें ही कनेरा आ गया था। बाबा उस समय ब्रह्मलोककी सैर कर रहे थे। सुबह जब वे जागे, तो ये सब भाई जाकर बाबाके चरणोंमें गिर पड़े। बाबाने उनसे सामूहिक रूपसे भी बातें कीं, एक-एक करके भी।

और इसमें लगी देरी।

इसलिए निश्चित समयसे कहीं ९० मिनट बाद हम लोग 'श्री रमा-रमण गोविन्द हरि' कहकर यात्रापर निकल सके।

× × ×

और कनेरासे कदोरातककी दस मीलकी यह यात्रा !

बाबा चल रहे हैं, हम लोग चल रहे हैं और बाबाके नये दोस्त—बागी भाई चल रहे हैं—नौ-नौ बन्दूकोंके साथ, कारतूसोंके साथ ! इनमें सात बन्दूकें थ्री नाट थ्री—३०३—की हैं, एक १२ बोरकी है और एक बन्दूक ऐसी है, जिसमें दूरबीन भी लगी है। हमारे साथ पुलिस चल रही है, खुफिया पुलिस चल रही है, कोंदिली साहब चल रहे हैं, विश्वनाथ

सिंह चल रहे हैं, कमिश्नर चटर्जी साहब चल रहे हैं, क्लिन्स साहब चल रहे हैं, जिला मजिस्ट्रेट टायटस साहब चल रहे हैं, पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट पाहूजा साहब चल रहे हैं। और साथ ही साथ चल रहा है सरकारी अधिकारियों द्वारा बुलाया गया बैंड।

दर्शनार्थी भीड़का तो कहना ही क्या !

×   ×   ×

गौतम रातको ही लौट आया था जनरल साहब और इन बागियोंके साथ। कान्तावहन उससे खोद-खोदकर पूछ रही थी दो तीन दिनकी उसकी ऐतिहासिक यात्राका वर्णन।

मैं पास पहुँचा, तो मैंने कहा : गौतम, अपनी मौसीको ही सारा हाल-चाल बतायेगा कि मुझे भी !

कान्तावहनको उसने 'मौसी' बना रखा है !

बोला : आपको क्यों नहीं बताऊँगा ? आप पूछते चलिये, मैं बताता चलूँ।

और फिर मैंने उसे उलझा लिया सवालोंमें।

मैं : उस दिन तुम्हारे शान्ति-मिशनमें कौन-कौन गया था तुम्हारे साथ ?

गौतम : जनरल साहब, कदम, रोम और मैं।

मैं : कहाँपर भेंट हुई इन लोगोंसे ?

गौतम : रिपौना गाँवके पास। वहीं ठहरे हम लोग दो-तीन दिन। मानसिंह जिस नीमके नीचे बैठते थे, उसके नीचे हम लोग भी बैठे !

मैं : कैसा स्वागत किया गया तुम्हारा ?

गौतम : अतिथि-सत्कार उन्होंने बहुत अच्छा किया। बड़े प्रेम और आदरसे हमें रखा। सब लोग चम्बल नहाने गये, वहाँ गुड़ पकौड़ियाँ खिलायीं। भोजनका भी अच्छा इन्तजाम किया।

मैं : तुमपर विश्वास कैसे जमा ?

गौतम : शुरूमें तो हमारा उनका विश्वास नहीं था, एक-दूसरेपर

भी वे बन्दूक कन्धेपरसे नहीं उतारते थे। लालटेनकी रोशनीमें बार-बार चेहरे देखते थे। जब उन्होंने ठीकसे हमें पहचान लिया, तब हमपर उनका विश्वास बैठा। फिर तो उनसे जमकर दोस्ती हो गयी। हृदय उँड़ेलकर रखने लगे हमारे सामने।

मैं : प्रेम और शान्तिके सन्देशका उनपर कैसा असर हुआ ?

गौतम : वे तो बाग-बाग थे बाबाका प्रेम-सन्देश सुनकर। सभी लोग कहते थे कि आजतक हमारे पास तरह-तरहके लोग आये। पर जो भी लोग आये, वे सब हमें जूते मारनेवाले ही आये, डंडेसे ही हमसे बात करनेवाले आये ! प्रेमकी बात तो कभी किसीने हमसे की ही नहीं ! जो आया, सतानेवाला ही आया ! जनरल साहब पहले आदमी हैं, जिन्होंने हमें आकर प्रेमसे समझाया कि तुम लोग गलत रास्तेपर चले गये हो, अब छोड़ो इसे और अपने किये के लिए पश्चात्ताप करो। उनकी बात हमें जँच गयी और हमने तय कर लिया कि हम यह गलत रास्ता छोड़ देंगे। इसके पहले तो हमने कभी सोचा भी नहीं था कि जिन्दगीमें हमारी बन्दूक कभी हमारे कंधेसे नीचे उतरेगी भी !

और यहीं मेरे स्मृति-पटपर नाच गया 'ला मिजरेबल्स'का जीन वैलजीन, जो जेलकी एकान्त घड़ियोंमें बैठकर बिलकुल इसी भाँति सोचा करता था कि 'मानव-समाजने उसे सतानेके सिवा और किया ही क्या ? जब भी उसने उसकी ओर देखा, तो कड़ी नजरसे ही देखा ! न्यायके नामपर उसने जब हुआ, तब उसे सताया ही ! किसी भी व्यक्तिने यदि कभी उसे छुआ, तो केवल उसे कुचलनेके लिए ही ! जो भी मनुष्य उसे मिला, उसने उसे पीटा ही, उसे घूँसे ही लगाये ! बचपनसे लेकर अबतक उसे जो मिला, सतानेवाला ही मिला ! किसीने कभी भी उससे मीठी बात नहीं की। किसीने कभी उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया !'*

---

* देखिये, परिशिष्ट ३।

मैं : तुमने इन लोगोंके छिपनेके स्थान देखे ! कहाँ और कैसे छिपते थे ये ?

गौतम : ये सब इन्होंने हमें दिखाये। बेहड़ोंमें ये गुफाओंमें कैसे रहते हैं, कैसा जीवन बिताते हैं, इसका इन्होंने पूरा परिचय दिया। इनके सदेशवाहक किस तरह ऊँचेपर बैठकर पुलिसकी गतिविधि बताते रहते हैं, कैसे पहरा देते हैं—इसका इन्होंने नाटक करके भी दिखाया। पुलिस और अपने दुश्मनोंसे ये कैसे लोहा लेते हैं, कैसी मोर्चाबन्दी करते हैं और छोटी जगहसे भी कैसे पार हो जाते हैं, इसका भी इन्होंने रिहर्सल करके दिखाया। यह सब देखनेके लिए हम ऊँटपर चढ़कर और पैदल चलकर गये थे।

मैं : जनरल साहब जब पहली बार इन लोगोंसे मिले, तबका हालचाल इन लोगोंने बताया ?

गौतम : हाँ, तभीसे तो ये बाबाके भक्त बने हैं। उस दफा जनरल साहबसे उन्होंने किस तरह बातें कीं, उसका भी उन्होंने नाटक करके बताया। मैंने उसका भी फोटो लिया है।

मैं : ये लोग बागी क्यों और कैसे बने, इस बारेमें तुमने इनसे पूछा ?

गौतम : हाँ, पूछा। इनमेंसे ज्यादातर क्या, प्रायः सभी लोग बड़े स्वाभिमानी हैं। इन्हें किसीकी बात बर्दाश्त नहीं होती। प्रेमसे इनसे चाहे जो कुछ करा लीजिये, पर डाँट-डपटकर या रोब दिखाकर कोई कुछ कराना चाहे, तो ये कभी न करेंगे। आपसी दुश्मनी और पुलिसका दुर्व्यवहार इनमेंसे अधिकांश लोगोंके बागी बननेका कारण है। अभी भी कह रहे थे कि समर्पण तो हम करेंगे ही, पर पुलिस हमारी बेइज्जती न करे, इस बातका आप लोग जरा ख्याल रखियेगा।

मैं : अहिंसाकी बात अभी पूरी तरह इनके गले उतर नहीं पायी क्या ?

गौतम : बहुत कुछ उतर गयी है। उसीका यह नतीजा है कि जब दो तीन बागियोंके रिश्तेदारोंने कहा कि अगर पुलिसने या जेलवालोंने

हमारे भाइयोंकी बेइज्जती की, तो हम बागी बन जायँगे और बेइज्जती करनेवालोंको गोलीसे उड़ा देंगे, तो एक बागीने अपने भाईको डाँटकर कहा : 'तुम ऐसा कहते हो, तो तुम मेरे भाई नहीं, दुश्मन हो !'

मैं : अपने नेताका ये लोग कैसा सम्मान करते हैं ?

गौतम : बहुत ज्यादा। नेताकी बात इनके लिए ब्रह्मवाक्य है। नेता जो कह दे, सो करनेके लिए ये लोग तैयार रहते हैं। नेताका अपमान इनकी बर्दाश्तके बाहर है। उसके लिए ये जान लेने-देनेपर उतारू हो जाते हैं !

मैं : बन्दूक चलानेका इन्हें अच्छा अभ्यास होगा ?

गौतम : अच्छा ही नहीं, बहुत अच्छा। पक्के निशानेबाज हैं। कुछ लोग तो शब्दवेधी हैं। कहीं आवाज सुनते हैं, तो ऐसा निशाना मारते हैं कि एकदम सटीक बैठता है। मजाल क्या, जो कभी निशाना चूक जाय ! बन्दूकके तरह-तरहके उपयोग इन्होंने हमें करके दिखाये।

मैं : इनमें तो कुछ लोग गलेमें माला भी डाले हैं, बन्दूक भी। यह बेर-बेरका कैसा संग है ?

गौतम : इनमें प्रायः सभी धर्मालु हैं। कई बागी तो जपकी निश्चित संख्या पूरी किये बिना खाना नहीं खाते। रोज रामायण, गीता, भागवत पढ़ते हैं। उसपर बड़ी श्रद्धा रखते हैं। दिलके भी उदार हैं। जो पैसा लूटकर लाते हैं, उसमेंसे गरीबोंकी खुले दिलसे मदद करते हैं।

मैं : नैतिक आचरणका कोई 'कोड' भी है इनका ?

गौतम : हाँ। ये शराब नहीं पीते, जुआ नहीं खेलते, मांस नहीं खाते। गरीबोंको नहीं लूटते। मालदारोंपर ही डाका डालते हैं। स्त्रियोंकी बेइज्जती नहीं करते।

× × ×

कान्ताबहनका सहज नारी-हृदय !

वह यह जाननेको आकुल हो उठी कि ये लोग रात-दिन बेहड़ोंमें मारे-मारे फिरते हैं, इनके दिलोंमें अपने बाल-बच्चोंके लिए कोई ममता

रहती है या नहीं ! बरसों ये घर नहीं जाते, तो क्या इनके मनमें यह भाव नहीं उठता कि कभी घर जाकर बच्चोंके साथ खेलें-कूदें, उन्हें प्यार करें !

'पूछूँ यह सवाल ?'

हमने कहा : पूछनेमें क्या हर्ज है !

हम लोग लुक्काके आसपास घिर गये। कान्ताने पूछा : भाई, आप लोग बरसों अपने घर और परिवारसे दूर रहते हैं, आपका जी नहीं होता कि बाल-बच्चोंसे मिलें, उन्हें प्यार करें, उन्हें गोदीमें खिलायें ?

लुक्काने कहा : बहन, बन-बेहड़ोंमें बरसों रहते रहते हम लोगोंका जी कुछ कड़ा हो जाता है। बच्चोंकी ममता हमें ज्यादा नहीं सताती। उनसे बार-बार मिलनेकी इच्छा कम होती है। साल-दो सालमें कभी मुलाकात हो पाती है।

बात आगे चलती, पर भीड़ उत्तरोत्तर बढ़ती चल रही है। लुक्काको देखनेकी उत्सुकता लोगोंको सबसे ज्यादा है। मीलोंसे लोग दौड़ते चले आ रहे हैं।

× × ×

कन्धोंपर बन्दूक लटकाये ये बागी मुसाहरत हो हमारे साथ घूम रहे हैं, यह इन लोगोंके लिए तो अनोखा है ही; पुलिसके लिए भी अभूतपूर्व है। जिन्दगीमें शायद उसने कभी कल्पना भी न की होगी कि जिन इनामदारी डाकुओंसे हमारी मुलाकात गोलियोंसे ही होती या हो सकती है, उनसे हम आज हाथ मिलायेंगे !

आश्चर्य ! महान् आश्चर्य !!

देखनेवाले चकित हैं, हैरान हैं ! यह हो क्या रहा है ?

और तभी मैंने विचारमग्न करते सुना : 'आज तें हमाई नई जिन्दगी है रही है !' ('आजसे हमारा नया जीवन हो रहा है !')

गनगुन !

× × ×

कदीरा पहुँचो-पहुँचो काशी जिन यह आया।

पड़ावपर पहुँचते ही कोहिली साहब बाबाके पास पहुँचे और बड़ी नम्रतापूर्वक बोले : बाबा, मैं आपको Congratulate करता हूँ! बधाई देता हूँ!

बाबा मुसकरा दिये!

अधिकारियोंने बागियोंसे हाथ मिलाये।

आज ही इस बातका पता चला कि नगरामें जीपसे जो दो बन्दूकधारी बागी बाबासे मिलने आये थे, वे इन्हींमेंसे थे—भगवानसिंह और तेजसिंह।

× × ×

प्रवेश-प्रवचन बहुत छोटा-सा था। बाबा बोले :

कनेरासे रवाना होनेमें हमें देर लगी। ये जो हमारे ग्यारह बागी भाई आये हैं, उनसे जरा दिल खोलकर बातें करनी थीं। उन्होंने हमसे कहा कि हमें 'डाकू' न कहिये, 'बागी' कहिये। मैंने कहा, ठीक है, तुम भी बागी, हम भी बागी। मैं आपका दोस्त हूँ। बगावत बुरी चीज नहीं है। मैं भी बगावतका काम करता हूँ। पर मेरी बगावत तुमसे जरा भिन्न है। समाजसे छुआछूत मिटाना, बे-जमीनोंको जमीन दिलाना, ऊँच-नीचका भेद मिटानेको अमीरी और गरीबीको खत्म करना—यह है मेरी बगावत। बगावत आत्माकी ताकतके साथ होनी चाहिए। ऐसा होनेपर समाजमें न तो डाकू रहेंगे, न पुलिस। सारे समाजमें प्रेम और शान्ति फैलेगी। स्वस्थ समाज बनेगा। हमें ऐसा ही निडर समाज बनाना होगा। वह शस्त्रोंसे नहीं बनेगा। हथियारसे मसले हल नहीं होंगे। ये भाई हमारे पास विश्वास रखकर ही आये हैं। विश्वास ही एक ऐसी चीज है, जिससे दुश्मन भी दोस्त बन जाता है। विज्ञानके इस युगमें विश्वास, प्रेम, करुणा और निर्भयतासे ही मसले हल होंगे।

पुलिसवाले हमारे पास आये थे। उन्होंने कहा कि हम आपसे बोध लेने आये हैं। ठीक ही तो है। जिनको हम तनख्वाह देते हैं, उनको क्या

हम बांध नहीं देंगे ! हमने उनके बीच भी भाषण किया। उनसे भी हमने कहा कि अब बन्दूक, हत्याका जमाना गया।

× × ×

कदोरा बहुत छोटी-सी जगह है। बाबा सामनेके मकानमें ठहरे हैं, हम लोग सड़क इस पार तम्बुओंमें। धूप इतनी तेज कि चील अण्डा छोड़े। कुएँपर स्नानार्थियोंकी बड़ी भीड़। अच्युतभाई नहाने पहुँचे, तो अपने जाँघियेको देखकर बोले : यह तो फट रहा है, फेंक दूँ इसे ! मेरे पास एक नया है बिस्तरमें।

मैंने कहा : फेंकियेगा क्यों ? किसीको दे दीजिये।

'किसे दे दूँ ?'

तभी मेरी नजर सामने पड़ी। पानीका एक घडा रखे दो भाई बैठे थे बबूलकी छायामें। लगा, अवश्य ही ये हरिजन होंगे। कहा : उस भाईको बुलाकर दे दीजिये।

उसे बुलाकर पूछा : लोगे यह जाँघिया ?

'हाँ महाराज !'—बड़ा खुश हुआ वह।

× × ×

खुली धूपमें ही भोजनकी व्यवस्था थी। हमारी पंगतमें बैठकर जीमनेका बागी भाइयोंके जीवनमें यह पहला अवसर था। कुछ लोग कतरा भी रहे थे—'साधुका अन्न कैसे खायें ?' यह तो जनता-जनार्दनकी भिक्षा है, यह समझानेपर किसी तरह वे राजी हुए। बोले : इस तरह पत्तलोंपर बैठकर खानेका मौका न जाने कितने सालों बाद मिला है हमें। बेहड़ोंमें तो हम हाथपर रोटी रखकर ही पा लेते रहे हैं !

हमारा रूखा-सूखा भोजन उन्हें रुचा तो नहीं, पर उन्होंने उसे पा लिया। लुक्का मुझसे कह रहा था : 'मुझे तो घी चाहिए खूब, और कुछ रहे, चाहे न रहे !' पर यहाँ हमें घी कहाँ मयस्सर ?

बहनोंने पूछ दिया बागियोंसे : 'बेहड़की आजादी छोड़कर आपने यह आत्मसमर्पण और फिर जेलकी जिन्दगी क्यों कबूल कर ली ?'

"राजाराम राम राम !" की धुनमें सारा वातावरण रा
उठा ।

तभी जनरल यदुनाथ सिंह ग्यारहों बागी भाइयोंको कतार
बाबाके चरणोंकी ओर बढ़े और उन्होंने इशारा किया लुक्काको ।

लुक्का आगे बढ़ा । अपनी बन्दूक उतारकर उसने बाबाके
नीचे रख दी और उनके चरण छूकर कहा : बाबा, हमसे बहुत
हुई ! आइन्दा ऐसा गलत काम न करेंगे !

तेज सिंह, भगवान् सिंह, कन्हई, विद्याराम, भूपसिंह, दुर्जन,
मटरे, जंगजीत, रामसनेही—सब एकके बाद एक आते गये,
कारतूस उतारकर रखते गये और बाबाका चरण-स्पर्श कर क
कि हम आइन्दा कोई गलत काम न करेंगे !

शस्त्र-समर्पणकी इस प्रक्रियाको सारी जनता, सारे अधिकार
पुलिस मंत्रमुग्ध-सी होकर देख रही थी। सभामें I indrop S
थी, ऐसी शान्ति कि सूई भी गिरे तो खटके !

केवल केमरोंकी 'क्लिक' की ही आवाज इस निस्तब्धताको भं
थी ! फिल्मोंकी रील इस अभूतपूर्व दृश्यको कैद करती जा
दर्शकोंकी आँखें तो एक ही बात कह रही थीं :

ख्वाब था जो कुछ कि देखा
जो सुना अफसाना था ।

× × ×

बाबा मंचसे उठकर निवासकी ओर बढ़े, तभी जनरल साहबकी
बागियोंने मंचपर खड़े होकर दर्शनार्थी भीड़को हाथ जोड़े और अप
नाम बताकर उसकी उत्सुकता शान्त की। कुछ पत्रकारोंने उ
भी मिलाये।

पुलिस सभी बन्दूकों और कारतूसोंको बगलके तम्बूमें ले जा
करने लगी कि कितने और कौन-कौनसे शस्त्रोंका समर्पण हुआ है

मानसिंह-रूपा गिरोहके बागी : समर्पणके बाद

विनोबा श्री यदुनाथ सिंहसे बात करते हुए

कुछ देर उस तम्बूके भीतर खड़े होकर मैं भी यह तमाशा देखता रहा।

दूरबीनवाली बन्दूक सबके लिए खिलौना थी, बड़ी उत्सुकतासे सभी देख रहे थे उसकी ओर। शायद १७ हजारके करीब है दाम उसका।

× × ×

डाकू तो जीवनमें बहुत देखे हैं, बन्दूकें भी देखी हैं, पर बन्दूकधारी डाकू—बीस-बीस हजार रुपयेके इश्तहारी डाकू—इस तरह बन्दूकोंका त्याग करके अपना गलत जीवन छोड़नेकी प्रतिज्ञा करें, ऐसा तो आज ही देखा! पलभरके लिए भी जिन बन्दूकोंको ये लोग अपने कन्धेसे नहीं उतारते थे, उन्हें वे सदाके लिए खोलकर बाबाके चरणोंपर मुसकराते हुए अर्पण कर रहे थे, ऐसा अहिंसाका जादू तो आज ही देखा! यों तो उस दिन नगरामें पातीरामके बन्दूक समर्पण करनेपर भी एक अद्भुत भावनासे अभिभूत हो उठा था, पर इस दृश्यका तो असर ही दूसरा था—

गिरा अनयन, नयन बिनु बानी।

लगा कि सचमुच सही है इनका यह कहना :

'आज तें हमाई नयी जिन्दगी है रही है !' ० ० ०

कसूर बन्दूकका, सजा आदमीको !

सुरपुरा
२० मई '६०

कदोरासे सुरपुराके रास्तेके बीच पड़ा परतापपुरा, बागी विन्नारामका गाँव। वहाँ चल रहा है भारत-सेवक-समाजका शिविर।

संचालकोंके अनुरोधपर बाबा वहाँ थोड़ी देर रुक गये और शिविरार्थियोंसे बोले कि भारत-सेवक-समाजको हम अपना ही समाज मानते हैं। हमारी ही भाँति वह भी इन्सानकी सेवा इन्सानके नाते करता है। पर उसे इतना ध्यान रखना चाहिए कि पहले कौन सेवा की जाय। सड़क बनाकर हम शहरवालोंको, व्यापारियोंको, साहूकारोंको, डाक्टरोंको सहूलियत देते हैं कि प्यारे भाइयो, हमें लूटो रे ! इसलिए पहले गाँवकी ताकत बनाओ। ऐसा प्रयत्न करो, जिससे गाँवकी दौलत बढ़े, भूमिहीनोंको जमीन मिले और आपसमें प्यार बढ़े। फिर भले ही रास्ता बनाओ।

बाबाने कहा : लोग कहते हैं यहाँ डाकू समस्या है। उसके तीन कारण हैं : गरीबी, आपसी झगड़े और पुलिस। चौथा कारण है, राजनीतिक पार्टियाँ और चुनाव। इन कारणोंको मिटा देनेसे सारे मसले हल हो जायँगे।

आपलोग गाँव-गाँव यह खबर फैला दें कि बाबाके पास कुछ भाइयोंने शस्त्र-समर्पण करके अपने पापोंका प्रायश्चित्त किया है। और लोग भी आकर इस गंगामें हाथ धो लें। इसीलिए लोगोंके कहनेसे बाबाने इस इलाकेमें अपना प्रोग्राम एक हफ्तेके लिए और बढ़ा दिया है।

× × ×

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने एक गेरुआ वस्त्रधारीको सामने देखकर इस बातपर जोर दिया कि साधुओंको तमोगुणी जीवन त्यागकर समाज और

देशकी बुराइयाँ मिटानेमें मदद करनी चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे कश्मीरसे कन्याकुमारी तक सच्चा मानव-धर्म फैलायें।

दोष लाठी या बन्दूकका है, पर सजा मिलती है आदमीको, यह बताते हुए बाबाने कहा :

यह सैनिकों का क्षेत्र है। इसलिए जब किसीको चिढ़ आती है, तो गोली चल जाती है और आपसमें लड़नेवाले मर जाते हैं या घायल होते हैं। फिर कहा जाता है कि अमुक आदमीने कत्ल किया। मगर सच तो यह है कि बन्दूकने कत्ल किया। मेरे जैसे शख्सको गुस्सा आये तो वह क्या करेगा ? हाथमें लाठीतक नहीं है। ज्यादा हुआ तो जोरसे बोल देगा। मगर जिसके हाथमें लाठी है वह गुस्सेमें दूसरेका सिर तोड़ देगा और बन्दूक है तो दूसरेकी जान ले डालेगा। गुस्सा तीनोंको है, मगर एकके गुस्सेसे किसीको नुकसान नहीं पहुँचा, दूसरेसे सामनेवाला व्यक्ति घायल हुआ और तीसरेने प्राण ही ले लिया। इसलिए दोष असलमें लाठी और बन्दूकका है, मगर सजा आदमीको मिलती है।

यहाँपर बागियोंकी ऐसी जमात है, जिनके हाथमें तो राइफल है, पर गलेमें माला है। आप कहेंगे कि ऐसा कैसा भगवान् ? पर भगवान् तो पानी जैसा है, वह सबकी प्यास बुझाता है—चाहे गाय पानी पीये, चाहे शेर। इन बागियोंके गलेमें भगवान् माला बनकर रहता है। ऐसा न होता, तो वे यहाँ आते कैसे ? यहाँके लोगोंमें श्रद्धा बहुत है। बागी लोग भी सच्चे हृदयसे पश्चात्ताप करके महात्मा बन सकते हैं। भारत-सेवक-समाज, साधु-समाज और पेंशनयाफ्ता फौजी लोग यदि मिलकर कोशिश करें, तो यहाँ की समस्या हल होते देर न लगे।

× × ×

आज रामदयाल, वदनसिंह और करणसिंह—इन तीन बागियोंने बाबाके चरणोंमें आत्मसमर्पण किया।

दर्शनार्थियोंकी भीड़ टूटी पड़ रही है। बाबासे भी ज्यादा बागियोंको

मैं दौड़ा उसे बचाने। चारों ओर काँटोंसे बुरी तरह घिर गया था बेचारा। लोहूलुहान भी हो रहा था। अकेले निकालना मुश्किल था। तभी एक और भाई आ गये। हम दोनोंने किसी तरह उसे निकाल पाया। हाथ और पैरमें कई जगह लोहूलुहान हो गया था वह!

इधर मैं उस लड़केको निकाल रहा था, उधर वह जुँआ पूरी तेजीसे घूम रहा था। वह बार-बार आकर टकराने लगा मेरे दाहिने पैरमें। हर बार आता, तो घाव कर जाता। मेरा पैर भी लोहूलुहान हो गया। धोकर देखा, तो काफी गहरा गड्ढा-सा हो गया था नसपर।

रहँटवालेने यह सब देखा, तो लौट पड़ा और लड़कोंको डाँटता-फटकारता हुआ 'अटक' ठीक करके चला गया। लड़के भगे जान बचाकर।

× × ×

घायल पैर लेकर लौटा तम्बूमें। साथियोंको चिन्ता हुई मरहम-पट्टी-की, मगर वहाँ क्या रखा था ! 'अभावे शालिचूर्णम्' थोड़ा-सा सिन्दूर मँगाकर उसपर लगाया और पट्टी बाँध दी, पर रक्तका बहना बहुत देर-तक जारी रहा।

थोड़ी देरमें लोग एक डॉक्टरको लिवा लाये। देखकर बोला : आपने ठीक किया सिन्दूर लगा दिया। मैं आपकी क्या मदद करूँ ! First Aid (प्रारम्भिक चिकित्सा) का मेरा बक्स भी यहाँसे १० मीलपर पड़ा है !

× × ×

बागियोंको देखनेके लिए जनताका जो हुजूम है, उसके मारे बागियों-की तो है ही, हम लोगोंकी भी नाकमें दम है। वह जो सामने 'महाशयजी' हैं दाढ़ीवाले, उन्हें देखकर किसीने कह दिया : 'वह देखो, एक बागी वह बैठा है।' फिर क्या था ! चारों ओरसे तम्बूके दरवाजे घिर गये। साँसतक लेनेमें कठिनाई होने लगी।

लुक्का और उसके साथी दूसरे तम्बूमें थे। बहुत बुरी तरह लोग घेरे थे उन्हें। तीसरे पहर वह आकर बोला : 'इससे तो हम जेल भेज दिये जाते, तो अच्छा था ! पलभर भी सोनेको नहीं मिल पाता।'

उसे बगलमें एक तरफ लेटा दिया और भीड़को भगा दिया, तब कहीं उसे आँख मूँदनेका मौका मिल पाया।

कह दिया उसने : मेरी जरूरत पड़े, तभी जगाना; वर्ना नहीं।

× × ×

आज दिनमें बाबाका बागियोंके साथ फोटो खींचा गया। सायं-कालीन प्रवचनमें उन्होंने कहा : अब ये लोग हमारी जमातमें, साधु-समाजमें आ गये। हम और ये एक हो गये। हमारा समाज एक हो गया। हमें भी आनन्द हुआ, इन्हें भी।

यात्राके पहले महादेवी ताईने जनतासे अपील की थी कि वह सर्वोदय-

लोग हजारोंकी तादादमें यहाँ आ रहे हैं। क्यों? अपने छिपे भाइयोंको देखने। इनके कोई दो नाकें या रावणकी तरह १० सिर हैं? हमारी ही तरह ये भी मामूली इन्सान हैं। इन्सान जब अपने-आपको भूल जाता है, तो ऐसे बदतर काम कर सकता है कि जानवरसे भी नीचे जा सकता है। ऊँचा चढ़े, तो इतना ऊँचा चढ़ सकता है, जितना देवता भी नहीं चढ़ सकता। नर-देह ऐसी देह है, जिससे मनुष्य परमेश्वरको पा सकता है। ये बागी भाई क्यों न साधु बनें? जोरदार इंजन है, पटरी बदलनेभरकी देर है!

ooo

बाबा, कहूँ कहे बात !

उद्योतपुरा
२१ मई '६०

आज रास्तेमें पड़ा पराका माध्यमिक विद्यालय। दो-चार मिनटके लिए बाबाको रोक लिया लोगोंने।

बाबा मौजमें थे। बोले : यहाँ लिखा है—'विद्यालय परा', अच्छा होता ये लिखते—'परा विद्यालय'। 'परा' कहते हैं ब्रह्मविद्याको। नाम बदलकर शुरू कर दो ब्रह्मविद्या यहाँपर। बड़ा आनन्द आयेगा। सबके मुँहमें राम हो। सबका एक परिवार हो। सब मिलकर सहयोगसे काम करें। मंगल वाणी ही निकले मुखसे!

नित्यानन्दजीको सामने बैठा देख बाबाने पूछ दिया : क्यों संन्यासी महाराज, ठीक है न?

'हाँ बाबा!'

बाबा बोले : इसने 'हाँ' भर दी। नया-नया सन्यासी है यह। यहींका है, इसी जिलेका है। हमसे कहता है : 'बाबा, यहाँ लोग हमें पहचानते हैं। घर-परिवारकी बात पूछने लगते हैं। इसलिए दूसरे जिलेमें जाकर आपका काम करूँ, तो ठीक रहेगा।' 'घरका जोगी जोगना' मानते हैं लोग! यह बद्री-केदार गया था। वहाँ बीमार पड़ा। मरने-मरनेकी हालत हो गयी। पत्नीसे कहा : 'अब तो मर रहा हूँ। संन्यास लेनेकी इजाजत दे दे।' दे दी उसने इजाजत। फिर यह जी लिया। भगवान्‌की मर्जी है। सन्यासी हो गया, अब वापस तो लौट नहीं सकता। चावलका धान तो बन नहीं सकता। हमने इससे अपना काम करनेको कहा है। इस डाकू-क्षेत्रको साधु-क्षेत्र बनाना है और वह भगवान्‌की कृपासे बन ही रहा है। लोग भगवान्‌का नाम लेकर हमारे पास आ रहे हैं, भगवान् उनके दिलको

× × ×

उदोतपुरा है सड़कके उस पार, हमारे तम्बू लगे हैं इस पार। नीमोंके [illegible] बगीचेमें तम्बुओंकी कतार लगी है।

बाबा हाथ-पैर धो रहे थे, तबतक बिल्लोरेजीने आरम्भ किया :

मन रे परस हरिके चरन।…
करी गोपालकी सब होइ !…

भावुक हृदय! सुरीला कण्ठ! गाते हैं, तो अपनेको ही नहीं, श्रोताओंको भी भावनामें डुबो देते हैं बिल्लोरेजी।

बागियोंको देखनेके लिए उमड़ी भीड़को सम्बोधित करते हुए ताईने कहा : हमारे पास आये हुए डाकुओंका दर्शन करके आप क्या करेंगे ! उनसे आपको हमदर्दी होनी चाहिए। उनसे सबक लेना चाहिए। वे क्यों बागी बने ! उन कारणोंको दूर करना चाहिए। इसके लिए सबको सन्तके मार्ग-दर्शनमें चलना होगा।

उदोतपुरामें मानसिंहकी ससुराल है। उसकी चर्चा करते हुए बाबा बोले :

कश्मीरमें जब हम थे, तब यहाँके लोगोंका बुलावा आया। यहाँके नेता और डाकू कहलानेवाले भाई दोनोंकी ही ओरसे। हमने सोचा : देखें, परमेश्वरकी इच्छा होगी, तो कुछ काम होगा। भगवान्का नाम लेकर हमने इस क्षेत्रमें प्रवेश किया है।

हमसे कहा गया कि इस गाँवमें भाई मानसिंहके घरवाले हैं। मानसिंह तो मर गये, हम भी कभी जानेवाले हैं। पर जो यहाँ प्यार हासिल करके गया, वही इंसानकी जिन्दगी जिया। एक दिन तो सबको ही मरना है, पर जिसके उपकारको दुनिया याद करे, वही इंसानकी जिन्दगी जिया। नाते-रिश्तेका कोई महत्त्व नहीं।

यहाँ भाई-भाई आपसमें लड़ते हैं। गाँव-गाँवमें दो टोलियाँ बन जाती हैं। एक डाकुओंकी ओर मिल जाती है, दूसरी पुलिसकी ओर। किसीको शान्ति नहीं मिलती। कहते हैं, यह तो क्षत्रिय-धर्म है। मगर जानते भी हो कि क्या है क्षत्रियका धर्म ? बन्दूक रखनेसे ही क्या कोई क्षत्रिय हो जाता है ? तोप देखी, तो भाग गये। यानी बलवान् शत्रुके सामने भागना और कमजोर शत्रुवालेपर हमला करना—यह कोई बहादुरी है ? बहादुर वह है, जो आत्माके बलसे लड़ता है, जो बेधड़क होकर छातीपर वार झेलता है। वाल्मीकिने नारदपर हमला किया। नारद न डरे, न भागे। ऐसा आदमी वाल्मीकिने नहीं देखा था। इसलिए वह नारदके चरणोंपर गिर पड़ा और डाकूसे साधु बन गया। बहादुर वह है, जो निडर हो। लोग कहते हैं, डाकू बहादुर हैं। पुलिसवाले बहादुर हैं। मैं कहता हूँ, उनके नाखून (शस्त्रास्त्र) हटा दो, फिर देखो उनकी बहादुरी ! हथियारसे दबाकर पैसा वसूल करनेमें बहादुरी नहीं है।

आज एक भाई हमारे पास आकर रो रहा था। उसे बागियोंने धमकी दी है कि दो हजार रुपये दो, नहीं तो मार डालेंगे। वह कहता है कि 'पैसे तो हैं नहीं, कहाँसे दूँ ?' मैंने कहा : 'पैसा पासमें हो, तब भी डरकर पैसा देना ठीक नहीं। एक दिन मरना तो है ही।'

एक बागी बम्बईसे आया है। मैंने उससे पूछा : 'वहाँ तुम्हारा गर्व

कैसे चलता था ?" इस प्रश्नपर उसने मुझे मूरख समझा होगा। बोला : "आखिर डाका किसलिए डालते थे ? एक दिन कमाकर लाते थे और तीन महीने बैठकर खाते थे।" धिक्कार है ऐसी जिन्दगीको !

बहादुर वह है, जो सबको प्यार करता है। हमें कोई डराकर देखे। रातमें या दिनमें कभी भी, कहीं भी हमें अकेले बुलाकर पिस्तौल दिखाओ और फिर देखो कि बाबा डरता है या नहीं। डरानेवाला मेरा ही तो रूप है। फिर कौन किसे डरायेगा ? बचपनमें हम अपनी छायासे डरा करते थे। हम छोटे थे और छाया बहुत लम्बी। हम मुँह हिलाते, तो वह भी मुँह हिलाती थी। हम उँगली हिलाते, तो वह भी उँगली हिलाती थी और हम डरते थे। माँने समझाया कि "तू उससे डरता क्यों है ! वह तो तेरी हुक्मबरदार है। तू बैठेगा, तो वह भी बैठ जायगी। तू खड़ा होगा, तो वह भी खड़ी हो जायगी।" दुनियामें जो है, वह हमारी ही तो छाया है। हमारे दिलमें अगर द्वेष है, तो बाहर दुश्मन हैं और दिलमें प्यार भरा है, तो बाहर सब दोस्त ही दोस्त हैं।

आज कुछ बहनें हमारे पास आयीं। उनमेंसे दो-एक बहनोंके पति और लड़कोंको डाकुओंने मार डाला था। और दूसरी बहनोंके भाई और लड़कोंको पुलिसने। अब सजा किसको हुई ? बच्चोंको और पत्नीको। बाल-बच्चे पैदा भी करना और उन्हें सब तरहसे तकलीफ हो, ऐसा आचरण भी करना, यह भी कोई इन्सानकी जिन्दगी है ?

भगवान्की प्रेरणासे मैं प्रेम और निर्भयताका सन्देश सुनाता घूमता हूँ। एक जगह रातभर रहता हूँ और सवेरे चल देता हूँ :

रैन बसेरा करके डेरा।
उठ चलना परभात रे॥

× × ×

...पुरामें आज तड़के एक बागी भाईने शौचके लिए लोटा माँगा।

मैंने दे दिया। एक भाई और था। अच्युतभाईने अपना लोटा उसे दे दिया। उसके बाद ही पदयात्रा शुरू हो गयी। अच्युतभाईने उन लोगों-से कह दिया : अगले पड़ावपर लोटे दे देना। पर शामतक कोई पता न चला। तब रामऔतारसे कहा : जरा पता लगाना भाई !

उसने खोजा, तो एकका तो पता चला, दूसरेका पता नहीं। एक दागीने कहा : लोटा मैंने लिया तो था, पर वहीं दे दिया। एक आदमीने कहा : मेरा है ! मैं पैसा दे दूँ उसका ?

अब हम पैसे क्या लेते उससे !

× × ×

साथियोंने भूताजीसे कहा कि मेरे पैरमें चोट है, मरहम-पट्टी करा दे, तो अच्छा। वे जीपमें बैठाकर ले गये भिण्ड और अपने चिरजीवको भेज दिया मेरे साथ अस्पताल। उन्होंने पट्टी बँधवा दी, एक इंजेक्शन भी लगवा दिया।

लौटकर जीपसे उतर ही रहा था कि देखा कि खुली धूपमें हरा टोपा लगाये बाबा जा रहे हैं गाँवकी ओर। दौड़कर साथ हो लिया। दो-चार अन्तेवासी थे साथमें। और लोग पीछे ही रोक दिये गये।

हम लोग पहुँचे मानसिंहकी ससुरालमें। उनकी ६० वर्षीया जर्जर पत्नी रुक्मिणीदेवी और उनकी बेटी आदिने बाहर बैठकमें आकर बाबाको प्रणाम किया। फिर बाबा चल दिये भीतर।

ओह, क्या करुण दृश्य था वह !

आँसू ! क्रन्दन !! सिसकी !!!

चारों ओर दीनता, दरिद्रता और दुर्भाग्यका भीषण हाहाकार !

बड़ी-बूढ़ी स्त्रियाँ, बच्चियाँ—सबकी सब रो रही थीं। करुणाका सागर मानो हिलोरें ले रहा था। मानसिंहकी पत्नीने रोते-रोते बताया कि हम बरसोंसे पड़ी हैं मायकेमें। ये लोग भी साधारण स्थितिके हैं। हमारे लम्बे परिवारका बोझ कैसे सँभालें, और कबतक सँभालें ? हमसे बार-बार कहते हैं जानेको ! पर हम जायँ भी तो कहाँ ? हमारी सारी

दूसरी जीपसे आकर बरस पड़े हमारे ऊपर : क्या कर रहे हैं आप लोग इन लोगोंको यहाँ बैठाकर ? आपको मालूम है कि हम लोगोंपर कितनी जिम्मेदारी है ? कहीं कोई वारदात हो जाय तो ?

शर्माजी बोले : वारदात होगी, तो पहली गोली मेरी छातीपर लगेगी, उसके बाद और किसीको लगेगी !

'हाँ-हाँ, देखा है। अहिंसाके सबसे बड़े हिमायती गांधीको भी गोली खानी पड़ी थी !'

'जाने दीजिये शर्माजी, चलिये हम लोग चलें !' कहकर मैं उठ पड़ा।

'आप चलिये। एक भाई बगलके गाँवमें पानी पीने गया है। उसे लेकर मैं दूसरी गाड़ीसे अभी आता हूँ !' ○ ○ ○

रखियाँ बँधा लो भइया !

भिण्ड

२२ मई '६०

तीन मीलका रास्ता—उदोतपुरासे भिण्ड !

आज पड़ावसे ही अच्छी भीड़ हम लोगोंके साथ लग गयी और ज्यों ज्यों भिण्डकी ओर हम बढ़ने लगे, त्यों-त्यों जन-समुद्र उमड़ने लगा। शहरके पास पहुँचते-पहुँचते तो स्वागतार्थियोंकी भीड़का वह रेला आया कि लाख कोशिशोंके बावजूद हम लोग बाबासे बहुत दूर पड़ गये !

× × ×

५॥ बजे हम लोग पड़ावपर पहुँच गये। प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने कहा कि आजादीको १२ साल हो गये, फिर भी हमें समाधान नहीं हो रहा है। आज विज्ञानके युगमें आजादीका कोई खास मतलब नहीं रह गया। सारा संसार एक दूसरेके बहुत नजदीक आ गया है। आज जरूरत है दिलको बड़ा बनानेकी। लोग कहते हैं कि भिण्ड-मुरेनामें डाकुओंका मसला है। मैं कहता हूँ कि यह डाकुओंका नहीं, सज्जनोंका क्षेत्र है, साधुओंका क्षेत्र है। डाकुओंकी समस्या मनुष्यकी पैदा की हुई है। मनुष्य ही इसे प्रेम और हमदर्दीसे सुलझा सकता है।

× × ×

८ बजे भिण्ड जिलेकी ग्रामरक्षा-समितियोंका सम्मेलन हुआ। उसमें बोलते हुए बाबाने कहा कि शस्त्रोंसे शस्त्रोंकी समस्या हल नहीं हो सकती। हम लोग द्वन्द्व-युद्धसे चलकर लाठी, तलवार, बन्दूकसे होते हुए अब बमतक पहुँच गये हैं, फिर भी समस्या हल नहीं हो सकी। इतिहास बताता है कि शस्त्रसे जो हारे, उन्होंने और जोरदार शस्त्र बनाकर विजेताको हराया। पुलिसकी बन्दूकने कुछ डाकू खतम कर दिये हैं,

कुछ पैदा भी कर दिये हैं। ग्राम-रक्षादलसे भी यह मसला हल नहीं होगा। ग्रामरक्षक ही कहीं भक्षक बन जायँ तो? इसकी एक ही दवा है कि गाँवको एक बनाओ और ग्राम-रक्षादलके बजाय शान्ति-सेना बनाओ। हमारे जनरल यदुनाथसिंह भी तो पहले सैनिक थे। उन्हें बहादुरीके लिए महावीर चक्र भी मिल चुका है। अब वे हमारे शान्ति-सैनिक बन गये हैं। बिना शस्त्र लिये वे डाकुओंसे मिलने जाते हैं और प्रेमकी बात समझाते हैं। ग्राम-रक्षादलवालोंको भी उन्हींकी तरह शान्ति-सैनिक बनकर गाँव-गाँवमें शान्तिकी स्थापना करनी चाहिए। जहाँ शस्त्र रहता है, वहाँ शान्ति नहीं रहती। यह प्रेमकी ही शक्ति है कि बागियोंने अपने शस्त्रोंका समर्पण कर दिया है। आप सबको प्रेमकी ताकत बढ़ानी चाहिए।

× × ×

भिण्ड इस इलाकेका अन्तिम रेलवे स्टेशन है। दूर-दूरके लोग सुभीतेसे यहाँ पहुँच सकते हैं। यही सोचकर यहाँ कार्यकर्ताओंकी बैठक बुलायी गयी है। उत्तर प्रदेशके अनेक साथी यहाँ आ पहुँचे हैं। सर्व-सेवा-संघके भी कई भाई पहुँच गये हैं। चम्बल घाटीकी समस्यापर मुख्य रूपसे विचार होना है।

दोपहरमें स्नानागारकी ओर बढ़ा तो देखा, 'क्यू' लगा है। अच्युतभाई बोले : स्टेशन पासमें ही है। क्यों न हम लोग वहीं चलकर नहा लें? यहाँ तो घण्टोंका झमेला है।

'अच्छी बात है। शर्माजीको भी बुला लीजिये।'

हम तीनों स्टेशनपर गये। वहाँका भी नल बन्द हो चुका था। कह-सुनकर किसी तरह खुलवाया। हम लोगोंको 'परदेशी' मानकर खोलनेवालेने कृपा की। कपड़े धोकर, नहाकर हम लोग भोजनालयमें पहुँचे और व्यापारी समाजका आतिथ्य ग्रहण कर बिस्तरपर लोट लगाने लगे।

× × ×

विनोवा मध्यप्रदेशके गवर्नर श्री पाटस्करसे वात करते हुए

एक बागी-परिवारमें शान्ति-सैनिकाएँ
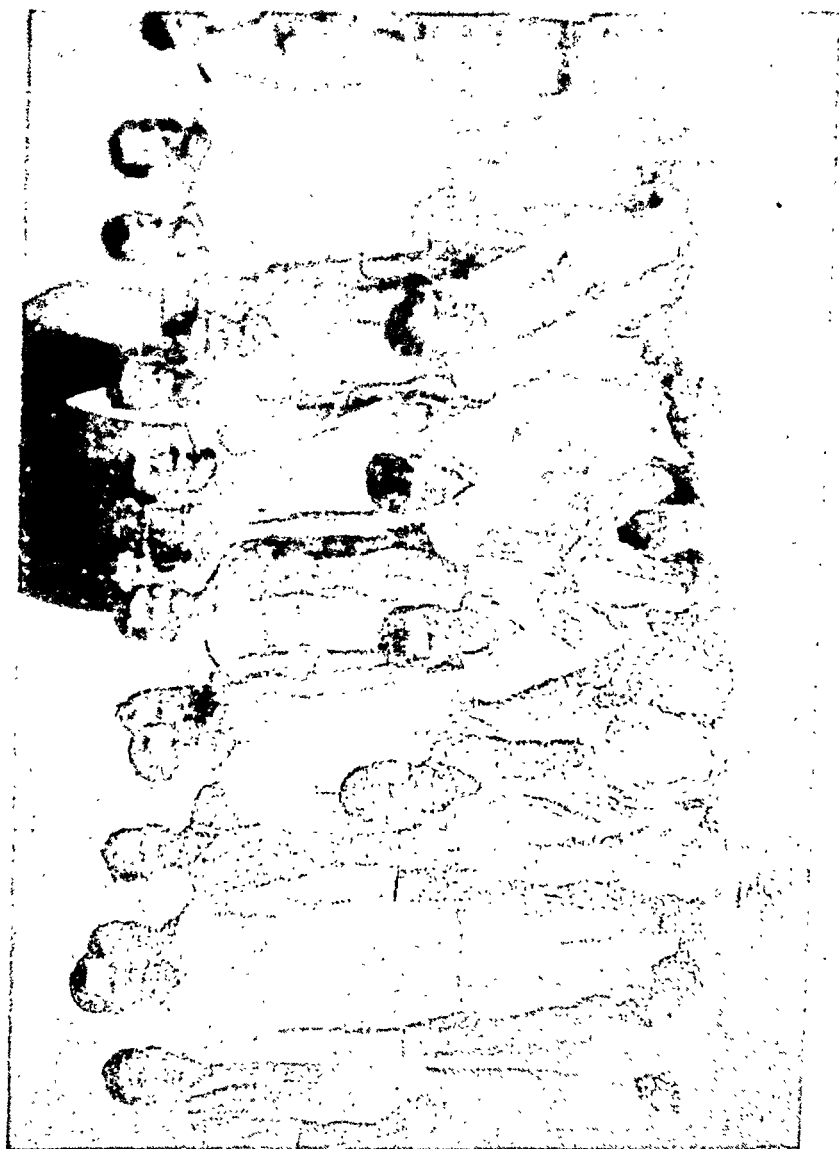
सायंकालीन प्रार्थना-सभामें मध्यप्रदेशके गवर्नर पाटस्कर साहब भी मंचपर थे। बाबाने बहुतोंपर थोड़ोंका राज और थोड़ोंका बहुतोंपर राज बुरा बताते हुए उनसे पूछा : क्यों पाटस्कर साहब, किसी मुलजिमको तीन जज कहते हैं फाँसी दी जाय और दो कहते हैं फाँसी न दी जाय, तो तीनकी बात मानकर उसे फाँसी दे दी जाती है न ?

पाटस्कर साहब बोले : हाँ, ऐसा हो सकता है।

बाबाने कहा : पाटस्कर साहब कहते हैं कि ऐसा हो सकता है। कानूनदाँ हैं ये। तो, इस तरह थोड़ोंपर बड़ोंकी मर्जी लादनेका जो तरीका है, वह बेवकूफीसे भरा है, फिर भी आज वही चलता है!

लोकशाहीके दोष बताते हुए बाबाने कहा कि विपत्ति आनेपर सारी सत्ता राष्ट्रपतिको सौंप देते हैं, इसका मतलब क्या है ? यही न कि सामान्य कालमें हम लायक हैं, विपत्ति-कालमें हम नालायक हैं। तब 'हुकूमशाही' चलती है। पाकिस्तानमें क्या हुआ ? इसलिए सर्वोदय कहता है : पंच बोले परमेश्वर।

डाकू समस्यापर बोलते हुए बाबाने कहा : कौन डाकू है, कौन नहीं, यह तो राम जाने। हमें क्या पता कि दिल्लीमें डाकू ज्यादा हैं कि भिण्ड-मुरेनामें ? हम तो मानते हैं कि 'सुमति कुमति सबके उर रहहीं।' किसीको कायमके लिए बुरा मानना गलत है। हम 'डाकू' कहलानेवाले भाइयोंको भाईके नाते प्यारसे अपनाने आये हैं। पाटस्कर साहबकी सरकारने, काटजू साहबने, डी० आई० जी० साहबने हमारे पास आये हुए बागी भाइयोंको हमारे साथ चार दिन खुले तौरपर घूमने दिया और उन्हें सत्संगका मौका दिया, इसके लिए हम मध्य प्रदेशकी सरकारका अभिनन्दन करते हैं। शस्त्रोंसे कभी डाकूविहीन मही हो नहीं सकती। कल रेडियोवालोंसे भी मैंने यही कहा था कि अन्तरकी निष्ठासे, सत्य, प्रेम और करुणासे इस कलयुगमें भी अच्छा असर पड़ता है। पहले भी इसपर मेरा विश्वास था, पर अब तो वह पक्का हो गया।

×   ×   ×

और, यह रक्षाबन्धनका प्रसंग ?

बहनों और भाइयोंके विछोहका करुण प्रसंग !

आँखोंके आगे नाच रहा है झवेरचन्द मेघाणीकी अमर कृति 'माण-साईना दीवा'में दिया गया बाबरदेवाकी गिरफ्तारीका प्रसंग :

'में बेन कहेली मणि शुं खूटी ?'

(मैंने जिस मणिको 'बहन' कहा, क्या उसने मुझे दगा दी !)

कितनी मार्मिक है गुजरातके कुख्यात डाकू बाबरदेवाके इस वाक्यमें छिपी तीव्र वेदना !

भला बहन भी कभी दगा दे सकती है ! फिर वह 'धर्मकी बहन' ही क्यों न हो !

सन् १९१८ से लेकर १९२४ तक बाबरदेवाने खेड़ा और भड़ोच जिलोंमें जो आतंक मचा रखा था, उससे जनता ही नहीं, पुलिसके बड़े-बड़े अधिकारी भी थर्रा उठे थे। उसे पकड़नेका एक षडयन्त्र रचा गया उसकी एक 'धर्मकी बहन'—मणिके घर।

बत्तीस सालकी कैदकी सजा पानेवाले अपने एक साथीकी बेटीके विवाहके लिए दो हजार रुपये दिलानेको बाबरदेवा जब मणिके घर पहुँचा, तो वहाँ अंधकारमें मणिके कपड़े पहने मिली उसे पुलिस, जिसने भीतर घुसते ही बाबरको पटककर उसके शरीरपर अपना कब्जा कर लिया ! बेचारी मणिको तो पुलिसने उसके पतिके साथ पहले ही एक कमरेमें बन्द कर दिया था !

साफ है कि डाकू भी जिसे बहन मान लेते हैं, जिसे अपना साथी या दोस्त मान लेते हैं, उसके लिए भारीसे भारी खतरा उठाकर भी वे अपना पुण्य-कर्तव्य पूरा करते हैं। साथी तो साथी, दोस्त तो दोस्त, बहन तो बहन !

× × ×

डाकुओंको बाबा 'दोस्त' कहते हैं। चार-पाँच दिन हमारे साथ रहकर आज विनोबाके ये १८-२० नये 'दोस्त' जेल जा रहे हैं। हमारे

यात्री-दलकी बहनोंने प्रार्थना की कि 'इन भाइयोंकी विदाईके मौकेपर हम इन्हें राखी बाँधना चाहती हैं।' बाबाने मंजूरी दे दी।

सायंकालीन सभाके कुछ पहले रोली, अक्षत और भिण्डके प्रसिद्ध केसरिया पेड़ों तथा खादीकी रंगीन राखियोंसे भरा थाल लेकर जब सुमति-बहन मंचके पास आयी, तभी रक्षाबन्धनका यह आयोजन मुझे बड़ा ही अद्भुत और हृदयस्पर्शी लगा। पर थोड़ी ही देरमें वह उस थालको लौटा ले गयी। पता चला कि विदाईका समारोह सार्वजनिक सभामें नहीं होगा, वह होगा रात्रिकालीन प्रार्थनाके समय।

×　　　　×　　　　×

तीन घण्टे बाद !

रातके पौने आठ बज रहे हैं। छात्रावासकी विशाल छतपर नक्षत्रोंकी छायामें हम सब बैठे हैं। अन्तेवासी तो हैं ही, कुछ अतिथि भी हैं, थोड़ेसे दर्शक भी !

बाबाकी चौकीके बगलमें एक ओर लम्बी जाजम बिछी है। उसपर एक किनारे बहनें बैठी हैं, बगलमें बागी भाई। हम सब दूसरी ओर। एक ओर लालटेन रखी है बहुत मन्द करके, बाबाकी ओर आड़ लगाकर, ताकि बाबाकी आँखें चकमकायें नहीं !

प्रार्थनाके पूर्व बागी भाइयोंकी ओरसे माँग हुई : बाबा, हम कीर्तन करना चाहते हैं।

बाबाने कहा : ठीक है, पहले कीर्तन कर लो। बादमें प्रार्थना होगी।

गलेमें कण्ठी पहने दाढ़ीवाले बागी-विद्याराम-ने खड़े होकर कीर्तन आरम्भ किया।

रघुपति राघव राजाराम।
पतित पावन सीताराम॥

हम सब ताली बजा-बजाकर दुहराने लगे : रघुपति राघव राजाराम। ··
विद्यारामने कीर्तनमें पूरी राम-कथा गा डाली :

दसरथके घर जाये राम।
जनक सुतासे ब्याहे राम।
अवधपुरी है उनका धाम ॥ पतित०

पितु आज्ञा मानी इक छनमें।
चौदह बरस बसे प्रभु बनमें।
चित्रकूटपर किया मुकाम ॥ पतित०

राम प्रबरषन गिरिपर छाये।
बालि अनुज सुग्रीव मिलाये।
पवन तनय किया सेवा-काम ॥ पतित०

भगत विभीषन शरनमें आये।
लंकपुरीके राजा बनाये।
रावनको भेजा निज धाम ॥ पतित०

रामनामसे मुख मति मोड़ो।
प्रीति सदा तुम प्रभुसे जोड़ो।
'विद्याराम' भज पूरन काम ॥ पतित०

× × ×

कीर्तनके उपरान्त प्रतिदिनकी भाँति स्थितप्रज्ञके श्लोकोंका पाठ हुआ, पर आजका वातावरण मानो प्रत्येकको पुकार-पुकारकर कह रहा था : "देखो, तुम सबको, दुःखेषु अनुद्विग्नमनाः बनना है, सुखेषु विगतस्पृहः !"

'बाबाका आशीर्वाद लो, चलो : लुक्का !' मेजर जनरल यदुनाथ सिंहने अपनी जंडेली आवाजमें पुकारा।

लुक्का उठा, बाबाको प्रणाम किया : 'बाबा, आशीर्वाद दो।'

बाबा बोले : 'सद्भावना रखना। भगवान्में भक्ति रखना। ठीक है न ?'

"हाँ बाबा !"

कान्तावहनने उनके माथेपर टीका किया, हरविलासबहनने राखी बाँधी।

कैमरेने उस अन्धकारमें 'फ्लैश' मारा और उस क्षणको अपने प्लेटपर कैद कर लिया।

× × ×

तेजसिंह और भगवान् सिंह, भूपसिंह और कन्हई, सियाराम और हरेलाल, मरते और जंगजीत, रामसनेही और दुर्जन, पातीराम और श्रीकिशन, लच्छी और परभू, मोहरमन और बदनसिंह, रामदयाल और करनसिंह—सबके नाम एक-एक करके पुकारे गये।

सब बाबाको आ-आकर प्रणाम करते, बाबा सबसे कहते :

'सद्भावना रखना। भगवान्में भक्ति रखना। ठीक है न!'

सब कहते : 'हाँ।'

कान्ताबहन टीका करती, हरविलासबहन राखी बाँधती।

दुर्जनसिंह जब प्रणाम करने लगे, तो बाबाने उनसे कहा : 'देखो, आजसे तुम 'दुर्जनसिंह' नहीं रहे। अब तुम 'सज्जनसिंह' हो गये। ठीक है न!'

"हाँ बाबा।"

× × ×

रक्षाबन्धनके पुनीत पर्वपर बहनें टीका करती हैं, प्रसाद खिलाती हैं, राखी बाँधती हैं। भाई उन्हें प्रणाम करता है और कुछ-न-कुछ दक्षिणा देता है।

पर इन बागी भाइयोंके पास इन धर्मकी बहनोंको देनेके लिए था ही क्या! वे प्रणाम करके प्रसाद लेकर बैठ जाते।

तभी हमने देखा कि हरविलासबहनको प्रणाम करनेके साथ एक भाई जेबसे नोट निकालकर दे रहा है।

"नहीं भाई नहीं। हमें नहीं चाहिए ये रुपये।"

रही थीं। वागियोंकी आँखें तो गंगा-जमुना बन रही थीं। सबको लगता था, मानो हम अपने ही घरवालोंसे आज विदाई ले रहे हैं ! प्रेम और करुणाका सागर मानो हिलोरें ले रहा था।

पुलिसकी खुली गाड़ीमें सब बागी बैठ गये मुक्तहस्त। करणसिंहका वारण्ट नहीं था और रामऔतारपर मध्यप्रदेशकी सरकारका नहीं, उत्तर प्रदेशकी सरकारका वारण्ट है, इसलिए यहाँकी पुलिस उन्हें नहीं ले गयी। जनरल यदुनाथ सिंह इन लोगोंको जेलतक पहुँचाने गये। कान्ता और हरविलासबहन भी साथ चली गयीं।

मोटरें जबतक आँखोंसे ओझल न हो गयीं, हम लोग खड़े-खड़े यह करुण दृश्य देखते रहे।

×　　　×　　　×

सामने श्रीमती शकुन्तला ललितको देखकर मैंने पूछा : 'शोभना कहाँ है !'

आँखोंमें गुबार भरे वे बोलीं : 'वह भी तो गाड़ीपर बैठकर जेल चली गयी है। सलिल भी गया है।'

'छह सालकी उस छोटी बच्चीको आपने नाहक ही भेज दिया ! कहीं बारह बजेतक ये लोग लौटेंगे। तबतक सो न जायगी वह ? बमरौली कटाराके पड़ावपर उस दिन मेरी गोदमें वह आठके बाद ही सो गयी थी।'

'क्या करती मैं ! वह मानी ही नहीं ! मचल गयी जानेको।'

बहुत रात गये लोग लौटे। कान्ता तो यों ही भावुक लड़की ! हरविलास भी। बागियोंकी आत्मीयता दोनोंको बुरी तरह छू गयी। एक भाई उनसे कहने लगा : 'हमने जो पाप किये हैं, उनका फल तो हम भोगेंगे ही, पर तुम सबने हमपर जो इतना प्रेम बरसाया, उसे तो हम जिन्दगीभर भूल नहीं सकते। तुम भी बहन, हमें कभी-कभी याद कर लेना। हमें चिट्ठी डालती रहना। बाबाके हाल-चाल देती रहना। जेलसे

अगर छूटनेका कभी दिन आया, तो हम भी बाबाका ही काम करेंगे।......'

बम्बईके कॉलेजोंकी ये स्नातिकाएँ जब सोचतीं कि इन चार-पाँच दिनोंके भीतर इन बागी भाइयोंने उनके साथ जैसा सम्मानपूर्ण और आत्मीयतासे भरा व्यवहार किया, उसकी क्या कभी उन 'सभ्य' और 'प्रतिष्ठित' कहे जानेवाले तरुणोंसे भी अपेक्षा की जा सकती थी, जो उनके साथ पढ़ते थे और जिनसे उन्हें पग-पगपर सतर्क रहना पड़ता था ?

तब तो उन 'सफेदपोश डाकुओं' से ये 'बदनाम डाकू' ही लाख दर्जे भले, जिन्होंने बाबाके आगे हथियार डालकर खुले दिलसे कह दिया : 'बाबा, हमसे बड़ी गलती हुई। अब आइन्दा हम कभी ऐसा गलत काम नहीं करेंगे।'

× × ×

और शोभना ललित ? वह छोटी बच्ची !

अपने पिता डॉक्टर ललितसे आकर बोली : बाबूजी, जब ये लोग जेलके फाटकमें घुस रहे थे, तो सब मेरे पैर छू रहे थे ! कलेक्टर साहब चकराते थे कि ये इतने बड़े-बड़े आदमी मेरी जैसी छोटी बच्चीके पैर क्यों छू रहे हैं ? तेजसिंह जब भीतर जाने लगा, तो मैंने कहा : 'तुम घर जल्दी आना !' उसकी आँखोंमें आँसू भर आये। बोला : 'अच्छा बहन !'

⊙ ⊙ ⊙

सरकारी अधिकारी बाबाकी जमातके

भिण्ड
२३ मई '६०

'मेरा शरीर माँके दूधपर जितना पला है, उससे कहीं अधिक मेरा हृदय और बुद्धि, दोनों गीताके दूधसे पोषित हुए हैं'—ऐसा कहनेवाले बाबासे जब कोई गीताकी बात छेड़ देता है, तो वे गद्गद हो उठते हैं।

आज भिण्डके गीताप्रेमी भाई ब्राह्मवेलामें ही बाबाके चरणोंमें आ उपस्थित हुए। बाबाने उनसे कहा कि मेरे लिए गीता ग्रन्थपर बोलना मुश्किल है। उसने मुझे तटस्थता और अनासक्ति सिखायी है। उससे मुझे मातृवात्सल्य मिला है। उसके लिए 'भक्ति' शब्द कम पड़ता है, 'कृतज्ञता' कहूँ तो कह सकता हूँ। 'गीता-प्रवचन' का मैं प्रचार करता हूँ, पर संन्यासीको किसी भी ग्रन्थका बोझ नहीं होना चाहिए। फिर वह वेद ही क्यों न हो!

बाबाने बताया कि किसी भी धर्म-ग्रन्थके शब्दोंको व्यापक अर्थ देना चाहिए, संकुचित अर्थ देना ठीक नहीं। ग्रन्थ हमारे लिए हैं, हम ग्रन्थोंके लिए नहीं हैं। मनुष्यको व्यापक आत्मनिष्ठा रखनी चाहिए और अच्छी चीज हर जगहसे लेनेकी आदत डालनी चाहिए।

एक जिज्ञासुने प्रश्न किया चातुर्वर्ण्य शब्दपर और 'स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः' श्लोकपर।

इस श्लोककी व्याख्या करते हुए बाबाने बताया कि आपको जो भी धर्म प्राप्त है, उसे आप भगवान्‌को अर्पण कर दें, तब तो आपको मोक्ष मिलेगा, अन्यथा उस कर्मका फल मिलेगा। जैसे, कोई माली बगीचा लगाता है। उससे उसे खुशबू मिलती है, आरोग्य मिलता है, पैसा मिलता है, पर उससे उसे मोक्ष कैसे मिलेगा! मोक्ष तो तभी मिलेगा,

जब वह यह मानकर हर पौधेकी सेवा करेगा कि यह मैं भगवान्‌की पूजा ही कर रहा हूँ ! किसानका काम हो, वेद-पाठका काम हो, कोई भी काम हो—यदि वह भगवानको अर्पण किया जायगा, भगवत्पूजाकी दृष्टिसे किया जायगा, तभी उससे मोक्ष मिलेगा, अन्यथा नहीं ।

× × ×

गीतापर अपना प्रवचन समाप्त कर बाबा नीचे उतरे और तुरत जिला जेलके लिए चल पड़े । हम सब भी उनके पीछे चल दिये । जेलके फाटकके भीतर केवल पाँच आदमियोंके प्रवेशके लिए कहा गया था । शेष लोग बाहर ही रुक गये ।

जेलके भीतर बाबाने सभी कैदियोंके बीच प्रवचन किया । कल जेल भेजे गये बागी लोग भी उनमें शामिल थे ।

बाबाने अपने जेल-जीवनकी चर्चा करते हुए बागी कैदियोंसे कहा :

हमारी जिन्दगीके करीब पाँच साल जेलमें बीते । १९२३ में, १९३२ में, १९४० में और १९४२ में, चार दफा मिलकर पाँच साल हुए । हमें जेल-जीवनका पूरा अनुभव है । हिन्दुस्तानभरमें जानेवाली कई पुस्तकें जेलमें पैदा हुईं । 'गीता-प्रवचन', जो कि सारे भारतकी भाषाओंमें और सारे भारतमें जा रही है, कैदियोंके सामने किये गये भाषणोंका संग्रह है । और भी दो-तीन किताबें हमारी वहाँसे निकली हैं ।

हम जेलका कुल काम पूरा करते थे । हम साथियोंसे कहते थे कि हम अपनी इच्छासे जेलमें आये हैं और हमने कानून भंग किया है । इसकी सजा खुशीसे कबूल की है । इसलिए जेलके सब नियमोंका इच्छासे पालन करना है । हममेंसे कुछ लोगोंको सादी सजा मिली थी । हमने समझाया कि बगैर काम किये खाना हमारा धर्म नहीं है । हम समाजपर भाररूप क्यों बनें ? तो हमने जेलवालोंसे काम माँग लिया । पहले उन्हें हिचक हुई । उन्होंने कहा : 'बगैर हुक्मके हम ऐसा नहीं कर सकते ।' फिर हमने उनके पास लिखित माँग की । धुलिया-जेलमें मैं खुद चक्की चलाता था । हम सब राजनीतिक कैदियोंने जेलका पूरा आटा पीसनेका

जिम्मा उठा लिया। जेलमें करीब ८०० लोग थे। सब लोग बड़े प्रेम और श्रद्धासे काम करते थे। हमें जो रोटियाँ मिलती थीं, कच्ची बनती थीं। तो उसका भी ठेका हमने ले लिया। हमारे ८-१० आदमी रसोईमें काम करने लगे। और दूसरे कैदी तो थे ही। सारी चीजें सुन्दर बनने लगीं। अब भी पुराने कुछ कैदी मित्र मिलते हैं, तो कहते हैं : 'वैसी दाल कभी नहीं खायी।'

जब हम जेलमें जाते हैं, तो यही हमारा महल है, आश्रम है, ऐसा समझकर भक्तिभावसे हम काम करते हैं। जेलमें सफाई तो रखते ही हैं। कल रातमें हम जहाँ सोये थे, उससे यह जेल अधिक स्वच्छ है।

> जेलके सभी कैदी हमारे साथी हैं, सब एक हैं, सब भगवद्भक्त हैं, ऐसा मानें। कोई विशेष हैं, ऐसा न मानें। आप पश्चात्ताप करके यहाँ आये हैं। बड़े प्रेमसे बहनोंने आपको राखी बाँधी और यहाँ भेजा है। अब आपको नम्रवाणी ही बोलनी चाहिए। गाली-गलौज न हो। दूसरे लोगोंको लगे कि *ये राह भूल गये थे, पर अब ठीक रास्तेपर आ गये हैं।* पूरे जोरसे इस राहपर चलिये।

बाहर जो आपके बालबच्चे हैं, सगे-सम्बन्धी हैं, उनकी चिंता भगवान्पर सौंप दें। यहाँके कलेक्टर वगैरह सरकारी अफसरोंने कानूनको बाजूमें रखकर आपको सत्संगतिका मौका दिया, यह बड़ी बात है।

> हम आशा करते हैं कि आपमेंसे भगवद्भक्त निकलेंगे। "अपि चेत् सुदुराचारो भजते मां अनन्यभाक्। साधुरेव स मन्तव्यः"—ऐसा गीताने कहा है। जो मेरी अनन्यभक्ति करता है, वह पापी हो, तो भी साधु बन जाता है। यह भगवद्गीताका बड़ा भारी आश्वासन है। इसीके बलपर हम जीते हैं। "पापोऽहं पापकर्माऽहं"—ऐसा हम कहते हैं। सबसे कम-बेशी पाप होता है। आपमें और हममें कोई फरक नहीं है

आज दिनमें कान्ताबहनने सर्वोदय-साहित्य बेचनेमें कमाल किया। यों तो वह रोज ही हर पड़ावपर साहित्यकी अच्छी बिक्री कर डालती है; २५), ५०), १००) का साहित्य तो बेच ही डालती है, पर आज तो उसने १२५०) का साहित्य बेचा! भूताजीको पकड़कर उनकी सहायतासे उसने आज यात्राकी बिक्रीका रिकार्ड ही तोड़ डाला!

× × ×

शामको तीन बजे एक विस्तृत हालमें सरकारी—माल और न्याय-विभागके अधिकारियोंका एक सम्मेलन हुआ। रेवेन्यू कमिश्नर चटर्जीने बाबाका स्वागत करते हुए कहा कि आपने शान्ति और प्रेम द्वारा हृदय-परिवर्तनका जो दृष्टान्त उपस्थित किया है, उसे देखकर हम लोग मन्त्र-मुग्ध हो उठे हैं। आपसे ही यह सम्भव है। आप हम लोगोंका मार्गदर्शन करिये।

बाबा बोले: कल शामकी सभामें मैंने यहाँकी सरकारका और यहाँके उन सब अधिकारियोंका अभिनन्दन किया, जिन्होंने इस काममें हमारा सहयोग किया। यहाँ जो काम बना, जो हवा तैयार हुई, उसका श्रेय एकको नहीं, अनेकको है। सारा श्रेय किसी एकको देना हो, तो भगवान्‌को देना चाहिए। मेरा तो कमसे कम श्रेय है। मैं तो निमित्त-मात्र हूँ। इसका ज्यादासे ज्यादा श्रेय डाकुओंको देना चाहिए, जिन्होंने सामूहिक रूपसे अपनी जिन्दगी बदलनेकी हिम्मत की। मैंने उनसे कह दिया था कि उन्हें न्याय मिलेगा। वे यदि यहाँ सजा न लेंगे, तो भगवान्‌के पास उन्हें कड़ी सजा मिलेगी। हाँ, इतना जरूर है कि उनके साथ ज्यादती या सख्ती न होगी। मेरे पास पहुँचनेमें उन्हें कोई तकलीफ न होगी। जो लोग इन भाइयोंको समझाने गये, उन्हें भी श्रेय मिलना चाहिए। बचा हुआ श्रेय पुलिस अधिकारियों और सरकारको है, जिसने इन लोगोंको चार दिन हमारे साथ रहने दिया। इसीलिए मैंने उनका अभिनन्दन किया। पुलिस और दूसरे अधिकारियोंका मन यदि अनुकूल

रहेगा, तो यह समस्या शान्तिसे हल होगी। आप सबसे मैं पूरे सहयोगकी आशा करता हूँ।

यहाँ एक नैतिक शक्तिके आजमानेका प्रयोग हो रहा है। सन्त पुरुषोंके जीवनमें ऐसे परिवर्तनकी कहानियाँ आती हैं, पर सामूहिक रूपसे हृदय-परिवर्तनकी यह नयी बात है। हथियार छोड़कर दीक्षा लेकर गुप्त रूपसे कहीं दूर चले जाने और भगवान्का नाम लेते रहनेकी व्यक्तिगत घटनाएँ पुराने जमानेमें होती रही हैं। पर यहाँ तो अपने कृत्योंके दण्ड भोगनेकी पूरी तैयारीके साथ एक जमातने आत्म-समर्पण किया है। विशेष श्रद्धा होनेसे ही ऐसा सम्भव है। यहाँ बैठी गुजराती बहनोंने रक्षाबन्धन करके उन्हें भाई बना लिया है। वे हमारे भाई बन गये हैं। यह कोई छोटी बात नहीं है। यह अहिंसाकी प्रक्रिया है।

अभीतक यहाँ हिंसाकी प्रक्रिया चलती रही है। उसका अपना एक 'टेकनीक' है, शास्त्र है। जैसे, लोगोंको मुखबिर बनाना। डाकुओंकी भी एक 'मोरैलिटी' होती है। उनका भी एक नीति-शास्त्र होता है। हिंसाके 'टेकनीक'में किसीको पकड़कर, माफी देकर, पैसे देकर फोड़ा जाता है, उसे 'डीमोरैलाइज' किया जाता है, उसे नैतिक स्तरसे गिराकर वचन-भंगके लिए, विश्वासघातके लिए राजी किया जाता है!

हँसते-हँसते दगा देनेका, हिंसाका शास्त्र दुनियामें चल रहा है। उसपर किताबें हैं। उसकी ट्रेनिंग दी जाती है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें बातें तो बड़ी-बड़ी होती हैं, पर विश्वास रहता है सबका दण्डशक्तिपर ही। 'समिट कानफरेन्स' (शिखर-सम्मेलन) फेल हो गयी। दुनियाकी हालत डाँवाडोल है। सहयोग और प्रेमकी बात लोग ऊपर-ऊपरसे करते हैं, दिलका भरोसा है दण्डपर।

यहाँके अधिकारियोंने अहिंसापर और सत्यपर भरोसा रखकर चार दिन डाकुओंको खुला घूमने दिया। उन्होंने सोचा कि यह अहिंसक परिवर्तनकी प्रक्रिया है, इसे मौका देना चाहिए। छिपकर किसीका परिवर्तन

कर लेनेसे, संन्यासी बना देनेसे क्या ? तारीफ है खुलेआम परिवर्तन करनेमें । आपने उसका मौका दिया, यह बड़ी बात है ।

सोचनेकी बात है कि गलती कहाँ है ? अभी एक बागी भाई घर-वालोंसे मिलने गया । पता चलते ही मुखबिर अपनी बन्दूकें लेकर उसके पीछे पड़े । किसी तरह जान बचाकर, भागकर वह मेरे पास आया और उसने अपनी कहानी सुनायी । आप अगर मुखबिरोंको बन्दूकोंकी खैरात जारी रखेंगे, तो अच्छा वातावरण कैसे बनेगा ? आपको समस्याके मूलमें पहुँचना चाहिए । जमीन और झगड़े डाकू-समस्याके मूलमें हैं । गरीब आदमी भगाया जाता है, वह बन्दूक ले लेता है । आप गरीबीकी तरफ ध्यान दीजिये । डाकुओंकी जब्त जमीनें उनके घरवालोंको लौटाइये, उनकी मदद करिये । मुखबिरोंको समझाइये कि अब आपका काम खतम हुआ । सामान्य नागरिक बनिये । बन्दूकवालोंसे कहिये, बन्दूक छोड़िये, लाठी लीजिये । लाठीवालोंसे कहिये, लाठी भी छोड़ दीजिये । इस तरह धीरे-धीरे सारा वातावरण अहिंसाकी ओर, प्रेमकी ओर ले जाइये । सुरक्षाकी व्यवस्था आप करिये, ग्राम-रक्षकोंको शान्ति-सैनिक बनाइये । जिन परिवारोंको डाकुओंने लूटा है, उनकी मदद करिये । इस तरह सहानुभूतिका रुख आप रखें, तो घाव भरनेमें बड़ी मदद मिलेगी ।

मैं जब सरकारी अधिकारियोंसे बोलता हूँ, तो मुझे लगता है कि वे सब मेरी ही जमातके हैं । बाबा यह बात कहता है, तो आपको आश्चर्य लगता है, पर बात ऐसी ही है । आप मेरी ही जमातके हैं । आप भी जनताके सेवक हैं । जनतासे आपको पैसा मिलता है । कमी इतनी ही है कि जनताको आपपर इतना भरोसा नहीं जमा कि वह आपके सामने प्यारसे अपना दिल खोल सके । आप उससे पूरी सहानुभूति रखें, तो आपपर उसका विश्वास जमते देर न लगे ।

सर्वोदय पक्षमुक्त समाज है । लोग कहते हैं कि आपकी बहुत छोटी-सी जमात है, पर बाबा तो कहता है कि बाबाकी जमात तो सबसे बड़ी है । बाबा जो बनाना चाहता है, सो आप पहले ही बन चुके । आप पक्षमुक्त

है। आप किसी पार्टीका, किसी मजहबका पक्ष नहीं ले सकते। राष्ट्रपति पक्षमुक्त है, न्यायाधीश पक्षमुक्त है, 'स्पीकर' पक्षमुक्त है, सेना पक्षमुक्त है, पुलिस पक्षमुक्त है, डॉक्टर पक्षमुक्त है। ये कमिश्नर, जो यहाँ बैठे हैं, क्या किसी पक्षकी ओरसे कुछ काम कर सकते हैं? तो इससे बड़ी जमात और कौन होगी?

आप मेरे जमातके हैं। आपको तनख्वाह लेनी है सरकारसे और काम करना है मेरा। आप पक्षमुक्त रहें और दुःखीपर अन्याय न करें, तो आप सर्वोदयके ही कार्यकर्ता हैं। अभी यहाँपर जो नैतिक वातावरण बना है, उसका उपयोग करना, उसे आगे बढ़ाना आपका काम है। बाबा रोज घूमता है। गरमीमें पैदलमें, टटमें देहरादूनमें और गर्मियोंमें भिण्ड और ग्वालियरमें घूमता है। फिर भी उसके अन्तरमें आनन्द है। क्यों? इसीसे कि वह दुःखियोंकी सेवामें लगा है। आप भी दुःखियोंकी सेवाका काम उठा लें, तो आपकी अन्तरात्माको भी सन्तोष मिलेगा। नैतिक और आध्यात्मिक कार्यको आगे बढ़ानेसे आपको तसल्ली होगी।

× × ×

सरकारी अधिकारियोंका सम्मेलन समाप्त होते ही सादा और सशस्त्र पुलिसके जवान और अधिकारी उसी हॉलमें एकत्र हो गये। कमिश्नर साहबने उनकी ओरसे बाबाका स्वागत करते हुए बाबासे प्रार्थना की कि आप हमें यह बताइये कि हम आपके प्रेम और शान्तिके सन्देशको किस प्रकार अमलमें लायें?

बाबा बोले कि आठ-दस दिन पहले मैं बता चुका हूँ कि पुलिसका क्या कर्तव्य है। हम तो बहुत कम करते हैं पुलिसपर। पहले हमारा ऐसा ख्याल था कि आदमीको जब और कहीं नौकरी नहीं मिलती, तो वह पुलिसमें भरती हो जाता है और ३२ इंच छातीके अलावा पुलिसमें और किसी गुणका प्रवेश नहीं। परन्तु जेलमें पुलिसवालोंके साथ हमारा परिचय हुआ। तब मुझे पता चला कि पुलिसमें अच्छे सज्जन और धार्मिक लोग होते हैं।

धर्मपर श्रद्धा तो हिन्दुस्तानके खूनमें भरी पड़ी है। भारतको God-intoxicated Land (परमेश्वरकी भक्तिसे ओतप्रोत देश) यों ही थोड़े ही कहा गया है ? यह बात सही है। रवीद्रनाथ ठाकुर भारतके सर्व-श्रेष्ठ कवि थे। वे सारी दुनियाको प्यार करते थे। पर हिन्दुस्तानके मज-दूरों और विदेशोंके मजदूरोंमें फर्क बताते हुए उन्होंने लिखा है कि युरोपका मजदूर दिनभर काम करनेपर थक जाता है, तो शराब पीकर अपनी थकान मिटाता है, पर हिन्दुस्तानका मजदूर दिनभरकी अपनी थकान मिटाता है कीर्तन और भजन करके।

आज सुबह हम बागी भाइयोंसे मिलने जेलमें गये थे। उनका पेशा पापका था। डाका डालते थे, फिर भी उनमें भक्ति-भावना है। कल जब वे जेल जाने लगे, तो उन्होंने माँग की कि जेलमें हमें पूजा-पाठकी मनाही न रहे। जिन भाइयोंका जीवन पापमें गया, उनमें ऐसा भाव ! वैसा ही भाव पुलिसमें है। ठीक मार्गदर्शन मिले, तो पुलिस बहुत अच्छा काम करेगी।

फिल्लौरमें कई प्रान्तोंके पुलिसवालोंका शिविर हुआ था। वहाँ मैं आधे घण्टे बोला। मेरा व्याख्यान सुनते-सुनते कुछ भाइयोंकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। पुलिसका काम जनताकी रक्षा करना है और उसके लिए अपनी जान खतरेमें डालना है। यह बात उन्हें समझायी, तो उनकी आँखोंसे आँसू बहने लगे।

पुलिसका दिल मक्खन जैसा होना चाहिए। कभी मौकेपर उसे सख्त बनना होगा, जैसे ठण्डमें मक्खन कुछ कड़ा हो जाता है, पर पत्थर तो नहीं ही बन सकता। तो उसे होना चाहिए—पहले मक्खन, पीछे मक्खन, बीचमें जाड़ेका-सा मक्खन। उसके अन्दर दयाकी भावना भरी रहनी चाहिए। जैसे माता-पिता बच्चेको सुधारनेके लिए कभी-कभी पीटते हैं, पर उनमें दया भरी रहती है। वैसे ही पुलिसको कभी सख्त भी होना पड़े, पर भीतर दया तो रहनी ही चाहिए। पुलिसका काम योगीकी तरह कठिन है।

पुलिसवाले अपने कर्तव्यका पालन करें। उनका जीवन नियमित हो। खानेमें, पीनेमें, सोनेमें, काममें जब्त हो, संयम हो। आलस कतई न रहे। आपको नित्य रामायण, गीता जैसी धर्मकी पुस्तकें पढ़नी चाहिए। दिल आपका नरम रहे, मौकेपर सख्त। अभी इस क्षेत्रमें कठोरसे कठोर दिल-वाले डाकू शस्त्र छोड़कर नरम बन गये! उन्होंने आत्म-समर्पण कर दिया। हर इसानके अन्दर सद्भावना होती है। याद रखिये कि हर इंसानके भीतर परमेश्वरकी ज्योति जलती रहती है। कभी-कभी उसपर पर्दा पड़ जाता है, पर वह कभी बुझती नहीं। पर्दा हटते ही वह चमक पड़ती है। ऐसा सोचकर हर इंसानके प्रति हमदर्दी रखिये, हरएकको प्यार करिये!

× × ×

चम्बल घाटीमें शान्ति सेनाका काम तीव्र गतिसे चलना चाहिए, इस बातपर आज काफी विचार-विमर्श होता रहा। बैठकमें सर्व-सेवा-संघके मंत्री पूर्णचन्द्र जैन भी उपस्थित थे। फिर बाबाकी सम्मतिसे सक्रिय रूपसे इस क्षेत्रमें काम करनेवाले दस व्यक्तियोंकी एक कमेटी बनी, जिनमें कुँआरीबहन भी हैं। कमेटीके सदस्य हैं :

स्वामी कृष्णस्वरूप, लल्लूदादा, महावीर सिंह, भगवत सिंह, बाबा परसुराम, लक्ष्मीचन्द वैश्य, श्रीराम गुप्त, केशव सिंह, राजेन्द्रकुमारी, हेमदेव शर्मा (संयोजक)।

सायंकालीन प्रवचनमें इसकी चर्चा करते हुए बाबाने कहा :

भिण्ड जिलेमें हम आठ दस दिन और रहेंगे। यहाँपर शान्ति-सेनाका काम करनेके लिए दस मनुष्योंकी एक कमेटी बनी है, जिसमें एक बहन भी है। इसमें नीति, प्रेम और अहिंसामें विश्वास करनेवाले लोग हैं। कुछ उत्तर प्रदेशके हैं, कुछ मध्य प्रदेशके। सर्व-सेवा-संघके लोग भी आज यहाँ इकट्ठे हुए थे, उनके सामने यह कमेटी बनी है। हमारे जानेके बाद भी यह कमेटी यहाँ काम करती रहेगी। सब लोगोंको सर्वोदय-पात्र, सम्पत्ति-दान आदिमें सहयोग करना चाहिए। हम चाहते हैं कि यह क्षेत्र,

जो आज 'डाकू-क्षेत्र' नामसे पुकारा जाता है, वह 'साधु-क्षेत्र' (सज्जन-क्षेत्र) घोषित हो ।

यहाँपर डाकुओंकी समस्याके साथ डाकुओंसे पीड़ितोंकी समस्या भी है । पुलिसवालोंकी समस्या है। मुखबिरोंकी समस्या है । जगह-जगह लोग पीड़ित हैं, कोई एकसे हैं, कोई दूसरेसे । हम सबका दुःख-निवारण करना चाहते हैं । हम सबसे मिलते हैं । हम समाजको तोड़ते नहीं, जोड़ते हैं । हमें इस काममें सबकी मदद मिलनी चाहिए ।

यहाँ काम करनेके लिए पीड़ितोंकी मदद करनी होगी । उनके बच्चोंकी तालीमका इन्तजाम करना होगा । भूमिहीनोंको और जिनकी जमीन परती पड़ी है, उन्हें जमीन दिलानी होगी । ऐसे ही बहुतसे काम करने पड़ेंगे । इन सब कामोंमें 'गांधी-स्मारक-निधि', 'हरिजन-सेवक-संघ', 'कस्तूरबा-स्मारक-निधि' जैसी संस्थाएँ सहयोग कर सकती हैं । सर्व-सेवा-संघने भी मदद देनेकी बात कही है । यहाँके एम० पी०, एम० एल० ए० और गवर्नर, सबने सहयोग करनेकी बात कही है । सामुदायिक इच्छा-शक्तिका यहाँ प्रयोग हो सकता है । पुलिस, सर्वोदय-कार्यकर्ता और जनता तीनोंको मिलकर यहाँ प्यारसे काम करना चाहिए, जिससे सारा क्षेत्र सर्वोदय-क्षेत्र बन जाय और हम कहें : "धर्मक्षेत्रे, भिण्ड-क्षेत्रे ।" इस तरह यह जिला अब नये रूपमें प्रसिद्ध हो ।

× × ×

बाबाका आजका प्रवचन हरिजन-समस्यापर विशेष रूपसे केन्द्रित था । एक भाईने उनसे कहा था कि हरिजनोंके बारेमें कुछ कहिये । बाबा बोले :

मैंने तो शुरूसे अपनेको हरिजन ही माना है और वे सभी काम अपनाये हैं, जो उन्हें करने पड़ते हैं । हरिजनोंसे एकरूप होनेके लिए ये तीन काम मैंने खास तौरसे वर्षों किये हैं : (१) भंगी-काम, (२) चमड़ेका काम और (३) बुनाई ।

और यह भू-दान क्यों ? तेलंगानामें घूमते समय हरिजनोंने हमसे जमीनकी माँग की। उन्होंने अस्सी एकड़ माँगी, हमें सौ एकड़ मिली। तबसे भू-दानका जो काम शुरू हुआ, वह आजतक चलता ही चला जा रहा है। जमीनके वितरणके हमने जो नियम बनाये हैं, उनमें यह नियम भी है कि भूमिहीनोंको जो जमीन बाँटी जाय, उसमें कमसे कम एक-तिहाई हरिजनोंको मिलनी चाहिए। अभीतक साढ़े आठ-नौ लाख एकड़ जमीन बँट चुकी है, जिसमेंसे कमसे कम तीन लाख एकड़ जमीन हरिजनोंको अवश्य मिली है। भूदान-यज्ञसे भूमिका मसला तो हल होता ही है, हरिजनोंका भी मसला हल होता है।

इसके अलावा हमारा यह नियम है कि जिस मन्दिरमें हरिजन नहीं जा सकते, उस मन्दिरमें हम नहीं जाते। बिहारके देवघरमें इसी कारण हमपर मार पड़ी। बायें कानपर जोरसे एक मुक्का लगा, हमें बड़ा आनन्द आया। उस कानसे सुनायी पड़ना बन्द हो गया। यों हरिजनोंकी सेवामें हमने एक कान समर्पण कर दिया!

पुरीमें सर्वोदय-सम्मेलन हुआ। उस समय हमने जगन्नाथजीके मन्दिरमें प्रवेश माँगा। हमारे साथ एक फ्रेंच बहन भी थी। मन्दिरवालोंने उसके साथ हमें प्रवेश देनेसे इनकार किया, इसलिए हम बिना दर्शन किये ही लौट आये। उसके बाद हम जिन-जिन तीर्थोंमें जाते रहे, वहाँ हम सबके साथ प्रवेश माँगते रहे।

पंढरपुर महाराष्ट्रका बहुत बड़ा तीर्थ है। हर साल चार-पाँच लाख लोग वहाँ जाकर विठोबाके दर्शन करते हैं। मैंने कहा कि मुझे विठोबाका दर्शन मेरी शर्तपर मिले, तभी मैं दर्शन करने जाऊँगा। मैं अपने साथियोंके साथ मन्दिरमें जा सकूँ। मेरे साथियोंमें छूत भी हैं, अछूत भी; दूसरे दलवाले भी हैं। अगर मुझे दर्शनकी इजाजत नहीं देंगे, तो भगवान् बुरा मानेंगे। मन्दिरके पुजारी इसके लिए तैयार हो गये, तो मैंने उनसे कहा कि जिस तरह रुक्मिणीने पत्रिका लिखी थी, उसी तरह आप भी मुझे पत्रिका लिखिये। उन्होंने पत्रिका लिखकर दी, जिसमें कहा कि 'आप

जैसे महाभागवत भगवान्‌के दर्शनको अवश्य पधारें। आपके सब साथियोंका स्वागत है।'

हमारी एक जर्मन लड़की, जिसे हमने 'हेमा' नाम दिया है, हमारी एक मुस्लिम लड़की, जिसका नाम फातमा है और एक पारसी लड़की, जिसका नाम गुलबहन है, इन सबको साथ लेकर हम मन्दिरमें गये और हम सबने बड़े प्यारसे भगवान्‌को आलिंगन दिया।

अगर कोई यह कहे कि यह शख्स हरिजनोंको भूला होगा, तो मैं कहूँगा कि फिर हरिजनोंको याद रखनेवाला दूसरा कोई नहीं होगा। सर्वोदयमें अन्त्योदय होता ही है। लेकिन हमें यह पसन्द नहीं कि हरिजनोंकी अलगसे सेवा की जाय। "यह आया रे हरिजन सेवक!" ऐसे बँटे हुए, कटे हुए सेवकसे हमारा काम नहीं चलेगा! हम किसी एक टुकड़ेकी नहीं, पूरे समाजकी सेवा करते हैं।

× × ×

कलसे बहुत गहन क्षेत्रमें जाना है, बहुत ही ऊबड़-खाबड़ रास्तेसे जाना है, इसलिए आज बाबाने बड़ी कड़ाईसे अन्तेवासियोंकी छँटनी की:

सुमति तुम जाओ, कान्ता हरविलास तुम जाओ, कुसुम तुम जाओ, लवणम् तुम जाओ, गौतम तुम जाओ,...!

गिने-गिनाये हम चन्द ही लोग रह गये।

× × ×

फिर नमस्कार, प्रणाम, विदाईका जो दौर चला, वह आधी राततक चलता रहा। मीटिंगोंके लिए आये बाहरके कार्यकर्ता भी ट्रेन, बस, मोटर, जीपके इन्तजारमें सब सड़कपर इकट्ठे हो गये। रामऔतार जब इन सब लोगोंको विदा कर रहा था, तो उसकी आँखें छलछला रही थीं। बहनोंकी विदाईके मौकेपर तो वह रो ही पड़ा!

हमारी चण्डाल-चौकड़ीके शंकर शर्माका बिस्तर भी आज गोल हो गया। वे भी चल दिये दिल्ली।

अँधेरा होनेपर खुले मैदानमें उत्तर प्रदेशके साथियोंसे बात कर रहा

था, तो लल्लूदादाने स्वामी कृष्णस्वरूपजीसे चर्चा कर दी। बोले : 'नक्षत्रोंकी छायावाले ये हैं भट्टजी ! बहुत अच्छी पुस्तक है वह। मैंने बहुत देखी है !' टार्चकी रोशनी मेरे चेहरेपर फेंकते हुए—'देखूँ शक्ल !'

× × ×

रातको ८॥ बजे साथियोंको पहुँचाने जब सड़कपर गया, तो देखा कि एक सादर वहींपर एक जेबी रेडियो खोले सुन रहे हैं समाचार। हम लोगोंने भी उन्हें घेर लिया।

अरे, यह तो हवामें बाबा बोल रहे हैं :

"मध्यप्रदेशके डकैतीग्रस्त क्षेत्रमें मेरे शान्ति-अभियानमें जो कुछ हुआ, वह एकदम अप्रत्याशित था। आध्यात्मिक जगत्‌में अहिंसा एक सबल शक्ति है। महात्मा गांधीने राजनीतिक क्षेत्रमें उसका उपयोग किया। पिछले ९ सालसे सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रमें इसका उपयोग किया जा रहा है। 'डाकू क्षेत्र' कहे जानेवाले इस क्षेत्रमें इस बार इसके प्रयोगपर मुझे जैसा अनुभव हुआ, वैसा इससे पहले कभी नहीं हुआ था। कठोर हृदय पिघल गये हैं और सारा वातावरण भगवद्‌भीय भावनासे ओतप्रोत हो गया है। जिन लोगोंने डकैतीको अपने जीवनका पेशा बना लिया था, वे पश्चात्तापकी भावनासे आये और उन्होंने अपने पुराने तौर-तरीके एकदम बदल दिये। ऐसा जान पड़ता है कि भगवान्‌ने उनके हृदयमें पैठकर दैवी चमत्कार प्रकट कर दिया है। मैं तो उस जगदीश्वरके प्रति केवल कृतज्ञता ही प्रकट कर सकता हूँ, जिसपर विश्वास रखकर मैं सत्य, प्रेम और करुणाके मार्गपर चलनेका प्रयत्न कर रहा हूँ !" ● ● ●

मनई नाँय, पौहे आँय !

कचौंगरा

२४ मई '६०

'हृदय धोनेके लिए परमेश्वरका स्मरण कर लेना काफी है। स्मरण किया कि गायब हो गये सारे विकार !' आज ब्राह्मवेलामें ऊबड़-खाबड़ रास्तेमें चलते-चलते दाढ़ीवाले रामबाबाको पूरी ताकतसे समाज-सेवामें जुट जानेकी प्रेरणा देते हुए बाबाने सुना दिया यह गाँठ बाँधने लायक अनुपम सूत्र !

× × ×

दीनन दुख हरन देव संतन हितकारी !

यह भजन अभी विल्लोरेजीने समाप्त किया ही था कि बाबाने कचौंगराके निवासियोंको सम्बोधित करते हुए कहा कि इधर वीर, उधर साधु—इन दोनोंके बीचमें डाकू पैदा हो गये। साधुका गुण है सरल हृदय। वीरका गुण है मरनेकी तैयारी। डाकुओंमें हमें दोनों गुण मिलते हैं। उनसे हमारी दोस्ती हो गयी। उस दिन भिण्डमें हमने उन्हें प्रेमसे जेलको विदा किया। उन्हें प्रेमसे रखा जायगा। किसी तरहकी ज्यादती न होगी। कामका फल तो भोगना ही पड़ेगा, लेकिन हम इस बातकी कोशिश करेंगे कि उन्हें न्याय मिल सके, उनके मित्रों और बाल-बच्चोंको किसी तरहकी तकलीफ न हो। आप लोग हमारे दोस्तोंके पास यह सन्देश पहुँचा दीजिये कि बाबा तुमसे मिलना चाहता है। बाबाके पास आनेमें कोई खतरा नहीं। वे बेखटके यहाँ आ सकते हैं। आकर वे पश्चात्ताप करें, हृदयमें बदल करें। वाल्मीकि डाकू थे, लेकिन पश्चात्ताप करके वे साधु बन गये। ये लोग भी साधु बन सकते हैं।

इतना कहते-कहते बाबा भाव-विभोर हो उठे। बोले : पिछले दस-बारह दिनोंके भीतर जो घटनाएँ घटी हैं, उन्होंने हमारे दिलको अन्दरसे नरम बना दिया है। हमने देखा कि कैसे परमेश्वरकी ज्योति सबके अन्दर जल रही है। पहले मैं इल्मुल-यकीन था, अब अयमुल-यकीन बन गया हूँ। पहले किताबोंमें बात पढ़ी थी, अब मुझे अहिंसाका साक्षात्कार हो गया। मुझे तीन दफा ऐसा सामूहिक साक्षात्कार हुआ। पहली दफा पोचमपल्लीमें, दूसरी दफा बिहारमें और तीसरी दफा यहाँ। व्यक्तिगत साक्षात्कार तो बहुत हुए।

× × ×

तीन-तीन बार अहिंसाका सामूहिक साक्षात्कार !!!

कैसी अद्भुत घटना !

× × ×

कुँआरी नदीसे नहाकर अभी हम लोग लौटे ही थे कि देखा, बाबा तैयार हैं एँती जानेके लिए। नदीके उस पार थोड़ी दूरपर है यह गाँव—लाखन सिंहके भाई फिरंगी सिंहकी ससुराल।

खिली धूपमें गये हम लोग। बाबा रोजकी तरह अपना हरा टोपा सिरपर लगाये थे। गाँवके भीतर एक जगह बाबाके बैठनेके लिए दरी बिछी थी। वहीं हम लोग बैठ गये। गाँवके लोग वहाँ इकट्ठे थे, पहलेसे यहाँ खबर कर दी गयी थी। बाबा बोले : प्रेमका सन्देश फैलानेके लिए हम ९ सालसे घूम रहे हैं। गरीबोंके लिए हम जमीन माँगते हैं। अब-तक हमें ४५ लाख एकड़ जमीन मिली है, जिसमें कोई ९ लाख गरीबोंको बाँट भी दी गयी है। प्रेमसे जमीन माँगनेका काम इससे पहले कभी नहीं हुआ। इसकी हवा चल पड़ी, लोगोंने प्रेमसे जमीन दी।

सात-आठ महीने हुए। मानसिंहके बेटे तहसीलदार सिंहने जेलसे हमें चिट्ठी लिखी कि फाँसीके पहले हम आपका दर्शन करना चाहते हैं। तब हम कश्मीरमें थे। हमने इन जनरल साहबको भेजा। उनके कहनेसे हम यहाँ आये हैं और प्रेमकी बात लोगोंको समझा रहे हैं कि बागी भाई

हमारे पास आयें। उन्हें न्याय मिलेगा, उनके साथ सख्ती न होगी। बाल-बच्चोंको तकलीफ न होगी।

परमेश्वरकी कृपा है कि २० आदमी हमारे पास आये। उन्होंने बन्दूकें रख दीं। बाल-बच्चोंसे मिले। परसों हमने उन्हें जेल पहुँचा दिया। उन्हें कामोंका फल तो मिलेगा, लेकिन वे परमेश्वरकी क्षमाके अधिकारी बनेंगे।

एक राह खुली है। हम चाहते हैं कि जो भी भूले-भटके भाई हैं, वे हमारे पास आ जायँ। हम उनका स्वागत करते हैं। उन्हें न्याय दिलानेकी हम कोशिश करेंगे। आप हमारा यह सन्देश ऐसे भाइयोंके पास पहुँचा दें, इसीलिए हम आपके पास आये हैं।

× × ×

'बाबा, ये हैं बाबूसिंह, फिरंगी सिंहके साले।'—जनरल साहबने एक भाईका परिचय दिया।

'इनकी बहन वगैरह हैं न?' बाबाने पूछा।

'हाँ, हैं।'

बाबाने उनसे मिलनेकी इच्छा प्रकट की। बगलमें ही उनका घर है। बाबा उठकर चले। हम दो-एक भाई उनके साथ हो लिये।

फिरंगी सिंहकी पत्नी और उनके मायकेकी कई स्त्रियाँ बरोठेमें आ गयीं। बाबाको सबने प्रणाम किया। बाबाने पूछा: 'क्या हालचाल है तुम्हारा?'

'क्या कहें बाबा? दुःखका कोई पार है!'

'तो तुम कहो न उनसे कि हाजिर हो जायँ।'

'कहती हैं बाबा, पर कहीं मानते हैं हमारी बात? हमने कितनी-कितनी दफा कहा कि हाजिर हो जाओ। हम सब 'कुटत-पिटत हैं! बाल-बच्चनका बड़ी तकलीफ है!'

बाबाने सत्याग्रहकी सलाह दी: 'क्यों नहीं तुम लोग सत्याग्रह करतीं?'

आँखोंमें आँसू भरकर बोली : कहते हैं, मरना है तो मर न जा ! कल मरती हो, तो आज मर जा। नहीं तो जा हम तुझे गोली मारकर ढेर कर दें !

तबतक एक बहन बोली : बाबा, मनई नाँय, पौहे आँय !

बाबा नहीं समझ पाये। मैंने बताया : बाबा, यह कह रही है कि 'ये लोग मनुष्य नहीं, पशु हैं !'

जनरल साहब : यह लाखन सिंहकी भतीजी है बाबा ! मलखान सिंहकी बेटी।

बाबाने कहा : देखो, हमें तो सबसे हमदर्दी है। जिनको पुलिस सताती है, उनसे भी हमदर्दी है, जिन्हें डाकू सताते हैं, उनसे भी हमदर्दी है। आदमी-आदमी, बच्चे-बच्चे हैं तो सब एक ही न ? तकलीफ तो सबको न होती है !

'हाँ, बाबा।'

बाबा बोले : वो अपने घरवालोंतक हमारा यह संदेशा पहुँचा दो कि गलत रास्ता छोड़ दो, प्रेमसे ही यह मसला होगा। भगवान् उन्हें सद्बुद्धि दे !

× × ×

खादीका कोकटी रंगका पतलून घुटनोंके ऊपरतक पानीसे भीग गया था, पर जनरल साहब बिना उसकी पर्वाह किये नदी मँझा रहे थे। पार होते ही उन्होंने बाबासे कहा : बाबा, यह लड़का है खेम, कश्मीरमें भी अपने साथ था यात्रामें। खेम, प्रणाम कर बाबाको।

"और यह है बशीर !"

खेम और बशीर दोनों लड़के जनरल साहबके साथ दौरेमें लगातार घूमते हैं। तीसरे हैं कदम साहब। पर इस समय वे और कहीं रमने चले गये थे—मिशनके ही सिलसिलेमें।

कचोंगरा वापस लौटे, तो गाँवमें हमें दूसरे रास्तेसे ले आये जनरल साहब।

एक मकानके सामने आकर बोले : बाबा, यह है ज्वालासिंहकी ससुराल।

'उनकी पत्नी है यहाँ ?' बाबाने पूछा।

'हाँ बाबा, यहीं है।'

'तो चलो भीतर।'

बाबा भीतर गये। जमीनपर बैठ गये। ज्वालासिंहकी सद्यःविधवा पत्नी आकर बाबाके चरणोंपर गिरी और जबतक हम लोग वहाँ रहे, रोती ही रही। बाबा उसे दिलासा देते रहे।

'कितने बच्चे हैं ?'

'पाँच।'

भीतरसे कोई सालभरका एक बच्चा ले आया। उसने कहा कि बाबा, यह है सबसे छोटा बच्चा !

शोकसंतप्ता विधवासे बाबाने पूछा : भगवान्‌का नाम लेती हो कुछ ?

उसने सिर हिलाया।

बाबा बोले : भगवान्‌की याद करती रहो। उनका नाम लेती रहो। वे ही सब पार करेंगे।

दो सप्ताह हुए, एक पुलिस-मुठभेड़में ज्वालासिंहका देहान्त हो गया है। दाहिना हाथ माना जाता था वह लाखन सिंहका।

× × ×

दो-तीन मिनटके लिए बाबा प्रह्लाद बागीके घर भी रुके और उन्होंने घरवालोंसे कहा कि आप लोग उन्हें समझाइये कि वे गलत रास्ता छोड़ दें और गलतियोंका प्रायश्चित्त कर डालें। भगवान् उनका भला करेगा।

× × ×

आज सायंकालीन सभाके समय वर्षा आरम्भ हो गयी। बाबा मंचसे उतरकर खुले मैदानमें आ गये और बरसते पानीमें श्रोताओंके बीच खड़े होकर बहुत देरतक ताली बजा-बजाकर कीर्तन करते-कराते रहे— रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम। उसके बाद उन्होंने कहा :

गर्मीमें पहली बारिश बहुत अच्छी होती है। यह वरदान है, जो बहुत अच्छा होता है, ऐसा हमारी माँ कहती थी। इसलिए हम तुमसे ही प्रार्थना करेंगे।

जो बातें हम कह रहे हैं। हमारा कहना है कि जैसे हवा सबकी, पानी सबका, वैसे ही जमीन भी सबकी होनी चाहिए। हम जमीनके मालिक नहीं, जमीन भगवानकी है। हम तो उसके सेवक ही हो सकते हैं।

यहाँ जमीनके साथ एक बात और निकली है—बागियोंकी। कुछको बागियोंने हलाक किया है, कुछको पुलिसने। मेरे पास कुछ विधवा बहनें आयीं। उन्होंने कहा कि हमारे पति और बेटोंको डाकुओंने मार दिया। दूसरी तरफ और कुछ बहनें रोती आयीं, उन्होंने कहा कि पुलिसवालोंने और मुखबिरोंने हमारे घरवालोंको मार दिया है। तो हमने सोचा कि चलो, इन सब लोगोंसे कुछ प्रेमकी बातें करें। हमारे प्रेमका सन्देश सुनकर बीस लोग आये। उन्होंने अपने हथियार हमें दे दिये। वे चार दिन हमारे साथ घूमे। भिण्डमें हमने उन्हें जेलमें पहुँचा दिया। दूसरे दिन उनसे जेलमें मिले और हम सबने एक साथ प्रार्थना भी की।

हम चाहते हैं कि आप लोग जगह-जगह यह सन्देश फैला दें कि हमारे ये दोस्त लोग अपनी गल्ती मानकर हमारे पास आ जायँ। उनके साथ कोई ज्यादती न होगी। उन्हें कोई तकलीफ नहीं दी जायगी, उनके मुकदमेमें मदद की जायगी। बचोंकी मददका भी इन्तजाम किया जायगा। उन्हें पूरा न्याय मिले, इसकी कोशिश की जायगी। बाबा आपके लिए, देशकी भलाईके लिए तथा धर्मके लिए यह काम कर रहा है। बाबा सबको अपना भाई मानता है। वह चाहता है कि कोई दुःखी न रहे। सब लोग मिल-जुलकर रहें। सारा गाँव मिलकर एक परिवार बन जाय। सब मिल जुलकर काश्त करें। जिसके पास जमीन नहीं है, उसे दूसरे जमीनवाले लोग अपनी-अपनी जमीनसे थोड़ा हिस्सा दे दें।

पैंसठ सालकी उम्रमें बाबा साढ़े नौ मील पैदल चलकर यहाँ आया

और पासके गाँवमें बागियोंके रिश्तेदारोंसे मिलनेके लिए दोपहरके ग्यारह बजे गया और साढ़े बारह बजे लौटा। यह सब किसलिए? इसीलिए कि दुर्जन सज्जन बनें, डर छूट जाय और आपसमें प्रेम बढ़े। प्यार, धर्म और भक्तिकी बात समझानेको बाबा गाँव-गाँव घूम रहा है। वह चाहता है कि हर जगह सुख और आनन्द बढ़े। हरएकका दिल उदार बने। सब लोग यह मानें कि गाँववाले सबके सब मेरे हैं, मेरे परिवारके हैं। एक भी आदमी दुःखी हो, तो हम उसका दुःख आपसमें बाँट लें।

× × ×

शामको भोजनमें हमें कुछ देर हुई। गैसकी बत्तीकी रोशनीमें हम लोगोंने खाना खाया। बाबाने देखा, तो बिगड़े। बोले : मैं इसीसे कहता हूँ कि शामको ६ बजेतक खाना खा लेना चाहिए। बत्तीके पास जो पतिंगे उड़ रहे हैं, वे भोजनमें गिर ही जाते हैं! कहाँतक कोई बचायेगा? जैनियोंने सूर्यास्तके पहले भोजनका नियम रखा है। उसके मूलमें यही तो बात है।

बाबा अक्सर सुनाते हैं कि एक बार शिवरात्रिपर किसीने उनसे पूछा : 'आप व्रत नहीं करते?' कहा : 'मैं शिवरात्रिको सात्त्विक भोजन करता हूँ। कीड़े-वीड़े नहीं खाता!' उन्होंने कहा : 'हम तो पिण्ड-खजूर खाते हैं! इसमें कीड़े हैं?' 'धोकर देखो न?'

पिण्ड-खजूर धोये, तो उनमें तमाम कीड़े निकले! ○ ○ ○

तय करो—"युद्ध-पर्व समाप्तम् !"

स्योंडा

२५ मई '६०

'इटावाके रमेश !'

बालभाईने परिचय देते हुए कहा : बाबा, बी० एस-सी० की परीक्षा दी है इन्होंने। कुछ दिन रहना चाहते हैं आपके साथ।

रमेशका हाथ पकड़ते हुए पूछा बाबाने : 'कौन-कौनसे विषय हैं तुम्हारे ?'

रमेश : *फिजिक्स, कैमिस्ट्री* और गणित।

बाबा : अच्छा, गणित भी ? भगवान्‌के बाद मैं दूसरा नम्बर देता हूँ गणितको। तुम गणितको कापियोंतक ही महदूद रखते हो कि जीवनमें भी उतारते हो ? गणितके विद्यार्थीका तो हर काम नपा-तुला होना चाहिए—खाना-पीना, उठना-बैठना, चलना-फिरना, सोना-जागना, बात-व्यवहार सब। वह रत्तीभर भी कोई चीज फिजूल खर्च न करेगा—पानीतक नहीं।

रमेश : बाबा, मैं चाहता हूँ कि कुछ दिन आपके साथ रहूँ।

बाबा : कितने दिनतक ?

रमेश : पचीस सालकी उम्रतक।

कुछ कौतूहल हुआ बाबाको। पूछा : अभी क्या उम्र है तुम्हारी ?

रमेश : अभी तो मैं उन्नीस का हूँ।

बाबा : तो छह बरस ही क्यों रे भाई ? रहना तो मिनटभर या जिन्दगीभर।

रमेश : रहना तो जिन्दगीभर चाहता हूँ, पर शायद आप तैयार न हों, इसलिए छह बरस ही कहे।

बाबा : किया क्यों ?

रमेश : मेरी पत्नी एक डाकूकी बेटी है। उसके बापने मेरे घरवालोंको डराया, धमकाया और कहा कि लड़का शादी न करे, तो उसकी पढ़ाईका खर्चा बन्द कर दें।

बाबा : मेरे साथ रहनेमें उस डाकूका डर नहीं है तुम्हें ?

रमेश : अब तो वह मर गया है बाबा। अब उसका क्या डर ? मैं तो आपके साथ रहकर देश-सेवा करना चाहता हूँ। पत्नीके साथ नहीं रहना चाहता।

बाबा : तो उस बेचारी लड़कीका क्या होगा ? शादी तो अब हो चुकी। अब तो प्रेमसे उसे निबाहना ही है। भाईके दोषकी सजा उस लड़कीको क्यों देते हो ? तुम दोनोंको साथ-साथ देश-सेवा करनी चाहिए।

रमेश : बाबा, वह बिलकुल नहीं समझती। उसके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।

बाबा : उसे कभी समझाया भी है ?

रमेश : हाँ बाबा, समझाया है।

बाबा : अच्छा, अब जाकर फिर समझाना। कहना, बाबाने तुझे भी

बुलाया है, मुझे भी। अबकी बार आना, तो उसे साथ लेकर आना। कुछ दिन दोनों मेरे साथ रहना। फिर आगेकी बात सोचेंगे।

रमेश : आपके पैर छू लूँ बाबा !

बाबा : अरे, जब हाथ पकड़ लिया, तो पैर छूनेकी जरूरत ही क्या रही ! अच्छा जाओ, सद्बुद्धि रखो !

× × ×

खूब ऊबड़-खाबड़ था आज सवेरेका रास्ता। ऊँची-नीची कँकरीली-पथरीली सँकरी गैल। जगह-जगह धूल उड़ती। कई-कई आदमियोंका साथ चलना तो दरकिनार, दो आदमियोंका भी साथ-साथ चल पाना मुश्किल था।

रमेशके साथ बाबाकी मनोरंजक वार्ता चल रही थी, तो हम लोग पीछे-पीछे कूदते-फाँदते चल रहे थे। थोड़ी देर बाद ऊँचे-नीचे टीलोंके बीच एक खुला खेत मिला। बाबाने चलना छोड़ वहीं आसन जमा दिया। हम लोग बैठ गये चारों ओरसे उन्हें घेरकर।

बाबा कुछ देर शान्त रहे, फिर उनके मुखसे झरने लगे ये अमृत-कण :

सारा तमाशा मनका है। एक मिसाल लें। दो बेटे हैं, दो बाप। एकका बेटा मर गया, उसे पता नहीं। वह आनन्दमें है। दूसरेका बेटा है तो जिन्दा, पर उसे गलत खबर मिली है कि वह मर गया। अब वह दुःखी है। निष्कर्ष क्या निकला ? यही कि शोकका सम्बन्ध घटनासे नहीं, मनसे है। घटनासे होता, तो मरे हुए बेटेका बाप सुखी क्यों होता, जीवित बेटेका बाप दुःखी क्यों होता ? तो सुख-दुःखकी प्राथमिक जिम्मेदारी है मनपर।

दुनियामें तरह-तरहकी घटनाएँ घटती हैं। उनकी जानकारी मिलते ही हम खुश होने लगते हैं, दुःखी होने लगते हैं। चीनकी सीमापर आक्रमणकी खबरसे हमें दुःख है। हम उसे कभी देखने नहीं गये, फिर भी हमें क्षोभ है। क्यों ? इसलिए कि उसके साथ हमारे मनका लगाव है। पुराने जमानेमें ऐसा कुछ न होता। तीन सौ साल पहले बड़ीसे बड़ी

घटनाएं घट जातीं, पर हमें उनका कोई पता ही नहीं लगता था। इसलिए हम लोग आरामसे रहते थे। हमारे मनपर उनका कोई असर नहीं होता था। आज तो किसी घटनाका एकदम पता लग जाता है और पता लगते ही मन चंचल हो उठता है। यह ठीक नहीं। तिब्बत जैसी घटनाएँ पहले जमानेमें घटतीं, तो मन अक्षुब्ध रहता, पर आज ऐसी घटनाओंका असर क्षोभदायी होता है। क्षोभ होनेसे अनावश्यक वेदना होती है। उससे कोई फायदा नहीं।

हाँ, अब एक बात अवश्य देखनेमें आ रही है। आजकल लोग खाना खाते जाते हैं और खून, फाँसी और विनाशकी खबरें पढ़ते जाते हैं। उनके दिलोंपर कोई खास असर नहीं होता। यह सब देखकर मुझे लगता है कि मानव-समाज अब स्थितप्रज्ञ बननेकी तैयारीमें है। ऐसी खबरोंसे मन धीरे-धीरे वेदनाशून्य बनता जायगा। पहले ऐसी खबरोंसे मनमें क्षोभ बढ़ता है, उससे दुःख बढ़ता है। पर आगे चलकर मनुष्य सोचने लगेगा कि व्यर्थकी जानकारी हासिल करनेसे क्या लाभ है? मेरा तो ख्याल है कि विज्ञानकी वृद्धिके साथ-साथ मनुष्य सादगीसे रहना सीखेगा। वह कम कपड़े पहनेगा, खुली हवामें रहेगा, खेतोंमें काम करेगा, रातको कम जागेगा। हम जिस मिट्टीपर बैठे हैं, वह शरीरके लिए मुफीद है। जो मिट्टी तपती नहीं, उसमें प्राण-शक्ति दाखिल नहीं होती। विज्ञान जितना बढ़ेगा, आदमीकी जिन्दगी उतनी ही सादी बनेगी और आध्यात्मिक वृत्ति बढ़ेगी।

× × ×

स्योंडा पहुँचते-पहुँचते कुछ धूप हो गयी। तीन-चार साल पहले इस गाँवमें डाकू-पुलिस भिड़न्त हुई थी। दोनों तरफसे गोली चली। मरा तो कोई नहीं, पर गाँववालोंकी बड़ी फजीहत हुई। मारपीट, फसलकी बर्बादी आदि।

नहानेके लिए हम लोग जब नदीपर गये, तब गाँवमें इस घटनाका पता लगाया। लोगोंने बताया कि बागी लोग अचानक ही कहींसे आ

गये। गाँववालोंसे पूछा : 'क्यों, पुलिस तो नहीं है?' वे बोले : 'नहीं, पुलिस नहीं है।' इधर अचानक पुलिस आ गयी। उसने पूछा : 'क्यों, बागी तो नहीं हैं?' लोग बोले : 'नहीं, बागी यहाँ नहीं हैं।'

गाँववालोंको न पुलिसका पता था, न बागियोंका। संयोगकी बात कि उसी समय अचानक पुलिस भी आ गयी, बागी भी। दोनोंकी मुठभेड़ हो गयी। गाँववाले पिस गये बीचमें। बागियोंने समझा—ये लोग पुलिसको छिपाये थे! पुलिसवालोंने समझा—ये लोग डाकुओंको छिपाये थे!

बादमें दोनोंने गाँवको सताया। पुलिसने एक सिरेसे दूसरे सिरेतक लोगोंको बुला-बुलाकर पीटा। खड़ी ज्वार भी काटकर फेंक देनेका आदेश दे डाला। डाकुओंने अपने ढंगसे गाँववालोंको सताया।

× × ×

आज हमारा पड़ाव गाँवके बाहर है एक मन्दिरमें। मन्दिरके बड़े बगीचेमें कई तम्बू लगे हैं। पूर्वमें बाबा ठहरे हैं, पश्चिमके तम्बूमें हम लोग। बाहर भी कुछ तम्बू हैं। उधर पुलिसके लोग पड़े हैं।

प्रवेश-प्रवचनके पहले भाई रामानन्द दुबेने भजन गाया—भजो रे भैया राम गोविन्द हरी!

नंगे बदन थे दुबेजी। बाबाने मंचपर आते ही देख लिया कि जनेऊमें कुंजी बँधी है। बोले : कुंजी डोरीमें या जनेऊमें? डाकू-क्षेत्रमें कुंजी सँभालो! क्यों नित्यानन्द?

नित्यानन्द : हाँ बाबा!

प्रवचनमें नदियोंका महत्त्व बताते हुए बाबाने कहा : नदियोंके किनारे पवित्र माने जाते हैं! होने तो चाहिए थे यहाँ ज्ञानी, पर होते हैं डाकू! व्रजभूमिमें आपसमें लड़नेवाले यादव पैदा हो गये हैं। यहाँ कोई लाल टोपी लगाये हैं, कोई सफेद। कोई नंगे सिर हैं, कोई फेंटा बाँधे। ये मुख्तलिफ जमातें हिन्दुस्तानका वैभव हैं। ये सब आपसमें मिल जायँ, तो काम चले। सा रे ग म प ध नी—इन सातों स्वरोंकी सुसंगति

होनी चाहिए। हम देखते हैं कि इधर पुलिस है, उधर डाकू। इधर इनके मुखबिर हैं, उधर उनके। इधर ग्राम-रक्षादल है, उधर गाँववाले। इस तरह मुख्तलिफ जमातोंमें बँटे रहनेसे देशकी ताकत कैसे बढ़ेगी? अब हम इस क्षेत्रमें आये हैं, तो तुम लोग तय करो कि अब 'युद्ध-पर्व समाप्तम्'! अब यहाँसे 'शान्ति-पर्व' शुरू होना चाहिए।

हमारे पास एक कुंजी है: सर्वोदयकी कुंजी।

ताला कुंजी हमें गुरु दीन्हीं।
जब चाहों तब खोलों किवरवा॥

हमारी कुंजी क्या है? हमारे गुच्छेमें हैं चार तालियाँ:

(१) सबपर प्यार।

(२) हिम्मत, निर्भयता। हम किसीसे डरें नहीं। बन्दूकवाला डरपोक होता है। जहाँ बन्दूक छीनी कि सारी ताकत खतम।

(३) पश्चात्ताप। जो हुआ सो हुआ, आगे जो कुछ न्याय होगा, उसे हम खुशीसे कबूल करेंगे।

(४) क्षमा। न्यायके साथ थोड़ी क्षमा भी रहनी चाहिए—जैसे दूधके साथ शहद। किसीने अगर हमारे लड़केको मार दिया, तो हम यह न सोचें कि हम भी उसे मारें। इससे द्वेष बढ़ता है। जो दुःख हमें भुगतना पड़ा है, वह दूसरेको न भुगतना पड़े, इसका नाम है क्षमा।

यहाँपर वीर लोग भी हैं और सेवाका काम करनेवाले भी। सबको मिलकर पुरानी बातें भुला देनी चाहिए। सारी गलत कथाएँ छोड़कर राम-कथाकी धारा बहानी चाहिए। "रामकथाके ते अधिकारी। जिनकहँ सत्संगति अति प्यारी।" सत्संगति करनी चाहिए। राम-कथा यहाँ खूब चलनी चाहिए। इधर ब्रज-भूमि भी है, तो रामके साथ कृष्ण भी चलेगा। रामका अर्थ है—सत्यनिष्ठा, कृष्णका अर्थ है—प्रेम-मूर्ति। सत्य और प्रेम जुड़ जायँ, तो कहना होगा कि राम और कृष्ण दोनों जुड़ गये। इस तरह सत्य और प्रेमसे मिल-जुलकर सबको यहाँकी समस्या सुलझानी चाहिए।

× × ×

नदी थोड़ी दूर है यहाँसे। खूब टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता है खारोंसे हो करके। लौटते समय हम लोग राह भूल गये, थोड़ी दूर भटकना भी पड़ा। आज पता चला कि कैसे चम्बलके खारोंमें लोगोंको छिपना आसान होता है और पकड़ना कठिन!

× × ×

तीसरे पहर आयी खूब जोरकी आँधी, तूफान, वर्षा। हमारा छोटा तम्बू लहरानेको था, पर एक भाई थामे रहे जोरसे। रस्सियाँ टूटने लगीं, खूँटे उखड़ने लगे। लल्लू दादा आ गये तत्काल। दौड़े वे बाबाके तम्बूकी तरफ। उस तम्बूका भी बुरा हाल था। उनके पहुँचनेके साथ ही वह तो गिर ही पड़ा! भाई पहलेसे बाबाको कह रहे थे बाहर आनेको, पर वे बैठे रहे मुसकराते हुए। बाबाको दबते देख लल्लू दादाने अपना पैर अड़ाकर बीचके भारी बाँसको थामा और हाथसे पकड़कर बाबाको जबरन बाहर निकाला। फिर उन्हें मन्दिरके पटे हुए कमरेमें पहुँचाया। पानीने तमाम सामान, कपड़े, कागज-पत्र बुरी तरह भिगा दिये थे। गिरे हुए तम्बूसे उन सबको निकालनेमें हम लोगोंको काफी देर लगी।

× × ×

सायंकालीन प्रवचनमें बाबाने कहा :

आज अभी बारिश पड़ी थी। उसमें हमारा तम्बू गिर गया। हम भी गिर गये। जरा मजा आया। ऐसी घटनाएँ हमारी यात्रामें कभी-कभी घटती ही रहती हैं।

हमारी यह भूदान-यात्रा क्यों चल रही है? सभी जानते हैं कि हम गरीबोंके प्रतिनिधि हैं। हम न तो वोट माँगते हैं, न उसमें पड़ते ही हैं। गाँव-गाँवमें हम जाकर कहते हैं कि हम सब एक हैं। सब लोगोंको एक होकर रहना चाहिए। इससे गाँवकी दौलत बढ़ेगी, सुख बढ़ेगा। 'एक बनो और नेक बनो।' ऐसा हम सबसे कहते हैं। लेकिन कहनेसे तो काम बनता नहीं। इसलिए हमने तय किया कि करनेका कुछ 'काम' उठा लेना चाहिए। हमने भूमिहीनोंके लिए जमीन माँगनेका काम उठा

लिया । अबतक हमें पंतालीस लाख एकड़ जमीन मिल चुकी है, जिसमें कोई नौ लाख एकड़ बाँटी जा चुकी है। दान और प्रेमका ही एक तरीका है, जिससे जमीनकी समस्या हल हो सकती है। दूसरा कोई तरीका है ही नहीं। प्रेम और करुणाके रास्तेसे ही टूटे हुए दिल जुड़ेंगे। जबतक ऐसा नहीं होगा, तबतक गाँव तरक्की नहीं कर सकता। गाँवके लोग अपनी ताकतसे जो कर सकते हैं, वह सरकार नहीं कर सकती।

हम जानते हैं कि "सुमति-कुमति सबके उर रहई"! डाकू हमारे प्यारे मित्र हैं। डाकुओंकी तरफसे ज्यादती हुई है, तो पुलिसकी तरफसे भी कम ज्यादती नहीं हुई। इधर डाकू, उधर पुलिस। जनता दोनोंके बीचमें पिसी जा रही है।

लच्छी नामका मशहूर डाकू हमारे पास आया। तीन सालसे बम्बईमें वह आराम कर रहा था। उसने अखबारमें पढ़ा कि बाबा इधर आया हुआ है। बाबाके आगे शरण जानेसे पुलिस ज्यादती नहीं कर सकेगी। तीस-बत्तीस लाखकी आबादीवाले बम्बईमें उसे कौन पकड़ता है? फिर भी वह बाबाकी शरण आया। और वह लुकमान (लुक्का)? वह आया, उसकी टोली आयी। भिंडतक हमने उन्हें अपने साथ रखा। फिर सबने प्रार्थना की। हमारी बहनोंने उन्हें तिलक लगाया, राखी बाँधी, फिर उन्हें जेल भेज दिया। दूसरे दिन हम जेलमें उनसे मिले और सबने प्रार्थना की। उनके साथ कोई ज्यादती नहीं होगी और उनको न्याय दिलाया जायगा।

एकने कहा कि 'बाबाने डाकुओंको जेलमें भेज दिया, यह ठीक नहीं किया।' बाबा उन्हें अगर जेलमें नहीं रखता, तो क्या करता? सरकारके कानूनकी अपनी मर्यादा है। उसके खिलाफ तो जाना नहीं है। हम कोशिश करेंगे कि सबको न्याय मिले। मुआफीकी बात नहीं सोचनी चाहिए। यहाँ मुआफी मिलेगी, तो भगवान्‌के यहाँ सजा मिलेगी।

पुलिसने कुछ डाकू खत्म किये, तो कुछ पैदा भी किये। हिंसासे हिंसा ही पैदा होती है। हिंसाका मुकाबला अहिंसासे करना होगा। यह बात

सरकारने भी महसूस की। अब तो यह बात फैल गयी है। दूर-दूरसे लोग देखने आते हैं कि हिन्दुस्तानमें यह क्या अजीब बात हो रही है कि बीसों लोग प्यारसे अपने-आपको हमारे सुपुर्द कर देते हैं। जो लोग 'बागी' कहलाते हैं, 'डाकू' कहलाते हैं, उनका हमारे साथ फोटो खींचा है। वे हमारी जमातमें शामिल हो गये। हमने उन्हें 'दोस्त' नाम दिया। आप लोग उनके पास हमारा यह सन्देश पहुँचा दो कि वे बाबासे आकर मिलें, बात करें। अपनी करनीका पश्चात्ताप करें। उन्हें न्याय मिलेगा और किसी तरहकी सख्ती नहीं बरती जायगी।

× × ×

शामको हम लोग भोजन कर ही रहे थे, तभी आ गयीं दिल्लीसे डॉक्टर सुशीला नायर। अभी दो-एक दिन रहेंगी हमारे साथ पद-यात्रामें। प्रोफेसर त्रिलोरे पाँच-सात दिनके लिए गये हैं ग्वालियर। कह गये हैं कि आपकी जिम्मेदारी है सो तो है ही, आजसे हमारी 'भूमि-क्रान्ति' का भी ख्याल रखियेगा!

○ ○ ○

सच्ची बहादुरी सीखो !

पांढरी

२६ मई '६०

श्रद्धा और बुद्धि !

'श्रद्धा एक बात कहती है, बुद्धि कुछ और ! तब क्या करें बाबा ?'

कैसा सबके मनका सनातन प्रश्न !

जङ्गम विद्यापीठमें उसकी व्याख्या करते हुए बाबा बोले : श्रद्धा और बुद्धि दोनोंका समन्वय होना चाहिए। श्रद्धा हो बालक जैसी। माँ जो कह दे, सो ठीक। अपार श्रद्धा होती है बालककी माँपर। वैसी ही श्रद्धा रहनी चाहिए। इस श्रद्धाके साथ बुद्धिका मेल होना चाहिए। श्रद्धाको बुद्धिका समर्थन रहे, बुद्धिको श्रद्धाका। और यह तब होगा, जब मन और बुद्धि दोनों भगवान्को अर्पण कर दिये जायँगे।

× × ×

भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे !
आज इक फकीरकी जो भूमिकी पुकार है,
पुकार है यह दीनकी, ये देशकी पुकार है।
पुकार दीन-हीनकी न अब भुलायेंगे,
भूमि-दान-यज्ञ हम सफल बनायेंगे ॥

प्रवेश-प्रवचनमें बाबा बोले : सुना आपने—'भूमि-दान-यज्ञ [illegible] सफल बनायेंगे ?' गरीबोंके लिए, भूमिहीनोंके लिए हम जमीन माँग[illegible] निकल पड़े। ४५ लाख एकड़ मिली। सोचते थे, बहुत कम है। पर अ[illegible] लगता है कि बहुत है। सरकार कानून बनाती, तो उसे ८-१० लाख एक[illegible] मिल जाती। हम तो इतनी जमीन और भी चुके ! भूदानमें [illegible]

गरीबोंका दुःख बाँटनेका दूसरा रास्ता हमने देखा नहीं। भूदान प्रेम बढ़ाता है, धर्म-भावना बढ़ाता है, ताकत बढ़ाता है।

बागी लोग हमसे मिले। हमने उन्हें समझाया कि छोड़ो यह काम। बोले : 'हम राजी हैं।' उन्होंने अपने हथियार हमें दे दिये। एक बन्दूकमें दूरबीन थी। ऐसे शस्त्रोंसे लैस भाई आये। एक बागी भाई आये बम्बई-से। हमने प्यारसे समझाया। उन्होंने अपने-आपको हमें सौंप दिया। हम ऐसे भाइयोंसे कहते हैं कि तुम भी प्रेमसे जिओ, दूसरोंको भी जीने दो। बागियोंने पुलिस पैदा की, पुलिसने बागी पैदा किये। अहिरावणके रक्तकी बूँद-बूँदसे राक्षस पैदा हो रहे हैं। जनताको दोनोंसे तकलीफ है! स्त्रियाँ दुःखी हैं, बच्चे दुःखी हैं। इसलिए यह गलत काम बन्द कर देना चाहिए।

× × ×

लल्लूदादाका गाँव यहाँसे पास ही पड़ता है। आज सोचा था कि उनके गाँवपर हम लोग दिनमें धावा मारेंगे, पर उन्होंने कहा कि वहाँ बूढ़ी माताजीके सिवा और कोई नहीं है। इसलिए नहीं गये। पर शामकी सभामें देखा कि उनकी पुत्रवधू कमला मेरे बगलमें ही आ बैठी है, माताजी भी हैं, मामी भी! यह खूब रहा!

× × ×

दोपहरमें लाखन सिंहकी बहन सोनचिरैया बाबासे मिलने आयी। कुआँरीबहन गयी थीं उसके घर। बाबाने उससे कहा कि सुनते हैं कि तुम्हारा भाई तुम्हारी बात मानता है। उसके पास मेरा यह सन्देशा भेज दो कि बाबा कहता है कि तुम अपना गलत रास्ता छोड़ दो। अपने कियेके लिए पश्चात्ताप करो। भगवान् तुम्हें सद्बुद्धि दे।

कुछ देर हम लोग सोनचिरैयासे बातें करते रहे। दो छोटे-छोटे बच्चे थे उसके साथ—एक नौ सालका, दूसरा चारका। बताया उसने कि बड़ी तंगीसे उसकी गुजर-बसर चलता है।

× × ×

[illegible] बाबाने कहा :

यह जिला [illegible] मशहूर है। यहाँके लोग ज्यादा तादादमें सेनामें भर्ती हैं। [illegible] हुए चालीस हजार सैनिक इस जिलेमें हैं। यह बहादुर लोगोंका जिला है। यहाँके लोग देश-रक्षाके लिए हर [illegible] तैयार रहते हैं। लेकिन इधर [illegible] यहाँ डाकू-समस्या चली है। हमारी निगाहमें कोई डाकू नहीं, भगवान् किसीको डाकू पैदा नहीं करते। [illegible] लोग ऐसे कामोंमें लग जाते हैं। वे जगह-जगह भटकते रहते हैं हमारी तरह—'रैन बसेरा कर ले डेरा'! कहीं एक रात, कहीं चन्द घण्टे, इस तरह बिताते हैं। बाल-बच्चोंसे दो-चार महीनेमें कभी भेंट हो पाती है। बड़ी कठिन जिन्दगी है, जान हमेशा खतरेमें रहती है।

ये लोग बहादुर तो होते ही हैं, पर गलत राहपर चले जाते हैं और गलत काम कर बैठते हैं। फिर पुलिस पीछे लगती है। फिर उन्हें डाकू ही बने रहना पड़ता है। मैं मानता हूँ कि पुलिस नये-नये डाकू पैदा करती है। सरकारके पास एक ही उपाय है। कुछ लोग मुखबिर बनते हैं, वे डाकुओंको फोड़नेके काम आते हैं। उन्हें भी बन्दूक मिल जाती है। ग्राम-रक्षा-दलवालोंको भी बन्दूक मिल जाती है। लेकिन बन्दूकसे मसला हल होनेवाला नहीं है। बन्दूकके चलते किसीको चैन-से रहनेको नहीं मिलेगा। भय फैलेगा। बहादुर डरपोक बन जायेंगे। बन्दूक हटनी चाहिए। हम सच्ची बहादुरी सिखानेके लिए यहाँ आये हैं। लाठी, तलवार, बन्दूक कोई भी शस्त्र जब हाथमें आता है, तो आदमी डरपोक बन जाता है। उससे मजबूत शस्त्रास्त्रवाला आता है, तो वह डर जाता है। सच्ची बहादुरी आत्मासे काम करनेमें है।

बाबाके हाथमें डण्डा भी नहीं रहता। किसी भी जंगल, पहाड़में बाबाको डर नहीं मालूम हुआ। यह कौन-सा बल है? यह आत्मबल है। बाबाको किसीसे डर नहीं, सबपर उसका प्यार है। जिसके मनमें प्यार है, वह डर नहीं सकता। जो लोग निर्भय होते हैं, उनपर कोई

इच्छा नहीं करता। आत्मा कभी मरती नहीं। देह तो जानेवाली ही है। जो शख्स इस बातको जानता है, वह बहादुर है।

आज एक बहनसे मौतकी बात हुई थी। मान लो, आज मौत लिखी है, तो वह कैसे टाला टलेगी? आपके हाथसे दहन लिखा होगी! जिस दिन जानेको है, उस दिन यह शरीर जायगा ही। शरीर जबतक रहेगा, तबतक मरण-स्मरण नहीं हुआ। अगर भी इस बातको समझते हैं। बहादुर वह है, जो देहसे आत्माको भिन्न मानता है। लेकिन यहाँके बन्दूकको बहादुरीका आधार मानते हैं।

जिसको समस्या हल करनी है। एक एटम बम गिर जाय, तो सब कुछ हल हो जायगा। सारी समस्याएँ हल हो जाएँगी। डाकुओंकी, पुलिसकी, गुनहगारोंकी, ग्राम-रक्षा दलकी। बमके सामने बन्दूक किस कामकी? एक-दूसरेको खतम करनेका काम वह जरूर कर सकती है। इसलिए हमें सच्ची निर्भयता सीखनी होगी। कोई हमें तभीतक डराता है, जबतक हम डरते हैं।

हथियारवालोंकी ताकत कोई ताकत नहीं। पुलिस, डाकू, गुनहगार सबका बन्दूकपर आधार रहता है। उसके आधारसे निर्भयता नहीं आयेगी। निर्भयताकी शिक्षा बच्चोंको देनी चाहिए। वे प्रतिज्ञा करें कि हम निर्भय रहेंगे। माता-पिता तमाचा लगाकर उन्हें नियमितता सिखाते हैं, जो ठीक नहीं। लाख कमाकर ये करोड़ों गँवाते हैं।

यहाँका क्षेत्र बहादुरोंका क्षेत्र बन सकता है। बन्दूक उठानेमें निर्भयताका कुछ हिस्सा तो आता ही है, पर उसके छोड़ देनेपर सच्ची बहादुरी आयेगी और तब हम आत्माके बलपर दुर्जनोंसे लड़ सकेंगे। 'ग्राम-रक्षा दल'के बदले 'शांति-सेना' बननी चाहिए। वह जगह-जगह जाकर शान्ति फैलायेगी। सबसे खतरा तो गुस्सेका है। गुस्सा ही सारे अनर्थकी जड़ है। बन्दूकोंकी दौलतसे शान्ति नहीं होगी।

लिये, तो उसका मतलब है कि उसे दस बार

पचासों बार गुस्सा आया होगा, पर उसने को

हाथमें बन्दूक नहीं! बन्दूकवालोंसे मैं कहता हूँ कि बन्दूक हटाओ। बन्दूक हटानेके लिए निर्भयता चाहिए। उसके लिए ज्ञान चाहिए, विवेक चाहिए और वह विवेक आयेगा सत्संगसे।

"बिनु सत्संग विवेक न होई। राम-कृपा बिनु सुलभ न सोई॥"

गाँव-गाँवमें सत्संग होना चाहिए। रामायणकी कथा, गीताकी कथा चलनी चाहिए। बच्चोंको पीटना बन्द करना चाहिए। उन्हें सिखाना चाहिए कि डरो मत। सब लोग निर्भय बनें और यह क्षेत्र, जो आज 'डाकू-क्षेत्र' कहलाता है, वह सत्याग्रहियोंका क्षेत्र, 'साधु-क्षेत्र' बन जाय।

× × ×

बाबाके प्रवचनके उपरान्त लल्लूदादाने खचेरेको लाकर बाबाके चरणोंमें उपस्थित किया। बोले : बाबा, ये खचेरे भाई हैं, सिकाटा गाँवके। इनसे एक साधुने कहा कि सम्वत् '१७ से '२० के भीतर एक बाबा इधर आयेगा। वह तुम्हारा उद्धार करेगा। ये मानते हैं कि वह बाबा आप ही हैं!

खचेरेने बाबाको प्रणाम करके कहा : बाबा, अबतक मैं गलत रास्ते पर था। अब कभी कोई गलत काम नहीं करूँगा। आप मेरा उद्धार करिये।

× × ×

सभाके उपरान्त मैं चि० कमला और लल्लूदादाके परिवारको बाबाके पास ले गया प्रणाम कराने। मैंने कहा : बाबा, यह है कमला, दीवान प्रद्युम्नसिंहकी बेटी, लल्लूदादाकी पुत्रवधू। दादाका पुत्र राजेन्द्र था न आपके साथ कई दिन? ये हैं राजेन्द्रकी माँ, ये हैं उसकी दादी!

थोड़ी देरमें वे लोग [illegible] अपने गाँवके लिए चल दिये।

× × ×

बागियोंके आत्मसमर्पणको लेकर बाबाके पास बधाईके पत्रों और तारोंका ताँता लग रहा है। [illegible] आज ही आया है एक पत्र। उसमें [illegible] आनन्द, श्रद्धा और कृतज्ञता [illegible]!

राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबूका तार है :

"आज सारा राष्ट्र आपके उस कार्यकी ओर आशा और प्रसन्नताकी दृष्टिसे देख रहा है, जिसके द्वारा आप डाकुओंमें उत्तम एवं नैतिक भावना जाग्रत करनेमें सफल हुए है, और जिसके द्वारा उन्होंने उत्साहित होकर आत्मसमर्पण किया है।

"आपके प्रयत्न हम बहुतोंके लिए उस नैतिक भावनाके सफल एवं उत्तम परिणाम हैं, जिनके द्वारा गलत मार्गपर चले हुए व्यक्ति उत्तम मानव बननेको अग्रसर हो रहे हैं। मैं आपके उद्देश्योंकी पूर्ण सफलताकी कामना करता हूँ और आपके प्रति अपनी सद्भावना और सम्मान प्रकट करता हूँ।"

× × ×

राष्ट्रपतिने मेजर जनरल यदुनाथ सिंहको भी तार भेजा है :

"आप उत्तम मानव बनानेके काममें अग्रसर हो रहे हैं। मैं आपके उद्देश्योंकी पूर्ण सफलताकी कामना करता हूँ एवं आपके प्रति अपनी सद्भावना और सम्मान प्रकट करता हूँ।"

० ० ०

दोस्तोंके पास बाबाका सन्देश पहुँचाओ!

नयागाँव

२७ मई '६०

आज प्रातः डॉक्टर सुशीलाने छेड़ दी सत्यं, शिवं, सुन्दरम्‌की बात! भाव-विभोर हो उठे बाबा। एकके बाद एक भावपूर्ण उक्तियाँ झरने लगीं उनके मुखसे। "सुन्दरता कहँ सुन्दर करई!" ऐसी श्री रामचन्द्र कृपालुकी अनन्त सौन्दर्यकी रूपराशि आ खड़ी हुई सामने :

···नवकंज लोचन कंजमुख करकंज पद कंजारुणम्।
कन्दर्प अगणित अमित छवि नव नील नीरद सुन्दरम्।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनकसुतावरम्।

तभी किसीने विनोद किया : मोर सुन्दर होता है, मोरनी नहीं। मुर्गा सुन्दर होता है, मुर्गी नहीं। स्त्रियोंको हमेशा सुन्दरताकी ही शिकायत बनी रहती है !

बाबा बोले : आत्मामें स्त्री-पुरुषका भेद कहाँ ! उसमें असुन्दरताका सवाल ही कहाँ आता है !

× × ×

नम्रता और अपरिग्रहकी चर्चा चली, तो बाबा भाव-विभोर होकर गा उठे विनय-पत्रिकाका पद :

नाथ गरीबनिवाज हैं, मैं गही न गरीबी !
'तुलसी' प्रभु निज ओर तें बनि परै सो कीबी !!

फिर ईसाकी उक्ति सुनाते हुए बोले :

The more I have, less I am !

'मेरा सांसारिक वैभव जितना बढ़ता चलता है, उतना ही 'मैं' संकुचित होता चलता हूँ !'

× × ×

"बाबा, ईश्वरके दर्शनमें क्लेश क्यों ?"

बाबा : ईश्वरके दर्शनके लिए संयम तो करना ही पड़ेगा, इन्द्रियोंपर रोक तो लगानी ही पड़ेगी। यह क्लेश उठाये बिना गति नहीं। मौलाना रूमने कहा है :

लब बिबंदो चश्मबन्दो गोश बन्द,
गर नबीनी सिर्रे हक बरमा बिखंद !

अपने होठ बन्द रख, अपनी आँखें बन्द रख, अपने कान बन्द रख। फिर भी तुझे सत्यका गूढ़ तत्त्व न मिले, तो मेरी हँसी उड़ाना !'

इतना जरूर है कि सगुण कुछ सुलभ है, निर्गुण कुछ कठिन है। निर्गुणवालेको कुछ अधिक क्लेश उठाना पड़ता है !

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥

यों सगुणके उपासकको भी इन्द्रियोंका दमन करना है, निर्गुणके उपासकको भी। सगुणवाला उन्हें हरिचरणोंमें चढ़ा देता है, निर्गुणवाला उनपर पहरा बैठाता है। मूल बात दोनोंमें है : संयम।

× × ×

राजनीतिवाले लोग जब यात्रामें आ जाते हैं, तब कुछ राजनीतिकी चर्चा भी छिड़ ही जाती है। ऐसी ही चर्चाके बीच बाबाने कहा : आज गांधीके कई बड़े शिष्य एक-दूसरेका विरोध करते हैं, एक-दूसरेकी टीका करते हैं, यहाँतक कि कोई किसीको 'देशका दुश्मन'तक कह डालता है। यह बहुत गलत है ! इन बड़े लोगोंको एक-दूसरेका विरोध करनेके बजाय सोचना चाहिए कि हमारा Common Ground क्या है ? किन मुद्दोंपर हम एक हैं। उसके आधारपर प्रोग्राम बनाकर देशका काम आगे बढ़ाना चाहिए।

× × ×

"आपके सिरके बाल तो काले हैं, दाढ़ीके बाल कैसे सफेद हो गये बाबा ?"

डॉक्टर सुशीलाका यह प्रश्न सुनकर बाबा मुसकराते हुए बोले : आश्रममें मच्छर बहुत थे। बापूने उनकी दवा निकाली थी : मिट्टीका तेल। हम लोग मिट्टीका तेल चुपड़कर लेटते। उसीका यह नतीजा है !

× × ×

ऊँचे-नीचे, टेढ़े-मेढ़े रास्तेसे होते हुए हम लोग जब यहाँ पहुँचे, तो धूप खिल रही थी। आजका पड़ाव मन्दिरमें है। ठहरनेकी जगह कम है। हम लोगोंने सदर दरवाजेके बगलमें एक तरफ अपना बिस्तर डाल दिया।

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने कहा : हिन्दुस्तानके गरीबों, अमीरों और मध्यम-वर्गके लोगोंकी एकता बनानेके लिए हम घूम रहे हैं। हम चाहते हैं कि मालिक और मजदूर, छोटे और बड़े मिलकर एक रहें और ग्राम-परिवार बनायें; बीमारोंकी, विधवाओंकी सेवा हो; दुःखियोंका दुःख मिटे

और बेकारोंको काम मिले। हम चाहते हैं कि गाँव-गाँवमें ग्राम-स्वराजका नमूना पेश हो। इसके लिए पहला कदम यह है कि जमीन सबको बाँट दी जाय।

इधर जबसे हम चम्बल घाटीमें आये हैं, तबसे यहाँ कहा आ रहा है कि यहाँ डाकू-समस्या है।

धर्मक्षेत्रे भिण्डक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
पुलिसाः डाकवश्चैव किमकुर्वत संजय ?

भिण्ड-क्षेत्रमें पुलिस और डाकू दोनोंमें भिड़न्त हो रही है, दोनोंसे लोग तङ्ग हैं। डाकुओंकी आफतसे बरी करनेके लिए पुलिस आयी। अब उसके कारण भी लोगोंको मुसीबत उठानी पड़ रही है। इससे समस्या उलझती है, सुलझती नहीं।

कुछ बागी भाइयोंने अपने शस्त्र हमें सौंप दिये और अपनेको भी सौंप दिया। चार दिन हमारे साथ घूमते रहे। उसके बाद भिण्डमें वे जेल चले गये। अभी कुछ लोग और बचे हैं। वे भी अगर आ जाते हैं, तो अच्छा होगा। उनमेंसे अगर कुछ लोग यह सोचें कि दो-चार महीना देख लेंगे, उसके बाद आयेंगे, तो ऐसा विचार मूर्खताका होगा। विज्ञानके जमानेमें जल्दी करनी चाहिए। पश्चात्ताप धीरे-धीरे नहीं होता। बाबापर विश्वास रखकर जो लोग अभीतक नहीं आये हैं, वे भी आ जायँ!

कल एक भाई आये। उन्होंने अपने-आपको हमारे सुपुर्द कर दिया। उनका कहना था कि एक बाबाने उनसे कहा था कि सत्रहसे बीस तवत्तक एक बाबा आयेगा, तुमको उस बाबासे मिलना चाहिए और अपनी गलती माफ करानी चाहिए। तो जंगलमें रहनेवाला कोई बाबा हमारा प्रचार कर रहा है, उसे हम जानते भी नहीं! "आगिये रघुनाथ कुँअर पंछी बन बोले!" जंगलके पंछी बाबाका संदेश पहुँचाते हैं। परमेश्वर ही यह सारा इन्तजाम करता है, लेकिन औजारके तौरपर वह हमारा उपयोग कर लेता है। आप सब लोग हमारे प्रचारक बन जायँ और बाबाका सन्देश बाबाके दोस्तोंके पास पहुँचा दें। परमेश्वरका नाम लेकर हमारे उन भाइयोंको

हमारे पास आना चाहिए और अपने किये हुए कामोंके लिए पश्चात्ताप करना चाहिए।

× × ×

दोपहरमें मध्य प्रदेश सरकारके सूचना और प्रचारवाले अधिकारी आकर बोले कि हम बाबाका वह सन्देश, जो उन्होंने पुलिसवालोंके बीच अम्बाहमें दिया था, छपवाकर हजारोंकी संख्यामें बँटवाना चाहते हैं। वह प्रवचन उन्होंने 'टेपरेकर्ड'से तैयार किया था। कुछ अंश काट दिया था। बाबाने उक्त प्रवचन छापनेकी अनुमति दे दी।

तीसरे पहर किसीने हमारे खुले बिस्तरोंपर पड़ी अच्युतभाईकी धोती उड़ा दी! बहुत खोजा, पर गयी चीज कहीं हाथ लगती है?

× × ×

इधर आदेश हुआ है कि कोई भी बागी जैसे ही आत्मसमर्पण करे, वैसे ही उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जाय। खचेरेको पुलिस गिरफ्तार करके ले जाना चाहती थी, पर वह दो-चार दिन बाबाका सत्संग करना चाहता था। उच्च अधिकारियोंसे बात की गयी, तो उन्होंने खचेरेको भिण्ड जिलेकी समाप्तितक बाबाके साथ रहनेकी अनुमति दे दी।

डॉक्टर सुशीला नायर आज भिण्ड जेलमें बागी भाइयोंसे मिल आयीं।

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना-सभामें बाबाने कहा :

लोगोंका खयाल है कि यह डाकू-क्षेत्र है। दरअसल यह बात सही नहीं! यह वीरोंका, बहादुर लोगोंका क्षेत्र है। पुराने जमानेमें बहादुरीका यह तरीका था कि बचावमें लोग तलवार चलाते थे, लेकिन अब तलवार, बन्दूक जैसे शस्त्रास्त्र पुराने पड़ गये। पन्द्रह-सोलह साल पहले हिरोशिमापर एक बम गिराया गया, हजारों लोग मरे और घायल हुए, तरह-तरहकी बीमारियाँ भी फैलीं। जापानने समझ लिया कि अब शरण जानेके सिवा दूसरा चारा नहीं। पर अब तो हिरोशिमापर

गिराये गये बमसे भी हजारगुनी ताकतवाले बम बन गये। ऐसे नये शस्त्रोंके सामने तलवार, बन्दूकका काम मूर्खताका है।

पुराने जमानेमें समाजको काबूमें रखनेका काम संन्यासी करते थे। वे घर-घर जाकर ज्ञान पहुँचाते थे। शंकराचार्य पन्द्रह सौ साल पहले विचार पहुँचानेके लिए केरलसे कश्मीर पहुँचे थे। ऐसे सन्यासियोंके लिए कहा गया था :

> क्षुद्व्याधिश्च चिकित्स्यताम्,
> प्रतिदिनं भिक्षौषधं भुज्यताम्।
> स्वाद्वन्नं न तु याच्यताम्,
> विधिवशात् प्राप्तेन सन्तुष्यताम्॥

'क्षुधारूपी बीमारीके लिए भिक्षारूपी दवा ले लेनी चाहिए। स्वादिष्ट भोजन नहीं करना चाहिए और दैवयोगसे जो प्राप्त हो जाय, उसीमें सन्तोष मानना चाहिए।'

जैनोंमें भी संन्यासी रहते हुए हैं और आज भी हैं। पचीस सौ साल-से यह संस्था चली आ रही है। गुजरात, मारवाड, बिहार जैसे प्रान्तोंमें यह शक्ति फैली थी। ऐसे विचार फैलानेवाले कार्यकर्ताओंकी मैं माँग कर रहा हूँ।

इस क्षेत्रको 'डाकू-क्षेत्र' समझकर पुलिसको सौंप दिया गया है। कुछ बागी भाइयोंने समर्पण किया। यह बहुत बड़ा काम है, लेकिन यह ईश्वरकी लीला है। अभी एक भाईने हमारे पास एक लेख भेजा है, जो उसने सन् १९५३ में एक मासिक पत्रिकामें लिखा था।* उसमें उसने लिखा था कि चम्बल घाटीकी डाकू-समस्या सरकारसे हल नहीं होगी, इसके लिए विनोबाको बुलाया जाय। पुलिसके डी० आई० जी० ने भी तीन साल पहले कहा था कि इसके लिए विनोबाको बुलाया जाय। यह सब ईश्वरकी ही लीला है। मैंने इसमें क्या किया! यह ईश्वरकी ही

* 'विक्रम' (उज्जैन), जुलाई १९५३ : सम्पादकीय टिप्पणी।

हुआ है। हम अगर इस अहंकारको उठा लें, इसे अगर हम अपनी आत्मशान मान लें, तो डाकू भी स्वर्गमें चले जायेंगे, हम नरकमें।

हमने दस मनुष्योंका एक मण्डल बनाया है। इसमें सब पक्ष-मुक्त लोग हैं। पक्षवाले कार्यकर्ता अच्छा इरादा रखते हुए भी बात बिगाड़ देते हैं और दिल तोड़ देते हैं। हमें दिल तोड़ने नहीं, जोड़ने हैं। हमारे मण्डलके कार्यकर्ता न तो किसी पक्षका काम करेंगे और न किसी पार्टीका। वे अपना पूरा समय इस काममें देंगे। इन दसमें एक बहन भी है (राजेन्द्रकुमारी)। इन दसके सौ कार्यकर्ता बन सकते हैं। ये सब आपके खिदमतगार हैं। आप दिल खोलकर अपनी बात इनके सामने रख सकते हैं। रात या दिन जब चाहें, तब इन्हें बुला सकते हैं और इनसे खिदमत ले सकते हैं। हमें यहाँ ऐसे तीन सौ कार्यकर्ता चाहिए।

हमारी एक बहन आज भिंड जेलमें हो आयी है। जेलमें जो बागी भाई रखे गये हैं, वे बहुत खुश हैं। पढ़नेके लिए उन्होंने वाल्मीकि-रामायण और महाभारत जैसे ग्रन्थ माँगे हैं। ये लोग शस्त्रास्त्र छोड़कर आये हैं और रामायण जैसी किताबें पढ़नेको माँगते हैं। साधारण आदमियोंके चेहरोंसे इनके चेहरोंमें कोई फर्क नहीं लगा। इनके चेहरोंमें कोई क्रूरता नहीं, कोई भयजनक बात नहीं। ये साफ-सुथरे भी दिखाई पड़े। बात इतनी है कि ये गलत राहपर लग गये। पुलिस इनके पीछे पड़ती है, तो ये और पक्के हो जाते हैं।

> बन्दूकसे काम लेना जहाँ शुरू होता है, वहाँ बन्दूक बढ़ने लगती है। जैसे बकरीसे बकरी बढ़ती है, वैसे ही बन्दूकसे बन्दूक बढ़ती है। यह बड़ी भयानक बात है कि मुखबिरोंमें, ग्रामरक्षक-दलमें बन्दूकें बँटती हैं। पुलिस और डाकुओंके पास बन्दूकें तो हैं ही। ग्राम-रक्षा-दलको बन्दूक बँटी, तो मैंने कहा कि यह अच्छा भी है, बुरा भी है। गाँववाले अपनी रक्षा आप करें, यह तो अच्छी बात है, लेकिन वे बन्दूकका सहारा लें, यह बुरी बात है। गाँवसे पुलिस हटनी चाहिए।

वाल्मीकि-रामायणमें एक कहानी है कि रामचन्द्रजी अपना धनुर-बाण हमेशा तैयार रखते थे। तो एक रोज सीताजीने कहा कि मुझे इसमें खतरा दिखाई देता है। खतरा क्या है, यह पूछनेपर सीताजीने एक ऋषिकी कहानी सुनायी। उसकी तपस्यासे इन्द्रको डर लगा। वह क्षत्रिय-का रूप धरकर ऋषिके पास आया और बोला कि 'मेरी यह तलवार जरा रख लीजिये, मैं फिर इसे ले जाऊँगा।' लेकिन वह फिर लौटकर आया नहीं। गया सो गया ही! अब उस तलवारको सँभालनेकी जिम्मेदारी उस ऋषिपर आयी। वह जहाँ जाता, तलवारको अपने साथ ले जाता। कोई जानवर उसपर हमला करता, तो तलवारके इस्तेमालकी उसे इच्छा हो जाती। धीरे-धीरे वह हिरण मारने लगा। उसकी तपस्या खत्म हुई और इन्द्रका काम बना। इसलिए हरदम धनुष-बाण चढ़ाये रखनेसे आपकी भी मति पलट सकती है।

जैसी चीज हाथमें होती है, वैसी ही बुद्धि आती है। बन्दूक हाथमें आती है, तो मारनेकी इच्छा बढ़ती जाती है। चाहते न चाहते हुए भी हर आदमीसे कुछ-न-कुछ पाप बनते रहते हैं। इसलिए कहना कठिन है कि कौन गलत राहपर है, कौन नहीं। हम सब गुनहगार हैं। इसके लिए जरूरत इस बातकी है कि हम सब अपने पाप धो डालें। मैंने देखा है कि जिन लोगोंको 'डाकू' कहा जाता है, उनमें भी बहुत अच्छे आदमी हैं। सारी ही मालवकी यात्रामें मुझे कोई दुर्जन नहीं मिला। गुमराह जरूर मिले हैं। अकल-खोये हुए लोग मिले हैं। लाचारीसे दुर्जनका बर्ताव करते हैं। यह हालत हमें दुरुस्त करनी चाहिए। हम जब ऊपरसे अभियान करते हैं, तो घास बनती नहीं। बीस डाकुए तोड़ते हैं, तो पचीस नयी उग आती हैं। इसलिए जड़पर ही हमला करके उसे खत्म करना चाहिए।

महाभारतमें सर्प-सत्रकी कहानी है। आजसे हजारों साल पहले हमारे पूर्वजोंने तय किया कि एक भी सर्प नहीं रखेंगे। लेकिन इतना पराक्रम करनेपर भी सर्प खतम नहीं हुए, सर्प आज भी जिन्दा हैं। परमेश्वरने साँपोंको भी रहनेका हक दिया है।

इन भाइयोंमें बहादुरी है। जोरदार इंजन है, गलत पटरीपर चला गया है। जरूरत इस बातकी है कि पटरी बदल दी जाय। हमारे दोस्त यह समझ लें कि हमें अपना रवैया बदलना है। वे 'बाबा' के सुपुर्द हो जायँ। आपमेंसे जो लोग हमारे दोस्तोंके दोस्त हैं, वे भी उन्हें समझायें और उनसे हमारी मुलाकात करायें। बाबा यह प्यारका काम करता हुआ घूम रहा है। उसकी ईश्वरपर बड़ी श्रद्धा है। इन दोस्तोंकी भी ईश्वरपर श्रद्धा है! ऐसा न होता, तो वे 'बाबा'के पास आते ही क्यों? हम चाहते हैं कि यहाँपर शान्ति-सेना खड़ी की जाय, जिसके जरिये लोग निर्भयता सीखें।

× × ×

शामको बाबाके लिए दही जमानेको थोड़े दूधकी जरूरत पड़ी। गाँवमें गायवाले एक भाईके पास गिलास लेकर दो भाई गये। दूध तो मिल गया, पर रास्तेमें कहा गया एक वाक्य इस समय भी मेरे कानोंमें खटक रहा है! एक आदमी दूधकी बात सुनकर ठण्डी साँसके साथ बोला :

'भगवान्, अगले जनममें मुझे बाबा बनाना, चाहे दारोगा!'

• • •

बच्चोंके झगड़ेसे महाभारत !

रेहुआ
२८ मई '६०

संगम विद्यापीठमें आज छिड़ गया 'कम्यून'का, सामुदायिक जीवनका प्रसंग। 'कम्यून'के साथ 'कम्युनिज्म'का आना स्वाभाविक था और 'कम्युनिज्म'के साथ मार्क्सका।

बाबा बोले : इस विषयमें मेरे विचार किशोरलाल भाईकी पुस्तक—'गांधी और साम्यवाद'की भूमिकामें आ गये हैं। हमें तो ग्राम-परिवार बनाना है। हमें यह पसन्द नहीं कि बच्चे अलग रहें, महिलाएँ अलग। सारे गाँवका पारिवारिक ढगपर विकास होना चाहिए।

× × ×

रास्तेमें आया एक ऊबड़-खाबड़ गाँव। सुशीलाजी डॉक्टर हैं। गन्दगीसे सख्त नफरत! बाबासे बोलीं : बड़े गन्दे हैं हमारे गाँव। जगह-जगह गन्दगीके ढेर लगे हैं।

बाबा बोले : शिवके पास सब अमंगल ही तो रहता है!

× × ×

इधर कई दिनोंसे हमारे पड़ाव दूर-दूरपर हो रहे हैं। रास्ते भी हैं टेढ़े-मेढ़े, ऊँचे-नीचे। वन-बेहड़का पूरा दर्शन हो रहा है। हर पड़ावके साथ किसी-न-किसी बागीका विशेष सम्बन्ध है।

डॉक्टर सुशीला नायरको यों तो पदयात्राका अभ्यास है, पर इन दिनोंकी कड़ी यात्रा उन्हें थका डालती है। आज प्रातः उन्होंने बीच रास्तेमें बाबासे पूछ ही दिया : बाबा, अभी आपके नाश्तेका टाइम नहीं हुआ?

बाबाके नाश्तेका मतलब है पन्द्रह मिनटका विश्राम!

अच्युतभाईको तुलसीदास याद पड़े। पूछने लगे, कैसा है वह पद—सीताके वनगमनका—पुरतें निकसी...!

मैंने याददाश्तपर जोर डालकर पूरा सवैया खोज निकाला। देरतक उसे दोहराते रहे वे :

पुरतें निकसी रघुवीर वधू, धरि धीर दये मगमें डग द्वै।
झलकीं भरि भारकनी जलकी, पुट सूखि गये अधराधर वै॥
फिर पूछति हैं चलनोव कितो पिय पर्णकुटी करिहौ कित है।
तियकी लखि आतुरता पियकी अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै॥

× × ×

बड़ी दुःखद कहानी है आजके गाँवकी! राग-द्वेप, ईर्ष्या-मत्सरकी क्रीड़ा-भूमि रहा है यह। स्कूलके बच्चोंसे झगड़ा शुरू हुआ, बढ़ा, पनपा और उसने कत्ल और खूनका रूप धारण कर लिया!

एक भाईने यहाँकी कहानी हमें यों सुनायी :

यहाँसे थोड़ी दूरपर एक स्कूल है। गाँवके बच्चे वहाँ पढ़ने जाते थे। गड़ेरियाका एक लड़का तेज था। मास्टर लड़कोंसे सवाल पूछता और जब वे ठीकसे जवाब न दे पाते, तो उस तेज लड़केसे दूसरे लड़कोंको चपतें लगवाया करता!

ब्राह्मण-ठाकुरके लड़के!

भड़क उठे वे धीरे-धीरे! उनका कुलीनताका 'अहं' फुफकार उठा : यह गड़ेरियाका लड़का हमें चपत लगाता है!

एक दिन स्कूलके रास्तेमें उन्होंने उस बेचारे लड़केका गला चाकूसे रेत दिया!

कसूर मास्टरका, जान गयी लड़केकी!

लड़केका बाप इधर-उधर दौड़ा, जगह-जगह फर्याद की, पर किसीने कोई ध्यान नहीं दिया।

मुकदमा चला, पर जो पकड़े गये, वे छूट गये!

और तब मनाया गया जश्न !

प्रतिशोधकी आग जल उठी। पीड़ित पिता बागी बन बैठा ! बन्दूक हासिल करके उसने दोको भून दिया—चचाको और भतीजेको !

× × ×

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने कहा : कहते हैं कि इस गाँवमें झगड़ा स्कूलसे शुरू हुआ था। महाभारतकी कुल कहानी बच्चोंके झगड़ोंसे ही शुरू होती है। दुर्योधन, कर्ण, अर्जुनके झगड़े पहले छोटे पैमानेपर शुरू हुए, बादमें वे बढ़ गये !

झगड़ा होता है, गाँवमें पार्टियाँ बन जाती हैं। कोई इस पार्टीका साथ देता है, कोई उस पार्टीका। गाँवके टुकड़े हो जाते हैं। चुनाववाले, सियासी पार्टियोंवाले लोग गाँवमें आकर और भी आग लगा देते हैं। ये टुकड़े फिर जुड़ते नहीं ! हमारा कहना यही है कि आपसी झगड़े भूल जाओ, *गाँवको आग मत लगने दो। मिल-जुलकर गाँवका एक परिवार* बनाओ और अपने यहाँ ग्राम-स्वराज्य ले आओ।

अंग्रेज गये, तो सत्ता हमारे हाथ आयी। उससे इतना ही फर्क हुआ है कि आखिरी फैसला दिल्लीमें होता है, पहले लन्दनमें होता था। देश-का फैसला देशमें होगा, इसका नाम है स्वराज्य।

लेकिन जबतक इस जिलेके गाँवका झगड़ा भिंड जायगा, तबतक गाँवको स्वराज्य नहीं मिला, ऐसा माना जायगा। जब हमारे गाँवका कोई झगड़ा बाहर नहीं जायगा तब यह माना जायगा कि गाँवको स्वराज्य मिला। जबतक गाँवकी योजना गाँवमें नहीं बनती, गाँवके मुकदमोंका फैसला दिल्लीमें होता है, तबतक गाँवकी ताकत नहीं बढ़ती और ग्राम-स्वराज्यकी भावना नहीं आती।

ग्राम-स्वराज्यमें किसीपर अन्याय नहीं होगा। किसीके हितके खिलाफ कोई कुछ नहीं कर सकेगा। नीचेसे नीचे व्यक्तिका भी ध्यान रखा जायगा। सबके पालन, पोषण, रक्षण, शिक्षणका इन्तजाम होगा। इसीके लिए हम गाँव-गाँव समझाते हैं कि तुम सब मिलकर एक हो

जाओ। जाति-पाँति, मजहब, पार्टियोंके झगड़ोंको और व्यक्तिगत झगड़ोंको भूल जाओ। गाँवको आग मत लगने दो।

आज पुलिस, डाकू, मुखबिर, ग्राम-रक्षा-दल—सबके पास बन्दूकें हैं। बन्दूकोंसे मसला हल नहीं हो सकता। उससे गाँवका दुःख नहीं मिट सकता। वह मिटेगा वैरभाव भूलकर एक बननेसे।

आज गाँवमें जो दुःख है, वह इसलिए है कि गाँवमें 'स्वराज्य' नहीं आया। गाँवका माल गाँवमें तैयार हो, सब लोग मिल-बाँटकर खायें, बीमारों, विधवाओं, बूढ़ों और बेकारोंकी जिम्मेदारी गाँव उठा ले। हर गाँवमें 'ग्राम-स्वराज्य' का नमूना खड़ा हो, गाँवमें सरकारका कोई दखल न हो। तालीम वैसी हो, जैसी गाँववाले चाहें। पंचायतमें 'पाँच बोले परमेश्वर'की बात हो, लेकिन आज तो 'चार बोले परमेश्वर', 'तीन बोले परमेश्वर' हो रहा है। चुनाव होता है—पार्टियाँ बन जाती हैं। ग्राम-सभा गाँवके लिए जिम्मेदार हो। हरएकको खाना, हरएकको कपड़ा, हरएकको काम देना उसके हाथमें हो। बाहरका कोई दखल न हो।

आज तो गाँवमें व्यापारी, साहूकार, वकील, डॉक्टर बाहरके पैठते हैं। डॉक्टर घुसा, तो प्राण भी गया, पैसा भी गया। बोतल पैठी, तो लाश लिये बिना बाहर न जायगी। आज लोग कहते हैं कि 'हमारा फेमिली डॉक्टर' है। डॉक्टर भी घरमें आ गया! कायमके रोग, कायमके लिए दवा, कायमके लिए डॉक्टर! झगड़े होते हैं, तो वकील आते हैं। अपना कपड़ा आप बनाते नहीं। आप बाहरका कपड़ा पहने बैठे हैं। मुझे लगता है कि यह नंगोंकी सभा है। वकील, अधिकारी, पुलिस, डॉक्टर जैसे लोग तरह-तरहसे गाँवको लूटते हैं। पहले गाँव स्वावलम्बी होते थे, आज वह बात नहीं। दो सौ सालसे गाँव दिन-दिन क्षीण होते जा रहे हैं।

यहाँ डाकुओंकी समस्या कही जाती है—डाकू आखिर करता क्या है ! इस जेबका पैसा उस जेबमें डालता है। डाकू बेकार, पुलिस बेकार-शिरोमणि, अदालतमें एक बेकार बैठा है, जिसे 'न्यायाधीश' कहते हैं, वह बेकारोंका तस्फिया करता है। इस तरह चारों ओर बेकारोंकी एक जमात है। पुलिस, जेल, अदालतोंपर लाखों रुपया खर्च किया जाता है। पैदावार बढ़ती नहीं, पैदाइश बढ़ती है, झगड़े बढ़ते हैं। भला इस तरह कहीं शान्ति होगी ! आज अगर कहीं लड़ाई छिड़ जाय, तो गाँवको कौन बचायेगा ?

इसलिए तुम तय कर लो कि गाँवमें 'स्वराज्य' लाना है। डाकू कोई नहीं। हर कोई पैदा करके खायेगा, बाँट करके खायेगा, मेहनत करके खायेगा। पाँच मिलकर अपना फैसला करेंगे। बाहरका कोई दखल नहीं रहेगा। जो लोग डाकेके गलत रास्तेपर चले गये हैं, वे अपने कामका पश्चात्ताप करें और निर्भय होकर 'बाबा'के पास आ जायँ।

× × ×

अच्युतभाई और राजकुमारके साथ कुएँपर नहानेके लिए राव-साहबकी हवेलीकी तरफ जा रहा था, तभी शोर मचा : 'श्रीपला, आओ ! श्रीपला आओ !' (श्रीपाल आया !) श्रीपाल इधरका एक बागी है। सुना कि वह आत्मसमर्पणके लिए तैयार था, पर अपने किसी विरोधीको देखकर भड़क गया और प्रतिहिंसाकी भावनाको दबा न सकनेके कारण वापस लौट गया।

एक घरसे गिर्री, रस्सी और डोल माँगकर एक कुएँपर हम लोगोंने कपड़े साफ किये और नहाया। बाल्टी माँजकर देने लगे, तो बाल्टीवालेने वैसे ही हमसे बाल्टी छिना ली : 'ऐसा कैसे ! आप लोग तो हमारे अतिथि हैं !'

× × ×

दोपहरमें खा-पीकर हम लोग तम्बूमें लेटे, तो पसीनेके मारे बुरा हाल था। थकावट और आलस्य कहता था कि थोड़ा आराम कर लिया जाय

और गरमी कहती थी—ना-ना, मैं सोने दे नहीं सकती ! सोवे सो खोवे, जागे सो पावे !

× × ×

तीसरे पहर बाबा निकल पड़े गाँवकी परिक्रमाको। रोकनेपर भी काफी भीड़ साथ लग गयी। दो लडकोंको पकड़ लिया बाबाने : 'इसी गाँवके हो न ?' बोले : 'हाँ।' 'चलो, हमें ले चलो गाँवमें !'

बाबा एक मकानपर कुछ देर ठहरकर पीड़ित परिवारको सान्त्वना देते रहे।

× × ×

सायंकालीन सभामें बाबाने कहा :

अभी हम इस गाँवकी सैरको गये थे। गाँव बड़ा दुःखी है। हमें भगवान्ने सुखमें रखा है। वह परम पिता हमारे सुखकी योजना करता है, लेकिन हम सुखको दुःख बनानेकी कला जानते हैं। पंचमहाभूत हमारी सेवा करते हैं, लेकिन हम उनकी सेवा करना नहीं जानते। साथ ही हम अपने भाइयोंकी सेवा करना भी नहीं जानते। गीतामें कहा है : "परस्परं भावयन्तः।" एक-दूसरेको प्यार करो, एक-दूसरेकी मदद करो। हम उसके बजाय दूसरोंको दुःखी करते जाते हैं। भला ऐसे कैसे काम चलेगा ?

गाँव-गाँवमें हम देखते हैं कि भाई-भाई आपसमें लड़ते हैं। तीसरा आदमी उनके बीचमें पड़ता है, तो झगड़ा और बढ़ता जाता है। सवाल पेचीदा बनता जाता है। हमें भी सृष्टि माताकी सेवा करनी चाहिए, भाई-भाईकी मदद करनी चाहिए, सबको मिलकर एक परिवार बनाना चाहिए, लेकिन हम ऐसा करते नहीं। फिर भी भगवान् हमें सुखी बनाता है। वह हमारे पापोंका पूरा फैसला नहीं देता। हम तो अपने लिए दुःखकी पूरी योजना कर लेते हैं, परन्तु वह हमें उसका बहुत कम फल देता है।

अभी एक भाईने कहा कि हम पूरा समय सेवामें देना चाहते हैं। यह बहुत अच्छी बात है। इसके लिए जरूरत इस बातकी है कि हमारे

दिलमें प्रेम भरा हो, विधाससे हम सेवा करें और किसी मजहब या पार्टीका कोई ख्याल न करें।

एक भाईने कहा कि कांग्रेसवालोंने एक पर्चा निकाला है, जिसमें दूसरे लोगोंपर शंका प्रकट की है। इस तरहकी शंका करना ठीक नहीं। राजनीतिक पार्टियोंमें मैंने हद दर्जेकी मूर्खता देखी है। शंका, अविश्वास और निन्दा—यही रात-दिन चलता रहता है। भला ऐसे परमेश्वरकी दया कैसे होगी! बबूल बोनेसे कहीं आम मिलेगा? हम एक-दूसरेके प्रति शंका करेंगे, एक-दूसरेका मत्सर करेंगे, एक-दूसरेसे द्वेष रखेंगे, एक-दूसरेके दोष देखेंगे, तो कैसे काम चलेगा? हम 'वन्दे मातरम्' तो कहते हैं, 'वन्दे भ्रातरम्' नहीं कहते! माता कहेगी कि मेरा नाम तो लेते हो, लेकिन आपसमें झगड़ते हो? भाई-भाईमें जब प्यार होगा, तब माता खुश होगी। 'रामायण'के वालि और सुग्रीव जैसे भाई नहीं चाहिए, राम लक्ष्मण जैसे भाई चाहिए।

राजनीतिक पार्टीवाले एक-दूसरेपर अविश्वास करना छोड़ दें। आज रूस, अमेरिका, चीन, पाकिस्तान, हिन्दुस्तान जैसे देश एक-दूसरेपर अविश्वास करते हैं, पार्टीवाले एक-दूसरेपर अविश्वास करते हैं, इसका नतीजा सबको भोगना पड़ता है।

स्वराज्य तो हमें मिला, लेकिन 'स्वराज्य' मिलनेके बाद हमने कौनसा दुर्गुण छोड़ा? क्या हमने आलस्य छोड़ा? द्वेष छोड़ा? छूत-अछूतका भेद छोड़ा? दुर्गुण जबतक जारी रहेंगे, तबतक हमारा दुःख भी जारी रहेगा। स्वराज्यके हो जानेपर भी आलस्य, संशय, जाति-भेद, झगड़े आदि हमने कायम रखे, तो हमारा काम कैसे चलेगा?

आपने खेत तो हासिल कर लिया, पर इसमें फसल तभी आयेगी, जब आप मेहनत-मशक्कत करेंगे। स्वराज्य मिलनेके बाद आपने दुर्गुण छोड़े होते, तो क्यों इतने दुःखी होते? गांधीने मुल्कको जो रास्ता बताया है, उसपर आपको चलना चाहिए।

यहाँका क्षेत्र 'डाकू-क्षेत्र' के नामसे बदनाम है। मैं कहता हूँ कि यह

सज्जनोंका क्षेत्र है। आपको चाहिए कि आप सज्जनता जगायें। राष्ट्रपतिने हमारे पास एक प्रेमभरा पत्र भेजा है। उसमें हमारा अभिनन्दन किया है। कुछ भाइयोंने हमारे पास आकर शस्त्रास्त्र अर्पण कर दिये हैं। जब कुछ भाइयोंमें ऐसा परिवर्तन हो सकता है, तो और लोगोंमें सज्जनता क्यों नहीं प्रकट हो सकती? हमें सत्यको सबसे ज्यादा महत्त्व देना चाहिए। अपना दिल सच्चा बनाइये, तो भगवान् उसमें दाखिल होंगे। यह क्षेत्र साधु-क्षेत्र बन सकता है। उसके लिए ये चार बातें करिये :

१. प्यारसे रहिये।

२. निर्भय बनिये।

३. अपनी गलतियोंका पश्चात्ताप करिये।

४. दूसरोंको क्षमा करिये।

हमने दस शान्ति-सैनिकोंकी एक कमेटी बनायी है। उसके काममें पूरी मदद दीजिये। सब जगह शान्ति फैल जायगी।

× × ×

आज बाबासे मिलनेके लिए आनेवाले लोगोंमें एक वकील साहब भी थे। कहने लगे : बाबा, हम आपके कामके लिए कुछ समय दान करना चाहते हैं।

बाबाने कहा : अच्छी बात है। कितना समय दोगे?

'रोज आधा घण्टा!'

बाबा मुसकराकर बोले : आधे घण्टेमें क्या होगा? दण्ड-बैठक लगाओ, मजबूत बनो। देशका काम करनेकी इच्छा है, फिर इतनी कंजूसी क्यों करते हो? सोचते हो, भगवान् एक पैसा चढ़ानेसे खुश होता है, तो दो क्यों चढ़ायें? हर जगह सौदेबाजी!

आखिर उन्होंने सर्वोदयके लिए रोज एक घण्टा देना कबूल किया!

○ ○ ○

समर्पणमें अड़ंगा डालना गलत

रेंडहा
२९ मई '६०

बाबा लोगोंकी महिमा निराली है !

इधर बाबा विनोबा, उधर बाबा परशुराम !

जनरल साहबने कहा : बाबा, महेंदवा गाँवमें परशुराम महाराजका आश्रम है। गाँववालोंने ३० एकड जमीन दान की है। ये चाहते हैं कि वहाँपर एक छात्रावास खुले, जहाँ पुलिससे या डाकुओंसे पीड़ित परिवारोंके बच्चोंको निःशुल्क शिक्षा दी जाय।

बाबा : विचार तो अच्छा है।

यदुनाथ सिंह : परशुराम महाराज चाहते हैं कि उस छात्रावासका शिलान्यास आपके कर-कमलोंसे हो।

बाबा : बाबाजीकी ऐसी इच्छा है, तो ठीक है।

जनरल : पर वह हमारे रास्तेसे कुछ तिरछा पड़ता है। यों ही इधरके पड़ाव ज्यादा-ज्यादा दूरपर पड़ते है, वहाँ चलेंगे, तो रास्ता और भी लम्बा पड़ जायगा।

बाबा : कोई बात नहीं, बाबाजीकी इच्छा है, तो बाबाको थोड़ा कष्ट ही सही !

× × ×

"मंगलं भगवान् विष्णुः···।"

शिलान्यास करके बाबा भीतर घुसे, तो दर्शनार्थी भीड़ श्रवणार्थी बनी बैठी थी। बाबा बोले :

यहाँ ज्यादा तो बोलनेका है नहीं। हमें खुशी है कि हम यहाँ आ सके। नौ सालसे हम भूमिहीनोंके लिए जमीन माँगते हुए गाँव-गाँव घूम

रहे हैं और ग्राम-स्वराज्यकी बात किया करते हैं। साधु-सन्तोंको हमारा यह प्रयोगोंका काम उठा लेना चाहिए।

जो लोग सर्व-संग परित्याग करके निष्काम सेवामें लगे हैं, उनमें हमारे परशुराम बाबा भी हैं। लोक-सेवाका उनका यह स्थान संस्कृतकी शिक्षा दे रहा है। अध्यात्म-विद्याका प्रचार कर रहा है। उसके साथ विज्ञान और जुड़ जाय, तो सर्वोदयकी पूरी तालीम हो जायगी।

यहाँपर बागी लोगोंके बच्चोंके लिए और बागियोंसे पीड़ित लोगोंके बच्चोंके लिए तालीमका इन्तजाम हो रहा है। परशुराम बाबाके प्रयत्नसे इन बच्चोंके रहनेका और उनकी तालीमका प्रबन्ध हो रहा है, यह बड़ी अच्छी बात है। ऐसे अध्यात्मप्रेमी, अनुभवी, सर्वसंग-परित्यागी सेवक मिल जायँ, तो काम बनते देर न लगे।

घर-घरमें ब्रह्मविद्या चलनी चाहिए, राम-नाम चलना चाहिए। सब लोग सर्वोदयको अमलमें लायें, तो यह भिण्ड-क्षेत्र जरूर ही धर्म-क्षेत्र बन जायगा। उसकी तैयारी तो दीख रही है। शस्त्रास्त्रवाले बागियोंने अपनेको हमें सुपुर्द कर दिया, जब कि हमने उनसे साफ कह दिया था कि उन्हें न्याय मिलेगा। उसके लिए उन्हें तैयार होकर आना चाहिए। फिर भी वे आये। भिण्ड जेलमें उनसे मिलकर एक भाई आये हैं। वे कहते हैं कि उनमें परिवर्तन साफ दीखता है। वे रामायण-गीता जैसी किताबें पढ़नेको माँगते हैं! इससे भी इस बातका पता चलता है।

हमने यहाँ काम करनेके लिए दस लोगोंकी एक कमेटी बनायी है, जिसमें हमारी यह कुँआरीबहन भी है। इसके पति भी हैं। सब लोग हमें सहयोग देकर प्रेम और शान्तिके कामको आगे बढ़ायें।

× × ×

बाबाने थोड़ी देर घूमकर परशुराम बाबाका आश्रम देखा। जहाँ वे बैठते हैं, जहाँ लेटते हैं, जहाँ समाधि लगाते हैं; उनका आसन, उनका बिस्तर सब कुछ देखा।

'कौन पुस्तक है यह?'

'सर्व-दर्शन-संग्रह।'

उलट-पुलटकर बाबाने कहा : बड़ी अच्छी पुस्तक है। स्वाध्यायके लिए एक ही अच्छी पुस्तक काफी होती है!

× × ×

बाबाके साथ आश्रमसे निकलने लगा, तो लोगोंने घेर लिया—लस्सी पीनेको। सो भी थोड़ी नहीं, एक बड़ा-सा गिलास भरकर!

इतने अच्छे मीठे दहीकी लस्सी!

याद पड़ा मुझे लहेरियासराय—दरभंगा। ८-१० बरस पहले पण्डित जगन्नाथप्रसाद मिश्रके यहाँ ऐसा ही मीठा दही खानेको मिला था!

× × ×

४ बजे हम लोग चले और ९॥ पर यहाँ रँउझा पहुँचे। साढ़े पाँच घण्टे! १४ मीलका ऊँचा नीचा, ऊबड़-खाबड़ रास्ता।

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने कहा : हमने इस जिलेकी अपनी यात्रा आठ दिन और बढ़ा दी है, ताकि हमारा प्रेमका सन्देश हमारे मित्रोंके पास अच्छी तरह पहुँच सके। हम चाहते हैं कि जो लोग गलत रास्तेपर चले गये हैं, वे अपनी गलती कबूल कर प्रायश्चित्त कर डालें और यह सारा क्षेत्र साधु-क्षेत्र बन जाय। जिन बागियोंने शस्त्र समर्पण किये हैं, उनके बाल-बच्चोंकी भी हमें सेवा करनी है, पुलिसवालोंकी भी। हमने आपके १० खिदमतगारोंकी एक संसद् बनायी है। वे घर-घर जाकर हमारा सन्देश पहुँचायेंगे, प्रेमकी बात सुनायेंगे, सुख-दुःखकी बात सुनेंगे। इस काममें हमें सबकी मदद चाहिए।

× × ×

आज बाबाका भी निवास एक तम्बूमें ही है, हम लोगोंका तो है ही। गाँवके बाहर हमारा डेरा लगा है। नदी किनारेका यह ऊबड़-खाबड़ गाँव बहुत गहन प्रदेशमें है। कौन आता-जाता है इधर! न यहाँ पहुँचनेके लिए सड़कें हैं, न ठीक-ठाक रास्ते ही। लहारकी रानी प्रेमकुमारी, जो हमारी बगलमें ही कुँआरीबहनके साथ ठहरी हैं, कह रही थीं कि चुनावके

नौ सालसे हम ईश्वरपर श्रद्धा करके चल रहे हैं। हमारा तरीका सियासी नहीं। हम यह नहीं मानते कि यह हमारा दोस्त है, यह हमारा दुश्मन है। हम तो यही महसूस करते हैं कि हमारा कोई भी दुश्मन नहीं है। सब हमारे परमप्रिय मित्र हैं, सब हमारे भाई हैं। सगे भाइयोंसे कम किसीपर हमारा प्रेम नहीं, यह बात दूसरी है कि किसीसे हमारी बातचीत कम हो पाती है, किसीसे ज्यादा। सबपर प्रेम होना ही रूहानियतकी, ब्रह्मविद्याकी चाबी है।

देशके किसी भी प्रदेशमें हम जाते हैं, तो हमें यह नहीं लगता कि यह 'परदेश' है। सभी प्रदेशवाले यह महसूस करते हैं कि बाबा हमारे ही प्रदेशका है। हर जगह हमें ऐसा लगता है कि हम अपने ही घरमें हैं। आज हम मर जायँ, तो हम यह नहीं कहेंगे कि आखिरी विधिके लिए हमारी लाश किसी दूसरी जगह ले जाओ। यहाँ मरे, तो इसी गाँवमें हमारा दहन होगा।

हमारे भाई लल्लूलालका गाँव यहीं पासमें है इटावा जिलेमें। नदीके उस पार। अभी उस दिन इनके घरवाले हमसे आकर मिल गये। आज सबेरे चलते-चलते हमने पूछा : 'क्यों लल्लूलाल, तुम्हारा सच्चा मकान कहाँ है ?' बोले : 'बाबा, जहाँ मरेंगे।' हमें ऐसे ही सेवक चाहिए, जो यह कहें कि जहाँ हम मरेंगे, वहीं हमारा स्थान है। उन्हें महसूस करना चाहिए कि हम जिनकी सेवा करते हैं, वे ही हमारे परमप्रिय भाई हैं। उनके मनमें यह भाव नहीं होना चाहिए कि मेरा गाँव दूसरी जगह है, मेरा घर दूसरी जगह है, मेरे भाई दूसरे हैं।

ये बागी भाई बाबाके पास क्यों आये ? ये बाबापर विश्वास रखते हैं। बाबाकी दृष्टिपर विश्वास रखते हैं। वे मानते हैं कि बाबाका सबपर प्यार है। हमने कह दिया है कि बागी आयेंगे, तो हम उन्हें पुलिसके सुपुर्द कर देंगे। हाँ, इस बातकी हम कोशिश करेंगे कि उन्हें न्याय मिले, उनके साथ सख्ती न हो। इतना जानते हुए भी वे आये। एकने हमें लिखा कि हमें माफी मिल जाय, तो हम आ जायँ। पर मैं माफी देने-

[illegible] कौन ? [illegible] गुनाह [illegible], तो मैं माफ कर देना । दूसरोंका गुनाह मैं कैसे क्षमा करूँ ? जो लोग हमारे पास आये, वे मामूली नहीं हैं । एक [illegible] भी [illegible] आया । हमने उनके साथ प्रार्थना की, बहनोंने राखी बाँधी । वे समझ गये कि बाबाका उनपर प्यार है ।

हमें पता चला है कि कुछ लोग आत्मसमर्पण करना चाहते हैं, पर कुछ लोग उन्हें रोकते हैं । उन लोगोंसे उनका धन्धा चलता है । पकड़े जायेंगे, तो उनका धन्धा कैसे चलेगा ! जो लोग बागियोंके आत्मसमर्पणमें रोड़े अटकाते हैं, उनसे मैं कहता हूँ कि तुम समाजको तकलीफ दोगे, तो क्या भगवान्से तुम्हें इनाम मिलेगा ? ऐसे लोगोंको भगवान् कभी क्षमा न करेगा । वे न तो समाजके हितैषी हैं, न मानवताके !

कुछ लोग कहते हैं कि हमें रक्षाकी चिन्ता है । इसलिए बन्दूकका सहारा चाहते हैं । पर बन्दूकसे किसीकी रक्षा होती है ? रक्षा तो भगवान् करता है । बन्दूकसे तो झगड़े ही बढ़ते हैं । मसले नहीं हल होते । आइक-से हमने प्रार्थना की कि ऐसा Clean Bomb 'क्लीन बम' बनाओ कि जिसमें मरें चाहे जितने लोग, घायल एक भी न हो । उससे दुनियाके २५० करोड़में २०० करोड़ मर जायँ और ५० करोड़ ही रह जायँ, तो खुशीसे मैं नाच उठूँगा ।

इस गाँवमें १२-१३ आदमी मारे गये हैं । बूढ़े नहीं, जवान । आजकी लड़ाईमें जवान ही कटते हैं, बूढ़ोंको कोई नहीं पूछता । डाकू भी जवानोंको मारते हैं । फिर उन्हें अगर फाँसी होती है, तो चलो सारी झंझट खतम । पर अगर १० सालकी सजा होती है, तो सजा किसे होती है ? सजा होती है घरवालोंको । बेचारे भूखों मरते हैं । हम तो कहते हैं कि सजा देनी हो, तो उसे ३ एकड़की सजा दी जाय—जाओ, मेहनत-मशक्कत करो, बच्चोंको खिलाओ ।

जेलसे १० साल बाद वह छूटता है, तो साथी रोने लगते हैं । वह कहता है : रोओ मत, अभी आता हूँ अगले इतवारको । घर पहुँचता

है। बच्चे उसे पहचानते नहीं, बीवी उसे कबूल नहीं करती ! वह फिर अपराध करके जेल पहुँच जाता है। साफ है कि सजा, दण्ड, तलवार, बन्दूकसे कभी मसले हल नहीं हो सकते। पुलिससे, डाकुओंसे, मुखबिरोंसे सब लोग तंग आ गये हैं, फिर भी लोगोंको अक्ल नहीं सूझती !

सारे गाँवको एक परिवार बनाओ, सब मिल-जुलकर काम करो, मिल-जुलकर प्रेमसे अपने मसले हल कर लो, अपनी जरूरतकी चीजें अपने यहाँ पैदा कर लो, मिल-बाँटकर खाओ। गलतीके लिए पछताओ और इस बदनाम क्षेत्रको साधु-क्षेत्र बना डालो।

आज मृदुला साराभाई फिर आ गयीं बाबासे मिलने। श्रीमन्‌जीका निरंजीव भरत भी साथमें है।

आजके मुलाकातियोंमें बहादुरा बागीकी माँ भी थी। मुखिया आदि भी थे। सबसे बात करनेके बाद बाबाने उससे कहा : माँ, तू यहाँ गाँवमें आकर क्यों नहीं रहने लगती ?

बोली : बाबा, मैं तो आकर रह सकती हूँ, पर बच्चोंके साथ नहीं। बहुत दुश्मन हैं मेरे इस गाँवमें ! ● ● ●

वाला कौन ? मेरा गुनाह करता, तो मैं माफ कर देता। दूसरोंका गुनाह मैं कैसे क्षमा करूँ ? जो लोग हमारे पास आये, वे मामूली नहीं हैं। एक भाई तो बम्बईसे आया। हमने उनके साथ प्रार्थना की, बहनोंने राखी बाँधी। वे समझ गये कि बाबाका उनपर प्यार है।

हमें पता चला है कि कुछ लोग आत्मसमर्पण करना चाहते हैं, पर कुछ लोग उन्हें रोकते हैं। उन लोगोंसे उनका धन्धा चलता है। पकड़ जायँगे, तो उनका धन्धा कैसे चलेगा ? जो लोग बागियोंके आत्मसमर्पणमें रोड़े अटकाते हैं, उनसे मैं कहता हूँ कि तुम समाजको तकलीफ दोगे, तो क्या भगवान्‌से तुम्हें इनाम मिलेगा ? ऐसे लोगोंको भगवान् कभी क्षमा न करेगा। वे न तो समाजके हितैषी हैं, न मानवताके !

कुछ लोग कहते हैं कि हमें रक्षाकी चिन्ता है। इसलिए बन्दूकका सहारा चाहते हैं। पर बन्दूकसे किसीकी रक्षा होती है ? रक्षा तो भगवान् करता है। बन्दूकसे तो झगड़े ही बढ़ते हैं। मसले नहीं हल होते। आइक-से हमने प्रार्थना की कि ऐसा Clean Bomb 'क्लीन बम' बनाओ कि जिसमें मरें चाहे जितने लोग, घायल एक भी न हो। उससे दुनियाके २५० करोड़में २०० करोड़ मर जायँ और ५० करोड़ ही रह जायँ, तो खुशीसे मैं नाच उठूँगा।

इस गाँवमें १२-१३ आदमी मारे गये हैं। बूढ़े नहीं, जवान। आजकी लड़ाईमें जवान ही कटते हैं, बूढ़ोंको कोई नहीं पूछता। डाकू भी जवानोंको मारते हैं। फिर उन्हें अगर फाँसी होती है, तो चलो सारी झंझट खतम। पर अगर १० सालकी सजा होती है, तो सजा किसे होती है ? सजा होती है घरवालोंको। बेचारे भूखों मरते हैं। हम तो कहते हैं कि सजा देनी हो, तो उसे ३ एकड़की सजा दी जाय—जाओ, मेहनत-मशक्कत करो, बच्चोंको खिलाओ।

जेलसे १० साल बाद वह छूटता है, तो साथी रोने लगते हैं। वह ... है : रोओ मत, अभी आता हूँ अगले इतवारको। घर पहुँचता

है। बच्चे उसे पहचानते नहीं, बीबी उसे कबूल नहीं करती ! वह फिर अपराध करके जेल पहुँच जाता है। साफ है कि सजा, दण्ड, तलवार, बन्दूकसे कभी मसले हल नहीं हो सकते। पुलिससे, डाकुओंसे, मुख-बिरोंसे सब लोग तंग आ गये हैं, फिर भी लोगोंको अक्ल नहीं सूझती !

सारे गाँवको एक परिवार बनाओ, सब मिल-जुलकर काम करो, मिल-जुलकर प्रेमसे अपने मसले हल कर लो, अपनी जरूरतकी चीजें अपने यहाँ पैदा कर लो, मिल-बाँटकर खाओ। गलतीके लिए पछताओ और इस बदनाम क्षेत्रको साधु-क्षेत्र बना डालो।

आज मृदुला साराभाई फिर आ गयीं बाबासे मिलने। श्रीमन्‌जीका चिरंजीव भरत भी साथमें है।

आजके मुलाकातियोंमें बहादुरा बागीकी माँ भी थी। मुखिया आदि भी थे। सबसे बात करनेके बाद बाबाने उससे कहा : माँ, तू यहीं गाँवमें आकर क्यों नहीं रहने लगती ?

बोली : बाबा, मैं तो आकर रह सकती हूँ, पर बच्चोंके साथ नहीं। बहुत दुश्मन हैं मेरे इस गाँवमें !

● ● ●

'बनिया तो बना ही है चूसनेके लिए !'

अड़ोखर
३० मई '६०

'दुबेजी, आप जाइये ऊँटोंके साथ।'

रेंउझामें रातके ३॥ बजे जनरल साहबकी आवाज गूँज उठी अन्धकारमें।

रामानन्द दुबे बोले : बहुत अच्छा ! जा रहा हूँ मैं।

कलसे ही बाबाने कह दिया है कि हम अब रातके ढाई बजे उठा करेंगे, साढ़े तीनपर चल देंगे। चारपर चलनेसे बड़ी देर हो जाती है।

और आजका रास्ता तो एकदम ही विकट है। यहाँसे अड़ोखर पहुँचनेके लिए जीप, मोटर आदिकी गुंजाइश ही नहीं। ऊँटका ही सहारा चाहिए या फिर बैलगाड़ीका।

वटेश्वरदयाल शर्मा और हमारे अन्य प्रबन्धक भाई शामसे ही तलाशमें हैं कि ऊँटों और बैलगाड़ियोंका प्रबन्ध हो जाय। मुश्किलसे दो ऊँट मिल सके। उनपर हम लोगोंने बाबाका सामान लादकर उन्हें चलता कर दिया। बचा हुआ थोड़ा सामान हम लोगोंने अपने-अपने झोलेमें ले लिया।

अपने बिस्तर, अपना सामान रामभरोसे छोड़कर हम लोग 'श्री रमा-रमण गोविन्द हरि' कहकर चल पड़े। बैलगाड़ी मिलेगी तो वह आयेगा, वर्ना भिण्डका लम्बा चक्कर लगाकर अगले पड़ावपर पहुँचेगा, आजके पड़ावपर नहीं।

× × ×

थोड़ी दूर हम लोग बढ़े, तो देखा कि दुबेजी तो सामने खड़े हैं ! पूछा : 'क्यों, आप तो ऊँटोंके साथ न गये थे ?' बोले : 'गया तो था,

जनरल साहबकी हुकुमउदूली कैसे करता ! पर ऊँटवालोंने ही लौटा दिया मुझे। कहा : 'आप क्यों हमारे साथ पैदल भटकेंगे ? हम ऊँटपर चलें, आप पैदल चलें, यह ठीक नहीं। ऊँटपर काफी सामान लदा है और उसके टूटने-फूटनेका डर है, इसलिए उसपर हम आपको बैठा नहीं सकते। तो जब पैदल ही चलना है, तो आप बाबाके साथ ही जाइये। हमारा रास्ता तो और भी लम्बा पड़ेगा।' इसलिए मैं चला आया।'

× × ×

रास्तेमें बाबा नाश्ता करनेको खड़े हुए, तो मुझे सामने पैरमें पट्टी बँधे देखकर पूछने लगे : पैरमें क्या हो गया है ?

अच्युतभाईने बताया : बचाने गये एक बच्चेकी जान, घाव लग गया इनके पैरमें। अभीतक ठीक नहीं हो पाया।

'तो साथमें सवारीपर क्यों नहीं चलते ?'

'यह सत्संग फिर कैसे मिले, बाबा !'

× × ×

नूर भीड़ थी स्वागतके लिए। पिछले दिनों देहाती-ही-देहाती स्वागतार्थी रहते थे, आज पढ़े-लिखे काफी तादादमें थे; छात्र भी थे, अध्यापक भी।

हाईस्कूलमें हमारा पड़ाव पड़ा।

यह अभागा स्कूल ! गत वर्ष २५ नवम्बरको कुछ बन्दूकधारी बागी आये और रुपया ऐंठनेके लिए यहाँके एक लड़केको जबरन उठा ले गये ! पाँच मास बाद बेचारेकी विकृत लाश ही माँ-बापके पल्ले पड़ी !

× × ×

सुभद्राकुमारी कहती थीं :

मैं बचपनको बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी।
नन्दनवन-सी फूल उठी यह छोटी-सी कुटिया मेरी !

बच्चोंको देखकर बाबाका भी वैसा ही हाल हुआ। प्रवेश-प्रवचनमें कहा उन्होंने : बच्चोंके दर्शनसे हमें बड़ी खुशी हो रही है। हम भी बच्चे

बच्चे थे। स्कूल जाते थे, तो हमेशा हमारे सामने देशका चित्र रहता था कि हमारा देश आजाद नहीं है, इसे आजाद करना होगा। जबतक इसे आजाद नहीं कर लेंगे, तबतक और कोई काम न करेंगे। साथ ही यह भावना भी थी कि चित्त-शुद्धि नहीं रहेगी, तो कोई अच्छा काम नहीं कर सकेंगे। दो ही बातें थीं तब हमारे सामने—चित्तकी शुद्धि बढ़े और देशकी सेवामें जीवन बीते। एक दिन ऐसा भाव आया कि घर छोड़कर निकल पड़ना चाहिए। बात है १९१६ की। जाना था हिमालयमें, ठहर गया काशीमें। तबसे संसारके कामोंमें प्रवेश नहीं हुआ, देश-सेवामें लग गया।

हमारी बात सुनकर बच्चोंको लगता होगा कि हम क्या करें ! उस समय तो आजादीकी धुन थी, पर आज क्या है ? आज हमें आजादी मिल गयी है जरूर, पर दिल और दिमागकी आजादी हमें नहीं मिली। उस आजादीकी हमें बात करनी है। साथ ही कुल दुनियामें अशान्ति मची है, वह शान्ति भी लानी है। देशको सुखी बनानेके लिए जिन गुणोंकी जरूरत है, उन गुणोंको बच्चे सीखें। दुर्गुण छोड़ें। एक होकर मेहनत करें, शान्ति-सेनाका काम करें और विश्व-नागरिक बनें।

गाँवके लोग गाँवको परिवार बनायें, आपसमें कतई न झगड़ें। परमेश्वरकी भक्तिमें लीन हों और ग्राम-स्वराज्यकी स्थापना करें।

× × ×

सभासे निकल रहा था, तभी भीड़में किसीने मेरे घायल पैरपर धोखेसे कसकर अपना जूता रख दिया। बुरी तरह सारा शरीर झनझना उठा। कुछ देर बैठा रहा पैर पकड़े !

नाश्तेका आज चकाचक इन्तजाम रहा : हलुआ, लस्सी, पकौड़ी। सो भी थोड़ी नहीं, बहुत-बहुत। शुक्लाजी बोले : अब दो-तीन दिन ही तो आप हमारे जिलेमें और हैं। अन्त-अन्तमें तो हम अच्छा खिला-पिला लें आपको !

× × ×

बाबाका सामान तो कुछ देरमें आ गया, पर हम लोगोंका सामान नहीं आया सो नहीं ही आया ! गनीमत थी कि झोलेमें जाँघिया, गमछा रख लिया था। नहानेका काम चल गया। नहा-खाकर कुछ देर आराम।

कुँआरीबहनका वृद्ध और अशक्त शरीर ठीकसे उनका साथ नहीं दे पाता है। वे अस्वस्थ हैं, पर बाबाके साथ पदयात्राका मोह नहीं छोड़ पातीं। आज उनकी तबीयत काफी ढीली है।

× × ×

लाउडस्पीकर शामतक भी नहीं आ सका। प्रेसवाले कुछ लोग किसी-न-किसी तरह जीपसे आ पहुँचे यहाँ। पूछने लगे हमसे कि कल क्या-क्या हुआ ? हमने प्रमुख समाचार बता दिये। महँदवाके शिलान्यासके समाचारमें उन्होंने बड़ी दिलचस्पी दिखायी।

× × ×

शामके प्रवचनमें बाबा बोले :

हमें खुशी है कि पूरा समय देकर काम करनेवाले १० सेवक हमें मिल गये हैं। यह हमारी 'लक्ष्मण समिति' है—तगादा करके आपसे काम करायेगी—जैसे लक्ष्मणको देखते ही सुग्रीव बोला : क्षमा करिये महाराज, हम सब विषयी हैं। हमने वादा तो किया, पर भूल गये।* आप सब भी हमारा काम करनेको राजी हैं, पर विषय-वासनामें, संसारमें फँसे हैं। तगादा करके आपसे काम लेनेवाला आदमी चाहिए।

यहाँका इलाका आतंकग्रस्त है, भयग्रस्त है। डाकुका, पुलिसका आतंक छाया है। जो भी एकका पक्ष लेता है, दूसरा उसका विरोधी बन जाता है।

इसका उपाय क्या है ? यही है कि सारा गाँव एक बने, नेक बने। गाँव अपनी जिम्मेदारी उठाये। सबपर अपना प्यार फैलाये। सबकी रायसे चुनाव हो। 'पंच बोले परमेश्वर।' सारे गाँवका एक परिवार बन जाय।

* नाथ विषय सम मद कछु नाहीं। मुनि मन मोह करइ छन माहीं॥
विषय-बस्य सुर नर मुनि स्वामी। मैं पाँवर पसु कपि अति कामी॥

भूमिहीनोंको जमीन मिले। दो सालका अनाज अपने खर्चके लिए गाँवमें रखें। सब भाई मिल-जुलकर अपनी समस्या सुलझायें। बहनें सर्वोदय-पात्रका काम उठा लें।

× × ×

सभाके बाद मैंने अच्युतभाईसे कहा : चलिये, हम लोग गाँवमें चलकर उस लड़केके परिवारवालोंसे बात करें, जिसे डाकू उठा ले गये थे!

स्कूल गाँवसे २-३ फर्लांगपर है। पूछते-पूछते हम लोग उस सेठके दरवाजेपर जा पहुँचे। मालूम हुआ कि मारे गये लड़केका पिता तो भिण्डमें रहता है, यहाँ उसके पिताका एक चाचा है। हमने कहा : ठीक है, हम उन्हींसे बात करेंगे।

हमारे लिए एक चारपाई बिछा दी गयी। लड़केके बाबासे हमारी बातें हुईं।

बड़ी करुण कहानी सुनायी उन्होंने अपहरणकी।

पिछले साल नवम्बरकी बात है। शामको तीन बजेका वक्त था। लड़का स्कूलमें पढ़ रहा था। सात डाकू आ गये बन्दूकें लेकर। पाँच डाकू स्कूलके बाहर इधर-उधर दूरपर खड़े हो गये। दो डाकू उस दर्जेमें घुस गये, जिसमें लड़का था। किसीने बता दिया कि यह है सेठका बेटा। उसे पकड़कर वे लोग बाहर खींच ले गये और फिर सातों जने उसे लेकर चल दिये। बगलके गाँववालोंने एक लड़केको इस तरह डाकुओंके हाथमें पड़ा देखा, तो उनमेंसे एक भला आदमी दौड़ा उसे बचानेको। डाकुओंने कहा : जानकी खैर चाहो, तो मत आओ हमारे रास्तेमें। पर वह नहीं माना। डाकुओंने उसे गोलियोंसे भून दिया!

उसके बाद भारी रकमकी माँग की जाने लगी। कभी एक लाख माँगा, कभी पचास हजार। कई महीने चलती रही यह बात। लड़केके हाथसे ही चिट्ठी लिखवाकर भेजते थे ये लोग। कई बार बापको बुलाया, पर बाप इस डरसे नहीं गया कि बेटा तो फँसा ही है, बापको भी कहीं इसी तरह न फाँस लें।

यह भी देखा गया कि डाकू लोग लड़केके साथ बड़ा दुर्व्यवहार करते थे। खाने-पीनेको भी तंग करते थे। जूतेमें उसे दाल परोसकर दी जाती थी!

लड़केके घरवाले मुँहमाँगी रकम न दे सके और तब ५ महीने बाद डाकुओंने लड़केको मारकर उसकी लाश भिण्ड नगरके खास चौराहेके पास फेंक दी! कलेजा थामकर रह गये सब लोग!

× × ×

लड़केके बाबाने बताया कि बड़ी उम्मीद थी कि जो हुआ सो हुआ, पर अब तो भगवान् कृपा करेंगे, पर सो भी नहीं हुआ। अभी हालमें उसके एक बहन हुई है, भाई नहीं!

हम लोग चलने लगे, तो सेठ हमें स्कूलतक पहुँचाने आये। बताया उन्होंने कि इस स्कूलके बनवानेमें उनके परिवारका बड़ा हाथ है। गाँवमें और आसपास सबके साथ उनका अच्छा व्यवहार है। पर क्या किया जाय! बनियाको तो हर कोई चूसता है!

उनके दुःखसे समवेदना प्रकट करते हुए हमने उन्हें बहुत समझानेकी कोशिश की कि यह जातिका प्रश्न नहीं है, पैसेका लोभ है, जो ये सारे अनर्थ कराता है। पर वे अपनी ही बात बार-बार दोहराते रहे: आप मानें न मानें, बनिया तो बना ही है—हरएकके चूसनेके लिए! जो भी होता है, बनियाको चूसे बिना नहीं रहता।

सेठकी बात रह-रहकर मेरे कानमें खटकती है:

'बनिया तो बना ही है चूसनेके लिए!'

○ ● ○

बुरे कामोंका साफ इजहार करो !

जरसेना
२१ मई '६०

अड़ोखरसे जरसेनाको हम लोग चले, तो रास्तेमें पड़ा सायना । दो हजारकी बस्तीवाला गाँव । लोगोंने आग्रह करके बाबाको रोक लिया गाँवके बाहर मन्दिरपर ।

छोटा-सा मन्दिर, अगल-बगल बगीचा, पेड़ोंपर मोरोंकी सुन्दर पाँत ! मोरोंको देखकर बाबा बहुत खुश हुए । पूछा : कोई मारता नहीं इन्हें ?

लोगोंने कहा : नहीं बाबा । ये पले हुए हैं ।

बाबाने कहा कि सब लोग मिलकर परिवार बनाओ, एक बनो, नेक बनो । जमीन सबकी बना दो, इससे प्रेम और शान्ति बढ़ेगी । शामको जरसेनाके पड़ावपर आओ जमीनके दानपत्र लेकर ।

स्वामी नित्यानन्द शामको ही अगले पड़ावके लिए चल देते हैं और रास्तेमें कहीं रातको रह जाते हैं । उस स्थानपर सुबह हमारे लिए नाश्तेका कुछ प्रबन्ध कर देते हैं । यहाँ भी उन्होंने लस्सी तैयार करा दी थी । पीकर बाबाके साथ चलने लगा, तो एकाध भाई पीछे पड़े : यहाँ दवाखाना है, पैरपर पट्टी बँधवा लो ।

पट्टीके लिए थोड़ी दूर गाँवमें जाना पड़ा । २ मीलका रास्ता पार कर जब यहाँ पहुँचा, तो बाबाका प्रवेश-प्रवचन हो चुका था । पूछा, तो पता चला कि उन्होंने इसी बातपर जोर दिया कि सारे गाँवका मिलकर एक परिवार बनाओ ।

× × ×

आजका डेरा भी स्कूलमें है । देखा कि रेंउझासे चला हुआ हमारा

सामान यहाँ पहुँचा हुआ है। कल बैलगाड़ियाँ न मिलीं, तब जीपसे भिन्डका लम्बा चक्कर काटकर ये लोग इधर आये। फिर अटेरपर जानेकी कोशिश भी की, पर ठीक रास्ता न मिलनेसे थककर यहीं लौट आये।

कदम साहबके पास जेबी रेडियो कल ही देखा था और कुछ समाचार भी सुना था। आज दोपहरमें देरतक सुनता रहा। महेंदवाके धानावासका विनोबा द्वारा उद्घाटनका समाचार भी उसमें सुननेको मिला।

× × ×

आज अपराह्नमें चम्बलघाटी शान्ति-समितिकी बैठक हुई। संयोजक हेमदेव शर्माने इतने दिनकी प्रगतिका विवरण सुनाया। बताया कि बागियोंके घरवालोंसे और गाँववालोंसे मिलकर यह देखा कि लोग शान्तिकी बात प्रेमसे सुनते हैं। जमीन आबाद करनेको तैयार हैं। पीड़ितोंके बच्चोंसे कोई द्वेष नहीं। सबने अपनी-अपनी रिपोर्ट दी। जनरल साहब बोले : हमसे कोई एक सौ आदमियोंने वादा किया कि हम लाखनसिंहसे आपकी भेंट करा देंगे, पर अभीतक कोई भेंट नहीं करा सका !

× × ×

सायंकालीन सभामें बाबाने कहा :

जिन बागी भाइयोंने समर्पण किया है, उनसे हमने साफ कह दिया था कि तुम्हें न्याय मिलेगा, फिर भी वे आये। उन्हें हमने माफीका कोई आश्वासन नहीं दिया। जिन्होंने कई कत्ल किये, कई डाके डाले, उन्हें माफीका आश्वासन मिलता, तो उनके आनेकी कोई कीमत नहीं थी। पर इनके समर्पणकी कीमत इसीसे है कि ये लोग न्यायकी बात सुनकर चले आये। एक भाई तो बम्बईसे चलकर आये।

इन लोगोंपर जो आक्षेप लगाये जायँ, उनमेंसे जो सही आक्षेप हों, उन्हें वे साफ जाहिर कर दें। अपने बुरे कामोंका साफ इजहार करें। जो आक्षेप गलत हों, उनसे इनकार करें। तभी उनका पश्चात्ताप सही ठहरेगा। पश्चात्तापके साथ सत्यनिष्ठा

होती ही है। सचाईकी यह राह खुल गयी है। हम सबको भी अपनी परीक्षा करनी चाहिए और अपना-अपना दिल साफ कर डालना चाहिए।

यह नित्यानन्द, यह श्रीराम गुप्ता, ऐसे ही कई भाई पूरा समय देकर हमारा शान्तिका, प्रेमका काम करनेवाले हैं। ये लोग घर-घर हमारा सन्देश पहुँचायेंगे। सब लोग अपने दिल साफ कर डालें, वैर-विरोधका भाव निकाल डालें और सचाईपर चलें, तो भिण्डमें क्रान्ति हो जायगी और यह क्षेत्र 'साधु-क्षेत्र' बन जायगा।

× × ×

शामको छतपर बाबा परशुरामकी अध्यक्षतामें शान्ति-समितिकी बैठक हुई। लल्लूदादाने बाबाजीसे मेरा परिचय कराते हुए कहा : बाबा, ये भी हमारे इटावा जिलेके हैं।

जनरल साहब चुटकी लेते हुए बोले : 'नदी उस पारके नहीं, इस पारके !' शायद उन्हें किसीने बता दिया है कि मेरा जन्म लहारमें हुआ है, जहाँ पिताजी उस जमानेमें प्रधानाध्यापक थे। ● ● ●

सारी चन्दथें लाकर रख दो मेरे पास

बरहद
१ जून '६०

बरहद पहुँचकर जबतक बाबा हाथ-मुँह धोने गये, तबतक एक भाईने गाया :

तू तो राम सुमिर जग लड़वा दे।

महाराष्ट्रीय होनेके नाते वह अधिक हिन्दी भजन नहीं जानता है। इसलिए इस भजनकी समाप्तिपर उसने एक मराठी भजन शुरू किया :

रूप पाहता लोचनीं सुख झाले हो साजणी ॥
तो हा विठ्ठल बरवा तो हा माधव बरवा
बहुता सुकृताचीं जोडी।
म्हणूनी विठ्ठलीं आवडीं सर्व सुखाचे आगर।
बाप रखुमा देवी वर ॥

भजन पूरा नहीं हो पाया था, तभी बाबा मंचपर आ गये। भजन अधूरा छोड़कर वह भाई बैठ गया, तो बाबाने उसकी अद्भुत व्याख्या कर डाली। बोले : भिण्डमें यह पण्ढरपुरका भजन। आप लोगोंने समझ नहीं पाया होगा। आइये, आपको इसका अर्थ समझाऊँ। महाराष्ट्रमें कीर्तनके पहले यही भजन गाया जाता है।

आँखोंसे भगवान्‌का रूप देखा, उससे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। रोज हम नया रूप देखते हैं, नये चेहरे। बड़ी प्रसन्नता होती है हमें। इसमें सन्देह नहीं कि हम जो रूप देख रहे हैं, वह भगवान्‌का ही रूप है। भगवान्‌का यही एक रूप नहीं है। तीनों लोक उसके अंशमात्र हैं। इन तीनोंसे परे भी है वह। उसका बहुत अंश अव्यक्त है। पृथिवी तीनों

कर बैठे, तो उस कुष्ठरोगीने बतायी गलती। तब पता चला कि ये तो हनुमान् हैं! उनका दर्शन हुआ। भगा देते तो फेल हो जाते।

पता नहीं, यहाँ भगवान् किस-किस रूपमें हैं। वे पिस्तौल लेकर आयें और मैं डर जाऊँ, तो मैं फेल! प्रसन्न होऊँ, प्यार करूँ, कहूँ—बहुत अच्छा! तो भला चलेगी मुझपर गोली!

भगवान्का रूप पहचाननेकी जरूरत है। उसे सँवारो, सजाओ, प्यार करो, तो यह भिण्ड-क्षेत्र धर्म क्षेत्र बन जायगा।

× × ×

आज मन्दिरके भीतर और बाहर हमारा पड़ाव है। भीतर पहुँचते ही महादेवी ताईने बताया कि गाँवमें दो पार्टियाँ हैं, तुम लोग कुछ कर सको, तो करो।

दिनभर हम लोग कभी इधरके लोगोंको समझाते रहे, कभी उधरके लोगोंको। सरपंच, पटेल, वकील, ठाकुर, सेठ—कुछ इधर हैं, कुछ उधर। दोनों अपने-अपने पक्षकी बात करते हैं, अपनेको निर्दोष और दूसरेको दोषी बताते हैं। अहंकार, कुलीनता, मत्सर, पदप्रतिष्ठा तो इस वैमनस्यकी जड़ है ही, भारी उत्पातका साधन है—बन्दूक। दोनों पक्षोंके पास बन्दूकें हैं। पग-पगपर उसकी धमकी दी जाती है।

तीसरे पहर एक भाईके घरपर हम लोग चर्चा कर रहे थे, अचानक उसके मुँहसे निकला : आप हमें सिर्फ एक माउजर और १२ बोरकी दो बन्दूकें दिला दीजिये, फिर हम आपसे कुछ न माँगेंगे।

मैंने हँसकर कहा : आप हमसे बन्दूकें माँगते हैं और हम उल्टे आपकी ही बन्दूकें छुड़ाना चाहते हैं!

बोले : फलाँ बागी अभी बाहर है। उससे हमारी दुश्मनी है। वह हाजिर हो जाय, तो हम अपनी बन्दूकें अभी आपको सौंप दें।

× × ×

तीसरे पहर हम लोग इन दोनों दलवालोंको बाबाके पास लाये। अच्युतभाईने स्थिति समझाते हुए कहा कि अच्छा हो, आप दोनोंसे अलग-अलग बातें करें। बाबा बोले : नहीं, मैं दोनोंसे इकट्ठे बात करूँगा।

और क्या बात की बाबाने उनसे ?

यही कहा उन्होंने : तुम लोग अपनी सारी बन्दूकें लाकर रख दो मेरे पास ! ये बन्दूकें ही सारी खुराफातकी जड़ हैं। इनके रहते वैर-विरोध मिट नहीं सकता।

× × ×

आज यहाँ पंचायत-सम्मेलन भी है। उसमें पंचोंको समझाते हुए बाबाने यही बात फिर दोहरायी कि सब लोग मेरे पास बन्दूकें लाकर जमा कर दें, तो सारे टण्टे समाप्त हो जायँ।

बाबाने कहा : पुराने जमानेमें ग्राम-पंचायत होती थी। लोग उसका फैसला मानते थे। उसकी तरफसे स्कूल चलते थे, ग्रामोद्योगोंका प्रचार होता था—तेलका, बढ़ईका, बुनकरका। घर-घर चरखा चलता था। गाँव स्वावलम्बी रहता था। पंचायतकी तरफसे सारा इन्तजाम होता था। उसके लिए थोड़ा-सा लगान देना पड़ता था। फसलमें सारे गाँवका हिस्सा रहता था। उसमेंसे बुनकर, बढ़ई, अध्यापक सबको हिस्सा मिलता था। हर कारीगरको फसलमें हिस्सा मिलता था। पर अब यह सारी बात चली गयी। धन्धे टूट गये, पंचायतें टूट गयीं। इधर स्वराज्यकी सरकारमें फिरसे पंचायतोंकी स्थापना हो रही है, पर आज 'पाँच बोले परमेश्वर' नहीं है, 'चार बोले परमेश्वर', 'तीन बोले परमेश्वर' हो रहा है। चुनावके कारण गाँवमें आग लग गयी है। तुम्हारी पंचायत तभी ठीक मानी जायगी, जब तुम फैसला करो कि 'पाँच बोले परमेश्वर'—हम सारा फैसला एकमतसे करेंगे। पहले फसलपर सबका हक मानते थे, अब जमीनपर लोगोंकी मिलकियत हो गयी है। मालिक-मजदूर खड़े हो गये। कारीगरोंको नाप-कर फसल देते हैं, उसपर उसका हक नहीं मानते। लेकिन जैसे हवा सबकी, पानी सबका, वैसे ही जमीन सबकी माननी चाहिए। तुम पहले जमीन सबकी बना दो, भूमिहीनोंको अपनेमें शामिल कर लो, ऊँच-नीचका भेद मिटा दो, सारे गाँवका एक परिवार बना लो और सब मिलकर सबकी रायसे फैसला किया करो।

इस गाँवमें वालि-सुग्रीवका युद्ध चल रहा है। दोनों भाई आपसमें लड़ रहे हैं। हमने उनसे पूछा : 'क्यों भाई, लड़नेमें तुम्हें खूब मजा आता है ?' बोले : 'नहीं बाबा, हम लड़ाईसे तंग आ गये हैं।' हमने पूछा : 'कितनी बस्ती है गाँवकी ?' बोले : पचीस सौ। 'बन्दूकें कितनी हैं ?' 'पचीस-छब्बीस !' हमने कहा : तो फिर जैसे घर-घर चूल्हा है, वैसे घर-घर बन्दूक बढ़ाओ ! कितने शर्मकी बात है कि तुम्हें बन्दूक रखनी पड़ती है !

मैं तुम्हारे 'मजेमें' फर्क नहीं डालना चाहता। लेकिन अगर तुम तंग आ गये हो, तो सारी बन्दूकें लाकर रख दो मेरे सामने ! ये कलेक्टर साहब हैं यहाँ, मैं उन्हें सारी बन्दूकें सौंप दूँगा। डाकुओंने बड़ी अच्छी-अच्छी, दूरबीनवाली बन्दूकें हमें सौंप दीं, तुम भी सौंप दो। सोचो तो कि यह ६५ सालका बूढ़ा कभी दुबारा तुम्हारे गाँवमें आयेगा ? वह तुमसे वोट माँगने नहीं आया, अच्छी चीज देने ही आया है। तो तुम रामजीका *नाम लेकर सारी बन्दूकें मुझे दे डालो। गुस्सा तो सबको आता है। जिसके* हाथमें जो औजार होता है, उसे वह चला बैठता है। यह औजार भारी बुराइयाँ सिखाता है। इसलिए इसे छोड़ दो।

तुमने ये बन्दूकें क्यों रखीं ? डाकुओंके डरसे ! तुम खुद डाकू बन बैठे ! डाकू तुम्हारे दिलके भीतर आकर बैठ गया ! ये बन्दूकें किसी कामकी नहीं। इसलिए इन्हें आजसे बिलकुल छोड़ दो। रामजीका नाम लो, सारी जमीन गाँवकी बना दो और सब लोग मिल-जुलकर प्रेमसे रहो। आपसका सारा झगड़ा भूल जाओ ! फिर तो तुम्हारा गाँव गोकुल-वृन्दावन बन जायगा।

× × ×

देखना है कि बन्दूक छोड़ देनेकी बात बरहदवालोंको कहाँतक पटती है ! अगर वे ऐसी हिम्मत कर डालें, तो भिण्डमें ही नहीं, सारे भारतमें उनका नाम अमर हो जायगा !

● ● ●

भय मिटेगा—गाँवको एक बनानेसे

छेमका
२ जून '६०

जलमध्ये वाराहस्सरणम्
रामस्सरणम् सर्व कर्माणि !...

श्रीराम, तुम तो 'प्रकट' हो, फिर 'गुप्त' क्यों ?—श्रीराम गुप्तकी ओर देखकर चुटकी ली बाबाने।

नाश्तेका समय हो गया था। सड़कपर खड़े होकर बाबा दही-शहद लेने लगे। श्रीराम गुप्त सामने पड़े, तो बाबा उनका नाम लेकर विनोद करने लगे।

× × ×

एक प्राकृतिक चिकित्सक बहुत देरतक अपने जीवनके अनुभव और प्रयोग सुनाते रहे। बाबा बोले : प्राकृतिक चिकित्सा क्या करेगी, अगर जीवन ही प्राकृतिक न हो!

× × ×

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने भिण्ड-क्षेत्रमें कार्य करनेकी योजना बताते हुए कहा कि भिण्डका यह क्षेत्र सेवाके लिए बहुत अच्छा क्षेत्र है। छोटा-सा जिला है। मेरे जैसा कोई घुमक्कड़ घूमता रहे, तो महीनेभरमें पूरा चक्कर लगा सकता है। १२ महीनेमें १२ चक्कर। एक दिनमें दो गाँवोंमें जा सकते हैं। सुबह एकमें, शामको दूसरेमें। २५ दिनमें ५० गाँवोंमें घूम सकते हैं। फिर लोग पाँच दिन इकट्ठे बैठकर चर्चा कर लें, अनुभव सुनायें और आगेका काम तय करें। इस तरह ५०० गाँवोंको १० आदमियोंमें बाँटकर काम करें। हर गाँवमें दो-दो, चार-चार सेवक खड़े करें। हमारे ये नित्यानन्द, सर्वोदयानन्द, बाबा परशुराम जैसे साधु प्रयत्न

करें, तो इस क्षेत्रको 'साधु-क्षेत्र' बनते देर न लगे । गाँव गाँव सर्वोदयका उद्देश पहुँचाइये और ग्राम-स्वराज्य स्थापित करिये । इससे अशान्ति हटेगी और जो बागी अभी नहीं आये हैं, वे भी आ जायेंगे ।

× × ×

आज डाकबंगलेमें हमारा निवास है । छोटा-सा बंगला है, पर अच्छा है । इसके आसपास कृषि आदिके शिक्षणका कुछ कार्य चलता है । अधूरेसे बने क्वार्टरोंमें हम लोग ठहरे ।

नाश्तेके बाद नहानेके लिए हम बड़े-से कुएँपर पहुँचे, तो देखा कि पानी एकदम नीलवर्ण है । बड़े-बड़े मेढक इधरसे उधर धमाचौकड़ी मचा रहे हैं । इतने दिन बाद उनके प्रशान्त आवासमें हलचल जो मच गयी है ! पानी खराब था, पर वही पीनेके लिए काममें लाया जानेवाला है, यह देखकर उसे कह-सुनकर रुकवाया ।

भोजनके बाद स्वामी नित्यानन्दसे गपशप होती रही । उन्होंने स्वामी शरणानन्दके कुछ संस्मरण सुनाये । अपनी डायरीसे उनके कुछ अनमोल बोल भी पढ़कर सुनाये । मैंने कहा कि वे पिछली बार काशी पधारे थे, तो कई दिनतक मुझे भी उनके सत्संगका सुअवसर मिला था । अद्भुत है उनकी साधना ! स्पृहणीय है उनकी निरहंकारिता !

× × ×

तीसरे पहर दो कम्युनिस्ट भाई बाबासे मिलने आये । बातोंके प्रसंगमें उन्होंने कहा : अभी इस इलाकेका भय पूरे तौरसे दूर नहीं हुआ । गाँवोंमें कुछ लोग पुलिससे मिले हैं, कुछ डाकुओंसे और कुछ लोग तो दोनोंसे मिले हैं ! अमुक पार्टीवाले डाकुओंको छिपाते हैं । उनसे अपने चुनावका मतलब साधते हैं और लोगोंको डरा धमकाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं । हमने तो यहाँतक देखा है कि एक आदमीके घरपर नीचे पुलिसवाले ठहरे हैं, ऊपर डाकू । एक ही थालीसे नीचे पूड़ियाँ परोसी जाती हैं पुलिसको, उसीसे ऊपर परोसी जाती हैं डाकुओंको !

बाबा बोले : इसीलिए तो मैं ग्राम-स्वराज्यपर इतना जोर देता हूँ—

न कोई पार्टी रहे, न कोई दल। सब मिल-जुलकर गाँवका परिवार बना लें। न व्यक्तिगत मालिकी रह जाय, न ऊँच-नीच या बड़े-छोटेका भेद। फिर कहाँ रहेगा डाकू, कहाँ रहेगी पुलिस?

× × ×

एक भाईने शिकायत की कि उसपर डकैतीका मुकदमा चला था, पर उसमें वह निर्दोष छूटा। तबसे उसपर निगरानी कायम है। वह लुहार है। चार-छह रुपयेकी रोज मजदूरी कर सकता है, पर उसपर रोक लगी है। उसने वचन दिया है कि मैं कभी चोरी न करूँगा, फिर भी उसकी निगरानी नहीं छूटती।

बाबाके पैर छूकर बोला : बाबा, मैं वचन देता हूँ कि कभी चोरी न करूँगा! आप मेरी निगरानी छुड़वा दें।

बाबाने तलाश कराया, तो पुलिसका एक दारोगा मिला। उससे कहा, तो बोला कि बाबा, मुझे इसका अधिकार नहीं। सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब (पुलिस) चाहें तो इसकी निगरानी छूट सकती है।

'अच्छा, देखेंगे!'

× × ×

तभी बाबाको याद पड़ी बरहदकी बात। अच्युतभाईसे बोले : तुम वहाँ फिर गये नहीं, अच्युत?

"बाबा, उन लोगोंने यहीं आनेको कहा था। नहीं आयेंगे, तो जाकर फिर खटखटाऊँगा। शायद कुछ काम बन जाय।"

× × ×

सायंकालीन सभामें बाबाने कहा :

आज एक भाई बता रहे थे यहाँकी हालत। कह रहे थे कि अभी पूरा भय नहीं गया। गाँव-गाँवमें पार्टियाँ हैं, पक्ष हैं। कुछ डाकुओंके साथ हैं, कुछ पुलिसके। मैं कहता हूँ कि ऐसा जादू तो है नहीं कि एक शख्सने चूम लिया और बस भय खतम! कुछ लोगोंने पश्चात्ताप किया, शस्त्र

डाल दिये। एक हवा बनी। अब यह जरूरी है कि गाँव-गाँव जाकर लोग समझायें। तब जाकर निर्भयता आयेगी।

सारा गाँव एक बने। गाँवका एक परिवार बने। पार्टीबन्दी बिलकुल बन्द हो। ग्राम-समाजमें पार्टीवाला कोई आदमी खड़ा ही न किया जाय। ग्राम-पंचायतोंमें, म्युनिसिपल कारपोरेशनमें पार्टियोंके उम्मेदवार खड़े करनेकी क्या जरूरत है? पार्टीवालोंके कारण जाति-भेद, धर्म-भेद, स्वार्थ-भेद, डाकू-समस्या सबको बढ़ावा मिलता है। इसे मिटाकर गाँवको एक बनाना चाहिए। गाँवको तो पार्टीसे परे रखिये। इससे डर खतम करनेमें मदद मिलेगी। मेरी यह सलाह निष्पक्ष है और सबके भलेके लिए है। मैं न तो इस पार्टीका दोस्त हूँ, न उसका दुश्मन। मैं सबका भला चाहता हूँ। देशकी सभी सियासी पार्टियोंमें मेरे मित्र पड़े हैं। मेरे लिए सब मित्र ही मित्र हैं, भले ही आपसमें उनकी पटरी न बैठती हो।

इस धर्मक्षेत्रमें तो सब एक हो जाओ। एक होनेके लिए पार्टीकी बात छोड़नी पड़ेगी। ऊपरके लिए भले चुनाव लड़ो, पर गाँवमें क्यों लड़ते-झगड़ते हो? सब मिलकर समाजकी सेवा करो। टुकड़े-टुकड़े करके समाजकी सेवा करनेका कोई मतलब नहीं। गाँवके टुकड़े मत करो। सबको मिलाकर एक बनाओ। टुकड़ोंके रहते गाँव कैसे खड़ा होगा? जो भी पीड़ित हैं, भयग्रस्त हैं, विधवाएँ हैं, अनाथ हैं, बूढ़े हैं, हरिजन हैं, डाकुओंसे पीड़ित हैं, पुलिससे पीड़ित हैं, सबकी सेवा करना हमारा धर्म है। तभी यह भय दूर होगा।

× × ×

'गीता-प्रवचन' इधर कई दिनोंसे नहीं है यात्रामें। कल ग्वालियरकी रानी प्रेमकुमारीने मुझसे कहा एक प्रति ला देनेको। एक महिलाको भेंट करना चाहती थीं। बोलीं: स्त्रियाँ एक तो यों ही इस ओर झुकती नहीं। कोई झुकता है, तो हमें उसकी मदद करनी चाहिए।

मैंने कहा: ठीक है। देखता हूँ।

पर पुस्तककी एक भी प्रति हमारे विक्रेताओंके पास नहीं थी। लाचार मैंने उनका नोट उन्हें वापस कर दिया।

आज तो 'गीता-प्रवचन'को लेकर तमाशा ही खड़ा हो गया। प्रार्थनाके बाद एक लड़का 'शिक्षण-विचार'की एक प्रति लेकर बाबाके पास पहुँचा।

बाबा 'गीता-प्रवचन' समझकर हस्ताक्षर करनेको तैयार हुए, तभी देखा कि वह तो 'शिक्षण-विचार' है।

लड़का तो रो पड़ा!

उसे चाहिए था विनोबाका हस्ताक्षर। 'गीता-प्रवचन' नहीं मिला, तो दूना दाम खर्च करके 'शिक्षण-विचार' ले आया।

बाबासे उसके आँसू नहीं देखे गये। कलम उठाकर लिख दिया :

० ० ०

चोरको जेल, तो संग्रहीको भी जेल हो !

गुकेड़ा
२ जून '६०

आज जंगम विद्यापीठमें बात चल पड़ी : राष्ट्रभाषा हिन्दी और नागरी लिपिकी। बाबाने कहा : यह बड़ी खुशीकी बात है कि नवसंगठित गुजरात प्रदेशने अपने जन्मके साथ ही यह निश्चय किया है कि उसके कारोबारकी भाषा गुजराती रहते हुए भी उसकी लिपि देवनागरी होगी। बाबा तो बरसोंसे यह कह रहा है कि जिन कारणोंसे 'सबकी बोली' के तौरपर हिन्दीको मान्यता दी गयी है, उन्हीं कारणोंसे नागरीको 'सबकी लिपि' के तौरपर मान्यता मिलनी चाहिए।* नागरी भारतकी तमाम भाषाओंके लिए चल सकती है और चलनी चाहिए, ऐसी मेरी राय है। इसीलिए मैंने 'गीता-प्रवचन' के अनेक भाषाओंके तर्जुमे नागरी लिपिमें छपवा दिये हैं। अगर हमने नागरीको भारतभरमें चलाया, तो आगे चलकर वह भारतके बाहर भी जा सकती है। एशियाके पूर्वी भागकी लिपि भी यह आसानीसे बन सकती है। यों तो मैंने इधर बहुत दिनोंसे लेख लिखना बन्द ही कर रखा है, पर इस बारेमें मैंने अप्रैलके अन्तमें 'भूदान-यज्ञ' के लिए एक लेख भी लिखा था।

× × ×

बम्बईसे फिल्मवाले एक भाई आये हैं। डाकुओंके बारेमें एक फिल्म तैयार कर रहे हैं। आज गुकेड़ाके पड़ावपर पहुँचनेसे पहले उन्होंने बाबाके कितने ही चित्र लिये। रामऔतारके भी।

× × ×

* देखिये 'भूदान-यज्ञ', २९ अप्रैल '६०।

प्रवेश-प्रवचनके पहले लोकेन्द्रभाईकी खँजड़ी बोल उठी लोकभाषामें :

लगन लागो नीको, हुइगौ ग्रामदान जब ही तें ।

बाबा आकर बोले :

आज बम्बईके एक भाईसे बात हो रही थी । डाकुओंका एक फिल्म बनाया जा रहा है । दुनिया जानती है कि डाकुओंका जीवन बुरा है। उनका धंधा बुरा है, पापका है । उसे अच्छा समझनेवाला तो कोई है नहीं । गृहस्थ जीवन, खेतीवाला जीवन बहुत अच्छा है । डाकुओंका जीवन बहुत बुरा है । यह बात हम सब जानते हैं, तब ऐसे फिल्मका क्या उपयोग ? होना तो यह चाहिए कि समाजको यह बताया जाय कि डाकू बनते कैसे हैं ? समाज ऐसी हालतें पैदा कर देता है, जिससे लोगोंको यह बुरा काम करनेकी प्रेरणा होती है । समाजको जबतक ऐसा एहसास नहीं होगा कि हमारी बुराइयाँ ही इस रूपमें प्रकट हो रही हैं, तबतक यह हालत सुधरनेवाली नहीं ।

शहरवाले लोग मानते हैं कि डाकू लोग खूँख्वार होते हैं । इन्हें पुलिस और फौजके ज़रिये खतम कर देना चाहिए । एक भाईने एक चित्र बनाया है, कार्टून बनाया है, जिसमें बाबाके पीछे-पीछे शेर चला आ रहा है ! डाकूको उसने शेरकी शक्ल दी है । यह ख्याल शहरवालोंका है । उनका सारा जीवन पुलिस और फौजके बलपर टिका है, क्योंकि उनका जीवन शोषणसे भरा पड़ा है । उन्हें सारे बचावोंकी जरूरत पड़ती है : जेल, अदालत, वकील, पुलिस, सेना !

ये सब शहरवाले शान्ति चाहते हैं । मैं भी शान्ति चाहता हूँ । ये लोग समाजकी हालतको ज्यों-का-त्यों कायम रखते हुए चाहते हैं । मैं उसकी बुनियाद बदलकर, क्रान्तिके साथ शान्ति चाहता हूँ ।

पुराने समाजके लोग मानते थे कि चोर-डाकू बुरे हैं । धर्म परिपूर्ण होता है—अस्तेय और अपरिग्रहसे । पतञ्जलि, बुद्ध—सबने कहा कि चोरी नहीं करनी चाहिए, पर साथ-साथ यह भी कहा कि संग्रह भी नहीं

करना चाहिए। इन लोगोंने एक बातको मान लिया कि चोरी करना बुरा है, पर दूसरी बात नहीं मानी कि संग्रह करना भी बुरा है। उल्टे जिसके पास संग्रह होता है, ज्यादा संग्रह होता है, उसे 'सेठ' कहते हैं, आदर देते हैं। संग्रहवालेको तकिया देते हैं, चोरीवालेको जेल। सीधी-सी बात है कि अगर चोरीवालेको जेल देनी है, तो संग्रहवालेको भी जेल देनी चाहिए। एकांगीधर्म कभी नहीं टिक सकता!

प्रेम और सहयोगका जो न्याय कुटुम्बपर लागू होता है, वही सारे समाजपर लागू होना चाहिए। पर इधर प्यार है, उधर होड़ है। कुटुम्ब-रचनाका विरोधी कार्य हो रहा है। यह विरोधी रचना, यह समाज-व्यवस्था, यह राज्यव्यवस्था तोड़नी होगी, ऐसा 'महामुनि' मार्क्सने कहा। उसने चिन्तन साफ करनेका तरीका बताया। हम शान्त-क्रान्तिके जरिये शान्ति चाहते हैं, प्रेमके जरिये शान्ति लाना चाहते हैं, पुलिसके जरिये नहीं। ग्राम-दान बन जाय, सब बाँटकर खायें, सब मिलकर एक हो जायँ, तो डाकूकी समस्या अपने-आप हल हो जायगी। नानकने कहा है: बाँटकर खाओ, चुल एक लगर! वही करना है। सब मिलकर परिवार बना लें, तो सारा झगड़ा खतम हो जाय।

समाजमें मिल्कियत बनी। उसके बचावके लिए कहा गया कि उसके बिना लोगोंमें Initiative नहीं आयेगा, प्रेरणा नहीं आयेगी! परिवारमें पाँच आदमी रहते हैं, तो क्या उनकी मिल्कियत बँटी रहती है! खुद भूखी न हो, तो भी माँको बच्चेके लिए रसोई बनानेकी प्रेरणा क्यों होती है! साफ है कि परिवारकी भावना व्यक्तिगत सुखकी प्रेरणासे ज्यादा प्रेरणा देती है। हमें गाँव-गाँवमें परिवारकी भावना बढ़ानी चाहिए। यह नहीं बढ़ेगी, तो डाकू-चोरकी समस्या खड़ी होगी, पार्टियाँ खड़ी होंगी, वैर-विरोध बढ़ेगा। डाका डालनेमें बुराई है, यह समझानेकी जरूरत तो है ही, पर उसकी जड़ भी देखनेकी जरूरत है। ऊपर-ऊपरसे डालें काट देनेसे काम नहीं चलेगा।

× × ×

आजका पड़ाव गुरुद्वारेमें है। खूब 'कड़ा' प्रसाद मिला हम लोगोंको और बड़े गिलास भर-भरकर लस्सी। एक सिखभाईके घरपर ही भोजन हुआ—थालियोंमें। भोजनमें हलुआ फिर मिला। लगता है, आज प्रसाद खूब बना है—हमारे स्वागतकी दृष्टिसे।

× × ×

भरी दोपहरीमें भूताजीकी जीपसे हम लोग बरहदके लिए रवाना हुए। अच्युतभाई, लल्लूदादा, जगदीशजी और मैं। भूताजीसे हम लोगोंने कहा: 'बाबूजी, आपकी तबीयत अभी ठीक नहीं, चिलचिलाती धूपमें मत चलिये, कुछ देर बाद ही चल सकते हैं।' पर उन्होंने कहा: 'कोई हर्ज नहीं।' गाँवके बाहर हमें उतारकर भूताजी भिण्ड चले गये।

दोनों पक्षवालोंसे हम लोग मिले। कहा: बन्दूकें रहते हुए भी जब तुम लोग डरते हो, तो ऐसी बन्दूकोंसे फायदा! छोड़ो इस डरको। तमाम बन्दूकें ले चलकर विनोबाके चरणोंमें डाल दो और कह दो कि चारों ओर डाकुओं और बन्दूकोंसे घिरे रहते हुए भी आपके समझानेसे हममें इतना साहस आ गया है कि हम अब बन्दूकें छुयेंगे नहीं।

खूब चली बातें। अन्तमें बात यहाँतक आ गयी कि एकने कहा: हम अपनी सारी बन्दूकें ले आते हैं, उधरवाले भी अपनी सारी बन्दूकें ले आयें।

इधर दो दिनके बीच वह बागी घायल होकर गिरफ्तार हो चुका था, जो यहाँके कुछ लोगोंके लिए आतंकका बड़ा कारण बना था।

दोनों पक्षके तमाम लोग सारी बन्दूकें ले आयें, इसपर टालमटोल चलने लगी। पर दोनों पक्षके एक-एक, दो-दो आदमी तो बन्दूक लेकर हमारे साथ चलनेको एकदम तैयार हो गये।

मैंने कहा: बन्दूक छोड़नेका मतलब यह नहीं कि आप बन्दूकके बदले लाठी उठा लें। उसका मतलब है—हिंसाकी भावना छोड़ देना, परस्पर विरोध समाप्त कर देना। इस तैयारीके साथ आप बन्दूक छोड़ें, तो उसका कोई मतलब भी है। वर्ना अभी तावमें आकर आपने बन्दूक छोड़

दी और कल आप सोचने लगे कि कैसी बेवकूफी की, तो इससे काम नहीं चलेगा। हम तो चाहेंगे कि बन्दूक छोड़कर आप एकदम निर्भय बन जायँ, एकदम निर्वैर बन जायँ।

हमारी बातें उन्हें जँच तो रही थीं, पर हिम्मत नहीं पड़ रही थी। साथ ही हमें यह भी लगा कि वैर-विरोधकी भावना अभी निर्मूल नहीं हो पायी है। इसीलिए ये दाँवपेच चल रहे हैं।

यह स्थिति देखकर हमने उन लोगोंको यों ही हृदय-मथनके लिए छोड़ दिया। कह दिया : अगर आप लोगोंके दिल साफ हो जायँ, जीका डर निकल जाय, तो आप लोग अपनी बन्दूकें लेकर मुरार आ जाइये या ग्वालियर। भावावेशमें आकर कोई काम मत करिये।

× × ×

शाम हो रही थी। लल्लूदादा तो 'मिशन' पर कहीं दूसरी जगह निकल गये। हम लोग बससे तुकेड़ा चल दिये। बसमें ही मिल गये शिवहरेजी—पुस्तकोंके तीन भारी बक्सोंके साथ। सर्वोदय-साहित्य लेनेके लिए वे गये थे भिण्ड। उनके साथ नये समाचारपत्रोंका बण्डल भी था। उलटा तो ग्वालियरकी 'हमारी आवाज' में मोटे हेडिंगमें छपा था :

तहसीलदार सिंहको फाँसी न दी जायगी

राष्ट्रपति द्वारा मृत्यु-दण्ड आजन्म कारावासमें परिवर्तित !

● ● ●

सरकार पहले, भगवान् बादमें

बरेठा (ग्वालियर

४ जून '६

बहुत छोटा-सा गाँव है यह बरेठा। सुबह बाबाने गाँववालोंसे प्रश्न
चार करके यहाँकी स्थितिका तखमीना लगा लिया। ३० घर, २५
आदमी। २ हरिजन—१ चमार, १ धोबी। २ कुएँ। दोनोंपर हरिज
पानी भरते हैं। १०० लड़के, २ मास्टर। ७०-७५ फीसदी हाजिरी औ
७० फीसदी पास। अच्छी काश्त। रहँटसे पानी। पासमें छोटी नदी
बेजमीन कोई नहीं। सालभर खेतमें काम। धन्धे कोई नहीं।

प्रभुदयाल पटवारीने बताया : आसपासके ५ गाँवोंमें २०० घर
१६०० एकड़ जमीन। बेजमीन कोई नहीं। कोल्हू १ है। सरसं
देकर तेल लेते हैं। चमार जूतेका काम नहीं करता। कोई पार्टी नहीं,
कोई झगड़ा नहीं। पानीका साधन हो जाय, बाँध बन जाय, तो
फसल बढ़ जाय। बाँधके लिए गाँववाले श्रम करनेको तैयार। व्यसनमें
बीड़ी-सिगरेट चलती है, शराब-फराब नहीं! भजन-कीर्तन भी चलता है।
कोई तकलीफ नहीं, कोई कष्ट नहीं, कोई माँग नहीं!

कैसा सुन्दर, आत्मतुष्ट ग्राम!

× × ×

आज हम भिण्ड छोड़कर ग्वालियर जिलेमें आ गये। खचेरेको
बाबा कल ही पुलिसके सुपुर्द करना चाहते थे शामको, पर सोचा, आज
सबेरे ही दे देंगे। सुबह जब कहा, तो कलेक्टर साहब टायटसने और
कमिश्नर साहब चटर्जीने कहा : हमारे पास उसका वारण्ट ही नहीं!

लिहाजा वह छोड़ दिया गया। शामको वह बसपर बैठकर चल
दिया अपने गाँव।

× × ×

दोपहरमें नदीपर हम लोग नहाने गये। छोटी-सी पथरीली नदी। कहीं तो पानी नाममात्रका, कहीं थोड़ा गहरा। कुण्डके पास तैरनेके लिए हमें कुछ पानी मिल गया।

नहा धोकर आये, तो देखा, घर-घर जाकर खाना खानेका प्रबन्ध है। एक एक, दो-दो अन्तेवासी इधर-उधर बिखर गये। भोजन सादा ही था, पर आदर, श्रद्धा और प्रेमसे सराबोर था। सबके मनमें यही था कि कितना न खिला दें आज हम अपने इन अतिथियोंको!

× × ×

शामकी सभाके पहले पासके गुटौना गाँवके प्यारेलालने अपनी छोटी-सी तुकबन्दी सुनायी:

अब भारतमें जनमें एक विनोबा बाबा वरदानी।
माँ बरसो करी परमारथ जनताने जानी॥
भिण्ड-मुरैनाके डाकू-समस्या आपके सुलझानी।
या टुण्डलामें नहर नायँ बड़ी परेसानी॥

(नहर नहीं है इधर बड़ी परेशानी है!)

बाबाने अपने प्रवचनमें कहा:

आज किसान-सभाके दो भाई हमसे मिले। अच्छे कार्यकर्ता हैं। कहने लगे कि सीलिंगके कानूनसे गरीबोंको जमीन मिलनेवाली नहीं। मैंने कहा: इसीलिए तो मैं सरकारके पीछे नहीं लगा। सरकार कानून बनाकर ज्यादासे ज्यादा ८-९ लाख एकड़ जमीन पा सकेगी—बहुत झंझटके बाद। यहाँ भूदानमें ९ लाख एकड़ पहले ही भूमिहीनोंमें बँट चुकी। भूदानका प्रेमका रास्ता सदा खुला है। कानूनके बाद भी कश्मीरमें हमें जमीन मिली। कितना उदार है हिन्दुस्तानका दिल। छीन लेनेके बाद भी दान!

आज लोग सरकारको पहले याद करते हैं, भगवान्को बादमें। हर कामके लिए सरकारका मुँह ताकते हैं। हर बातका दारोमदार

सरकारपर रखनेसे देश निर्वीर्य बनता है। अपने बलपर हमें खड़े होकर अपने मसले आप हल करने चाहिए। अपने-आप अपनी योजना बनाकर चलानी चाहिए और तब सरकारसे मदद माँगनी चाहिए।

गाँव-गाँवको एक बनाओ और ग्राम-स्वराज्यकी नींव डालो। अपनी अन्तर्शक्तिको जगाओ। सब समस्याएँ अपने-आप हल हो जायँगी।

× × ×

मंचके पास देखा एक परिचित चेहरा। पूछा : क्यों हजरत, यहाँ कहाँसे आ टपके ?

गोपीभाईने कहा : मेरठमें हूँ न आजकल ! यहाँ ग्वालियरमें है ससुराल। यह है शकुन्तला, मेरी पत्नी !

'अच्छा, यह बात है !'

बरसोंके बाद मुलाकात हुई। शायद उड़ीसाके बाद।

शामको गोपी-दम्पतिको लश्करके लिए बससे रवाना किया। थोड़ी देरमें हम लोग सायं-भोजनको फिर गाँवमें बिखर गये।

खाते समय पता चला कि अपेक्षासे कहीं कम अतिथि आये। खाना काफी बच गया। हम लोगोंने कहा : फिर ताजा क्यों बना रहे हो ? हम तो सुबहका ही खा लेते।

बोले : आपको बासी खिलायें, यह कैसे होगा ? बच्चे खा डालेंगे सबेरेका बासी खाना।

धन्य है दरिद्र भारतकी यह श्रद्धा !

कौन कहेगा दिलके इन अमीरोंको 'गरीब' ?

मुझे तो लगा कि रोम-रोम पुकारता है इनका—

शाहों को रोब और हसीनोंको हुस्नोनाज !
देता हूँ जब कि देखूँ नजरको उठा के मैं !!

पुलिसको सोलह आना श्रेय, बशर्ते कि…!

मुरार

५ जून '६०

आज गर्मीकी तीव्रता क्या कहना! दर्शनार्थियोंका वह रेला आया कि कदम रखना दूभर हो उठा। बृहत्तर ग्वालियरकी सीमापर महापौर केशवस्कर साहबने नगरके पार्षदों, विधायकों आदिके साथ विनोबाका स्वागत किया। अनन्त थोड़ी रक्षकोंके बावजूद रास्ता पाना मुश्किल हो रहा था। जैसे-तैसे हम लोग मुरार हाई स्कूलके विशाल भवनमें प्रविष्ट हो गये।

× × ×

संतोंकी यह बाट रे भाई, कायरका नहिं काम रे!
कायरका नहिं काम रे…

लोकेन्द्रभाईकी खँजड़ी अभी बज ही रही थी कि बाबाने आकर बोलना शुरू कर दिया। बाबा : प्रातःकालके समय आप सब भाई-बहनोंके दर्शनोंसे मुझे परमात्मदर्शनका आनन्द हो रहा है। भगवान् सूर्यनारायणको अपना आदर्श गुरु मानकर मैं सालसे जनताकी नियमित रूपसे सेवा करता घूम रहा हूँ। सूर्य भगवान्‌की भाँति निष्काम होकर हमें सेवा करनी चाहिए। अनासक्त होकर नियमितताके साथ सेवा करनी हमें सूर्यसे सीखनी चाहिए। कोई सेवा ले, न ले, वह दरवाजेपर हाजिर है।

आपकी खिदमतके लिए भगवान् मुझे घुमा रहा है। वह चलाता है, मैं चलता हूँ। यह सब उसीकी कृपा है। राजाने जो पत्र लिख दिया, वह बराबर काम देता है। कागज, कलम, स्याहीमें कोई ताकत नहीं। ताकत जो है, सो है राजाके हस्ताक्षरमें। मैं तो चिट्ठी हूँ, कागजका टुकड़ा हूँ।

पाँच रुपया या पाँच हजार रुपया जितना उसने लिख दिया, उतना ही काम होता है।

> अभी एक विवाद चल रहा है। कुछ डाकू—बागी—अपने हथियार छोड़कर बाबाके पास आये। पुलिस दावा करती है कि यह सब उसके कई सालके पराक्रमका परिणाम है। इसके लिए पुलिस रुपयेमें १५ आना श्रेय माँगती है। मैं तो पुलिसको १६ आना श्रेय देता हूँ, बशर्ते कि वह यह माने कि वह लोक-सेवाके लिए है।

मैंने अभी उस दिन अम्बाहमें कहा ही था कि पुलिसका काम सत्पुरुषसे कठिन होता है। मेरे जैसे संन्यासीका, फकीरका काम आसान है। वह पहले भी नरम रहता है, बीचमें भी नरम, अन्तमें भी नरम। परन्तु पुलिसको तो बीचमें कुछ सख्त होना पड़ता है। पुलिसका काम फौजसे भी कठिन है। उसका काम योगीकी तरह कठिन है। मैं तो पुलिसको १६ आना श्रेय देनेको तैयार हूँ, शर्त यही है कि पुलिस सेवापरायण हो। मेरा कुछ भी श्रेय नहीं, यह मैं कसम खाकर कहता हूँ। होता, तो मुझपर उसका बोझ होता और रातको नींद न आती। पर मैं तो आठ बजे गिरा, तैसा मरा। एक-आध मिनटमें ही सो जाता हूँ।

यहाँ लोग पुलिससे डरते हैं। डरनेका सवाल ही नहीं है। पाँच सालके लिए आपने अपने नौकर चुन लिये। मुख्यमन्त्री आपके नौकर हैं और यह पुलिस तो उनके नौकरके नौकरकी नौकर है! हमें यह एह-सास होना चाहिए कि यह हमारा राज है और राज चलानेवाले हमारे नौकर हैं। अपनी इस ताकतका हमें भान हो जाय, तो खुशहाली आ जाय।

मैं नहीं पसन्द करता कि आपपर मेरा कोई दबाव पड़े, मेरी बात आपको जितनी जँचे, उतनी ही आप मानें।

× × ×

दोपहरमें अलग-अलग परिवारोंमें हमारे भोजनकी व्यवस्था थी। जगदीशभाई मुझे, अच्युत भाई और राजकुमारको अपने घर खींच ले

गये। वहाँ हम लोगोंने स्नान भी किया और तरह-तरहके व्यंजनोंवाला स्वादिष्ट भोजन भी। बाल-बच्चोंसे कुछ देर गपशप भी की।

× × ×

तीसरे पहर सिंधी पचायतके भाई बाबासे मिलने आये। मकानोंकी तगीका रोना रोते रहे। बाबाने पूछा : 'कितने भाई हैं यहाँ लश्करमें ?' बोले : पचीस हजार।

बाबा : 'धरती माता' पढ़ते हो कभी ? हमारा दुखायल निकालता है। दुःखियोंकी तमाम समस्याओंपर लिखता है। सिंधी लोग तो धार्मिक होते हैं। सर्वोदयके काममें उन्हें हिस्सा बँटाना चाहिए।

× × ×

एक भाई अपनी सासके साथ आये बाबाके पास। बोले : आप शिवपुरीकी तरफ जा रहे हैं। हमारे सालेको उधरके बागी लोग उठा ले गये हैं। उसकी १३ सालकी पत्नी घरपर बिलखती है। हमसे उन लोगोंने १२ हजार रुपया माँगा था, हमने किसी तरह जुटाकर दिया भी। पर बादमें उन्होंने रुपया लौटा दिया और लड़केको नहीं छोड़ा।

'पूरा रुपया लौटा दिया ?'

'एक हजार रुपया बीचवाला आदमी खा गया।'

'तो ?'

'आप उधरके बागियोंसे मिलें, तो कह दें कि वे इस लड़केको लौटा दें।'

'मेरी भेंट हो, तब न !'

× × ×

सायकालीन सभा मुरारके भीतर चौकमें हुई। अच्छी भीड़ थी। बाबाने दिल और दिमागकी बात उठाते हुए कहा : आज लोगोंका दिमाग पहलेसे काफी आगे बढ़ गया है, पर दिल बहुत संकुचित है। इसीसे दुनियामें कशमकश है। उसे मिटानेके लिए दिलको बड़ा करना

पड़ेगा। कुत्ता ८०० मील ऊपर उड़ जाता है, तो मनुष्यके नीचे बैठे रहनेसे कैसे काम चलेगा?

पुराने जमानेका तरीका था, चोरी करनेवालेका हाथ तोड़ देना। आज कोई राजी होगा इसके लिए? सभी कहेंगे, ऐसा करना तो जिन्दगी-भरके लिए आदमीको बेकार बनाना है। उसे आजीवन खिलाना पड़ेगा। समाजके लिए बोझ हो जायगा वह। तब पाँच पतियोंवाली द्रौपदी सती मानी जाती थी। आज कोई ऐसा मानेगा? पुराना न्याय-देवता कहता था कि खून करनेवालेको फाँसीपर लटका देना चाहिए। कल ही पढ़ा कि राष्ट्रपतिने फाँसीकी सजा आजीवन कारावासमें बदल दी। पुराने लोग इसे गलत ही बताते।

अब तो चोरको सजा देना भी पुरानी बात मानी जा रही है। मेरे सामने कोई केस आये, तो मैं २ सालके बजाय २ एकड़ जमीन दूँगा। सजा चोरको कहाँ मिलती है? वह मिलती है उसके बाल-बच्चोंको, जिनके पोषणके लिए वह चोरी करता है। उसे तो जेलमें तीन दफा खानेको मिलता है, पर बच्चे भूखों मरते हैं!

शिखर-सम्मेलनमें 'चार बड़े' बच्चोंकी तरह झगड़े। वह शिखर नहीं, पाताल-सम्मेलन था। उनके दिल पातालमें थे। स्थितप्रज्ञोंका सम्मेलन शिखर सम्मेलन होगा। उपनिषद्की भाषामें आकाशकी तरह बड़ा दिल बनाओ। तभी यह कशमकश मिटेगी।

भिण्डमें हमने छोटा-सा प्रयोग किया। उसका भारतपर ही नहीं, बाहर भी असर हो रहा है। सारे विश्वका ध्यान इस ओर खिंच रहा है। जर्मनीसे आज एक पत्र आया है, उसमें लिखा है कि आपको इस काम-में यश मिले! यदि सख्तीसे कुछ डाकुओंको खतम कर दिया होता, तो क्या जर्मनीसे ऐसा पत्र आता? प्रेम-शक्तिसे डाकुओंका दिल जीतनेमें कुल दुनियापर असर होगा। एटम बमसे भी ज्यादा ताकत है इसमें। इसीलिए इसकी ओर लोगोंका आकर्षण होता है। प्रेम, दया और करुणाकी शक्तिको विकसित करनेसे ही दुनियाके मसले हल होंगे। मंत्रोंने

व्यक्तिगत जीवनमें जो शान्ति दिखायी, उसीका हमें समाजीकरण करना है। विज्ञानके युगमें हमारा यह सर्वोत्तम लक्ष्य है।

× × ×

विनोबाके शान्ति-अभियानने सारे भारतका ध्यान तो अपनी ओर आकर्षित किया ही है, सारे विश्वका ध्यान भी आकर्षित किया है। पर हमारे अखबारवालोंका धन्धा ही अजीब है। सुबह बाबाने जिस विवादकी चर्चा की, वह हमारे इन्हीं दोस्तोंकी मेहरबानी है। तरह-तरहकी सनसनीखेज अफवाहें उड़ाकर, तरह-तरहके ऊटपटाँग सवाल खड़े करके ये लोग समस्याको सुलझाते नहीं, उलझाते हैं। प्रेम, सद्भाव और मैत्री फैलाना तो रहा दरकिनार, ये ऐसी गलत तस्वीरें खड़ी करते हैं कि जिनसे बनती बात बिगड़ती है। क्या करें बेचारे! सनसनीके बिना उनके अखबारको पूछेगा कौन! अशान्त-क्षेत्रमें शान्ति आ जायगी, लोगोंमें प्रेम *फैलेगा, लोग निर्भय बनेंगे, तो 'खबर' क्या मिलेगी और बिना 'खबर'का 'खबर'की जमा—'अखबार' क्या!*

● ● ●

प्रेमके रास्तेसे क्रान्ति

लश्कर

६ जून '६०

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी !

लक्ष्मीबाईकी पुण्य समाधि !

पाषाणकी प्रतिमा है यह या प्रेरणाकी पुंज ?

लश्करमें रहते समय बचपनमें इस समाधिके दर्शन मैंने अनेक बार किये थे, पर आजका तो समाँ ही निराला था। अरुणोदयकी सुहावनी वेलामें बाबा जब मूर्तिके निकट खड़े होकर श्रद्धा-सुमन बिखेर रहे थे, तब मेरे मानस-पटपर उभर रही थीं सुभद्राकुमारी चौहानकी अनमोल कड़ियाँ :

सिंहासन हिल उठे राजवंशोंने भृकुटी तानी थी।
बूढ़े भारतमें भी आयी फिरसे नयी जवानी थी॥
गुमी हुई आजादीकी कीमत सबने पहचानी थी।
दूर फिरंगीको करनेकी सबने मनमें ठानी थी॥
चमक उठी सन सत्तावनमें वह तलवार पुरानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसीवाली रानी थी॥

× × ×

आज रास्तेमें एक जगह सिख भाइयोंने लस्सीका प्रबन्ध कर रखा था। लस्सी पीकर हम लोग आगे बढ़े। बाबाको पृथ्वीनाथ शर्माके प्राकृतिक चिकित्सालयके भवनका भी उद्घाटन करना था। 'जय जगत्' के नारेके साथ उसका उद्घाटन करनेके बाद बाबा तुरत चल पड़े। एक श्रद्धालु माँने सूतकी गुण्डीके साथ खरबूजे और एक पंखा भी भेंट किया। खरबूजे मैंने रामऔतारको थमा दिये। समाधिसे होकर जयेन्द्रगंज,

हाईकोर्ट, लोहिया बाजार, नया बाजार होते हुए हम पड़ावपर पहुँचे। हमारा पड़ाव रखा गया है कमला राजा महिला महाविद्यालयमें। पहले बाबाका भी निवास यहीं रखा गया था, पर बादमें बदलकर बगलमें पद्मा विद्यालयमें कर दिया गया—तथागतकी विशाल भावनापूर्ण प्रतिमाके ठीक सामने।

× × ×

प्रवेश-प्रवचनमें बाबाने विस्तारसे लोकतन्त्रकी खामियाँ बताते हुए कहा कि आज लोकतन्त्रका जो रूप है, वह राजशाहीसे कम खतरनाक नहीं है। मुख्यमन्त्रियोंके हाथमें पाँच सालके लिए जितनी सत्ता सौंप दी जाती है, उतनी पुराने बादशाहोंको भी नसीब नहीं थी। क्रुश्चेवके हाथ जारके हाथ नहीं हैं, आइकके हाथ किसी राजाके हाथ नहीं हैं, फिर भी ऐसे दो-चार आदमियोंकी बुद्धि बिगड़े, तो दुनियाका खातमा होते देर न लगे। इन ४-५ शख्सोंके हाथ हमारा नसीब है। लोकतन्त्रमें अच्छे लोग नहीं आ पाते। औसत लोगोंके हाथमें सत्ता रहती है, जिसका कि भयंकर परिणाम होता है। मुख्यमन्त्री जो चाहते हैं, सो होता है। लोकमतका कोई प्रश्न ही नहीं। आजके सत्ताधारी तबतक गद्दी नहीं छोड़ना चाहते, जबतक कि यमदूत आकर हटा न दे। राजनीतिज्ञ अपने लिए कोई मर्यादा ही नहीं मानते। ऐसे लोकतन्त्रसे काम नहीं चलेगा। सत्ताका गाँव-गाँव विकेन्द्रीकरण किये बिना देशका कल्याण नहीं। विभिन्न पार्टियोंवाले लोग संयुक्त कार्यक्रम बनाकर उसे उठा लें और देशको आगे बढ़ायें, नहीं तो भारत छिन्न-भिन्न हो जायगा। जाति-भेद, स्वार्थ भेद और पार्टी-भेद मिलकर देशमें आग लगा देंगे।

अन्तमें बाबाने माँग की—नकद धर्मकी। कहा कि आठ साल पहले यहाँ आया था। हो सकता है, यहाँवालोंसे मेरी यह अन्तिम मुलाकात हो। इसलिए कुछ नकद धर्म करिये। भिण्ड-क्षेत्रको शान्ति-क्षेत्र बनाना है। आप सबकी पूरी सहानुभूति चाहिए। वकीलों, व्यापारियों और नागरिकोंको

पूरी मदद देनी चाहिए। जिसके पास जो कुछ है—जमीन, सम्पत्ति, बुद्धि, समय—उसमेंसे वह दान करे।

× × ×

सभाके अन्तमें बाबाने वेदनारायणको नमस्कार करते हुए श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा अनूदित ७ खण्डोंमें प्रकाशित चारों वेदोंका उद्घाटन किया। बोले : तर्जुमा कैसा है, यह तो कहना मुश्किल है, पर कहते हैं कि हिन्दीमें चारों वेदोंका यह पहला अनुवाद है। मैं इसका स्वागत करता हूँ।

× × ×

आज पन्ना विद्यालयके सरस्वती भवनमें मध्य प्रदेश चेम्बर ऑफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीने ३१५१) की थैली बाबाको भेट की। बाबाने व्यापारियोंके बीच बोलते हुए कहा :

बाबाकी मानवके अन्दर रहनेवाले परमात्मापर श्रद्धा है। नौ सालसे वह इसी श्रद्धासे जमीन माँगता घूम रहा है। वह मानता है कि दाता सब हैं। कोई आज देगा, कोई कल। इस श्रद्धाके कारण बाबाको उसकी भक्तिसे दसगुना, सौगुना मिला है। कत्लका रास्ता हिन्दुस्तानके अनुकूल नहीं। कानूनका रास्ता भी ज्यादा कामका नहीं। प्लानिंग कमीशनवालोंने मुझसे कहा कि सरकार पूरी ताकत लगाकर, मुआवजा देकर, गाँव-गाँवमें वर्ग-भेद पैदा करके, मुकदमेबाजी करके मुश्किलसे ८ या ९ लाख एकड़ जमीन पा सकेगी। बाबाने तो करुणाका रास्ता पकड़ा है। यह रास्ता आध्यात्मिक है। इससे मानवके हृदयमें प्रवेश होगा। मैं घरका सदस्य बनूँगा।

व्यापारियोंके लिए मेरे हृदयमें बड़ा आदर है। हिन्दू-धर्मने व्यापारियोंको जो स्थान दिया है, वह कोई धर्म नहीं दे सकता। कहा है कि ब्राह्मण वेदाध्ययनसे जो मोक्ष प्राप्त कर सकता है, वही मोक्ष निष्काम बुद्धिसे व्यापार करके व्यापारी भी प्राप्त कर सकता है। हिन्दुस्तानके व्यापारी दयालु हैं, अहिंसक हैं, साधु हैं, भोले हैं। शब्दके भी पक्के हैं। फिर वे सर्वोदयमें क्यों नहीं आते? गांधीजीने जमनालाल बजाजसे कहा : घरका

सरकार छोड़कर सर्वोदयके काममें आओ। वे आ गये। उन्होंने व्यापारी-बुद्धि सार्वजनिक काममें लगायी।

व्यापारी सर्व-जन-सेवक बनें। उन्हें किसी पार्टीसे नाता नहीं जोड़ना चाहिए। वस्तुतः कामको ही मदद करनी चाहिए। दूसरोंके माँगनेपर हिम्मतके साथ 'न' कहना चाहिए।

व्यापारीकी रक्षा क्षत्रिय करे, यह धर्म-रचनाका दोष है। फिर वह डरपोक नहीं बनेगा, तो क्या बनेगा? थैली रखकर खुली हवामें सो सकेगा? व्यापारी अपनी सादगीसे अपनी रक्षा करे, यह समाज-रचनाका दोष है। गन्दे कपड़े पहनेगा, तो दिखेगा कि इसके पास माल नहीं। शानसे रहेगा, तो दिखेगा कि मालवाला है। उसकी ऊपरसे दिखनेवाली यह सादगी उसका सात्त्विक गुण नहीं। ये दोनों दोष उन्हें मिटाने चाहिए और उन्हें सारे समाजके सेवक बनना चाहिए।

आज 'पब्लिक सेक्टर' और 'प्राइवेट सेक्टर' का खूब विवाद चलता है। एक पक्ष कहता है कि प्राइवेट सेक्टर घटे, पब्लिक सेक्टर बढ़े, पर व्यापारियोंके पास सरकारसे ज्यादा ताकत भी है, अक्ल भी। लोगोंकी राय है कि आदर्श समाजमें १०० प्रतिशत पब्लिक सेक्टर हो, व्यापारियोंके पास ० प्रतिशत रहे। पर हमारी राय है २ + २ = २; १००% + १००% = १००%। सर्वोदयमें उँगलीके काममें और हाथके काममें फर्क नहीं करते। इसमें प्राइवेट लोग ही पब्लिकके ख्यालसे काम करेंगे। व्यापारी ही जनताका ज्यादासे ज्यादा लाभ करेंगे। वे अपनेको समाजका अंग मानकर पूरे समाजकी सेवा करेंगे। वे गांधीका 'ट्रस्टीशिप' का विचार उठा लें। ऐसा करनेसे व्यापारियोंकी इज्जत बढ़ेगी।

> देशके निर्माणका बहुत बड़ा काम पड़ा है। व्यापारी उसे उठा लें। व्यापारी आकर कहें कि आप जितनी जमीन हासिल करेंगे, उसके लिए कुआँ हम खुदवा देंगे, उसकी आबादीके लिए मदद हम करेंगे, कार्यकर्ता आप जुटायें, उनका खर्च हम चलायेंगे। सर्वोदयका साहित्य आप तैयार करायें, कम्युनिस्ट-

साहित्यकी तरह सस्ता हम बनायेंगे, घर-घर हम पहुँचायेंगे।

व्यापारियोंको 'कस्य स्विद्धनम्' मानकर करुणामूलक साम्यको अपनाना चाहिए, मत्सरमूलक साम्यको नहीं। उन्हें नकद धर्म सम्पत्ति-दान करना चाहिए।

× × ×

आज अपराह्नमें पन्ना विद्यालयमें ही मध्य प्रदेशका तीसरा सर्वोदय-सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। अध्यक्ष थे भाई पूर्णचन्द्र जैन। उद्घाटन किया गांधी-स्मारक-निधिके मंत्री जी० रामचन्द्रन्‌ने।

दादाभाईने गत वर्षका लेखा-जोखा देते हुए बताया कि हमारे यहाँ कहने लायक काम नहीं हो पाया। भूदानमें २॥ लाख एकड़ जमीन मिली, जिसमें आधी बँट चुकी। चौथाई जमीन झगड़ेकी है या बेकाम। ५०-६० हजार एकड़ अभी बँटनेको बाकी है। शासनने कुछ सुविधा कर दी है, काम चल रहा है। सर्वोदय-पात्रका काम हुआ तो है, जबलपुरमें कुछ सफलता भी मिलती जान पड़ी थी, पर एकत्र करनेमें पिछड़ गये हैं। इन्दौर और महेश्वरको प्रेम-क्षेत्र बनानेके लिए काम हो रहा है। जनतामें हमारा काम कैसे जड़ पकड़े, कार्यकर्ताओंमें उत्साह कैसे बढ़े, साहित्य-प्रचार कैसे हो और चम्बल घाटीके क्षेत्रमें कैसे काम किया जाय, इन सब बातों-पर हमें विचार करके कामको आगे बढ़ाना है।

भाई पाटणकरने गुरुदेव और गांधीके प्रिय शिष्य जी० रामचन्द्रन्‌का आत्मीयतापूर्ण परिचय दिया। उन्होंने हिन्दीमें बोल सकनेमें असमर्थता प्रकट की। कहा : 'मेरे लिए बड़ी शर्मकी बात है यह। बापके पापका परिहार बच्चे कर रहे हैं।' उन्हें हिन्दीमें मुखरित करनेको खड़े हुए सुरेश रामभाई। मधुर सम्बन्ध भी तो है सुरेशभाईका केरलसे !

रामचन्द्रन् बोले : मैं 'बड़ा साहब' कभी नहीं रहा। आपमेंसे ही एक हूँ मैं। ३० सालसे मैं गांधीके चरण-चिह्नोंपर चलनेकी अधूरी कोशिश कर रहा हूँ। गांधीपरिवार ही मेरा परिवार है। इसीसे कश्मीरमें विकास-कमिश्नरोंके सम्मेलनमें जानेका हवाई टिकट कैंसिल कर भाई देवेन्द्रगुप्तका

आग्रह मान खुशी-खुशी मैं आपकी सेवामें आ पहुँचा। कश्मीरमें ठण्डक ही ठण्डक, यहाँ मौसममें भी गरमी और विनोबाके चमत्कारकी भी गरमी! आज मैंने देखा उस महर्षिको। इतना सुन्दर स्वास्थ्य उसका कभी नहीं था। लोग गर्मियोंमें पहाड़पर जाते हैं, पर यह महर्षि चम्बलके बेहड़ोंमें भटकता है, फिर भी इतना स्वस्थ! मैं जितनी शक्ति लेकर आया हूँ, उससे दूनी शक्ति लेकर वापस जा रहा हूँ।

पिछले दिनों चम्बलके बेहड़ोंमें जो काम हुआ है, वह अत्यन्त आश्चर्यजनक है। आज हम उसके इतने निकट हैं कि हम उसकी गहराईको समझ नहीं सकते। अखबार हमपर तरह-तरहके आक्रमण कर रहे हैं। हमारे बीच एक महर्षि है, जो प्रेमके कानूनको डाकुओंपर आजमा रहा है। बरसों पहले गांधीजीने दक्षिण भारतकी वेश्याओंके बीच जाकर उनका हृदय-परिवर्तन किया था, तो वहाँके अखबारोंने शिकायत की थी कि गांधीजी वेश्याओंको समाजमें ऊँचा स्थान दे रहे हैं। हमारे इस महर्षिपर भी ऐसा ही दोष लगाया जा रहा है कि विनोबा डाकुओंको 'हीरो' बना रहा है! एक ओर प्रेमकी रीतिसे क्रान्तिका एक महान् काम हो रहा है, जिसके लिए राष्ट्रपति बधाई भेजते हैं, दूसरी ओर उस महर्षिपर कीचड़ उछाला जा रहा है! ईसाके साथ भी ऐसा ही सलूक हुआ था। ईसा बोले : 'मैं सही रास्तेपर चलनेवालोंके लिए नहीं, पापियोंके उद्धारके लिए आया हूँ।' विनोबा भी एक ऐसी जमातको बचाने आये हैं, जिसे कोई बचाना नहीं चाहता।

कहा जाता है कि भिण्ड-मुरैनाके क्षेत्रमें सशस्त्र पुलिसके २५,००० जवान तैनात हैं, जो चौबीसों घण्टे डाकुओंका पीछा करनेमें और उन्हें जिन्दा पकड़नेमें या मौतके घाट उतारनेमें लगे रहते हैं। मैं पूछता हूँ कि महात्मा गांधीके इस देशमें खून, घृणा और हिंसा-प्रतिहिंसाका यह चक्र कबतक चलता रहेगा? गांधीके बाद आज इस देशमें विनोबा ही प्रेमके सबसे बड़े पुजारी हैं। वे भारतके प्रेम और उसकी सचाईके प्रतीक हैं। हमें चाहिए कि हम किसीको अपने इस महर्षिके कामपर कीचड़ उछालनेका

मौका न दें। हाँ, गलतियाँ हो सकती हैं, पर वे सक्रिय प्रेमकी गलतियाँ होंगी, सक्रिय घृणाकी नहीं। यदि किसी प्रयोगके मूलमें प्रेमकी प्रधानता होती है, तो गलतियाँ सुधर सकती हैं, पर मूलमें घृणा हो, तो सुधारकी कोई आशा नहीं। प्रेमके कानूनका यहाँ जो प्रयोग हुआ है, हम उसके पहरेदार बनें।

हमारे प्यारे प्रधानमन्त्री अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें तो प्रेमकी रीति ही अपनाते हैं, पर देशके आन्तरिक मामलोंमें नहीं। यह द्वन्द्व कबतक चलता रहेगा? हमें चाहिए कि अहिंसाकी जिस रीतिमें हम विश्वास करते हैं, उसे देशके अन्दरूनी मामलोंमें भी अपनायें।

गांधीजीने हमारे लिए रचनात्मक कामोंकी जो सर्वश्रेष्ठ विरासत छोड़ी थी, उसे हम गाँव-गाँव, घर-घर पहुँचा दें। सारे रचनात्मक कार्यकर्ता एक होकर एक स्वरसे बोलने लगें। सरकारके अलावा हमारे जितनी बड़ी जमात दूसरी नहीं है। हम अपनी बुनियाद न भूलें, उसे मजबूत बनायें और सर्वोदयका सन्देश घर-घर पहुँचायें। देशसे हम शराबखोरी और छुआछूतको एकदम मिटा डालें। हमारे एक परिसंवादमें जगजीवन रामने हमें सावधान करते हुए ठीक ही कहा था : 'मुझे डर है कि अगर हालत ऐसी ही बनी रही, तो पण्डित नेहरू और आचार्य विनोबाजीके बाद कहीं इस देशमें कोई खूनी क्रान्ति न हो जाय!'

× × ×

भाई पूर्णचन्द्रजीने कहा कि आपकी चर्चामें भाग लेनेका मुझे अवसर मिल रहा है, इसके लिए आभारी हूँ। मैं अध्यक्षके रूपमें भाषण करने नहीं बैठा। बाबासे हमें उद्बोधन लेना है। हम मिल-जुलकर चर्चाएँ करें। आज कार्यक्रम और कार्यकी कमी नहीं है। पिछले अनुभवसे आगेके कामकी रूपरेखा बन सकती है। हमें समग्र दृष्टिसे सोचना पड़ेगा, पर आगे बढ़नेकी तड़प और संकल्पके बिना गाड़ी आगे नहीं बढ़ेगी। ये दोनों बातें तो चाहिए ही।

× × ×

तीसरी-चौथी श्रेणीके सरकारी कर्मचारियोंका भी आज एक सम्मेलन हुआ। बाबा बोले : जबतक मनुष्य अपनेसे अधिक दुःखियोंका दुःख नहीं दूर करता, तबतक उसे सुख नहीं मिलता। यह ठीक है कि आप लोग दुःखी हैं। पर क्या मेहतरोंका, खानोंमें काम करनेवाले मजदूरोंका, आदिवासियोंका, बेजमीन मजदूरोंका जीवन आपसे कठिन नहीं है ?

एक आदमीने मुझसे कहा : मैं आपको क्या दूँ ? मेरे पास तो एक ही एकड़ जमीन है, ५ लड़के हैं। तभी यह मशहूर वाक्य निकला—छठा लड़का मैं पैदा हो गया ! आपको आश्चर्य होगा कि मैंने निष्ठुरतासे एक एकड़का छठा हिस्सा ले लिया उससे ! गरीबोंसे न लेता, तो अमीरोंसे कैसे माँगता ?

आपसे भी मैं दान माँगता हूँ। आप कहेंगे कि 'कैसा निष्ठुर है ! महीनेमें हमें ५०) तो मिलते हैं, उसमें भी माँगता है !' यहीं कहीं एक भाई हैं। उन्होंने मुझसे कहा : 'मैं पचास रुपयेकी अपनी तनख्वाहमेंसे आजीवन एक पैसा रुपया दूँगा।' मैंने कहा : 'पत्नीसे भी पूछा है ?' बोला : 'नहीं।' मैंने कहा : 'पत्नीसे पूछकर दे सकते हो।' पत्नीको उसने राजी कर लिया। आपको आश्चर्य होगा कि मैं निष्ठुर बना और मैंने उसका दान कबूल कर लिया। मैं उसके दानको बहुत बड़ा दान मानता हूँ। मैं समझता हूँ कि ऐसा करके मैंने उसकी उन्नतिमें मदद की है।

हरएकके पास कुछ-न कुछ है। उसमेंसे कुछ देना सार्वत्रिक धर्म है। आपके पास एक रोटी है, दोको भूख है। उस एकमेंसे एक टुकड़ा मुझे दे दीजिये। थोड़ा फाका और करिये। फिर देखिये, आपका क्या होता है !

नर्मदाकी कहानी है कि वह किसीको कमी नहीं पड़ने देती। एक यात्री चला। १०) थे, ९) खा-पी लिये। बचा १)। अब क्या करे ? 'आगे कैसे जाऊँ ? पीछे कैसे लौटूँ ?' तभी स्वप्नमें उसे दिखा कि किसीने कहा : 'नर्मदापर भरोसा है, तो फेंक दे उस बचे रुपयेको नदीमें। अनुभव आयेगा।' रुपया फेंककर वह आगे बढ़ा। एक यात्री मिल

गया। उसने साथ ले लिया। अन्न-सत्रमें खा लिया। जल ले लिया, साथी मिले, परिक्रमा पूरी हुई। बचा रुपया फेंका, तब यह हुआ। आप भी दान करिये—'हाथ दिये कर दान रे!' गरीबोंको देकर अपनी इज्जत बढ़ाइये, तब आपकी माँगोंके पीछे नैतिक बल आयेगा। यह ठीक है कि आपका संसार विकट है। मध्यम श्रेणीवालोंकी हालत खराब है। पर मेरी योजना तो गैरमामूल होती है। आप ५०) के ६०) माँगेंगे, पर उसका कहीं अन्त नहीं आयेगा। मेरा कहना तो यह है कि हरएक नौकरको खानेभरका पूरा अनाज देना चाहिए, ऊपरसे कुछ पैसा मिल जाय। अनाज तो pure gold है, शुद्ध सोना है। लफंगे पैसेका क्या ठिकाना! आप दो बातें करिये :

(१) अपनेसे दुःखीके लिए महीनेमें ।।) दान करिये !

(२) सरकारसे माँगिये कि हमारे परिवारके खानेको जितना गल्ला लगता है, उतना गल्ला हमें मिले, कुछ पैसा ऊपरसे मिले !

× × ×

सायंकालीन प्रार्थना-सभाके लिए कुछ मिनट बाकी थे, तभी मैंने जगदीशभाईको घसीटा बाजारकी ओर। कुछ कपड़े तार-तार हो रहे थे, पर खादी-भण्डार जाकर देखा, तो बन्द है। उलटे पाँव हम लोग लौटे, तबतक बाबाका प्रवचन आरम्भ हो गया था। बाबा कह रहे थे :

भूदानका काम नौ सालसे चल रहा है। उसकी तरफ सारी दुनियाका ध्यान गया है। शायद ही कोई देश हो, जहाँके लोग हमारी पदयात्रामें आकर शामिल न हुए हों। यहाँसे कोई विदेश जाता है, तो उसके पहले दो-चार दिन वह हमारे पास रहनेके लिए आता है, क्योंकि वहाँ जानेपर लोग पूछते हैं कि भूदानका काम कैसा हो रहा है? जमीनके मसलेको हल करनेके लिए प्रेम और करुणाका हमारा तरीका नया है। यह भारतीय सभ्यताके अनुकूल है। दुनियाको भास हुआ कि इसमेंसे कुछ निकलेगा। भूदानका तरीका, स्वतन्त्र भारतकी विश्वको एक देन है।

डाकुओंके बीच हमने जो काम किया है, उसमें भले ही हमें सफलता

चन मिली है, पर देश विदेशमें उसकी बड़ी चर्चा है। प्रेमसे वैरको मिटानेका भारतीय तरीका दुनियाके लिए नया है। कल जर्मनीसे पत्र आया है। दुनियाके चिन्तनशील लोग अपनी भाषाओंमें इसपर ग्रन्थ लिख रहे हैं। यह प्रचार मैंने नहीं किया। भारतीय संस्कृतिका सन्देश है कि मैं दुनियाको मैत्रीकी दृष्टिसे देखूँ। वेद भगवान्ने कहा :

मित्रस्य अहं चक्षुषा ! सन्तोंने इसपर अमल किया। धम्मपदमें आया कि बुराईको भलाईसे जीतेंगे, क्रोधको अक्रोधसे। हमने दूसरा थोड़ा-सा प्रयोग किया। दुनियाको लग रहा है कि भारतमें एक नयी कुंजी मिली है। भारतका यह विशेष गुण हमें बढ़ाना है। ग्वालियरसे हमारी माँग है कि यह ब्रह्मविद्याके आधारपर निष्काम सेवा करनेवाले ५० सेवक हमें दें।

× × ×

मेहरोत्रा आज फिर आ गया है। आकर ठहर गया हमारे साथ ऊपरके कमरेमें। किशोरजीसे मैंने कहा : आप भी रामचन्द्र, यह भी रामचन्द्र। आप किशोरे, यह मेहरोत्रा। आप इन्दौरके, यह कानपुरका। कानपुरसे हमारा मधुर सम्बन्ध आप जानते ही हैं!

उस दिन लश्करकी रानीसे मैंने पूछा था जरसेनामें : 'ग्वालियर आयेंगी क्या?' कहने लगीं : 'मुश्किल है, कानपुर जाना है।' 'क्यों? कानपुर तो मुझे भी चलना है।' बोलीं : 'मेरे बच्चे हैं वहाँ कनवेण्टमें, हमारा घर है न! मेरी माँ रहती हैं वहाँ।' 'अच्छा, आपका मायका है वहाँ! मेरी ससुराल है! यह खूब रहा। लश्करमें आप शादी होकर आयीं और लश्करमें मेरा जन्म हुआ!'

खूब चला ठहाका आत्मीयताके इस प्रसारपर!

प्रसंगमें बूढ़े दादा कृपालानी भी न छूटे। कलकत्तेकी एक सभामें कहा उन्होंने : आप लोगोंके साथ तो मेरा मधुर सम्बन्ध ठहरा! बंगालका दामाद हूँ न मैं!

और आचार्य नरेन्द्रदेव भी तो दरभंगामें एक सभामें बोले थे :

शान्तिवादी भी नाराज़, क्रान्तिवादी भी !

लश्कर
७ जून '६०

जगदीश विन्दल Conscientious आदमी हैं। आत्माके इशारेपर नाचनेवाले। बरहृदसे ही मैं झगड़ रहा हूँ उनसे। बाजारमें कुछ मिलेगा, तो वे खरीदकर खा लेंगे, नहीं मिलेगा, तो भूखे रह जायँगे, पर हमारी पाँतमें बैठकर जीमेंगे नहीं। 'पैसे ले लो तो हम खा लें, मुफ्तमें नहीं खायेंगे।' इस बातकी जिद पकड़े हैं। मैंने कहा उनसे: 'जनताका यह अन्न है, आप अपना पैसा जनताकी पेटीमें कहीं भी डाल दीजिये, गाँव-गाँव, घर-घर तो इस बैंककी शाखाएँ खुली हैं।' पर वे मानते नहीं। मैं कहता हूँ: जनाब, आपका यह अहंकार है। आप मानते हैं कि हम लोग भिक्षान्नभोगी हैं और आप यह भिक्षान्न कैसे ग्रहण करें !

अहंकारकी बातसे वे कुछ चौंके। 'पूछूँ बाबासे !' मैंने कहा: पूछो।

आज सबेरे धर्ममन्दिरकी रास्तेमें उन्हें मौका मिल गया। कृषिके इस प्रोफेसरने सूट-बूटपर लगी अपने कॉलेजकी पाबन्दीके बारेमें तो बाबासे पूछा ही, भोजनके इस प्रश्नपर भी बाबासे पूछ लिया। कहा: 'मैं आपके यात्रीदलका भोजन नहीं लेता, बिना पैसा दिये क्यों लूँ ? भट्टजीका कहना है कि इसमें अहंकार है। क्या इसमें अहंकार है बाबा ?'

'नहीं, तुम ठीक करते हो !' बाबाने फतवा दे दिया, जगदीशभाई मुसकरा पड़े। मैंने कहा: हजरत, मेरी दलील ठीक ढंगसे पेश ही नहीं की और फतवा ले लिया !

× × ×

सनातन-धर्ममन्दिर पहुँचते-पहुँचते भीड़ने हमें खूब घेर लिया। कई

मूर्तियाँ, कई मन्दिर थे। बाबाने दर्शन करके प्रवचन आरम्भ किया। बाबा बोले : भारतकी विशेषता है ब्रह्मविद्या। आध्यात्मिकता यहाँ भरी पड़ी है, पर आचरणकी कसौटीपर खरी नहीं उतरती। फिर भी हमारे यहाँ श्रद्धा खूब है। भूदानमें यही मूलभूत श्रद्धा है। हमारे माँगनेवाले कम पड़े, लोगोंने ज्यादा दिया। हमारे कार्यकर्ताओंमें दूसरोंकी तरह गलत तो नहीं है, पर जैसा मेल-मिलाप चाहिए, वैसा नहीं। गलतफहमियाँ रहती हैं, बात-बातपर अहंकार आड़े आता है। यह देखकर मैंने सोचा कि ऐसे सेवकोंकी माँग करूँ, जो हर काम भगवान्‌को समर्पण करके करें। हम ऐसे ५००० निष्काम सेवक तैयार कर लें, तो बहुत !

× × ×

बालकनजी-बारीके भवनका शिलान्यास करते हुए बाबा पड़ाव लौटे। भीड़के मारे हम लोगोंका बुरा हाल था रास्तेमें। अच्युतभाई अपने नये जूते हाथमें लेकर पीछे-पीछे दौड़ रहे थे। भिण्डमें उन्होंने उन्हें तेलसे सराबोर तो किया था, पर वे फिर भी अपने दाँत गड़ाये बिना नहीं मान रहे थे—अहिंसक थे तो क्या !

तरह हमारे देशमें सैनिक कहलानेवाला एक वर्ग है, सेना करनेवाला दूसरा। इसके अलावा ५ लाख मिलिटरी सेवक और हैं। इनमेंसे ज्यादातर लोग उत्पादनका नहीं, विभाजनका काम करते हैं। रवीन्द्रनाथके शब्दोंमें वे 'मल्टिप्लिकेशन' (गुणा) नहीं, 'डिवीजन' (भाग) करते हैं। इनकी रहन-सहनका दर्जा मजदूरी करनेवालोंके दर्जेसे ऊँचा होता है। इस तरह हमारे यहाँ जिसके पास विद्या है, उसके पास उत्पादनकी शक्ति नहीं है, जिसके पास उत्पादनकी शक्ति है, उसके पास विद्या नहीं। राहु-केतुकी तरह समाजके दो टुकड़े हो गये हैं। दोनों ही जीवनहीन हैं। कहानी है कि आदमीने घोड़ेकी पीठ थोड़ी देरको किरायेपर माँग ली। अब वह उसे छोड़ता नहीं। कहता है, 'तुझे दाना खिलाऊँगा, पानी पिलाऊँगा, खरहरा करूँगा; पर पीठ नहीं छोड़ूँगा !' अगर शिक्षितों, अशिक्षितोंका यही हाल रहा, तो कशमकश जारी रहेगी।

बाबाकी कोशिश है कि भारतमें शान्तिके रास्ते क्रान्ति आये। धृतराष्ट्र अक्सर अन्धे होते हैं। वे शान्तिवादी हैं। उनकी इच्छा रहती है कि डाकू-समस्या हल हो, कम्युनिस्ट उपद्रव न करें, विद्यार्थियोंमें असन्तोष न बढ़े, मजदूर शिकायत न करें। वे चाहते हैं शान्ति हो, लेकिन क्रान्ति न हो। उधर क्रान्तिवादी कहता है कि जैसे भी हो समाजमें क्रान्ति हो, श्मशान शान्ति किस कामकी ! मेरे जैसा तीसरा व्यक्ति चाहता है कि शान्तिमय क्रान्ति हो। उसे दोनोंकी मार सहनी पड़ती है।

शान्तिवादी कहता है : 'हमें ऐसी क्रान्तिमिश्रित शान्ति नहीं चाहिए।' उसके विचारसे डाकू नीच है। उसके लिए शरण या मरण, दो ही रास्ते हो सकते हैं। शान्तिमें क्रान्तिका भाग आ जानेसे इन शान्तिवादियोंका दबदबा या रोब घटता है, इसलिए वे उसे नापसन्द करते हैं। क्रान्ति-वादी कहता है : 'आपके थोड़ा थोड़ा दान माँगनेसे क्रान्तिकी धारा क्षीण होती है। जोश लानेके बजाय आप उसे कमजोर करते हैं !' जनता शांति-वादियोंको 'ढोंगी' और क्रान्तिवादियोंको 'बेवकूफ' समझती है।

केरलमें घूमते समय मैंने कम्युनिस्टोंसे पूछा : 'हीलिंगसे मिलकियत

है, उसे छोड़ दें। सारे प्रकारकी शब्दशक्ति हमारे लिए लागू है। हम ऐसे करें, उत्तर देनेवालेको विचार हो, ऐसा काम है। इस रास्तेमें सर्वोदय सेवक क्या करें ? मैं सोचता हूँ कि इसके लिए जरूरी है—सहचिन्तन। सर्वोदय कार्यकर्ताओंकी संख्या कम भले ही रहे पर जितने रहें, वे एक दूसरेके विविध कार्योंको मदद दें। हम केवल एक शरीरमें नहीं, सब शरीरोंमें हैं, ऐसी भावनाका काम है—सहचिन्तन।

कार्यकर्ताओंमें एकात्मभाव आना चाहिए। वे हर बातमें अपनेको ही प्रमाण न मानें। अहिंसाकी खूबी आत्मानुशासनमें है। अहिंसक कार्यकर्ता अनुशासनका पूरी तरह पालन करें। बूढ़ों और जवानोंमें धनुष्य-बाण-का-सा नाता हो। धनुष टेढ़ा है, फिर भी बाणको गति देनेकी युक्ति तो उसीके पास है, और सीधे घुसनेकी शक्ति बाणमें है। योजना बूढ़ोंकी हो, अमलमें लायें जवान। पहले मैं कहता था कि विचारकी आजादी हो, आज कहता हूँ कि अनुशासनका पालन किया जाना चाहिए। ये परस्पर विरोधी बातें नहीं हैं। जहाँ अनुशासनका सवाल आये, वहाँ बुजुर्गोंकी बात माननी चाहिए। महत्त्वपूर्ण लोगोंको हम सँभाल लें ! कार्यकर्ताओंमें यदि एकदिली नहीं है, तो काम करते करते ठीक हो जायगी। मैं चाहता हूँ कि हमारी दृष्टि कर्मप्रधान ही न हो, वृत्तिप्रधान हो। हम दूसरोंके काजी न बनें। कुछ लोग अपनेको कसौटीपर कसनेके बजाय दूसरोंको कसते रहते हैं। यह दुष्ट वृत्ति है। हमें ऐसी वृत्ति नहीं चाहिए, शुभवृत्ति चाहिए। हमारी वृत्तिमें न्यूनता न रहे, हीनता न आये।

×   ×   ×

चम्बल घाटी शान्ति-समितिकी कल भी बैठक हुई, आज भी। आज बातोंके समय श्री ग्वालियर महाराजके भूतपूर्व कृषिमंत्री पवार साहब बाबाके दर्शन करने आये। ८० वर्षके हैं वे। २० बीघा जमीन उन्होंने अर्पण की बाबाको। कुछ पुराने रिकार्ड दिखाते हुए बोले : ४५ साल था मैं महाराजकी सेवामें। बेदर कमीशन नियुक्त हुआ था, जिसका अध्यक्ष

[illegible] । चम्बलके बीहड़ोंमें हमने [illegible]
[illegible] । [illegible] नहीं ।

शान्ति-समितिकी [illegible] बाबाके सामने चर्चा हुई । [illegible] बात आयी, तो बाबाने कहा : हमारा यह शान्ति-सैनिक [illegible] की तरह काम करता है । कामके लिए न दिन देखता है, न रात । जिस दिन जहाँ पहुँचना होता है, पहुँच ही जाता है । [illegible] आया । चम्बल घाटीमें हमने यह काम लल्लूलालको दे दिया । [illegible] ।

हरगोविन्द मिश्रकी ओर देखते हुए बाबाने कहा : इन्हें यहाँ [illegible] का शौक है, हमारे कांग्रेसवाले इस लँगड़े भाईको ।

ये बोले : बाबा, अपनी जिम्मेदारी निभाऊँगा । आपका भी काम करूँगा, कांग्रेसका भी काम करूँगा ।

बाबा : अपनी बहुत अच्छी शान्ति-समिति बनी है । उसके अलावा तमाम पार्टीवाले हैं, गुप्ताजी हैं, और-और लोग हैं । सबके सहयोगसे हमें पूरी मुस्तैदीसे अपना काम चलाना चाहिए । अच्छे शान्ति-सैनिक यहाँ बैठाने चाहिए ।

× × ×

अपराह्नमें मध्यप्रदेश सर्वोदय सम्मेलनकी अन्तिम बैठक हुई । विधान स्वीकृत हुआ । करणभाईने रचनात्मक कामको मोड़ देनेके बारेमें अपने विचार व्यक्त किये । कहा कि जेराजानीने यह बात मंजूर की कि हमने बिक्री भण्डारोंके मार्फत साहित्य और विचार-प्रचारका उतना काम नहीं किया, जितना हम कर सकते थे । सर्वोदय-परिवार एक मानकर हम काम करें और ग्राम इकाइयाँ संगठित करें ।

अन्तमें पूर्णचन्द्रजीने सारी चर्चाका समारोप करते हुए कहा कि समयकी कमी है, बहनोंने प्रेमाक्रमण आरम्भ कर दिया है । आपने इस बातपर जोर दिया कि चारों ओर अशान्त वातावरणमें हम बिना उत्तेजित हुए अपनेको बलिदान करें । चम्बल घाटी हमारी शान्ति-सेनाकी कसौटी

है। बाबा एकके बाद एक नया कार्यक्रम देते चल रहे हैं। हमें समग्र दृष्टिसे काम करना है। सम्मेलनमें हमने जो निर्णय किये हैं, उन्हें पूरी शक्ति लगाकर अमलमें लायें।

× × ×

पद्मा विद्यालयमें ही महिला सम्मेलन रखा गया था। बहुत अच्छी उपस्थिति थी। सारा हाल तो ठसाठस भर ही गया। पुरुषोंको बाहर खदेड़ दिया गया। हम लोग भी नीचेसे उठकर ऊपरके स्टेजपर आ गये।

मधुबन राम लखन मन भायो !

इस गीतसे सम्मेलनका श्रीगणेश हुआ। बाबा भी ऊपरके स्टेजपर आकर बैठे। निष्काम सेविकाओंकी माँग करते हुए बाबाने अपना प्रवचन आरम्भ किया। बोले :

हिन्दुस्तानका अपना गुण है—ब्रह्मविद्या। इस ब्रह्मविद्याकी उपासनाके लिए ऐसे सेवक-सेविकाओंको आगे आना चाहिए, जो बिना किसी भेदभावके निष्काम भावसे सेवा कर सकें। लोकमान्य तिलक कहा करते थे कि 'भारतमें धर्मकी रक्षा ज्यादातर स्त्रियोंने की है।' धर्मका स्वभाव है, प्रेम और संयम। इन्द्रिय मनको गलत राहपर जानेसे रोकना संयम है। धर्मके इन दोनों लक्षणोंका अर्थ है, मर्यादा। हाथ, पाँव और वाणी मर्यादामें काम करें। यही धर्मशास्त्र है। इस मामलेमें स्त्रियोंने नेतृत्व किया है।

प्राचीन कालमें स्त्रियोंकी जो ऊँची स्थिति थी, वह आज नहीं है। जनकको सुलभाके पास ज्ञान लेने जाना पड़ा था। आजकी स्त्रियाँ बच्चोंका पालन पोषण और घरका काम करती हैं, बाहरके कामोंमें वे पुरुषों जितनी निष्ठा नहीं दिखातीं। उन्हें इस तरफ बढ़ना चाहिए। छोटे बच्चोंकी शालाएँ स्त्रियोंके हाथमें रहनी चाहिए। साथ ही पुरुषोंको अंकुशमें रखनेका काम भी स्त्रियोंको सँभालना चाहिए।

हिंसाको रोकनेका काम स्त्रियाँ करें। गांधीने शराबकी पिकेटिंगके

लिए स्त्रियोंको भेजा। कहा : 'ज्यादासे ज्यादा पवित्रको जाना चाहिए बदमाशोंके खिलाफ।' इसी तरह भूदानके काममें भी बीसों स्त्रियाँ आगे आयी हैं। उनकी सच्ची उन्नति तभी होगी, जब उनमें शंकराचार्यकी तरह दो-चार निकलेंगी। वे योगिनी बनें, ब्रह्मवादिनी बनें। हिन्दू धर्ममें उन्हें कितना ऊँचा स्थान मिला है—मातृदेवोभव कहा गया है। उनमें बहादुरी ज्यादा होती है। शेरसे शेरनीमें ज्यादा हिम्मत होती है। शेर गोलीके डरसे भाग जायगा, पर शेरनी बच्चेको बचानेके लिए अन्त-अन्त तक डटी रहेगी। यह बहादुरी बहनोंमें होनी चाहिए।

बहनें ब्रह्मवादिनी बनें, वीर बनें, गहने आदि दोष छोड़ दें, बच्चोंकी तालीम अपने हाथमें लें, समाज-योजनामें हिंसासे पुरुषोंको विरत करें और सर्वोदय पात्रका काम हाथमें उठा लें। घर-घरमें सर्वोदयका सन्देश पहुँचायें।

× × ×

रात्रि-प्रार्थनाका समय हुआ तब बरहदमें मराठी भजन गानेवाले भाई अपनी कीर्तन-मण्डली लेकर आ गये। बाबाने कहा : आपको तो ७ बजेका टाइम न दिया था! इतनी देरसे क्यों आये? अब तो आपका टाइम निकल गया!

बोले : देर तो हो गयी बाबा! क्षमा करें।

बाबा : अच्छा, प्रार्थनाके बाद कीर्तन शुरू करना। मैं लेट जाऊँगा। मना न करूँ, तो दूसरा भजन भी चला सकते हो।

'बहुत अच्छा, बाबा!'

तबतक बाळभाईने कहा : रामऔतारको आगरा भेजना है न? करणभाई तो चले गये।

बाबा : और कौन जा रहा है आगरा?

मैं पासमें ही था। दोपहर जलेश्वरभाईसे बात हुई थी। कह रहे थे कि कलके पड़ावसे आगरा होकर लौट जाऊँगा। मैंने कह दिया : कल जलेश्वरभाई जानेवाले हैं आगरा!

बाबा : बुलाओ जलेश्वरभाईको और औतार को ।

दोनोंके आनेपर बाबा बोले : जलेश्वरभाई, कल औतारको आगरा ले जाना है ।

'बहुत अच्छा, बाबा ।'

बाबा : औतार, कल तुम चले जाना जलेश्वरभाईके साथ आगरा ।

'अच्छी बात है, बाबा ।'

×   ×   ×

प्रार्थनाके बाद कीर्तन चला । भीड़से कहा गया कि आप लोग जायें, बाबा अब सोयेंगे ।

'रूप पाहता लोचनीं, सुख झाले हो साजणी ।' से जो कीर्तन आरम्भ हुआ, सो देरतक चलता रहा । बाबा लेटे ही न रहे, उठकर बैठ गये और स्वयं भी ताली बजा-बजाकर कीर्तन करने लगे ।

बहुत देरतक भक्ति और संगीतकी गंगा प्रवाहित होती रही । हम सब निमज्जन करते रहे उसमें !

कितना सुख ! कितनी शान्ति !! कितना आनन्द !!!

×   ×   ×

रातको अच्युतभाईके साथ निकला जगदीशभाईको पहुँचाने । साइकिलमें हवा कम थी, दुकानें बन्द हो रही थीं । मुश्किलसे एक जगह एक लड़केने हवा भरी । वर्ना बेचारे पैदल भटकते मुरार तक । उन्होंने एक मजेदार घटना सुनायी आज । कहा : राजकुमारभाईकी पत्नी आज मिली थी बाबासे । बाबाने राजकुमारको बुलाकर उनका हाथ पकड़ लिया और कहा—'मेरा हाथ पकड़ा है न तुमने ? अपनी पत्नीका पूरा ध्यान रखना होगा । निष्काम सेवक हो तो क्या ! ऐसी बेपर्वाही नहीं चलेगी । समझे ?'

'जो आज्ञा, बाबा !' कहकर उन्होंने वचन दिया है उसका ध्यान रखनेका ।

○ ○ ○

बाबा, वृजन सों मति लेह !

नयागाँव

८ जून '६०

'फाँसीपर चढ़ना होगा, तो खुशीसे चढ़ोगे !'

रातके चार बजे ग्वालियरसे प्रस्थान करनेके पूर्व जनरल यदुनाथ सिंहने रामऔतारको सम्बोधित करते हुए कहा।

रामऔतार बोला : 'जी !'

× × ×

नगरसे बाहर खुली सड़कपर पहुँचते ही मेरी पुकार पड़ी।

बाबाने पूछा : क्यों पूरा दर्शन हुआ न ?

मैं : हाँ बाबा !

बाबा : तुम्हें पता है कि भिण्ड जेलमें क्या हुआ ?

मैं : नहीं बाबा।

बाबा : आर्म्स ऐक्टका मुकदमा चला था अपने नौ बागी भाइयोंपर। सबने खट-खट मंजूर कर लिया कि 'हाँ, ये बन्दूकें हमारी हैं, ये कारतूस हमारे हैं।'

मैं : यह तो बहुत बड़ी बात हुई बाबा। सत्यपर प्रतिष्ठित होकर उन्होंने अपना और हम सबका गौरव बढ़ाया।

बाबा : कहते हैं कि भिण्डके इतिहासमें ३० सालमें यह पहली घटना है। मैंने तो इन लोगोंसे यही कहा कि तुमने जो बुरे काम किये हैं, उनका साफ इजहार करो। तुमपर झूठे आरोप लगें, उनसे इनकार करो। फिर तुम्हें फाँसी भी पड़ना पड़े, तो खुशीसे उसे मंजूर करो, तभी तुम्हारा प्रायश्चित्त पूरा माना जायगा।

यह सब कहते-कहते बाबा गद्गद हो उठे। विक्टर ह्यूगोके 'ला

मिज़रेबल्स'की याद आ गयी उन्हें। बोले : लोग कहते हैं कि हृदय-परिवर्तन नहीं होता। पर यह क्या है ! 'ला मिजरेबल्स'में अपराधीके हृदय-परिवर्तनकी बड़ी अद्‌भुत कहानी है।

'हाँ बाबा, जेलमें मैंने उसे पढ़ा था '३२-३३ में। पढ़ता जाता था, रोता जाता था। जीन वैल्जीन तो हृदय-परिवर्तनके बाद एकदम साधु बन गया, बिलकुल पादरी जैसा !'

'हाँ, पुस्तकके दूसरे अध्यायमें उसके हृदय-परिवर्तनकी कहानी है।* मैंने तो मूल फ्रेंचमें ही उसे पढ़ा था। फ्रेंच अच्छी तरह आती नहीं थी। टोह टोहकर पढ़ता था। पहले संक्षिप्त संस्करण पढ़ा। बादमें पूरा ग्रन्थ देखा। बहुत अच्छा abridge (संक्षेप) किया है।'

'मैंने तो संक्षिप्त संस्करण ही पढ़ा था। दो जिल्दोंमें था। अंग्रेजी में।'

चर्चा आगे चली तो मैंने चम्बल क्षेत्रकी एक समस्याकी ओर बाबाका ध्यान खींचा। कहा : बाबा, महावीरभाई कह रहे थे कि यहाँ आल्हाका प्रचलन खूब है। आल्हामें लड़ाइयाँ ही लड़ाइयोंका वर्णन है, जिसके कारण द्वेषकी भावना खूब पनपती है। वह कड़ी क्या है जलेश्वर-भाई 'जिनके बैरी···?

जलेश्वर भाईने बताया :

जिनके बैरी सुख सों स्वावें,

जिनके जीवन को धिरकार'

'धिक्कार है उनके जीवनको जिनके बैरी सुखसे सोते हैं।'

'कैसी आग लगानेवाली कड़ी है यह !'—मैंने कहा : 'लोग जब सुनते हैं तो फड़क उठते हैं। इसके चलते दुश्मनीका यह तार पुश्त-दरपुश्त चलता रहता है।'

बाबा बोले : यह सब बदलना पड़ेगा। हिंसा-द्वेष फैलानेवाली सारी बातोंको बन्द करना पड़ेगा। अच्छे-अच्छे भाव फैलानेवाले प्रेम और क्षमा सिखानेवाले गीतों और भजनोंका प्रचार करना पड़ेगा।

* देखिये, परिशिष्ट ३।

बाबा गुनगुनाने लगे :

बाबा, वृच्छन सों मति लेहु ।
काटे वाको क्रोध न करही, सींचे न करहि सनेह ॥
धूप सहत अपने सिर ऊपर, औरको छाँह करेत ।
जो वाको पत्थर चलावै, ताहीको फल देत ॥
धन्य-धन्य है परउपकारी, वृथा मनुजकी देह ।
'सूरदास' प्रभु कहँ लगि बरनौं हरिजनसे मति लेह ॥

× × ×

शहरसे हमलोग काफी बाहर निकल आये थे । जलेश्वरभाईने बाबाको प्रणाम करते हुए कहा : बाबा, अब मैं चलूँगा ।

रामऔतारने भी प्रणाम किया ।

बाबाने कहा : यह तो इतने दिन हमारे साथ रहकर हमारा स्वयसेवक बन गया है। अच्छा जाओ, सद्भावना रखना, भगवान्में भक्ति रखना । ठीक है न ?

'हाँ, बाबा !'

× × ×

आजका पड़ाव ८ मील बताया गया था । सड़क-सड़कसे आते तो शायद उतना होता, पर लोग ले चले Short Cut से, छोटे रास्तेसे । धूल-धक्कड़से होते हुए जब हम वहाँ पहुँचे, तो बाबा बोले : यह तो अभी पाँच मील ही हुआ । चलो आगे । नहीं ठहरेंगे यहाँ !

उलट पड़े बाबा । गाँववालोंने मनानेकी कोशिश की, पर वायुको बाँध पाता है कोई ? हम दो-एक भाई पीछे रुक गये ।

दुबेजी, मैं, बिल्लोरेजी, अच्युतभाई पीछे रह गये थे । दुबेजी चलते-चलते अपने जीवनके मनोरंजक संस्मरण सुनाते रहे ।

पड़ावपर पहुँचकर देखा कि डाकबँगला बहुत छोटा है । किसीने बरामदेमें अपना बिस्तर डाला, किसीने पेड़के नीचे । मैंने बगलमें देखा

कि एक बरामदा है—तीन तरफसे घिरा। ऊँची-नीची ऊबड़-खाबड़ जमीन। एक किनारे लोहेकी एक कड़ाही रखी थी, दूसरे किनारे लोहेकी दो भारी चद्दरें। सोचा कि चद्दरें जमीनपर बिछा लें। बिस्तर डालनेको ठीक रहेगा।

बिल्लोरेजीको बुलाकर कड़ाहीको एक तरफ रखा। एक चद्दरको नीचे रखने लगा। वह अचानक गिर गयी मेरे बाँये पैरपर। आँखोंके आगे अँधेरा-सा छा गया। असहनीय दर्द और सूजन!

रूमाल पानीमें भिगाकर पैरपर बाँधा। वहाँ और क्या रखा था? बाईने तब तक बुलाया। चोट देखकर बोलीं: इसपर नमकका पानी डालना चाहिए।

वे नमक घोलकर ले आयीं। कोनेमें पड़ा-पड़ा डालता रहा उस पानीको।

थोड़ी देरमें भूताजी आ गये—मृदुला साराभाईको लेकर। साथमें भी दो बच्चियाँ—वीणा और प्रेरणा—ठीक हमारी चुन्नी-टुन्नीकी तरह। मुझे देखकर पूछने लगे: क्या हाल है पैरका?

मैंने कहा: बाँया तो अभी ठीक ही नहीं हुआ, दाहिना भी घायल हो गया बुरी तरह, लोहेकी चद्दर गिरनेसे।

बोले: तो नमकके पानीसे क्या होगा? चलिये, मेरे साथ डॉक्टर-को दिखाऊँ।

चने गुड़का नाश्ता अभी किया था हमने। साथी लोग भोजनके लिए गये थे। मेहरोत्राने मेरा सामान लपेटकर जीपपर रखा।

बाबा लेटे थे। मैंने प्रणाम किया तो जग्रदेवभाईने कहा: बाबा, भट्टजी जा रहे हैं।

'हाँ! जय जगत्!'

× × ×

'अब तो हम सज्जन-क्षेत्रसे निकल आये।' बाबाने मुरारमें ही मुझे यह इशारा किया था। मैं ग्वालियरसे ही काशी जानेवाला था। पर

महादेवीताईके कहनेसे दो-दिन और रुक गया था। वे भी मेरे साथ काशी चलनेवाली हैं।

'कल मैं आ जाऊँगी ग्वालियर'—कहा ताईने और मैं सबको प्रणाम कर चल पड़ा जीपसे। मेहरोत्रा भी चल रहा है साथमें।

जीप दौड़ रही है—ऊपर धूप है, सामने सड़क। ३८ दिनका बाबाका यह सत्संग, इतने मित्र, इतने साथी, चम्बलके ये बेहड़, यहाँकी सारी खट्टी-मीठी स्मृतियाँ एक-एककर नाच रही हैं आँखोंके सामने !

महादेवीकी कड़ियाँ मानस पटपर उभर रही हैं :

सखे, यह है मायाका देश,
क्षणिक है मेरा तेरा संग !
यहाँ मिलता काँटोंमें बन्धु,
सजीला-सा फूलोंका रंग !!
तुम्हें करना विच्छेद सहन,
न भूलो हे प्यारे जीवन !!

• • •

काशीसे फिर काशीमें !

काशी

१४ जून '६०

दुनिया गोल है। १० अप्रैलको निकला, आज लौट पाया डेढ़ मास बाद। काशीसे हाथरस, हाथरससे आगरा, आगरासे ग्वालियर, ग्वालियरसे कानपुर, कानपुरसे काशी !

उस दिन ग्वालियरमें डॉक्टरको सौंपते हुए भूताजी बोले : इन्हें फलाँ फलाँ इंजेक्शन दे देना और मरहम-पट्टी कर देना अच्छी तरह। एक घण्टेमें भेजता हूँ खाना खिलाकर !

आनेपर डॉक्टरने चोट देख-दाखकर कहा : कोई Serious (खतरेकी) बात नहीं। टिंचर लगाकर पूरे पैरको कस दिया और एक टिकिया घोलकर पिला दी। वैसी ही जैसी विलोरेजीने नयागाँवमें खिलायी थी मुझे—दर्द बन्द करनेको।

× × ×

दूसरे दिन डॉक्टरके दवाखानेमें बहुत देर इन्तजार करना पड़ा। चि० बाबा भूता ले आया एक ताँगा। मेहरोत्रा भी साथ था। आँखोंसे अशक्त एक बड़े मियाँ थे दुकानकी पहरेदारीपर। बोले : यह डॉक्टर दवाकी गोली भी बेचता है, बन्दूककी गोली भी ! डॉक्टरीसे कहीं ज्यादा लाभ है उसे बन्दूक कारतूस बेचनेमें। इसलिए उसे परवाह नहीं रहती डॉक्टरीकी !

टिंचर लगाकर, पट्टी बाँधकर उसने मुझे फिर चलता कर दिया। कलकी गोली फिर खिला दी।

दोपहरमें ताई आ गयी। खा-पीकर बोली : ग्वालियरका किला घूमना है।

ट्रेनको थोड़ी ही देर थी। हम सब जीपसे रवाना हुए। मेहरोत्रा घरपर ही बाबाके साथ खेलता रहा कैरम बोर्ड। मैंने जीपपर बैठे-बैठे ही किलेका चक्कर लगा लिया। चि० रतनप्रभाने दिखाया ऊपरसे : देखिये वह है अपनी शिंदेकी छावनी और वह है अपना मकान—बागलेकी कोठी!

× × ×

मेहरोत्रा सबके साथ आया हमें स्टेशन पहुँचाने। प्लेटफार्म टिकट ले लिया उसने। थोड़ी देरमें कहता है : 'मैं भी चलूँ, झाँसी तक? बहन है वहाँ। बरसोंसे नहीं गया!'

मैंने कहा : 'नेकी और पूछ-पूछ!'

झाँसी पहुँचते-पहुँचते अँधेरा हो गया। लम्बा प्लेटफार्म पार करते करते मुझे स्वर्गस्थ नानी याद आ गयी। खा-पीकर मेहरोत्राने कानपुर-वाली ट्रेनमें अच्छी जगह हमारा बिस्तर लगा दिया।

ताई तो काशी चली आयी। मैं कानपुरमें चार दिन रुक गया। भैया गंगाचरण शर्माने रोक लिया। बाँये पैरकी खूब सेंकाई की गयी। सूजनमें कुछ कमी आयी, दर्द भी कुछ घटा। पर आज स्टेशनके लिए थोड़ी दूर पैदल चलनेमें और मुगलसरायमें पुल पार करनेमें बड़ी मुसीबत रही। लहुराबीरके बसस्टैण्डसे रिक्शा करके आ पहुँचा घर।

आइये, कुछ सोचें !

जग-निस्सिएहिं भूएहिं तसनामेहिं थावरेहिं च।
नो तेसिमारभे दण्डं, मणसा वयसा कायसा चेव॥

—महावीर

चम्बल घाटीमें आतंककी रात : १

स्वरसवाही विदुषोऽपि तथारूढोऽभिनिवेशः ।

पतञ्जलि : योगसूत्र २।९

मौतका डर बड़े-बड़ोंके छक्के छुड़ा देता है । यह धाकरदेवा, जिसने ऊपरसे नीचेतक सरकारी पुलिसके बड़े-बड़े अधिकारियोंको प्रकम्पित कर रखा था, जिसके डरसे बड़ों-बड़ोंको पसीना छूटता था, लोगोंको गोलियोंसे भूननेमें जिसे रत्तीभर भी हिचक नहीं होती थी, वही धाकरदेवा १९२४ में जब फाँसीके तख्तेकी ओर ले जाया जाने लगा, तो फूफा फाड़-फाड़कर रो उठा !'

×　　×　　×

लेकिन सुकरात !

जहरका प्याला पी रहा है, उसके चेले छाती पीट-पीटकर रो रहे हैं और वह मुसकराकर कहता है : 'छिः छिः ! तुम लोग स्वर्गका मेरे चेले बने ! इस मरणशील चोलेके लिए रोते हो !'

माग रहैया सब काहूकी, कोउ आज मरै कोउ कालि !

कालदेवका प्रहार तो एक दिन होना ही है, फिर डरना क्या !

भगवान् कृष्णने अर्जुनको अपना विराट् रूप दिखाकर कहा : देखता है अर्जुन, ये सब तो मौतके मुँहमें ही जानेवाले हैं, मैंने तो पहले ही इनको मार डाला है, तू तो निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन ।

बाबा कहते हैं और ठीक ही कहते हैं कि 'कोई आदमी कब मरता है ? तभी जब उसके प्रारब्धका क्षय होता है । बाबाका जिस क्षण प्रारब्ध

१. झवेरचन्द मेघाणी : माणसाईना दीवा, पृ० १६७ ।

अब होगा, उसी क्षण वह मरेगा। उसके पहले उसके दो टुकड़े कर दो, तब भी वह नहीं मरेगा!'

तब मौतसे डरना क्यों? दिनमें हजार बार मरनेकी जरूरत?

× × ×

चम्बल घाटीमें चारों ओर आतंकका राज है। जिसे देखिये, मौतकी घड़ियाँ गिन रहा है। कैसा तमाशा है कि लोग हाथमें बन्दूक लिये हुए हैं और डरके मारे थर-थर काँप रहे हैं!

कैसी दयनीय दशा है यह!

यहाँकी आबादीको हम सात भागोंमें विभाजित कर सकते हैं:

(१) बागी या डाकू (२) पुलिस (३) ग्राम-रक्षा-दल (४) डाकुओंके मुखबिर (५) पुलिसके मुखबिर (६) पैसेवाले और (७) साधारण जनता।

इनमें सबसे छोटी संख्या है डाकुओंकी, सबसे बड़ी संख्या है जनता-की। पर तमाशा यह है कि ये सातोंके सातों आतंकसे ग्रस्त हैं।

× × ×

बागी या डाकू हमेशा डरते हैं पुलिससे, पुलिसके मुखबिरोंसे। बेहड़ोंमें छिपते फिरते हैं। हर क्षण मौत सिरपर नाचती रहती है। पता नहीं कब पुलिससे गोली चल जाय, पता नहीं कब कौन आदमी दगा दे दे!

६०)-७०) पर जीनेवाले पुलिसके कोई २५ हजार ज्वान जगह-जगह बिखरे हैं। शस्त्र और सत्ताका बल रखते हुए भी वे आतंकग्रस्त रहते हैं। पता नहीं कब डाकू आकर उनपर हमला कर दें अथवा डाकुओंके मुखबिर उनके लिए घातक सिद्ध हो जायँ। मरनेपर ८) मासिककी जो पेंशन मिलेगी, उससे बे-बापके बच्चे पेटभर दूध भी तो नहीं पी सकेंगे!

ग्रामरक्षा-दलवालोंको रक्षाके लिए बन्दूकें मिल गयी हैं सही, पर उनपर भी डाकुओंके हमलेका आतंक छाया रहता है। पता नहीं, डाकू कब आकर हमला कर दें! डाकुओंके पास ज्यादा बन्दूकें होंगी, तो वे पीटे बिना न रहेंगे।

डाकुओंके मुखबिरोंको डाकुओंकी ओरसे रक्षाका आश्वासन रहता है, पर पुलिससे वे डाकुओंकी अपेक्षा ज्यादा डरते रहते हैं। कारण, डाकुओंको पुलिसका सामना यदा-कदा ही करना पड़ता है, ये तो हरदम मौतके मुँहमें ही रहते हैं। पता नहीं, कब कौन पहचान ले, कब किसकी निगाह टेढ़ी हो जाय!

पुलिसके मुखबिर पुलिसकी बन्दूकोंके सायेमें रहते हैं, पुलिसका वरदहस्त उनपर रहता है, फिर भी उन्हें यह खौफ खाये जाता है कि पता नहीं, कब डाकू या उनके मुखबिर हमला कर बैठें!

पैसेवालोंकी दुर्गति तो बयान ही क्या की जाय! प्रायः सभी पैसेवाले जान और मालके डरसे भिंड, शिवपुरी या ग्वालियरमें बसकर जान बचाते हैं। फिर भी डाकुओंका भय रात-दिन उनके सिरपर सवार रहता है। पता नहीं कब आकर वे लूट ले जायें अथवा उन्हें या उनके लड़कोंको उठा ले जायँ। और एक बार उनके चंगुलमें फँसे नहीं कि फिर पैसा तो मुँहमाँगा भरना ही पड़ेगा, जान भी जा सकती है, जलील भी होना पड़ सकता है।

रही साधारण गरीब जनता! वह बेचारी दोनों तरफसे पिसती है। उसके पास तो कुछ है ही नहीं। न बन्दूकोंका सहारा है, न पैसेका। र सबसे दबती है, सबसे डरती है, सबकी लात खाती है!

× × ×

डाकुओंके चलते न किसीकी जान सुरक्षित है, न किसीका माल, न किसीकी इज्जत। कब वे किसपर आकर हमला कर देंगे, किसको गोलीसे भून देंगे, किसकी नाक काट लेंगे, किसके हाथ पैर तोड़ देंगे, किस सधवाको विधवा बना देंगे, किस बापको निपूता कर देंगे, किस माँकी गोदीका लाल छीन लेंगे, किस युवतीको बेइज्जत कर देंगे, नहीं कहा जा सकता। कभी प्रतिशोधकी भावना, कभी पैसेकी लालसा, उनसे वे वे कृत्य करा डालती है, जिनके स्मरणसे रोंगटे खड़े हो उठते हैं!

एक गाँवमें एक बागी अपने एक जातिभाईके यहाँ आकर ठहरा। कुछ मुखबिरोंके कारण उसकी हत्या हो गयी। जिस बागीके गिरोहका वह

न्याही नहीं दे सकते। सच्ची बात नहीं कह सकते। रोम-रोम काँपता है लोगोंका इस धमकीसे—'कही सच्ची बात! अभी उड़ाता हूँ गोलीसे।'

इस आतंकके चलते क्रोध, घृणा, अविश्वास, वैर, द्वेष, विश्वासघात, अनाचार, अत्याचार चारों ओर खुलकर खेल रहा है।

कैसी शोचनीय स्थिति है यह!

× × ×

स्पष्ट है कि इस आतंकको मिटाये बिना चम्बल घाटीके निवासी सुखकी नींद नहीं सो सकते।

बापूने कहा था :

"सच तो यह है कि मरना हमें पसन्द नहीं होता, इसलिए आखिर हम घुटने टेक देते हैं। कोई मरनेके बदले सलाम करना पसन्द करता है, कोई धन देकर जान छुड़ाता है, कोई मुँहमें तिनका लेता है और कोई चींटीकी तरह रेंगना पसन्द करता है। इसी तरह कोई स्त्री लाचार होकर, जूझना छोड़, पुरुषकी पशुताके वश हो जाती है।...सलामीसे लेकर स्त्रीत्वभंग तककी सभी क्रियाएँ एक ही चीजकी सूचक हैं। जीवनका लोभ मनुष्यसे क्या नहीं कराता!"[२]

इसलिए जरूरत इस बातकी है कि चम्बल घाटीके निवासियोंके हृदयसे मृत्युका भय पूर्णतः निकाल दिया जाय और उन्हें इतना निर्भय बना दिया जाय कि पिस्तौल और बन्दूक, तोप और तलवारको अपने सीनेपर अड़ी हुई देखकर भी वे मुसकराकर कह सकें :

मौत इक बार जो आना है तो डरना क्या है!
हम सदा खेल ही समझा किये मरना क्या है!!

० ० ०

बदला लिया। हम इस बातकी कोशिश करते हैं कि किसी बेगुनाहको दण्ड न देना पड़े। जो आदमी हमारे खिलाफ मुखबिरी करता है, उसे भी हम एक-दो मौके देते हैं। सँभल जाय, तो कुछ नहीं कहते। नहीं मानता, तो दण्ड देना ही पड़ता है। जूता-पैजार करनेपर नहीं मानता, तो गोली मारनी पड़ती है। पर गोली मारनेमें हमें दुःख होता है। आखिर वह भी तो हमारा भाई है!

पुलिस कभी-कभी आदमियोंको मारकर हमारा नाम लगा देती है। टोपीदार बन्दूक पासमें रखकर कह देती है कि ये बागी हैं।

गाँवके लोग हमारी इज्जत करते हैं। तकलीफ उठाकर भी हमारा पता नहीं देते। मानते हैं कि हम उन्हें पुलिसके जुल्मोंसे बचाते हैं।

हमारा एक चचेरा भाई फौजमें था। एक कत्लमें पुलिसने उसे फँसा दिया। पर पुलिस उसका कसूर साबित नहीं कर सकी। इसलिए वह छूट गया। अब उसकी नौकरी भी छूट गयी है। बेकार घूमता है। पुलिसने हमारा सारा घर खोद डाला। बच्चे ससुरालमें रहते थे। वहाँ भी पुलिस उन्हें सताती रही। तब वे जाकर दूसरी जगह रहने लगे।

× × ×

छह : गाँवके एक हरिजनसे हमारी रंजिश थी। उसका खून हो गया। किसीने दूसरे दो आदमियोंके साथ हमारा भी नाम लिखा दिया। पुलिसने हमें भी फाँस दिया। बादमें छूट तो हम तीनों गये, पर इस अन्यायसे जी खौल उठा और हम बागी बन गये।

जबरका साथ दुनिया देती है। गरीबोंको सब सताते हैं !

× × ×

सात : हमारे एक चाचाको २० सालकी सजा हुई थी। उसे काट-कर वे आये। उसके बाद दुश्मनोंने उन्हें मरवा दिया। हमारे पीछे भी बहुत दिनोंसे पुलिस पड़ी थी। उसने मैनपुरी, एटा, आगरामें कत्ल और डकैतीके ४ मुकदमे हमपर चलाये। चारोंमें हम बरी हो गये।

उसके बाद एक दफा पुलिस हमें हारमें पकड़ ले गयी। बाजरामें हथियारबन्द पुलिस छिपी थी। उसने चारों तरफसे हमें घेर लिया और हमसे कहा : 'फलाँ-फलाँ बागियोंको पकड़ा दो। पुलिसके मुखबिर बन जाओ।' हमें ५०) भी दिये। हमने कहा : 'अच्छी बात है। हम उन लोगोंको पकड़ा देंगे।' ऐसा कहकर हम भाग गये।

पुलिसका एक अफसर हमारे पिताका दोस्त था। उसने हमसे कहा कि तुम भाग जाओ, नहीं तो जानसे हाथ धो बैठोगे।

जान बचानेको मैं बागी बन गया !

× × ×

आठ : गाँवमें पार्टीबन्दी थी। झगड़ेमें पुलिसने हमें भी फाँस लिया। मुकदमेमें हम जीत गये। जिस बनियेसे झगड़ा था, उसने अपने घरपर पुलिस बैठा ली। यह पुलिस जबतब हमें पकड़कर पीटने लगी। मार खाते-खाते तबीयत ऊब गयी, तब हम बागी बन गये।

× × ×

नौ : पुलिसने हमसे कहा कि फलाँ [illegible] ...ठ डराया धमकाया। हमारे घरके तमाम [illegible] ...मारे जान बचानेको हम तीन भाई इधर- [illegible] ...गये।

गाँवोंमें जगह-जगह पार्टीबन्दियाँ चलती हैं, चुनाव चलते हैं। मुखिया, पटेल, पटवारी, अन्य सत्ताधारी एक तरफ, दूसरे लोग एक तरफ। अन्याय, अत्याचार, वैर-विरोध फलता-फूलता रहता है। इस विषवृक्षकी शाखाओंमें कोंपलें फूटती हैं, जिन्हें हम कहते हैं—'बागी!'

कहते तो लोग यहाँ तक हैं कि कुछ सियासी पार्टीवाले भी डाकुओं-का अपने ढंगसे उपयोग करते हैं। चुनावमें वोट तक डलवानेके लिए डाकुओंके कुप्रभावका उपयोग किया जाता है! उन्हें बचाने और शरण देनेमें, हथियार देने-दिलानेमें भी कुछ लोगोंका हाथ रहता है।

यह सब न हो, तो डाकू टिकेंगे कैसे? 'चोरके पाँव ही कितने!'

× × ×

चम्बल घाटीमें शान्तिकी स्थापनाके लिए इस दुष्टचक्रको तोड़ना पड़ेगा। विषवृक्षकी जड़पर कुठाराघात किये बिना यह समस्या सुलझनेवाली नहीं। ऊपर-ऊपरकी फुनगियाँ काटनेसे क्या होनेवाला है?

जरूरत है इस बात की कि बागी बननेके मूल कारण मिटाये जायँ ताकि नये बागी पैदा न होने पायँ। पुराने बागियोंको समझा-बुझाकर राहेरास्तपर लाया जाय। उसके लिए सही रास्ता खोजना होगा। कारण,

राही कहीं है, राह कहीं, राहबर कहीं,
ऐसे भी कामयाब हुआ है सफर कहीं?

○ ○ ○

डण्डा, जेल और फाँसीका रास्ता : 3 :

'I will break your jaw !' (तोड़ दूँगा तेरा जबड़ा !)—यह है एक बर्मी अफसरका पेटेण्ट वाक्य, जिसका कि वह अपने बँधे घूँसेके साथ उस समय प्रयोग करता था, जब आजादीके आन्दोलनके दिनोंमें बिहारकी एक जेलमें पड़े राजनीतिक बन्दी अपनी कोई शिकायत लेकर अधिकारियोंके पास जाते थे। इन 'सिरफिरों' को ठीक रखनेके लिए उक्त बर्मी अफसर खास तौरसे बुलाया गया था बिहारमें।

ध्वजाभाईको इसका अनुभव है, हमारे अहद फातमी और बिहारके दूसरे साथियोंको भी।

× × ×

डण्डा, जेल, फाँसी !

अपराध निर्मूलनके ये ही सब तरीके हैं, जो ब्रिटिश सरकार अपनी विरासतमें छोड़ गयी है हमारे देशमें।

जेबमें जो पैसा होगा, वही लेकरके तो हम बाजारमें जायेंगे !

× × ×

गाली और डण्डेकी भाषा मनुष्यमें सुधार लाना तो दर-किनार, वह उसकी आत्मसम्मानकी भावनाओंको ठेस पहुँचाकर उसे समाजका शत्रु बनानेमें ही सहायक होती है। अच्छा असर तो उसका कभी होता ही नहीं। कभी भी नहीं।

लाञ्छित और अपमानित व्यक्तिके मनपर जो विरोधी प्रतिक्रिया होती है, उसके लिए दूर जानेकी जरूरत नहीं। रोज ही तो हम देखते हैं कि छोटे-छोटे बच्चे भी डाँट-फटकार सुनकर उबल पड़ते हैं, विद्रोह कर बैठते हैं ! फिर बड़ोंका तो पूछना ही क्या ! हाँ, विवश होनेसे मानव अपनी

भावनाओंकी अभिव्यक्ति न कर सके, यह बात दूसरी है। वर्ना दब जाने-पर नन्हीं-सी चींटी भी काट खाती है!

× × ×

दण्डशास्त्रका आजतकका इतिहास इस बातका प्रमाण है कि गाली-गलौज, मार-पीट, बेंत, कैद, जुर्माना, कालापानी, फाँसी जैसे पत्थरका जवाब पत्थरसे देनेके तमाम साधन अपराधियोंको अपराध करनेसे विरत नहीं कर सके। यह बात दूसरी है कि दण्ड देनेके तरीकोंमें समय-समयपर कुछ हेर-फेर होता रहा है।

घोरसे घोर अमानुषिक उपाय काममें लाकर देखे जा चुके हैं। कभी अपराधीको हाथीके पैरोंतले कुचला जाता था, कभी शेर-चीतोंसे उसकी कुश्ती करायी जाती थी, कभी सूलीपर उसे लटकाया जाता था, कभी आगकी जलती भट्ठीमें उसे झोंक दिया जाता था, कभी गरम तेलके कड़ाहमें या गरम तवेपर उसे भून दिया जाता था, कभी बन्दर, कुत्ते, मुर्गी, साँपके साथ बोरेमें बन्द करके पानीमें उसे फेंक दिया जाता था, कभी ढेले मार-मार उसे मार डाला जाता था; कभी पहियोंके तले उसे रौंदा जाता था, कभी भालेकी नोकपर उसे उछाला जाता था, कभी क्रूसपर उसे लटकाया जाता था, कभी उसके शरीरमें गरम सलाखें घुसेड़ दी जाती थीं, कभी जिन्दा जमीनमें गाड़कर ऊपरसे कुत्ते छोड़ दिये जाते थे! कहीं गिलोटिनसे सिर कलम करनेकी प्रथा थी, कहीं जलाकर भस्म कर डालनेकी!

अपराधीके गलेमें रस्सीका फंदा डालकर फाँसी लगानेकी प्रथा, तो आज विश्वके अनेक देशोंमें चालू ही है। हाँ, अमेरिकामें इधर बिजलीकी कुर्सी या सुगन्धित गैसका भी प्रयोग किया जाने लगा है—इस उद्देश्यसे कि जान लेनी ही है, तो तड़पा-तड़पाकर क्यों ली जाय, जब कि विज्ञान इतना बढ़ गया है कि एक एटम बम आननफानन लाखों जीवोंका इस दुनियासे उस दुनियामें तबादला कर देता है!

दण्ड देनेके चार प्रमुख प्रकारोंका विश्वमें अभीतक प्रयोग होता है :

१. फाँसी, निर्वासन या कैद
२. शारीरिक दण्ड
३. सामाजिक अप्रतिष्ठा और
४. जुर्माना ।

आइये, हिंसासे हिंसाको मिटानेके इन साधनोंपर थोड़ा-सा विचार करें ।

× × ×

अत्यन्त प्राचीन कालमें ही नहीं, मध्यकालीन युगमें भी मृत्युदण्ड खूब प्रचलित रहा । जलाकर, तेलमें भूनकर, शूली देकर यह 'कानूनी हत्या' अनादि कालसे जारी है । प्राचीन भारत हो या रोम, जर्मनी हो या फ्रांस, इजराइल हो या स्विट्जरलैंड, अमेरिका हो या इंग्लैण्ड, सबकी एक-सी ही कहानी है ।

रिकार्ड कहता है कि जूरिख और इवाजमें सोलहवीं शताब्दीमें ५७२, सत्रहवींमें ३३६ और अठारहवींमें १४९ व्यक्तियोंको मृत्यु-दण्ड दिया गया ।[1] इंग्लैण्डमें पन्द्रहवीं शताब्दीके आरम्भमें १७ व्यक्तियोंको, १७८० में ३५० को मौतके घाट उतारा गया । १८१४ में वहाँ ८, ९ और ११ सालके तीन बच्चोंको इसलिए फाँसी दी गयी कि उन्होंने एक जोड़ी जूते चुराये थे ![2] फाँसी पाये व्यक्तिका शव जंजीरोंमें जकड़ा या तारकोलसे पुता हुआ बहुत दिनों तक लटका रहता था, ताकि लोग दहलते रहें ! चित्रकारोंके चित्रोंमें प्रकृतिके साथ-साथ इसका भी चित्रण रहता था ![3]

एक जमानेमें इंग्लैण्डमें साधारणसे साधारण २२० जुर्मोंके लिए फाँसीका दण्ड था !

कोई पाँच शिलिंग चुरा ले, तो फाँसी !

---

१. चार्ल्स एन० फानबार : ए हिस्ट्री ऑफ कण्टीनेण्टल क्रिमिनल लॉ, १९११, पृष्ठ १९९ ।

२. 'पनिशमेण्ट आफ डेथ', फिलन्थ्रापिस्ट, ४ : १९०; १८१४ ।

३. डब्लू० एण्ड्रूज : ओल्ड टाइम पनिशमेण्ट्स, १८९०, पृष्ठ २११-२१२ ।

इसी बातका क्या ठिकाना कि अपराधीको दिया गया प्राण-दण्ड सर्वथा उचित ही है ? कितनी ही बार किसीके फाँसी पड़ जानेके बाद यह पता लगा है कि वह व्यक्ति निरपराध था ! आखिर जज भी तो गलती कर सकता है। जजोंमें मतभेद रहनेपर बहुमत फाँसीके पक्षमें हो और अपराधीको फाँसीपर लटका दिया जाय, तो इसे उचित कहा जायगा ?

इतना ही नहीं, क्षणिक आवेश या उत्तेजनामें आकर मानव कोई गलती कर बैठता है। होश आनेपर वह उसके लिए प्रायश्चित्त करके अपना जीवन सुधार सकता है। फाँसीपर लटका देनेसे मानवके सुधारका अवसर ही समाप्त हो जाता है।

× × ×

डाकेके अभियोगमें मौतकी घड़ियाँ गिननेवाले फाँसीके एक बन्दीका पत्र मैंने देखा है। लिखता है वह : 'भारत सरकार-यदि उचित समझे, तो डाकुओंकी भारी शक्तिको फाँसीपर न चढ़ाकर मणिपुर नागाओंके सामने अथवा कश्मीरमें पाकिस्तानकी सीमा-रेखापर अथवा चीनकी सीमा-रेखापर जूझनेके लिए भेज दे। भारत-भूमिकी रक्षाके लिए वीर पुरुषोंकी भाँति अगर हमारा बलिदान हो, तो हमें कितनी प्रसन्नता होगी ! एक जल्लादके हाथसे फाँसी लगाकर निरर्थक मरवा देनेसे ऐसी मृत्यु लाख दर्जे वरेण्य है !...'

फाँसीपर लटकानेके बजाय देशके लिए प्राण न्यौछावर करनेकी यह माँग क्या विचारणीय नहीं है ?

× × ×

और घुला-घुलाकर मारनेका तरीका—निर्वासन ?

अवांछनीय अपराधियोंको निर्वासित कर देना भी दण्डका एक प्रकार है। पर लोग ऐसा मानते हैं कि 'कालेपानीकी सजासे तो फाँसी ही अच्छी। जिन्दगीभर घुलनेसे तो थोड़ी देरका कष्ट, चाहे वह कितना ही भयानक क्यों न हो, अच्छा समझा जाना चाहिए।' भाई परमानन्दकी 'कालेपानीकी कारावास कहानी' बताती है कि कालेपानीमें क्या होता है।

भिन्न भिन्न प्रदेशोंसे आये गये भिन्न-भिन्न प्रकृतिके लोग गन्दे अल्पायु वाले प्रदेशमें घर-परिवारवालोंसे हजारों मील दूर रहकर कैसा नारकीय जीवन बिताते हैं, इसकी सहज ही कल्पना की जा सकती है।

और फिर दिन-रात उनके मनपर यह बोझ रहता है कि हमारा कोई देश नहीं, हमारा कोई घर नहीं, हमारा कोई परिवार नहीं!

आस्ट्रेलियामें निर्वासित एक आयरिश विद्रोही जॉन मिचेलने वहाँकी १८५१ की स्थितिका वर्णन करते हुए लिखा है :

"हम जिस नैतिक और सामाजिक वातावरणमें रहते हैं, वहाँ हमें यह आसमान ही हरदम कोंचा करता है कि हमारा कोई देश नहीं है सिवा इस अपराधी उपनिवेशके! हमारा कोई नौकर नहीं! पड़ोसी भी हैं बहुत भोंड़े! हम इस जेल-व्यवस्थाका तीव्र विरोध करना चाहते हैं।"[८]

× × ×

जेलोंमें कैदियोंका जो हाल होता है, वह किसीसे छिपा नहीं है। जेलखानोंको क्रोपाटकिन राज्यके धनपर चलनेवाले, अपराध सिखानेके विश्वविद्यालय बताते हुए ठीक ही कहता है कि 'कुछ दिनों जेलमें रहकर चोर, डाकू आदि अपने पिछले धन्धेके लिए अधिक दक्ष होकर लौटते हैं। वे अपना काम पहलेकी अपेक्षा सफलतासे करना सीख जाते हैं और समाजके प्रति अधिक कटुता उत्पन्न कर लेते हैं।'

जेल तो आज सचमुच ही कारखाना बन गया है बदमाश ढालनेका! जिन अपराधोंके जुर्ममें मनुष्य कैद भुगतनेको जेलमें बन्द किया जाता है, उनमेंसे कौन-सा अपराध जेलके भीतर नहीं होता!

जिन लोगोंको जेलमें रहनेका मौका मिला है, वे इस तथ्यको स्वीकार करेंगे कि जेलोंमें अपराधियोंका सुधार तो दूर, उलटे उनका पतन और बढ़ जाता है! जेलसे वे पक्के बदमाश बनकर बाहर आते हैं। पहले कुछ कमी रहती है, तो जेलमें पहुँचकर वह पूरी हो जाती है![९] बाबू श्रीप्रकाश

८. जॉन मिचेल; जेल जर्नल, १८६४, पृ० २६४।

९. के० सन्तानम : सत्याग्रह एण्ड दि स्टेट, १९६०, पृष्ठ ३४।

जैसे सुलझे व्यक्तिका कहना है कि 'जेलका 'जीवन ऐसा है कि हममेंसे अच्छेसे अच्छे लोग भी वहाँ पहुँचकर 'तिकड़म' सीख लेते हैं और ऐसी-ऐसी हरकतें करने लगते हैं जिनपर बाहर हमें बड़ी शर्म लगे !' इसमें आश्चर्यकी बात ही क्या है ? को न कुसंगति पाय नसाई ?

कोई मनुष्य एक बार जेल चला जाता है, तो' तिरस्कार और अपमान उसके भाग्यमें लिख जाता है। वह छूटकर बाहर आता है, तो समाजमें उसे कोई स्थान नहीं, फिर उसके सुधारके सभी दरवाजे बन्द ! घूम-फिरकर वह फिर जेलमें ही पहुँच जाता है।

और यह बात भारतमें ही नहीं, विदेशोंमें भी है।

उदाहरण लीजिये :

'मैं जबतक जेलमें रहा, आदिसे अन्ततक मुझे तीव्र अपमान और तिरस्कार ही झेलते रहना पड़ा। कैदी जिस क्षणसे जेल अधिकारियोंके हाथमें पड़ता है, उसी क्षणसे उसके दुर्भाग्य और तिरस्कारका आरम्भ हो जाता है ! इससे कैदीका क्रुद्ध और हताश होना परम स्वाभाविक है। जेलमें मनुष्यके लिए सबसे खटकनेवाली बात यही है।'[१०]

अन्तर्राष्ट्रीय कुख्यातिवाला एक कैदी, जिसने जेलोंमें २५ वर्ष बिताये, अपने दुर्भाग्यका रोना रोते हुए लिखता है : 'मैं जहाँ जाता हूँ, मुझे समाज-बहिष्कृत माना जाता है। कानूनका चोगा पहननेवाले किसी भी व्यक्तिका मैं 'कानूनी शिकार' बन जाता हूँ। समाजके मेरे जो भी सम्पर्क आते हैं, वे मुझपर यही प्रभाव डालते हैं कि सभ्य समाजमें मेरे लिए कोई स्थान नहीं ! जो भी लोग मुझसे बात-व्यवहार करते हैं, उनकी भाषासे, उनके व्यवहारोंसे, उनके कार्योंसे एक ही स्वर निकलता है कि 'तुम खराब आदमी हो, हम तुमसे घृणा करते हैं !' समाज मेरे गालपर चपतें लगाता है ! अब अगर मैं पलटकर उसे चपत न लगाऊँ, तो मैं आदमी क्या ?'[११]

शिकागोके पैरण्टल स्कूलमें एक लड़का रखा गया सुधारके लिए। वहाँसे जब वह निकलता है, तो कहता है :

'बाहरके छात्रोंसे मिलनेमें मुझे हीनता लगती है। लोग मुझपर विश्वास नहीं करते। मैं लाख कहता हूँ कि मैं आगे बढ़ना चाहता हूँ, सीधे रास्ते हाईस्कूल करके कालेजमें जाना चाहता हूँ। पर सभी मुझसे यही आशंका रखते हैं कि मैं फिर कुछ बुरा करूँगा! अपने साथियोंसे मैं किस विषयपर चर्चा करूँ, यह मुझे सूझता नहीं। स्कूलमें हमें बात करनेकी मनाही थी। अब किसीसे बात करनेमें मुझे शर्म लगती है। मैं जबतक वहाँ रहा, किसीसे भी खोलकर बात नहीं कर सका। तबसे मुझमें हीनताकी जो भावना पनपी, वह कभी निकल नहीं सकी। कोई भी मुझे नहीं चाहता था। लोग मुझसे डरते रहते थे और सभी मुझपर अविश्वास करते थे!''

जानते हैं बादमें इस बाल-अपराधीका क्या हश्र हुआ!

वह दो अन्य सुधारशालाओंमें भेजा गया और उसके बाद वह बन्द कर दिया गया सरकारी जेलमें २३ सालकी कैदकी सजा भुगतनेके लिए!

× × ×

हमारे जनार्दनबिहारीका कहना है कि उनका एक अध्यात्मवादी, योगवाशिष्ठ-प्रेमी और वेदान्ती मित्र एक हत्याके सिलसिलेमें ७ सालको जेल गया और लौटा तबसे इतना दुराचारी, व्यभिचारी और बदमाश बन गया है कि जिसकी कभी कल्पना नहीं की जा सकती थी! आज दुनियाका शायद ही कोई दुष्कर्म उससे बचा हो!

जेलके सींखचोंमें रहकर आदमी जो कुकृत्य न सीख ले, सो थोड़ा!

× × ×

और एक बात। श्रीमन्त आदमीको जेलमें बाहरसे अच्छा खाना-पीना मिलता है, बावजूद इस बातके कि जेलके पहरुए कर्मचारी कैदियोंकी खुराकमेंसे खुद भी अपना हिस्सा लगाते हैं!

११. क्लिफर्ड आर० शा : डेलिनक्वेन्सी एरियाज, १९२९, पृष्ठ ४१।

बम्बई और मद्रासके मिल-मजदूरोंको और बम्बई प्रान्तके कैदियोंको मिलनेवाले भोजनकी तुलनासे इसका अन्दाज लग सकता है[१३] :

	मिल-मजदूरोंको (पौण्डमें)		कैदियोंको (पौण्डमें)	
पदार्थ	बम्बई	मद्रास	हलका श्रम	कड़ा श्रम
अन्न	१'२९	१'१३	१'३८	१.५
दाल	'०९	'०७	'२१	'२७
मांस	'०३	—	'०४	'०४
नमक	'०४	'०५	'०३	'०३
तेल	'०२	'०३	'०३	'०३
अन्य पदार्थ	'०७	'०९	—	—
योग	१'५४	१'३७	१'६९	१'८७

तो, जब जेलमें वक्तपर बाहरसे अच्छा खाना मिलता है, चिकित्साकी भी सुविधा रहती है, फिर यदि एक बारका कैदी दुबारा जेल आना पसन्द करता है, तो इसमें आश्चर्य क्या ! एक बार मैं तनहाईकी सजामें था, तो मैंने एक शीघ्र छूटनेवाले 'पक्का कैदी'को अपने कानों ,यह कहते सुना : 'अब बाहर जाकर काम करना तो मुश्किल है अपने लिए। एकाव हफ्तेमें कुछ खुराफात करके फिर लौट आऊँगा यहाँ। फिर इसी तरह मौजमे कटने लगेगी !'

बाबू श्रीप्रकाशको बाईस बारके एक सजायाफ्ता कैदीने बताया कि 'मेरे लिए जेल ही सबसे बढ़िया और सबसे सुरक्षित ठिकाना है !'

यों जेलखाना कैदियोंको 'जेलका पंछी' बनानेमें मदद ही करता है। बाहर उनपर अविश्वास है, उनके प्रति घृणा है, तिरस्कार है, कोई सीधे मुँह बात नहीं करना चाहता; ईमानदारीसे पेट पालना चाहे, तो काम नहीं मिलता। तो फिर उसका यह सोचना स्वाभाविक है कि चलूँ, फिर

१३. कन्हैयालाल मुन्शी : दि रिजन दैट ब्रिटेन रूल, पृष्ठ ५७-५८।

लौट चलूँ उन बदनाम साथियोंके बीच जहाँ सभी एक नावपर सवार हैं :
न तू कहे मेरी, न मैं कहूँ तेरी !

× × ×

अपराधी इधर जेलमें सड़ता है, उधर उसका परिवार भूखों मरता है, दाने-दानेको तबाह होता है। तभी तो बाबा कहते हैं : अपराधके जुर्ममें सजा अपराधीको कहाँ होती है ? वह होती है, उसके बाल-बच्चोंको ! मेरा बस चले, तो मैं कहूँ कि आ तुझे ? एकड़की सजा। इस जमीनपर तू गोद ला और बच्चोंको खिला !

× × ×

जेलोंमें बन्दीके प्रति किये जानेवाले अत्याचारोंकी कहानियोंने जब मानवकी मानवताको स्पर्श करना आरम्भ किया, तब जेल-व्यवस्थामें सुधारकी ओर लोगोंका ध्यान खिंचना शुरू हुआ। इंग्लैण्डमें एलिजाबेथ फ्राई और प्रिज़न डिसिप्लिन सोसाइटीने इस दिशामें अच्छा काम किया। फलतः सन् १८२३ और १८२४ में ब्रिटिश पार्लमेण्टने दो कानून बनाये। तबसे इस दिशामें थोड़ा-बहुत प्रयत्न चालू है, यद्यपि सुधारकी गति अत्यधिक धीमी है और पहलेसे बहुत कुछ मिलती-जुलती ही है। पहलेकी स्थितिका वर्णन करते हुए हक्सले लिखते हैं :[१४]

'Prisons were houses of torture in which the innocent were demoralized and the criminal became more criminal.'

'जेलखाने अत्याचारके ऐसे ठिकाने थे, जहाँ सीधे-सादे लोगोंको भ्रष्ट बनाया जाता था और अपराधियोंको घोर अपराधी !'

अपना दोष दूसरोंके मत्थे मढ़नेवाले और दूसरोंकी पीड़ामें सुखकी अनुभूति करनेवाले दण्डके समर्थक शुरूसे ही इस मानवतावादी आन्दोलनका विरोध करते आ रहे हैं। उनका कहना है कि 'अपराधियोंको पाल-

१४. एल्डस हक्सले : एण्ड्स एण्ड मीन्स, १९५७, पृष्ठ १४२ ।

डेने १८८७ से १८९४ के बीच डाकुओंको कोड़े लगवाये और डाकोंकी संख्या बढ़ गयी ! एक साल तो डाकोंकी संख्यामें १९८ की वृद्धि हो गयी ! १९०८ में जार्ज कार्डिफको भी ऐसा ही अनुभव मिला। कमेटीका निष्कर्ष है कि 'हमें ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला कि बेंतकी सजाकी अधिकतासे अपराध घटे हों अथवा बेंतकी सजा कम करनेसे अपराध बढ़े हों।'

ब्रिटिश पार्लमेण्टके सदस्य बेन्सन अपनी 'फ्लॉगिंग' नामक पुस्तकमें यही बताते हैं कि बेंतकी सजा पानेवाले अपराधी अपने अपराधोंको बार-बार दुहराते हैं। 'हावर्ड लीग' नामक दण्ड-सुधारक संस्थाने 'कारपोरल पनिशमेण्ट' नामक अपनी पुस्तकमें इंग्लैण्ड और स्काटलैण्डमें पड़नेवाले डाकोंकी तुलना करते हुए बताया है कि स्काटलैण्डमें कम डाके पड़ते हैं, यद्यपि वहाँ बेंतकी सजा नहीं है। इंग्लैण्डमें बेंतकी सजा रहनेपर भी डाकोंकी संख्या अधिक है।

इंग्लैण्डमें बेंतकी सजा है, देखादेखी भारतमें भी। अमेरिकाके मेरीलैण्ड और डेलावेयर नामक दो राज्योंमें भी बेंतकी सजा है। हाँ, वहाँ बेंतकी सजा पानेवाले हब्शियोंकी संख्या रहती है ८० फीसदी, गोरोंकी केवल २० फीसदी ![१७]

बेंत खानेवाले अनेक व्यक्ति आत्महत्या भी करते पाये गये हैं। डॉक्टर ग्रुवर कहता है : 'कोड़ेकी सजा अपराधीको अपराधपर विचार करनेका मौका नहीं देती। इसमें अपराध करनेकी प्रवृत्ति पैदा होती है !'

क्या लाभ है ऐसे अमानुषी दण्डसे ?

× × ×

और सामाजिक अप्रतिष्ठा !

उससे अपराध कुछ घटते हैं क्या ?

सत्रहवीं शताब्दीकी घटना है। न्यूयार्कमें एक आदमीने पड़ोसीके बगीचेसे कुछ गोभी चुराये। उसे दण्ड मिला कि वह उन गोभियोंको सिर-

---

१७. राबर्ट जी० काल्डवेल : रेड हन्नाह, डेलावेयर्स व्हिपिंग पोस्ट, १९४७, पृष्ठ ६९–७०।

न रहें तो दरवाजेमें खड़ा रहे और फिर पाँच सालके लिए बस्तीसे निर्वासित रहे।[18]

इंग्लैंडमें १६९८ में एक कानून बना कि अपराधीका बायाँ गाल लोहेसे दाग दिया जाय। आठ साल बाद इस दण्डको रद्द कर देना पड़ा। क्यों? इसलिए कि "...इससे अपराध रोकनेमें मदद नहीं मिल सकी। उल्टे हुआ यह कि ऐसे दागिल आदमियोंपर कोई विश्वास नहीं करता और वे जब ईमानदारीसे रोटी-रोजी नहीं पैदा कर पाते, तो विवश होकर स्वत चालेबाज ही चलते हैं।"[19]

कुछ देशोंमें अपराधीको सामाजिक रूपसे अप्रतिष्ठित करनेके लिए आज जिस पद्धतिका विशेष रूपसे प्रचलन है, वह है नागरिकताके अधिकारोंसे वंचित कर देना, वोट न डालने देना, कोई प्रतिष्ठित पद न देना, संविदा करने, कुछ धन्धे करने, विवाह करने, विदेशमें प्रवास करने आदिसे वंचित कर देना।

× × ×

दण्डका चौथा तरीका है—जुर्माना।

जुर्माना है तो बहुत पुराना, पर है वह निरर्थक-सा ही।

अमीरोंके लिए उसका कोई मूल्य नहीं। गरीबोंका वह प्राणलेवा है।

अमीरोंपर उसका कोई असर नहीं पड़ता। गरीब बेचारे तबाह हो जाते हैं। अपराध करता है एक, फल भोगना पड़ता है सारे परिवारको!

जुर्माना दण्डका स्वयं उपहास है!

× × ×

सवाल है कि दण्ड आखिर दिया क्यों जाता है? दण्डका उद्देश्य क्या है? उसका लक्ष्य क्या है?

---

18. फिलिप क्लीन : प्रिजन मेथड्स इन न्यूयार्क स्टेट, १९२०, पृ० २३।

19. ल्यूक ओ० पाइक : ए हिस्ट्री ऑफ क्राइम इन इंग्लैण्ड (१८७३-१८७६), खण्ड २, पृ० २८०।

दण्ड-विधायकोंका कहना है—दण्डके हैं तीन लक्ष्य।

पहला लक्ष्य है—अपराधीसे अपराधका बदला लेना और इस प्रकार उसके द्वारा की गयी क्षतिकी पूर्ति करना। प्रतिकार, प्रतिशोध, प्रतिहिंसा!

दूसरा लक्ष्य है—भय या आतंक उत्पन्न करना, ताकि फिर कोई वैसी हिमाकत या हरकत न करे।

तीसरा लक्ष्य है—अपराधीका सुधार।

ब्रिटिश कारागार-पद्धति जाँच समितिके सदस्य जार्ज वर्नर्ड शाने इसका तार्किक विवेचन करते हुए कहा है कि 'प्रतिहिंसाकी भावनाके चलते अपराधीके सुधारकी कल्पना ही नहीं की जा सकती। यह भावना ईसाइयतके सर्वथा प्रतिकूल है। इसमें द्वेषकी भावना भी है और है यह 'पापनाशक अन्धविश्वास' कि दो काले मिलकर एक गोरा हो जायगा!

'आतंक उत्पन्न करनेका लक्ष्य इसलिए पूरा नहीं होता कि इस बातका कोई ठिकाना नहीं कि सही अपराधीको ही उचित दण्ड मिल सकेगा। उसके कई कारण हैं। जैसे, अधिकारियोंके तरीके इतने दुष्टतापूर्ण हैं कि उन्हें जनताका पूरा सहयोग नहीं मिलता; अभियोक्ताको भारी असुविधा उठानी पड़ती है, समय भी बहुत बर्बाद होता है; अधिकांश लोग अत्यधिक संदिग्ध न्याय पानेकी अपेक्षा असन्दिग्ध पारिवारिक अप्रतिष्ठाका संकट उठाना पसन्द नहीं करते; और ऐसे अपराधोंकी संख्या अत्यधिक है जिनका कि पता ही नहीं चल पाता, जिससे इस बातकी पूरी सम्भावना रहती है कि असली अपराधी कभी कानूनके शिकंजेमें फँसेगा ही नहीं'![२०]

× × ×

दादा धर्माधिकारी ठीक कहते हैं :

'क्या हमने कभी सोचा है कि आखिर सजा किसलिए है? बदला अलग चीज है और सजा अलग। बदला एक आदमी दूसरेसे लेता है, पर जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तिको सजा करता है, तब उसे 'बदला' नहीं

---

२०. जी० बी० शा : इम्प्रिजनमेण्ट, १९२५; इंग्लिश प्रिजन्स अण्डर लोकल गवर्नमेण्ट, सुप्रा; भूमिका, संक्षेप, पैरा ३-४।

कहते। बाप बेटेको सजा देता है, न्यायाधीश अपराधीको सजा देता है। इन सबमें बदलेकी भावना नहीं होती। अगर हो, तो सजाका स्थान समाजमें नहीं रहेगा। सजामें बदलेकी भावना जितनी कम रहेगी, उतनी सजा शुद्ध होगी। दण्डमें न्याय होना चाहिए। न्याय तब होता है, जब उसमें प्रतिशोध और क्रूरता कमसे कम होती है। सजाका, दण्डका उद्देश्य मनुष्यको नाकाबिल बना देना नहीं है।"[21]

× × ×

स्पष्ट है कि सताकर, प्रतिशोध लेकर अपराधको रोकनेका तरीका गलत है। डण्डा, जेल और फाँसीके रास्तेसे आतंक पैदा किया जा सकता है, अपराधीका सुधार नहीं!

तब रास्ता?

रास्ता एक ही है और वह है—प्रेम, दया और दुआका रास्ता।

नीचे बन जाता है इंसान सजाएँ देकर।
जीतना चाहिए दुश्मनको दुआएँ देकर!

● ● ●

---

२१ दादा धर्माधिकारी : 'सजाका उद्देश्य', भूदान यज्ञ, २८ मई '६०।

प्रेम, दया और दुआका रास्ता : ४ :

जफ़ाएँ तुम किये जाओ, वफ़ाएँ हम किये जायें,
हमें भी देखना है यह कि कितने बेवफ़ा तुम हो !

अहिंसासे हिंसाका प्रतिकार !

पतञ्जलि भगवान् कहते हैं योगसूत्रमें :

अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्संनिधौ वैरत्यागः । २।३५

'अहिंसाकी प्रतिष्ठा हुई कि आसपासके सभी प्राणियोंका वैर छूटा !' और तब शेर और गाय एक घाटपर पानी पीने लगते हैं !

आप कहेंगे कि तू क्या बाबा आदमकी बात करता है ! आजकल ऐसा कहीं देखनेमें आता है ?

मैं कहता हूँ : हाँ !

गांधीके सत्याग्रहोंकी कहानी तो हम सबकी आँखों देखी कहानी है ।

इसके अलावा भी देश-विदेशमें पिछली शताब्दियोंमें अनेक स्थानोंपर अहिंसात्मक प्रतिकार होते रहे हैं । सफल प्रतिकार !

हंगरी, अफ्रीका, ब्रिटेन, भारत आदिके हालके ऐसे अनेक उदाहरण देते हुए ग्रेग साहब कहते हैं :

"अनेक देशोंके अनेक संतों और वीर पुरुषोंने अहिंसात्मक प्रतिकारके सिद्धान्तकी खोज करके उसका प्रयोग किया है । लाओत्से, कनफ्यूशियस, बुद्ध, जैन तीर्थंकर, ईसा, असाइसीके संत फ्रांसिस, जार्ज फाक्स, लियो टाल्स्टाय और अनेक ऐसे व्यक्तियोंने इसका प्रयोग किया है । आधुनिक युगके विशिष्ट व्यक्ति गांधीने इस सिद्धान्तका विशद् और सामूहिक रूपसे विधिवत् प्रतिपादन करके उसमें सफलता प्राप्त की है ।

"प्रश्न है कि यह अहिंसात्मक प्रतिकार क्या केवल बुद्धिजीवियों और

साधु-संतोंके उपयोगके लिए ही है ? क्या यह केवल पूर्वीय मनोविज्ञान और पूर्वीय विचार-पद्धति तथा पूर्वीय रहन-सहनके ही अनुकूल है ? नहीं, ऐसा कतई नहीं है। इसका विकास देखनेसे पता चलता है कि निरक्षर किसानोंने, औद्योगिक मजदूरोंने, ऊंचे पढ़े बुद्धिजीवियोंने, साधु-संतोंने और अत्यन्त साधारण कोटिके मनुष्योंने सफलतापूर्वक इसका प्रयोग किया है। अमीरों और गरीबोंने, नगरनिवासी लोगों और गंवार लोगोंने, मांसाहारियों और निरामिषाहारियोंने, यूरोपियनों और अमेरिकनोंने, रूसियों और चीनियोंने, जापानियों और भारतीयोंने, आस्तिकों और नास्तिकोंने इसका सफल प्रयोग किया है। राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रोंमें सफलतापूर्वक इसका प्रयोग किया गया है। व्यक्तिगत रूपसे भी इसका प्रयोग किया गया है, सामूहिक रूपसे भी।[1]

× × ×

प्रेमका रास्ता है ही ऐसा :

> अगर सोज़मुहब्बतमें न हो यह गैरमुमकिन है।
> शमाका जिस्म घुल जाता है, गर परवाना जलता है।

× × ×

आप शायद कहें कि रास्ता तो यह माकूल है, पर सवाल है कि क्या अपराधियोंपर, डाकुओंपर, लुटेरोंपर, चोरोंपर, बदमाशोंपर, हत्यारोंपर भी इसका प्रयोग किया जा सकता है ?

जरूर किया जा सकता है।

और जब हम अपराधकी तहमें घुसेंगे, तो देखेंगे कि हम सब एक ही नावपर बैठे हैं ! यह बात दूसरी है कि किसीका अपराध सेरभर है, किसीका सवासेर।

एक स्त्री हाजिर की गयी ईसाके सामने।

सामने खड़ी क्रुद्ध भीड़की ओर देखकर पूछा ईसाने : क्यों भाई, बात क्या है ?

---

१. रिचर्ड बी० ग्रेग : दि पावर ऑफ नॉन-वायलेन्स, १९३८, पृ० [illegible]।

विना, समाजकी सम्पत्तिमें एक कौड़ीकी भी वृद्धि किये विना, आप दस वर्षके भीतर समृद्धिशाली बन जायँगे ! नये नगरमें आपका महल खड़ा होगा और उसके सार्वजनिक स्थानोंमें होगा एक भिखारी-निवास ![2]

भूमिका भाटक किस गतिसे बढ़ता है, आपको पता है ?

शिकागोमें चौथाई एकड़का एक भूमिखण्ड १८३० में २० डालरमें खरीदा गया, १८३६ में वह २५००० डालरमें बेचा गया और १८९४ में उसका मूल्य आँका गया साढ़े बारह लाख डालर !

× × ×

जमीनका यह हाल है, और जरका ?

'टाकाय टाका बाढ़े !' पैसेसे पैसा बढ़ता है । शोषण, उत्पीड़न और बेईमानीके द्वारा एक ओर पैसेमें वृद्धि होती चलती है, दूसरी ओर दरिद्रता बढ़ती चलती है ।

मार्क्सने पूँजीका विश्लेषण करते हुए पूँजीवादके भयंकर रूपका चित्रण किया है और बताया है कि पूँजीवादी समाजमें कैसे कुछ थोड़े से हाथोंमें पूँजी एकत्र होती चलती है और अधिकांश जनता सर्वहारा बनती चलती है । उसने श्रमका मूल्य और अतिरिक्त मूल्यका सिद्धान्त स्पष्ट करते हुए बताया है कि पूँजीपति किस प्रकार शोषण करता चलता है और मजदूर किस प्रकार शोषित होता चलता है ! स्ट्रैचीके शब्दोंमें : "वस्तु-स्थिति यह है कि मजदूरी करनेवाला श्रमिक अपना श्रम पूँजीपतिके हाथ बेचता है और पूँजीपति उस श्रमशक्तिको बेचता है, जो उस वस्तुमें निहित है ।"[3] छहके बजाय दस घण्टे श्रमिकसे काम लेकर पूँजीपति अपनी हवेली खड़ी करता है । पूँजीपतिका उत्पादन होता है अतिरिक्त मूल्यके लिए, उपयोगिताके लिए नहीं । इसका नतीजा होता है, किसानोंका असहाय होना और बेकारोंकी पलटन खड़ी होना ।

× × ×

---

२ हेनरी जार्ज : प्रोग्रेस एण्ड पावर्टी, पृष्ठ २९४ ।

३. जान स्ट्रैची : दि नेचर ऑफ दि कैपिटलिस्ट, पृष्ठ २७९ ।

'पेनल रिफार्मर'के कोई बीस साल पुराने एक अंकमें अन्नमलई विश्व-विद्यालयके एस० आर० एन० बदरीरावने अपराधकी सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि (The Socio-economic background of crime) का विवेचन करते हुए लिखा है कि 'सारा झमेला है सम्पत्तिका। व्यक्तिगत सम्पत्ति जिस समाजकी आधारशिला है, और जो समाज व्यक्तिगत प्रेरणाके पावित्र्यमें तथा उसके भीतर रहनेवाले जीवन-संघर्षमें विश्वास करता है, उसमें अनेक वर्ग बनने ही वाले हैं, जिनमें दो वर्ग प्रमुख होंगे: (१) सम्पन्न ("Haves") और (२) दरिद्र ("Have-nots")। यह दरिद्र वर्ग अभावोंकी चक्कीमें दिन-रात पिसता रहेगा। कलकी कौन कहे, शामके भोजनकी भी जुगाड नहीं रहेगी उसके सामने! इसी धरामें असन्तोष, घृणा और अपराधके कीड़े तीव्रतासे पनपते हैं! जिनके पेटके लिए दाने-दानेके लाले पड़े हैं, जो नंगे और उघारे बदन शीतमें ठिठुर रहे हैं, सड़क ही जिनका बिस्तर है, वे यदि उस समाज-व्यवस्थाके प्रति विद्रोह कर उठें, तो आश्चर्य क्या, जिसमें थोड़े-से आदमी गुलछर्रे उड़ाते हैं और शेष जनताको गरीबीमें मरनेको छोड़ देते हैं! किस कामकी है वह अर्थ व्यवस्था, जो दो वर्गोंके बीच इतनी गहरी खाईं बनी रहने देती है? सम्पन्नताके बीच यह दरिद्रता क्यों? आज क्यों ऐसा हो रहा है कि एक ओर लाखों आदमी भूखों मर रहे हैं और दूसरी ओर हजारों टन खाद्य-पदार्थ समुद्रमें व्यर्थ ही डुबाये जा रहे हैं? अति उत्पादन और न्यून-उपभोगका यह तमाशा क्यों?'

तो यह जमीन और जर, भूमि और सम्पत्ति है, हमारे सारे अपराधोंकी मूल बुनियाद!

× × ×

'पेनल रिफार्मर'के इसी अंकमें बाबू श्रीप्रकाशने भोजू न 'जेलके पंछी'की कहानी देते हुए कहा है कि 'हमारे ढाँचा पूँजीवादी है। उसकी दृष्टिमें सभी गरीब

जेलके सभी नियम भी इसी दृष्टिसे बनाये गये हैं कि इनमें सिर्फ गरीबोंको ही रखा जाता है !'

कैसी गलत धारणाएँ हैं ये हमारे समाजकी !

अपराध-शास्त्रियोंके मतसे अपराधोंकी उत्पत्तिके एक-दो कारण नहीं होते। मनुष्यकी आनुवंशिक स्थिति, मानसिक स्थिति, शारीरिक स्थिति, उसकी प्राकृतिक परिस्थिति, आर्थिक परिस्थिति, सामाजिक परि[illegible] राजनीतिक परिस्थिति भी उसके लिए जिम्मेदार होती है। [illegible] असहिष्णुता और अन्धविश्वास, आधुनिक सभ्यता, कल-कारखाने मनोरंजनके प्रकार आदि भी उसके लिए जिम्मेदार हैं।

कारण जो भी हो, जनताको अपराधके चलते कष्ट भुगतना है, चाहे प्रत्यक्ष रूपमें, चाहे अप्रत्यक्ष रूपमें। फिर वह चाहे रूपमें हो, चाहे चोरी, डकैती या व्यक्तिगत सम्पत्तिकी [illegible] चाहे वह ताजीरी पुलिस और अदालतोंका भारवाहनके [illegible] भय या आतंकके रूपमें हो ![4]

तो जरूरत है इस बातकी कि अपराधोंके आतंकसे छुट[illegible] मिले। पर वह कोई दाल-भातका कौर तो है नहीं। उसके [illegible] ढाँचेमें, सारे सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक ढाँचेमें होगा। समाजमें प्रचलित गलत मूल्योंकी प्रतिष्ठा घट[illegible] समाजकी रचना करनी होगी, जो वर्ग-संघर्ष और [illegible] जन-जनमें प्रेम, सद्भाव, मैत्री और करुणाकी भ[illegible]।

× ×

भूदान-आन्दोलन, सर्वोदय-आन्दोलन ऐसे ही लिए प्रयत्नशील है। सत्य, प्रेम और करुणाका ही [illegible] अपराध और हिंसापर विजय प्राप्त की जा सक[illegible] पूर्वीय ज्ञान तो यह कहता ही है, आधुनिक मनो[illegible] लगा है कि अहिंसा ही हिंसाको रोक सकती है।

४ सदरलैण्ड और क्रेसी : प्रिन्सिपल्स ऑफ [illegible]

आर्थिक, प्राणरक्षा आदिके लिए की गयी हिंसाका प्रतिकार अहिंसासे करनेमें ही बुद्धिमानी है।" नित्शे कहता है कि बुद्धने 'न हि वेरेन वेरानि...' की जो बात कही है, उसमें नैतिकताका उपदेश नहीं है, बल्कि है शरीर-विज्ञानका उपदेश!' चिकित्सा-विज्ञान भी मानने लगा है कि क्रोधका उत्तर प्रेमसे देनेसे स्वास्थ्यको लाभ पहुँचता है! रोगोंसे बचना है, तो प्रेम करो।"

जब ऐसी बात है कि ज्ञान और विज्ञान दोनों ही एक ही नतीजेपर पहुँचते हैं कि हिंसाका तरीका बुरा है, अहिंसाका तरीका अच्छा है, तो हम क्यों न प्रेम, करुणा और क्षमाका रास्ता अपनायें!

हाँ, यह अवश्य है कि इसमें त्याग और बलिदान पग-पगपर करना पड़ेगा, और अहंकारको उठाकर ताकपर रख देना होगा। कारण,

प्याला चाहे प्रेम रस, राखा चाहे मान।
एक म्यानमें दो खड्ग, देखा सुना न कान॥

● ● ●

तरीके-फनामें कदम रखके पूछो,
मुहब्बतकी रस्में, मुहब्बतकी राहें !

'भिण्ड-मुरेनाकी अपराध-परम्पराओंका आतंक मध्य-भारतपर ही नहीं, उत्तर प्रदेश और राजस्थानपर भी छाया हुआ है। इस आतंकने उक्त शासनोंको विचलित-चिन्तित बना दिया है। कुछ समयसे इन तीनों प्रदेशोंने मिलकर सम्मिलित प्रयास भी किये हैं, किन्तु आतंक मर्यादित अवश्य बना है, उसका अन्त नहीं आ पाया है।···दीक्षित समितिकी रिपोर्टसे आतंकके अन्त लानेके मूलाधारोंका अपेक्षित उपाय विदित नहीं होता।···उसके लिए जिस मनोवैज्ञानिक प्रयासकी योजना आवश्यक है, वह समितिने सूचित नहीं की, संचित नहीं की। जहाँतक हम जान सके हैं, आतंककारी···समझदार, उदार और लोक-प्रियता भी रखते हैं। यही कारण है कि निरन्तर १५ वर्षोंसे शासकीय प्रयत्नोंके होते हुए भी वे सुरक्षित बने हुए हैं और उन्हें आत्मरक्षाके लिए निरन्तर अपराधी बनते जानेको विवश होना पड़ रहा है।···क्या···उनका विश्वास संपादन कर उन्हें मानवताकी ओर नहीं पलटाया जा सकता ?···हिंसाका उपाय अहिंसासे नहीं किया जा सकता ?···क्या ही अच्छा हो कि तीनों सम्बन्धित प्रदेश एक साथ मिलकर आतंककारियों (बागियों) से किसी प्रकार सम्पर्क स्थापित करें और उनका हृदय-परिवर्तन करनेका, पश्चात्ताप करनेकी ओर प्रेरित करनेका प्रयास करें।···यह असम्भव नहीं है।···आवश्यकता है परिस्थिति, वातावरण पलटनेकी। यदि शासन अपनेको अक्षम अनुभव करता हो, तो हमारा यह भी सुझाव है कि वह आचार्य विनोबासे अनुरोध कर उन्हें उस क्षेत्रमें आमंत्रित करे और उन्हें आतंककारियोंसे सम्पर्क स्थापित करनेकी आवश्यक उचित सुविधाएँ सुलभ करे। हमारा अनुमान

ही नहीं, विश्वास भी होता है कि इस उत्तम, सरल और मनोवैज्ञानिक उपायसे सम्भव है यह विषम समस्या सुलझ सके और शासनके संयुक्त प्रयास, व्यय-भार, चिन्ता, हानि, आतंकका अन्त आ जाय।…"

यह है उस सम्पादकीय टिप्पणीका अंश जो उज्जैनके मासिक 'विक्रम'ने लिखी थी जुलाई, १९५३ के अपने अंकमें।

× × ×

सन् '५६ में भाई महावीर सिंह, लोकसेवक इटावाने बाबा राघवदासके सामने प्रस्ताव रखा कि चम्बल घाटी-क्षेत्रका आतंक मिटानेके लिए हमें अहिंसक शक्तिका संघटन और प्रयोग करना चाहिए। पर बाबाजीके चल बसनेसे शान्ति-प्रयास आगे नहीं बढ़ सका।

आजसे तीन साल पहले मध्य-प्रदेशके डिप्टी-इन्स्पेक्टर-जनरल पुलिस कोहिली साहबने अपनी सरकारको यह सुझाव दिया कि हिंसासे हिंसा मिटानेका प्रयोग तो हम कर चुके, जरूरत है अहिंसाके प्रयोगकी। आचार्य विनोबा भावेको बुलाया जाय इसके लिए!

सन् '५९ में इधर आगराके भाई चिम्मनलालने उत्तर प्रदेशीय शान्ति-शिविर पधना (इलाहाबाद) में इसकी बात उठायी, उधर भिण्ड मुरैनावाले लोगोंने दौड़-धूप शुरू की। हरिसेवक मिश्र कश्मीर दौड़ गये बाबाके पास। ग्वालियरके होनेके नाते मेजर जनरल यदुनाथ सिंह पहलेसे ही इस विषयमें दिलचस्पी ले रहे थे। डॉक्टर सुशीला नायरने भी दिलचस्पी ली इस समस्यामें।

आखिर पठानकोटमें सर्व-सेवा-संघकी बैठकमें बाबाके सामने यह चर्चा आयी और प्रोग्राम बन गया चम्बल घाटीमें बाबाके दौरेका। तहसीलदार सिंहने फाँसीकी कोठरीसे जो पत्र लिखा उसने भी उन्हें प्रेरित किया कि वे इस आतंकग्रस्त इलाकेमें यहाँके निवासियोंको शान्ति, प्रेम और करुणाका सन्देश देनेके लिए पहुँचें।

× × ×

९ मई, १९६० को बाबा आगरा पहुँचे।

बोले : आज सबेरे किसीने हमसे पूछा कि 'आप डाकू-क्षेत्रमें जा रहे

[illegible]ने कहा : जी ना, हम सज्जनोंके क्षेत्रमें जा रहे हैं, डाकुओंके क्षेत्रमें नहीं। डाकू कौन है, कौन नहीं, इसका फैसला करनेवाला तो परमेश्वर है।

८ मईसे बाबाकी सज्जन-क्षेत्रकी यात्रा प्रारम्भ हुई। उसकी समाप्ति हुई ८ जूनको जब आत्मसमर्पण करनेवाला पहला बागी रामऔतार सिंह अपने भाईके साथ चल पड़ा आगरा जेलमें बन्द होनेके लिए।

प्रसन्नताकी बात है कि उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेशकी सरकारोंने, उनके अधिकारियोंने तथा पुलिसने बाबाके इस शान्ति और प्रेमके अभियानमें भरपूर योगदान किया और अपने कानूनको थोड़ा ढीला करनेका भी खतरा उठाया !

× × ×

विनोबाके इस प्रेम-अभियानकी फलश्रुति ?

शस्त्रास्त्रों सहित निम्नांकित बीस बागियोंका आत्मसमर्पण :

१० मई	१. रामऔतार सिंह	केंजरा	फतेहाबाद	मुरेना
१७ मई	२. पातीराम	कुरेठा	सिलावली	मुरेना
,,	३. श्रीकिशन	सिलावली		,,
,,	४. मोहरमन	कनेरा	अटेर	भिण्ड
१८ मई	५. लच्छी	खड़ीत	गोरमी	,,
,,	६. परभू	खड़ीत	गोरमी	,,
१९ मई	७. लोकमन (लुक्का)	महुआ	बाह	आगरा
,,	८. कन्हई	खेड़ा राठौड़	बाह	,,
,,	९. तेजसिंह	मोंधना	अटेर	भिण्ड
,,	१०. डरेलाल	बसई	पिनहट	आगरा
,,	११. रामसनेही	निवारी	पावई	भिण्ड
,,	१२. दुर्जन	दीनपुरा	कोतवाली	,,
,,	१३. विद्याराम	प्रतापपुरा	अटेर	,,
,,	१४. भूपसिंह	अच्छाई	गोरमी	,,
,,	१५. जंगजीत	रामदासपुरा	फीरोजाबाद	आगरा

१९ मई	१६. मटरे	दरावली	राजाखेड़ा	भरतपुर
,,	१७. भगवानसिंह	रूअर	महुआ	मुरैना
२० मई	१८. रामदयाल	खोहरी	बाह	आगरा
,,	१९. मदनसिंह	,,	,,	,,
२६ मई	२०. गनेरे	सिकारा	उमरी	भिण्ड

× × ×

२० मईको करणसिंहने भी आत्मसमर्पण किया था, पर वारण्ट न होनेसे पुलिस उसे भिण्ड जेलमें नहीं ले गयी। गनेरेको यद्यपि ४ जूनको अधिकारियोंने वारण्ट न होनेकी बात कहकर छोड़ दिया था, पर बादमें उसे गिरफ्तार कर लिया।

× . × ×

"डाकू क्यों शरण आये ?" इस प्रश्नकी चर्चा करते हुए थाना कसनाके पड़ावपर २२ जूनको विनोबा ने कहा :

> बहुतसे लोग ऐसी बात करते हैं कि डाकुओंको रियायत मिली या मिलनेका भरोसा हुआ, इसीलिए वे शरण आये होंगे या पुलिसकी पकड़से पीड़ित हुए होंगे, इसलिए आये होंगे। ऐसा इसलिए होता है कि मनुष्यके मनमें यह भाव रहता है कि 'हमारा परिवर्तन तो नहीं हुआ, हम तो पापोंको छोड़ नहीं सके। दूसरोंने ऐसा कैसे किया होगा ?' लेकिन वे समझते नहीं हैं कि अन्दरका और बाहरका, दोनों कारण मिलकर ही काम बनता है।

महात्मा तुकारामकी जिंदगीके पहले २१ साल संसारमें गये। उनकी पत्नी मर गयी, तरह-तरहकी आपत्तियोंसे वे गुजरे। लेकिन आज महाराष्ट्र-की हर झोपड़ीमें 'ज्ञानबा तुकाराम'का जप चलता है। भगवान्‌के नामसे उनका नाम मिल गया है। लेकिन ये लोग क्या कहते हैं ? "तुकाराम पर आफत गुजरी, इसलिए वे संसारसे विरक्त हो गये। उन्हें वैराग्य हो आया !" ऐसा कहनेवाले यह ख्याल नहीं करते कि उससे इस

दुश्मनी उन्होंने आँखों देखी है। एक ओरका लड़का जैसे ही कसरत करके पुष्ट होता है, वैसे ही दुश्मनका खून करके अपने पिताकी कब्रपर रक्त चढ़ाकर उसका तर्पण करता है! दूसरी ओरसे भी वही हाल है! कैसा वीभत्स है यह दृश्य!

इस वैर-विरोध और झगड़ेको दूर किये बिना हमारा काम चलनेवाला नहीं। इसकी तहमें जो अन्याय और अत्याचार छिपा है, वह भी दूर करना पड़ेगा। और यह दूर हो सकता है केवल प्रेमसे, करुणासे, क्षमासे।

इसके लिए गाँव-गाँवमें सत्संगका, सत्‌शिक्षाका आयोजन हो। प्रेम, करुणा और क्षमाकी भावना भरनेवाले गीतों और भजनोंका घर-घरमें प्रचार हो। बच्चे, जवान, बूढ़े—सबके मानसमें ये भाव भरे जायँ। रामायण, भागवत जैसे धर्मग्रन्थोंसे दया, करुणा और क्षमा सिखानेवाले प्रसंग पढ़-पढ़कर लोगोंके हृदयमें बैठा दिये जायँ। वैर-विरोध और राग-द्वेष मिटानेके सभी सम्भव उपाय किये जायँ। ऊँच-नीच, कुलीन-अकुलीन, छोटे-बड़े आदि सभी भेद मिटाये जायँ। हमारी शान्ति-सेनाकी कसौटी-का क्षेत्र है यह।

वैर, अन्याय और अत्याचार मिटाने हम जायँगे, तो स्वार्थी व्यक्ति हमारा विरोध करेंगे, हमें मारने-पीटनेको आमादा होंगे, पर हमें शान्तिसे उनका वार सहना होगा और प्रेमसे उन्हें जीतना होगा।

का 'रहीम' हरिको घट्यो, जो भृगु मारी लात!

× × ×

रही बात आतंककी।

उसकी कारगर दवा है—शस्त्र-त्याग।

बन्दूकोंकी ख़ैरात तो रोकी ही जाय, जो बन्दूकें अभी लोगोंके पास हैं, वे भी जमा करवा लेनेका प्रयत्न हो। सच्ची वीरताके लिए बन्दूककी कतई जरूरत नहीं, यह भाव बच्चे, बूढ़े, जवान हरएकमें भरना होगा। सबमें निर्भयताका भाव लाना जरूरी है।

× × ×

तो—

हमें मिटानी है यहाँकी गरीबी ।

हमें मिटाना है यहाँका वैमनस्य ।

हमें मिटाना है यहाँका आतंक ।

कैसे ?

यही—प्रेम, दया और दुआके रास्ते ।

यही—एक कोट उसे देकर, जिसके पास एक भी नहीं है !

यही—सबके सहयोगसे, सबके प्रेमसे ।

पुलिसवाले भी हमारे भाई हैं, फौजवाले भी । सरकारी कर्मचारी भी बाबाकी जमातके हैं, उनके समर्थक भी । ग्रामरक्षा-दलवाले भी हमारे भाई हैं, विभिन्न पार्टियोंवाले भी । पंचनयापता फौजी भी हमारे भाई हैं, बागी और बागियोंके परिवारवाले भी । पैसेवाले भी हमारे भाई हैं, बेपैसेवाले भी । हमें तो सबसे प्रेम और सहयोग लेकर इस क्षेत्रमें बाबाका दया और दुआका सन्देश घर-घर फैलाना है । प्रेमसे पत्थर भी पसीज सकता है, आदमी न पसीजेगा ? हमें देखना यही है कि सेवाका ऐसा पुण्य अवसर हम खो न बैठें ।

स्वामी कृष्णस्वरूपकी अध्यक्षतामें हमारी चम्बलघाटी शान्ति-समिति इस क्षेत्रको साधु-क्षेत्र बना करके दिखायेगी, ऐसा हम मानते हैं । अच्छे कर्मठ लेफ्टीनेण्ट मिले हैं उन्हें । प्रभु हमें बल दे कि हम चम्बलघाटी-क्षेत्रमें शान्तिकी स्थापनामें नींवके पत्थर साबित हो सकें !

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखमाप्नुयात् ॥

...ताहि बोउ तू फूल !

स्वेट मार्डेनका एक संस्मरण है—बढ़िया, प्रेरक, मजेदार !

एक बुढ़िया ट्रेनसे यात्रा कर रही थी।

बीच-बीचमें वह खुली खिड़कीसे मोटा नमक-सा कुछ पदार्थ बाहर फेंक देती।

बोतल खाली हो जाती, तो वह उसे फिर झोलेसे भर लेती।

और फिर उसका वही क्रम। बोतल भरना और उसकी सामग्री बाहर फेंकना।

बादमें पता चला कि यह नमक-सा पदार्थ और कुछ न था, वह था—'फूलोंका बीज !'

× × ×

फूलोंकी शौकीन इस बुढ़ियाका सिद्धान्त था—'जिस मार्गसे गुजरो, जिस रास्तेसे निकलो, उसमें फूल बिछाते जाओ। पता नहीं फिर कभी इस राहसे गुजरना हो, न हो।'

कैसा बढ़िया सिद्धान्त !

रेलकी पटरीके आस-पास फूलोंके बीज बिखेरकर उसने मीलों भूमिको पुष्पोंसे हराभरा और रंगीन बना दिया है। जिस रास्तेसे वह गुजरी है, उसमें सौन्दर्य लहलहाने लगा है।

तुलसी बाबा तो कोसते ही रह गये :

> जौं जगदीश इन्हहिं बनु दीन्हा,
> कस न सुमनमय मारगु कीन्हा !

पर इस बुढ़ियाने तो सचमुच 'सुमनमय मारग' बना ही दिया

× × ×

फूल !

गुलाब और बेला, चम्पा और चमेली, जुही और हरसिंगार—खुशबूदार फूलोंकी अदा तो निराली है ही, बिना खुशबूवाले रंग-बिरंगे फूल भी दिलको बाग-बाग किये बिना नहीं रहते।

प्रकृति-सुन्दरीकी गोदमें खिले पुष्प हों, चाहें गुलदस्तेमें सँजोये, वे दर्शकको मुग्ध किये बिना नहीं मानते।

जो देखता है, उसका दिल बाग-बाग हो उठता है।

स्वामी कृष्णानन्दने तो फूलोंको स्वास्थ्यवर्द्धनका अद्भुत साधन बता रखा है। 'उठो'में लिखते हैं वे :

'श्री रघुवीरसे मेरा परिचय, जब वे बम्बईमें रहते थे, कोई २५ बरस पहले हुआ था। उस समय उन्हें अग्निमांद्यका रोग था। वे बहुत दुबले-पतले थे, मुखपर मुर्दनी छायी रहती थी। थोड़ा भी काम करनेपर वे थककर चूर हो जाते।

पर दस साल पहले जब मैं उनसे गाजीपुरमें मिला, तो वे बहुत स्वस्थ एवं सुन्दर दिखाई पड़े। जोश उनकी रग-रगसे टपकता था। उत्साह उनमें उमड़ा पड़ता था। बम्बईमें वे क्लर्क थे, गाजीपुरमें भी। कभी उनको पेटभराईसे अधिक पैसा नहीं मिला, फिर यह परिवर्तन हुआ तो कैसे?

श्री रघुवीरको गाजीपुरमें जो घर मिला था, उसके आगे पीछे थोड़ी जमीन भी थी। उस जमीनको उन्होंने सँवारा, उसमें कुछ तरकारियाँ लगायीं और अनेक तरहके फूलके पौधे। फूलोंमें मौसमके अनुसार सभी तरहके फूल थे, कई तरहके विलायती फूल भी, जिनमें रूप रंग अधिक, पर गन्ध कम या नहींके बराबर थी। श्री रघुवीर दफ्तर जानेतक अपने इस बागमें जुटे रहते। शामको आकर अपने बागसे फूल चुनते और उनके छोटे-छोटे बहुतसे गुलदस्ते बनाते। इन गुलदस्तोंको वे एक डलियामें सजाते, तो एक बड़ा गुलदस्ता प्रतीत होता। इन गुलदस्तोंको वे अपनी मुसकराहटमें सराबोर करके पासके अस्पतालके रोगियोंमें बाँट आते। रोगी उन्हें कृतज्ञतापूर्वक ग्रहण करते। कई तो उनकी बाट ही

जो हमसे घृणा करता है, जो हमसे द्वेष करता है, जो हमसे ईर्ष्या करता है, उससे भी हम प्रेम करें।

जीवनकी सार्थकता इसीमें है कि जो हमपर वज्रहस्त है, उसपर हम वरदहस्त फेरते रहें।

जीवनकी उपयोगिता इसमें है कि जो हमारा अपकार करता है, उसका भी हम उपकार करें।

×　　×　　×

शामल भट्टका एक छप्पय है :

> पाणी आपने पाय, भलूँ भोजन तो दीजे।
> आवी नमावे शीश, दण्डवत कोडे कीजे॥
> आपण घासे दाम, काम महोरोनुं करीए,
> आप उगारे प्राण, ते तणा दुःखमां मरीए॥
> गुण केडे तो गुण दश गणो, मन वाचा कर्मे करी।
> अवगुण केडे जो गुण करे, ते जगमां जीत्यो सही॥

अर्थात्

जो हमें पानी पिलाये, उसे हम भोजन करायें।

जो हमारे सामने सिर झुकाये उसे हम उमंगपूर्वक दण्डवत करें।

जो हमारे लिए एक पैसा खर्च करे, उसका हम मुहरोंका काम कर दें।

जो हमारे प्राण बचाये, उसका दुःख मिटानेके लिए हम प्राण भी न्यौछावर कर दें।

उपकारीके प्रति तो मनसा, वाचा, कर्मणा दसगुना उपकार करना ही चाहिए, पर संसारमें तो उसीका जीवन सार्थक माना जायगा, जो अपकारीके प्रति भी उपकार करता है।'

अपने बचपनमें बापूने कहीं इस छप्पयको पढ़ लिया और तबसे यह उनके हृदयका हार बन बैठा।

'नीतिका यह छप्पय हृदयमें बस गया। अपकारका बदला अपकार नहीं, उपकार ही हो सकता है। यह वस्तु जीवनका सूत्र बन गयी। इसने गुस्सेपर साम्राज्य चलाना शुरू कर दिया। अपकारीका भला चाहना और करना मेरे अनुरागका विषय बन गया। मैंने इसके अनगिनत प्रयोग किये।'

आइये, हम आप भी इस छप्पयको अपना पथ-प्रदर्शक मानकर जीवनमें इसके प्रयोग करें और फिर तो हमारा रोम-रोम पुकार उठेगा :

खंजर को चूस-चूसके कहते हैं मेरे जख्म,
जालिम मजे भरे हुए

---

१. श्रीकृष्णदत्त भट्ट : अप्रकाशित 'हर आन हँसी, हर आन खुशी' से।

ईसाका पहाड़ीपरका उपदेश

धन्य हैं वे !

धन्य हैं वे जो मनके दीन हैं। कारण, स्वर्गका राज्य उन्हींका है।

धन्य हैं वे जो नम्र हैं। कारण, वे ही पृथ्वीके अधिकारी होंगे।

धन्य हैं वे जो धर्मके पिपासु हैं। कारण, वे तृप्त किये जायँगे।

धन्य हैं वे जो दयालु हैं। कारण, उनपर दया की जायगी।

धन्य हैं वे जिनके हृदय शुद्ध हैं। कारण, उन्हें प्रभुके दर्शन प्राप्त होंगे।

धन्य हैं वे जो शान्ति स्थापित करनेवाले हैं। कारण, वे भगवानके पुत्र कहलायेंगे।

धन्य हैं वे जो धर्मके लिए दण्ड भोगते हैं। कारण, स्वर्गका राज्य उन्हींका है।

हे पृथ्वीके नमक !

तू है पृथ्वीका नमक; पर यदि नमकका स्वाद ही जाता रहे, तो फिर उसे किस वस्तुसे नमकीन बनाया जायगा ? फिर वह कौड़ी कामका नहीं, सिवा इसके कि उसे उठाकर बाहर फेंक दिया जाय और मनुष्योंके पैरों-तले रौंदा जाय।

हे जगतीके प्रकाश !

तू है जगत्‌का प्रकाश। पहाड़पर बना हुआ नगर भला कभी छिप सकता है !

मोमबत्तीको जलाकर लोग नीचे नहीं रखते, रखते ऊपर और उससे घरमें रहनेवाले सभी लोगोंको प्रकाश

तेरा प्रकाश भी मनुष्योंके सामने इसी भाँति चमके कि वे तेरे सत्कर्मोंको देखकर तेरे स्वर्गस्थ पिताकी प्रशंसा करें।

रोष न रखना सीखिये!

तूने सुना है कि पुराने लोगोंको कहा गया था कि तू किसीका खून न करना और जो कोई खून करेगा, वह दण्डनीय होगा।

पर मैं तुझसे कहता हूँ कि जो आदमी अकारण ही अपने भाईपर क्रोध करेगा, वह कचहरीमें दण्डनीय होगा और जो कोई अपने भाईको अरे निकम्मा कहेगा; वह महासभामें दण्डनीय होगा और जो किसीको अरे मूर्ख कहेगा, वह नरककी आगका दण्ड पाने योग्य होगा।

जा, पहले अपने भाईको मना!

सो यदि तू वेदीपर चढ़ानेके लिए कुछ भेट लाये और वहाँ तुझे याद पड़े कि तेरे भाईके मनमें तेरे प्रति कुछ विरोध है, तो अपनी भेट वेदीपर ही छोड़कर तू चला जा। पहले तू अपने भाईसे मेल कर, तब आकर भेट चढ़ा।

अपने मुद्दईके साथ तू रास्तेमें ही मेल कर ले। ऐसा न हो कि वह तुझे हाकिमको सौंप दे और वह पियादेको सौंप दे और तू जेलखानेमें डाल दिया जाय।

मनमें भी लिप्सा मत रख!

तूने सुना है कि पुराने जमानेमें कहा गया था कि तू व्यभिचार न करना।

पर मैं तुझसे कहता हूँ कि जो कोई मनसे भी किसीपर बुरी निगाह डालता है, वह अपने मनमें उसके साथ व्यभिचार कर चुका।

और यदि तेरी दाहिनी आँख तुझे ठोकर खिलाती है, तो तू उसे निकालकर बाहर फेंक दे। कारण, तेरा भला इसीमें है कि तेरे केवल

एक अंगका नाश हो, बजाय इसके कि तेरा सारा शरीर नरकमें डाला जाय।

और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाता है, तो तू उसे काटकर फेंक दे। कारण, तेरा भला इसीमें है कि तेरे केवल एक अंगका नाश हो, बजाय इसके कि तेरा सारा शरीर नरकमें डाला जाय।

और यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाता है, तो तू उसे काटकर फेंक दे। कारण, तेरा भला इसीमें है कि तेरे केवल एक अंगका नाश हो, बजाय इसके कि तेरा सारा शरीर नरकमें डाला जाय।

...तादि मोड़ तू फूल।

तूने सुना है कि पहले ऐसा कहा गया था कि आँखके बदले आँख और दाँतके बदले दाँत!

पर मैं तुझसे कहता हूँ कि तू बुराईका बदला बुराईसे मत देना। इसके बजाय जो कोई तेरे दाहिने गालपर थप्पड़ मारे, उसके सामने तू अपना बायाँ गाल भी कर दे!

यदि कोई तुझपर नालिश करके तेरा कुर्ता छीन ले, तो तू उसे अपनी दोहर भी ले लेने दे!

जो कोई तुझे जबरन एक कोस ले जाय, उसके साथ दो कोस चला जा।

जो कोई तुझसे माँगे उसे तू दे। जो कोई तुझसे कर्ज लेना चाहे, उससे तू मुँह मत मोड़!

दुश्मनको प्यार कर।

तू सुन चुका है कि पहले कहा गया था कि तू अपने ... प्यार कर और अपने दुश्मनसे घृणा कर।

पर मैं तुझसे कहता हूँ कि तू अपने ...

जो तुझे शाप देते हैं, उन्हें तू आशी...

करते हैं, उनका भला कर। जो तुझसे द्वेष करते हैं और तुझे सताते हैं, उनके हितके लिए तू परमेश्वरसे प्रार्थना कर।

इससे तू अपने पिताकी सन्तान ठहरेगा। कारण, उसने ऐसा प्रबन्ध कर रखा है कि उसका सूरज भलोंको भी रोशनी देता है, बुरोंको भी। मेह उनपर भी बरसता है, जो धर्मात्मा है, और उनपर भी बरसता है, जो अधर्मी हैं।

जो लोग तुझे प्यार करते हैं, उन्हें ही तू भी प्यार करे, तो इसमें तेरी क्या तारीफ? क्या भठियारे भी ऐसा नहीं करते?

यदि तू सिर्फ अपने भाइयोंको ही नमस्कार करता है, तो इसमें तूने दूसरोंसे क्या ज्यादा किया? क्या भठियारे भी ऐसा नहीं करते?

सो तू पूर्ण बन, जैसा कि तेरा स्वर्गस्थ पिता है।

नेकी कर और दरियामें डाल!

इस बातका खयाल रख कि तू इस तरह नेकी न कर कि दूसरोंकी दृष्टि उसपर पड़े, नहीं तो तेरे स्वर्गस्थ पितासे तुझे उसका कुछ पुरस्कार नहीं मिलेगा।

सो दान देकर उसका ढोल न पीट, जैसा कि ढोंगी लोग प्रशंसा पानेके लिए किया करते हैं। मैं सच कहता हूँ कि उन्हें उसका पुरस्कार मिल चुका।

तू जब नेकी करे तो तेरे बायें हाथको इस बातका पता नहीं चलना चाहिए कि तेरा दाहिना हाथ क्या करता है!

तेरा दान गुप्त रहना चाहिए और तेरा पिता जो छिपा रहकर देखता है, तुझे खुलेआम उसका पुरस्कार देगा।

बाहरके पट देइके, अन्तरके पट खोल!

तू ढोंगियोंकी तरह प्रार्थना मत कर। जहाँ दूसरे लोग देख सकें, ऐसे स्थानोंमें—सभाओंमें और सड़कोंके नुक्कड़ोंपर प्रार्थना करना उन्हें भाता है। मैं सच कहता हूँ कि उन्हें उसका पुरस्कार मिल गया।

पर तू प्रार्थनाके लिए अपनी एकान्त कोठरीमें चला जा और दरवाजा बन्द कर परमपितासे प्रार्थना कर। उससे क्या छिपा है? वह खुलेआम तुझे उसका पुरस्कार देगा।

प्रार्थना करनेमें दूसरोंकी तरह बार-बार एक ही बातको मत दुहरा। वे शायद ऐसा समझते हैं कि ज्यादा बकबक करनेसे उनकी बात ज्यादा सुनी जायगी।

उन लोगोंकी तरह बकबक मत कर। कारण तेरा पिता तेरे माँगनेके पहले ही जानता है कि तुझे क्या-क्या चाहिए।

हे परमपिता!

तो इस तरह तू प्रार्थना कर :

हे स्वर्गमें रहनेवाले परमपिता, तेरा नाम पवित्र माना जाय। तेरा राज्य पृथ्वीपर छा जाये। स्वर्गमें जिस तरह तेरी इच्छा पूरी होती है, उसी तरह पृथ्वीपर भी हो।

तू हमारी दिनभरकी रोटी हमें आज दे।

तू हमारे अपराधोंको क्षमा कर, जैसे हमने अपने देनदारोंको क्षमा कर दिया है। हमें लोभमें मत डाल, बल्कि हमें बुराईसे बचा। कारण सारा राज्य, सारी शक्ति, सारा यश सदाके लिए तेरा है। आमीन!

दूसरोंको क्षमा कर।

यदि तू दूसरोंका अपराध क्षमा करेगा, तो तेरा स्वर्गस्थ पिता तेरे अपराधोंको भी क्षमा करेगा।

पर यदि तू दूसरोंके अपराध क्षमा नहीं करेगा, तो वह तेरा पिता भी तुझे क्षमा नहीं करेगा।

अरे ढोंगी, पहले अपनी आँखकी फूली ठीक कर, तब तू ठीकसे देख सकेगा और भाईकी आँखका तिनका निकाल सकेगा ।

माँग, खोज, खटखटा !

माँग, तो तुझे दिया जायगा । खोज, तो तुझे मिल जायगा । खटखटा, तो तेरे लिए खोल दिया जायगा ।

कारण, जो माँगता है उसे दिया जाता है, जो खोजता है उसे मिलता है । जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाता है ।

है कोई ऐसा मनुष्य जिसका बेटा उससे माँगे रोटी और मिले उसे पत्थर ? मछली माँगे तो मिले साँप ?

तो जब बुराइयोंसे भरे साधारण आदमी भी अपने बच्चे को अच्छी चीजें देना जानते हैं, तो तेरा स्वर्गस्थ पिता माँगनेवालोंको उनसे कहीं अच्छी चीजें न देगा ?

रोपै बिरवा आक को, आम कहाँ ते होइ ?

इसलिए तू दूसरोंके साथ वैसा ही व्यवहार कर, जैसा तू चाहता है कि दूसरे लोग तेरे साथ करें । कारण, यही कानून है, यही नबियोंकी शिक्षा है ।

कथनी तजि, करनी करै !

'हे प्रभु', 'हे प्रभु' चिल्लानेवालोंका स्वर्गके राज्यमें प्रवेश होगा, ऐसा नहीं । वहाँ तो उसीका प्रवेश होगा, जो परमेश्वरकी इच्छाके अनुकूल चलेगा ।*

● ○ ●

* बाइबिल : मैथ्यू ५, ६ और ७ से ।

अपराधीका हृदय-परिवर्तन

सूर्यास्तमें अभी एक घण्टेकी देर है। अक्तूबरका महीना है। एक पदयात्री द' नगरमें प्रवेश कर रहा है। दरिद्रों जैसा वेश, फटे-पुराने वस्त्र, ४६-४७ सालकी उम्र, बाल कटे, दाढ़ी बढ़ी हुई। हट्टा-कट्टा शरीर। पीठपर थैला, हाथमें डण्डा। लगता है कि यह यात्री बहुत थका है, बड़ा भूखा है, बड़ा प्यासा है।

यात्री मेयरके दफ्तरमें घुसा। आध घण्टे बाद निकलकर वह सरायकी ओर बढ़ा। सरायमें उसकी असलियतका पता लग जानेके कारण उसे न भोजन मिला, न ठिकाना! तब एक दूसरी सरायमेंमें उसने शरण लेनेकी ठानी, पर वहाँ भी उसे ठिकाना नहीं मिला। बीचमें मिला जेलका फाटक। उसने कहा : "मुझे रातभर टिकने दो।" जवाब मिला : "यह सराय नहीं। गिरफ्तार होकर आओ, तो हम फाटक खोल देंगे!" उसके बाद कुत्तोंकी एक माँदमें भी जब उसे स्थान न मिला, एक कुत्तेने गुर्राकर भगा दिया, तो वह हताश हो मैदानमें पत्थरकी बेंचपर जा लेटा।

एक दयालु स्त्रीने वहाँ उसे लेटे देखा, तो बोली : "क्यों लेटे हो यहाँ भैया! जाड़ेकी यह रात इस पत्थर पर कैसे कट सकेगी?"

"कहाँ जाऊँ भली बाई! किसी सरायमें भी तो ठिकाना नहीं!"

"वह दरवाजा खटखटाया है तुमने?"

× × ×

बूढ़े पादरी विनवेनूकी दासी मैगलोयर पादरीकी बहन वैपटिस्टाइनसे अभी कह ही रही थी कि 'नगरमें बड़ी सनसनी है कि आज कहींसे एक आवारा आ गया है, पता नहीं रात कैसी गुजरे! पादरी बाबा दरवाजेमें साकल भी नहीं लगाने देते, यह ठीक नहीं।' तभी दरवाजेपर थाप

पादरीने कहा : "भीतर आ जाइये!"

यात्रीने भीतर आते ही कहा : "देखिये, मेरा नाम है जीन वैलजीन। मैं हूँ अपराधी। उन्नीस सालकी सजा काटकर अभी लौट रहा हूँ काले पानीसे। चार दिन पहले मैं जेलसे छूटा। अपने घर पोंटरलियर जा रहा हूँ मैं। आज मैं १८ कोस चला हूँ। किसी सरायमें मुझे ठिकाना नहीं मिला। मेयरके यहाँ मैंने अपना यह पीला पासपोर्ट दिखाया था। दिखाना जरूरी भी था। पर उसके चलते मुझे किसी सरायमें ठिकाना नहीं मिला, सब जगह मैं फटकारकर भगा दिया गया। यहाँतक कि कुत्तोंकी मादमें भी मुझे ठिकाना नहीं मिल सका! खेतोंमें पानी बरसनेके डरसे नहीं लेटा। नगरके भीतर चला आया। यहाँ एक पत्थरपर पड़ा था कि एक भली बाईने यह दरवाजा मुझे दिखा दिया। आप मुझे ठहरनेके लिए जगह देंगे क्या? बहुत थका हूँ, बड़ा भूखा हूँ। मेरे पास १०९ फ्रांक और १५ सू हैं—उन्नीस सालकी जेलकी कमाईके। मैं खाने-पीने ठहरनेका पूरा पैसा चुका दूँगा। आपके यहाँ ठहर सकता हूँ मैं?"

"श्रीमती मैगलोयर, एक थाली और लगा लेना"—पादरीने कहा।

यात्री तीन कदम आगे बढ़कर बोला : "आप शायद मेरी बात समझे नहीं। मैं अपराधी हूँ। कालेपानीकी सजा काटकर आया हूँ। यह है मेरा पासपोर्ट। देखिये, इसमें लिखा है कि "यह जीन वैलजीन बड़ा ही खतरनाक है। इसे सेंध मारनेमें पाँच सालकी सजा हुई थी और जेलसे चार बार भागनेके जुर्ममें और चौदह साल की!" मेरे जैसे अपराधीको आप ठहरायेंगे अपने यहाँ? मुझे खानेको देंगे? मुझे रातभर सोनेको देंगे? आपके यहाँ अस्तबल है क्या?"

"श्रीमती मैगलोयर, उधर बगलवाले बिस्तरपर चद्दर डाल देना!"—पादरीने कहा।

यात्रीकी ओर मुड़कर बिशपने कहा : "महाशय, आप बैठिये। हाथ-पैर सेंकिये। थोड़ी देरमें हम लोग भोजन करेंगे, और तबतक आपका बिस्तर लग जायगा।"

अब यात्री समझा। उसे कुछ प्रसन्नता हुई, कुछ सन्देह, कुछ

आश्चर्य ! पागलकी तरह बड़बड़ाता-सा बोला : "सच ! आप मुझे ठहरने देंगे ? आप मुझे निकाल बाहर नहीं करेंगे ? आप मुझे "महाशय" कह-कर पुकारते हैं—"ऐ कुत्ते यहाँसे भाग जा !"—कहकर मुझे दुतकारते नहीं ! मैंने जब आपको अपना परिचय दिया, तभी मुझे ऐसा लगा कि आप मुझे निकाल बाहर करेंगे। भला हो उस बाईका जिसने मुझे यह दरवाजा दिखाया। मुझे भोजन मिलेगा ! बिस्तरपर सोनेको मिलेगा ! उन्नीस सालसे मैं कभी बिस्तरपर नहीं सोया ! हाँ, मेरे पास पैसा है। मैं आपको पूरा पैसा चुकाऊँगा। श्रीमान्‌जी बड़े अच्छे सरायवाले हैं। है न ?"

"मैं यहाँका पादरी हूँ !" —विशपने कहा।

"अच्छा, आप पादरी हैं ? आप बड़े अच्छे पादरी हैं ! तब तो आप मुझसे पैसा नहीं लेंगे ! आप पादरी हैं ? इस बड़े गिरजाघरके पादरी हैं ? हैं न ? मैं भी कैसा मूरख हूँ कि मैंने आपकी टोपी नहीं देखी !"

"नहीं महाशय, मैं आपसे पैसा नहीं लूँगा।"

यात्रीसे बातें चल ही रही थीं, तभी मैगलोयर भोजन ले आयी।

पादरीने उसकी ओर देखकर कहा : "श्रीमती मैगलोयर, इनकी थाली आगके नजदीक सजाना"; फिर अतिथिकी ओर देखकर कहा : "आल्प्स पर्वतमें बड़ी ठण्डी हवा है, आप उधरसे आ रहे हैं। आपको सर्दी लगती होगी, महाशय।"

पादरी हर बार अतिथिको सम्बोधित करता, तो "महाशय" कहता। अतिथिको लगता मानो प्याससे छटपटाते व्यक्तिको कोई ठण्डे जलका गिलास पिला रहा है !

"रोशनी बड़ी धीमी है"—पादरीके मुँहसे ऐसा सुनकर मैगलो[illegible] चाँदीके दो शमादान ले आयी और मेजपर उन्हें सजा दि[illegible]

"पादरी महाशय, आप बहुत अच्छे हैं। [illegible] करते। आपने मुझे अपने घरमें ठहराया है। [illegible] जलवाते हैं, और मैं आपको बता चुका हूँ कि [illegible] मैं कितना बड़ा दुखिया हूँ।"

बिशपने बड़े धीरेसे उसका हाथ छूकर कहा : "आपको यह बतानेकी जरूरत नहीं कि आप कौन हैं ! यह घर मेरा नहीं है, यह प्रभु ईसाका घर है। यहाँ किसीसे यह नहीं पूछा जाता कि तुम्हारा नाम क्या है ? बल्कि यहाँ तो यही पूछा जाता है कि तुम पीड़ित हो क्या ? आप कष्टमें हैं, आप भूखे हैं, आप प्यासे हैं। आपका स्वागत है। इसके लिए मुझे धन्यवाद मत दीजिये। यह मत कहिये कि यह मेरा घर है। यह किसी खास आदमीका घर नहीं है। जिस किसीको भी छायादार जगहकी जरूरत है, उसीका यह घर है। आप यात्री हैं, फिर भी मैं कहता हूँ कि यह घर मुझसे अधिक आपका है। यहाँ जो कुछ है, सब आपका है। आपका नाम जाननेकी मुझे जरूरत ही क्या है ? और जब आपने अपना नाम बताया, उसके पहले ही मुझे आपका नाम मालूम था।"

यात्री चौंका : "सच ? मेरा नाम आपको पहलेसे मालूम था ?"

"हाँ"—बिशपने कहा—"आपका नाम है—'मेरे भाई'।"

"रुकिये, रुकिये पादरी महाशय, मैं जब आया तब मैं भूखके मारे मरा जा रहा था। आप कितने अच्छे हैं ! मैं नहीं जानता कि अब मैं क्या हो गया हूँ। पहलेकी सारी बात खतम हो गयी है।"

"आपको बड़ा कष्ट झेलना पड़ा है ! है न ?"—बिशपने पूछा।

"ओह, क्या पूछते हैं उस कष्टकी कहानी ! वे जंजीरें ! वे बेड़ियाँ ! वह परिश्रम ! सोनेके लिए वे तख्ते ! सर्दी ! गर्मी ! बरफ ! क्या नहीं ? वे कुत्ते ! हाय वे कुत्ते भी मुझसे सुखी थे ! और यह सब एक-दो दिन नहीं, लगातार उन्नीस साल ! आज मैं ४६ का हुआ और तब मुझे मिला है यह पीला पासपोर्ट !"

"तो"—बिशपने कहा : "आपने कष्टका एक स्थान छोड़ा है। पर सुनिये, स्वर्गमें किसी पापीके पश्चात्तापके आँसुओंपर सैकड़ों सफेद-पोश भले आदमियोंसे बढ़कर खुशी मनायी जायगी। यदि उस दुःखद स्थानको आप मनुष्यके प्रति घृणा और क्रोधकी भावनाके साथ छोड़ते हैं, तो आप दयाके पात्र हैं; पर यदि आप उसे शुभेच्छा, उदारता और

शान्तिके साथ छोड़ते हैं, तो हममेंसे कोई भी आपका मुकाबला नहीं कर सकता।''

प्रार्थना करके तीनों जीमने लगे—पादरी, अतिथि और बैपटिस्टाइन।

''भेजपर कुछ खाली-खाली सा लगता है!''—बिशपकी यह बात सुनते ही मैगलोयरने तीन थालियाँ लाकर और सजा दीं। किसी अतिथिके आनेपर वृद्ध पादरीकी यह इच्छा जाग्रत हो जाती थी कि चाँदीकी छह-की-छह थालियाँ भेजपर सजा दी जायँ। उसके अत्यन्त सादे जीवनमें चाँदीकी ये थालियाँ और चाँदीके ये शमादान ही अपवाद थे।

× × ×

बिशपका भोजन इतना सादा था कि अतिथिको लगा कि यह बहुत छोटा पादरी—'क्यूरे'—है, तब न ठेलेवालोंसे भी गया-गुजरा भोजन करता है! उसे क्या पता था कि बिशपकी यह गरीबी स्वयं-निर्मित है। वह अपनी आयका अधिकांश दीन-दुखियों और पीड़ितोंकी सेवामें लगा देता है।

बिशपने पूछा : ''महाशय जीन वैलजीन, आप पोंटरलियर जा रहे हैं?''

''हाँ जाना तो है।''—उसने कहा।

''परिश्रम करके खानेकी बड़ी अच्छी जगह है। मैं रहा हूँ वहाँ। डेयरीका काम वहाँ खूब चलता है।''

पादरीने प्रकारान्तरसे जीन वैलजीनको इशारा तो किया कि भविष्यमें श्रमपूर्वक पवित्र जीवन बिताना उसके लिए अच्छा होगा, पर उपदेशके ढगपर उसने कोई बात नहीं कही। बूढ़े पादरीको डर था कि कहीं उसकी किसी बातसे जीन वैलजीनका दिल न दुख जाय!

× × ×

बहनको 'नमस्ते' करके पादरी महाशयने भेजपरसे एक शमादान उठाया और दूसरा शमादान अतिथिके हाथमें देते हुए कहा : ''महाशय, चलिये मैं आपको सोनेका कमरा दिखाऊँ।''

दोनों चल दिये।

कमरेमें जाते हुए जीन वैलजीनने देखा थालियाँ साफ करके पादरीके सिरहानेवाली

मोटी बात नहीं की। किसीने कभी उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। रोज-रोज, बार-बार सताये जानेके कारण उसकी यह धारणा बन गयी कि जीवन एक युद्ध है और उस युद्धमें पराजय ही उसके पल्ले पड़ी है। उसके हाथमें एक ही हथियार है और वह है—घृणा! जेलमें उसने उसी हथियारको पैना किया।

जेलोंमें कैदियोंके लिए एक स्कूल था। जो कैदी चाहें, वे पढ़ सकते थे। जीन वैल्जीनने ४० की उम्रमें वहाँ लिखना, पढना और गणित सीख लिया। पर इस ज्ञानवृद्धिसे उसकी घृणा बढी ही, घटी नहीं! शिक्षाकी पद्धति गलत होनेसे मनुष्य सत्पथके बजाय कुपथपर ही आगे बढ़ जाता है।

समाजसे तो जीन वैल्जीनको घृणा हो ही गयी, ईश्वरसे भी उसे घृणा हो गयी। आखिर उसीने तो ऐसा समाज बनाया है!

कभी-कभी उसके हृदयमें प्रकाश उठता, कभी अन्धकार! कभी सद्भाव जागते, कभी कुभाव। प्रत्येक मानवके हृदयमें जिस दैवी ज्योतिका निवास रहता है, जीन वैल्जीनके हृदयमें भी वह छिपी पड़ी थी। किसी भी भयंकरसे भयंकर अपराध या पापमें भी ऐसी शक्ति नहीं, जो उस ज्योतिको सदाके लिए बुझा सके।

जब-तब उसके हृदयमें विचारोंका द्वन्द्व मचता। जब-जब उसने जेलसे भागनेकी कोशिश की, तब-तब एक आवाज उससे कहती: 'भागो', दूसरी कहती: 'रुको'! पशुता खुलकर खेलती। वह पकड़ा जाता, तो उसपर अत्याचारोंका प्रहार और अधिक बढ जाता। जिसका फल यह होता कि वह पहलेसे भी अधिक उग्र और कठोर बन जाता।

जहाँतक शक्ति, बल और सामर्थ्यका प्रश्न है, जीन वैल्जीनमें अकूत शक्ति थी। ऊँचीसे ऊँची दीवालपर बिना किसी सहारेके चढ़ जाना उसके बाँयें हाथका खेल था! शारीरिक बलमें उसकी बराबरी करनेवाला जेलमें कोई दूसरा कैदी था ही नहीं।

वह बहुत कम बोलता, हँसता तो कभी था ही नहीं, कभी-कभी वह काम छोड़कर बैठ जाता और विचारोंमें डूब जाता।

अज्ञात शक्तिने उसे घूँसा मारा हो। वह एक भारी पत्थरपर धम्मसे बैठ गया ! उसने अपनी गर्दन घुटनोंपर रख ली, हाथोंसे अपनी खोपड़ी थाम ली और कहा : "हाय, मैं कैसा नराधम हूँ ! कैसा दुष्ट !!"

उसका हृदय भर आया ! आँखोंसे आँसू बहने लगे ! उन्नीस वर्षमें यह पहला अवसर था, जब वह रोया।

जीन वैलजीन जब बिशपके घरसे निकला था, तो उसका 'मूड' ऐसा था जैसा उससे पहले कभी नहीं रहा था। उसके हृदयमें विचारोंका जो झझावात मचा था, उसे समझ पानेमें वह असमर्थ हो रहा था। उसे ऐसा लगा कि इस पादरीका क्षमादान उसपर किया गया तीव्रतम प्रहार है ! उसके हृदयमें उसकी अपनी दुष्टता और बिशपकी साधुताके बीच एक भयंकर युद्ध छिड़ गया।

एक मतवालेकी भाँति वह भावावेशमें पड़ा था। उसके भीतर दो प्रकारकी भावनाओंमें द्वंद्व छिड़ा था—मैं अच्छा बनूँ कि बुरा ? ऊँचा उठूँ, तो मुझे बिशपसे भी ऊँचा उठना है और नीचे गिरना है, तो दुष्टसे भी दुष्ट ! अब मैं देवदूत बनूँ या राक्षस ?"

दुर्भाग्यने उसे कालेपानीमें भेजा। बाहर आते ही बिशपने उसपर सद्भावोंकी इतनी तेज रोशनी डाली कि उसकी आँखें चौंधिया उठीं। अन्धकारके बाद इतना तीव्र प्रकाश !

एक बात तय थी, और वह भी इस बातको मंजूर कर रहा था कि अब वह पहले-जैसा आदमी नहीं है। वह एकदम बदल चुका है। बिशपने अपनी वाणीसे, अपने स्पर्शसे उसका हृदय-परिवर्तन कर डाला है।

और इसी विचारधारामें जब वह बह रहा था, तभी उसे मिल गया पेतित गर्वेस। उसका ४० सूका सिक्का उसने चुरा लिया !

क्यों ?

उसके पास इसका कोई जवाब नहीं था। शायद यह उसके भीतर रहनेवाली दुर्भावनाकी अन्तिम चेष्टा थी, उसके भीतर छिपे पशुका

अन्तिम प्रयत्न था। चोरी उसने नहीं की थी, वह की थी उस पशुने जो स्वभाव और प्रेरणाके वश होकर यह भी भूल गया था कि वह है कौन ? अब उसकी चेतना जाग्रत हुई, विवेकने आँखें खोलीं, तो वह तीव्र मानसिक सन्तापमें जकड़ गया और विकल होकर रो पड़ा !

उसके इस अन्तिम कुकृत्यका उसपर निर्णयात्मक प्रभाव पड़ा। आत्मविश्लेषण करनेके पहले उसने पलायनवादी व्यक्तिकी भाँति इस बातकी चेष्टा की कि वह लड़केको खोज करके उसका सिक्का लौटा दे, पर जब उसने देखा कि ऐसा करना सर्वथा असम्भव है, तो उसकी आत्मा उसे बुरी भाँति कचोटने लगी। जीन वैलजीनकी नंगी तस्वीर आ खड़ी हुई उसके सामने। वह यह कहकर रो पड़ा कि 'हाय, कैसा नराधम हूँ मैं !'

उसे लगा, मानो उसके सामने एक विद्युतपुंज खड़ा है। गौरसे देखनेसे उसे ऐसा जान पड़ा कि वह बिशप है। पादरीका यह चित्र उत्तरोत्तर निखरता गया और जीन वैलजीनको अभिभूत करता गया।

उसके आँसू थमनेका नाम ही नहीं ले रहे थे। भला कोई स्त्री क्या ऐसा रोयेगी ! कोई बच्चा क्या ऐसा रोयेगा !

वह ज्यों-ज्यों रोता जाता था, उसका मस्तिष्क अधिकाधिक स्वच्छ होता चल रहा था, उज्ज्वल होता चल रहा था। पश्चातापके आँसुओंमें उसके पाप, उसके अपराध, उसके कुत्सित भाव धुलते चल रहे थे।

उसके पिछले जीवनका घिनौना स्वरूप दिव्यताकी धमाके प्रकाशमें धीरे-धीरे मिटता चल रहा था। उसके नेत्रोंके समक्ष ऐसा प्रकाश था, जिसका कि उससे पहले कभी उसने दर्शन ही नहीं किया था।

वह अपने जीवनकी ओर देखता था, तो वह उसे भयंकर प्रतीत होता था; आत्मा की ओर देखता था तो वह अनमोल लगती थी।

जीवन और आत्मापर एक मन्द-मन्द प्रकाश अवश्य

उसे लग रहा था, मानो वह मानवं प्रकाशसे शैतानकी

इस प्रकार वह कितनी देरतक रोता रहा ? रोनेके बाद उसने क्या किया ? वह कहाँ चला गया ?—इन बातोंको कोई नहीं जानता। इतना पता चला है कि रातको तीन बजेके करीब एक ठेलेवालेने द··नगरमें पादरी विनवेनूके दरवाजेके सामने सड़कपर एक आदमीको झुका हुआ अवश्य देखा—प्रार्थना करते हुए !*

---

* विक्टर ह्यूगोकी 'ला मिजरेबल्स' के खण्ड १, अध्याय २ का सारांश।